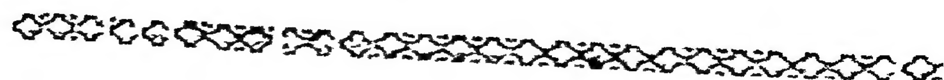
॥ अथ टीकावार्त्तिकसंवलितं समवायाख्यं चतुर्थाङ्गसूत्रं प्रारभ्यते ॥

बनारस जैनप्रभाकर छापाखाने से





॥ विज्ञापनम् ॥

सकल सनातन धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिस्सें जुआरी महार चोर और व्य भिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पंगु कुष्टी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्यों कि ज्ञान बिना ज्ञानी और ज्ञानी बिना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका सद्गुरु अध्ययन

अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है. ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे । अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं । प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समुझते थे । और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नही समझा जासकता । अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नही याद रहता है ज्ञानावरणीय के सिवाय कौन कारण कहेंगे । ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नही हुआ किन्तु क्रमसें जों जों देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तों तों ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४ । विक्रम संवत ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने सोंचा कि पुस्तक विनालिखे यह स्मरणशक्ति

जाती रहेगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस
समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होनेके कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तका
लय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नही हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास
प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी
कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद
के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रथ
चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय
भी अधिक होगा तिस्में भी यदि कोई तरह का विघ्न आय पडै कार्य पूर्ण नहो, क्योंकि एकतो श्रेयांसि बहुवि
घ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म
समाप्ति में है, ग्रथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा
नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रथ लुप्त होगये, और पीछे से
मुसलमानोंने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल में पैंतालीस आगम एक

जगह नहीं मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाह रे काल महिमा) इस हेतु वर्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ जो के ५०० लिकाले ४५ आगम का प्रचार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखते लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुंदर पृथ्वी पर इसके सिवाय नहीं है ग्रंथ छपवाना शुरूकिया । यह कला स्वरूप देशीन अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकसुलभतादिक, महा कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में बड़ा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नहीं है, पक्षपात छोड के ग्रहण करें । यदि वस्तु के उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है वहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोरोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप लेते

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक गुप्त भला, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नहीं करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने वडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे उसके सिवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबन्धका हेतु, नहीं है, वही ग्रन्थ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अच्छा कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नहीं है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथाशक्ति प्रवृत्त होंय कि जिससे पुन जैनमत युवावस्था कों प्राप्त होय इति शम् ॥

राय धनपतिसिंह बहादुर

मकसूदाबाद अजीमगंज

भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्ग का अनुयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसें प्राप्त है .

नकल चिठ्ठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धशुद्धिप्रकाशितधर्मरतेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसो जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच २ सौ कापी छपैं और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित हो सो यह अति आनंदकी बातहै, परंतु जिन महाशयों का द्रव्य देकर पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त जो यदि आप की आज्ञा हो तो बेचने के वास्ते पांचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावे यह पुस्तक मैं अजीमगंज से प्रकाश करूंगा अग्रे शुभम्, संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगंज

शहर मुरशीदाबाद

द० जैन बुक सुसाइटी
कार्यसम्पादक
हरिश्चंद

नकल चिठ्ठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटी कार्यसम्पादकसज्जनेषु प्रतिनिवेदनम् ।

ता० ११ का पत्र आपका देखा बेचने खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसो जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच २ सौ पुस्तकें बेचने के वास्ते छपवा लेवें, परंतु पांचसौ से अधिक छपने की आज्ञा मैं नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहे तो उचित है कि पहले मुझ से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् । संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरशीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पवृक्षायमाण वङ्गदेशभूषण कृतदम्भुतोषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारो सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर क्षितिपति धनपति सिंहस्य धर्मोपदेशेन शुभादेशेन ज्ञानवृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपतीनां सकलयतीनां श्रेयोग्राहकाणां श्रावकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराक्षरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्यग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकचन्द्रेण सुन्दरं मुद्रितमभूत् ॥

*

समवायाख्यसूत्रं तुरीयमङ्गं मयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यं भविकान्सदापातु ॥ १ ॥





॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानस्य समवायांगवृत्तिका । विधीयतेन्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसदूहनाद्वा भणिष्यतेयद्वितथं मयेह । तद्बोधनैर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यंमतार्थक्षतिरस्तुमैव ॥ २ ॥ इहस्थानाख्यतृतीयांगानुयोगानतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थाङ्गानुयोगोभवतीति- सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं समुदायार्थोयमस्य समिति सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो- जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयंतिवा समवतरंति संमिलंति नानाविधाआत्मादयोभावाअभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति सचप्रवचनपुरुषस्यांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनःसंबंधी पचमोगणधरआर्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यजंबूनामानमभिसम वायागार्थमभिधित्सुः भगवतिधर्माचार्येबहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्तारस्वभावभासिकेवलालोककलितमहावीरवचननिश्रिततयावि गानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमेमयाहेआयुष्मन्चिरंजीवितजंबूनामन् तेणंति यो सोनिर्मूलोन्मूलितरागद्वेषादिविषमभावरिपुसैन्यतया भुवनभावावभासनसहसवेदनपुरस्सराविसंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोरा शिस्तेनमहावीरेणभगवतासमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यात अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥र्द्य॥ श्रीविघ्नराजायनमः ॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसमणेणं भगवयामहावीरेणं

॥ देवदेवजिननत्वा पार्श्वचन्द्रादिसद्गुरून् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमोगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेछे सांभल्योमेभगवंतनें समीप ॥ हेसयमसुद्ध आउखानाधणीजंबू तेणे भगवंतज्ञानवतरूपवंते एहजोजे आगलकहीस्येतेकह्यो एहवोजिनप्रवचननेविषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे श्रमण

निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
लोक इतिव्युत्पत्यालोकालोकरूपस्यसमस्तवस्तुस्तोमस्यभावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव हरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसभवतीतिको
प्रवर्त्तनेनप्रद्योतं प्रकाशंकरोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलोकनाथत्वादिविशेषणयोगो दयातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार
स्यविशेषइत्याशङ्कायान्तद्विशेषाभिधानायाह नभयंदयतेप्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिष्वपिप्राणिनि करोत्यपिलर्थप्रापि करोती
वतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनैवमितितेनाभयदयेन नकेवलमसावपकारकारिणामप्यनर्थपरिहारमात्रं यथाहिलोकेचचुर्दत्वावांछितस्थानमार्गदर्शयन्महोपकारी
तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानशुभाशुभार्थविभागकारित्वा त्तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन मार्गदर्शयन्महोपकारीभवत्येवमिहापीति यथाहिलोकेच
भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गंसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकंपरमपदपथंदयत इतिमार्गदयस्तेन शरणत्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानांतद्र
चुरुद्घाटनमार्गदर्शनचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानंप्रापयन् परमोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवनं
चास्थानतश्चपरमार्थतोनिर्वाण तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाहि लोकेचचुर्मार्गशरणदानादूर्ध्वस्थानजीवितव्यं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह

माणं लोगनाहाणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेण अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं

तिहांईवासमानमिथ्यात्वअंधकारटाले लोकगणधरलोकनेहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहारतेणेसहित॥सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणे समकितरूपलो-
चनानादातारतेणे भूलाप्राणीनेमोक्षमार्गनादातारतेणे सर्वजीवनेशरणनादातारतेणे संयमरूपजीवितव्यनादातारतेणे बोधिबीजसम्यक्त्वनादातारतेणे धर्म

जीवोभावप्राणधारणममरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयतइति जीवदयोजीवेषुवा दयायस्यसजीवदयोऽतस्तेन इदंचानंतरोक्तं विशेषणकदंबकं भगवतोधर्ममयत्वात् संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्यविशेषणपंचकेनाह धर्मंश्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जंतुधारणस्वभावंदयतेददातीतिधर्मदयस्तेन तद्दानंचास्यतद्देशनादेवेत्यतो आह धर्मंश्रुतलक्षणं देशयति कथयतीतिधर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वंचास्य धर्मस्वामित्वेसति नपुनर्यथानटस्येतिदर्शयन्नाह धर्मस्यक्षायिकज्ञानदर्शनचारित्रात्मकस्यनायकः स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकस्तेन तथाधर्मस्यसारथिर्द्धर्मसारथिः यथारथस्यसारथी रथरथिक मश्वांश्चरक्षति एवंभगवांश्चारित्रधर्मांगानांसंयमा मप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवतीति तेनधर्मसारथिना तथात्रयः समुद्राश्चतुर्थोहिमवान् एतेचत्वारः अंताः पृथिव्याःपर्यन्तास्तेषु स्वामितयाभवतीति चातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीच चातुरंतचक्रवर्त्ती वरश्चासौचातुरंतचक्रवर्त्तीचेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथाहि पृथिव्यांशेषराजातिशायी वरचातुरंतचक्रवर्त्ती भवति तथाभगवान्धर्मविषये शेषप्रणेतॄणांमध्ये सातिशयत्वात्तथो

जीअदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं

नादातारतेणेकह्यो धर्मोपदेसनाकहणहारतेणे धर्मनानायकअधिकारीतेणे धर्मनासारथीभूताप्राणीनेमार्गेआणेतेणे च्यारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणेकरीचक्रवर्त्तिसरीखात्रिभुवननोराज्यपालेतेणे द्वीपनीपरेंसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकससारतेहनिवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहतअस्खलित

ध्यतइति तेनधर्मवरचातुरंतचक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति भवतीत्यत आह अप्रतिहतेकटकुड्यपर्वतादिभिर
स्खलिते अविसंवादकेवा अतएवक्षायिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर स्तेन एवंविध संवेदनसपदुपेतो
पि छद्मवान् मिथ्योपदेशित्वान्नोपकारीतिनिर्म्छद्मता प्रतिपादनायाह अथवाकथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्व सपन्नमत्रोच्यते आवरणाभावादेतदेवाहव्यावृ
त्त निवृत्तमपगतं छद्मशठत्वमावरणवा यस्यसतथातेन व्यावृत्तछद्मना मायावरणयोश्चाभावो ऽस्यरागादिजयाज्जातमित्यतआह जयतिनिराकरोति रागद्वे
षादिरूपानरातीनितिजिनस्तेन रागादिजयश्चास्यरागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएवभवतीत्येतदस्याह जानातिछाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक
स्तेन अनंतरमस्यस्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुनास्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वंविशेषणषट्केनाह तीर्णइवतीर्णः संसारसागरमितिगम्यते तेनतथातारयति
परानप्युपदेशवर्त्तिन इतितारकस्तेन तथाबुद्धेनजीवादितत्व तथाबोधकेन जीवादितत्वमेवाऽपरेषां तथामुक्तेनबाह्याभ्यंतरग्रंथिबंधनात् मोचकेन ततएवपरे

वियट्टछउमेणं जिणेणं जाणएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहिएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे छद्मस्थपणाथीकपटपणाथकीनिवर्त्याविीतरागपणानातेणे रागद्वेषनेजीतणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावेतेणे पोतेसं
सारसमुद्रतरयातेणे अनेरानेंसंसारसमुद्रतारेतेणे आगमुपेतत्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधेतेणे आपणपेकर्मथकीमूंकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूंकावेतेणे
सर्वपदार्थना जांणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहवामहावीरमोक्षजाइवावांछे छेतेमोक्षकेहवोछे उपद्रवरहितठामथकीचालेनहीतेणे जिहांरोगनहींजिह

इतिमतपुरुषेणैवभाविजडत्वेन तथाशिवंसर्वाबाधारहितत्वात् अचलंस्वाभाविकप्रायोगिक ॥
षांतयामुक्तत्वेपि सर्वज्ञेनसर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायांदर्शनांतरा अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाशं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि
चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत्
पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् तत्स्थानंक्षीणकर्मणोजीवस्य स्वरूपंलोकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका
सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतियस्मिन्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति
प्रस्याधेयधर्माणामाधारेप्यारोपादवसेयानि तदेवंभूतंस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन
यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहि निरभिलाषाएवभगवंतःकेवलिनो भवति मोक्षेभवेचसर्वत्र गणिनआचार्यस्य पिटकमिवपिटकं गणिपिटकं यथाहिवालंजुकवाणिजक
भगवतादमेति इदंवक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नंद्वादशांगानियस्मिंस्तद्द्वादशांगं

सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं
ठाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

मोक्षंतनथी जेहनोक्षयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीजपराठोआविवोनथी सिद्धिगतिएहवो जेहनोनामधेयछे एहवेठामे मोक्षेंजाइवानीवांछा
करेछेतेणेमहावीरेंएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहियेआचार्यतेहनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

स्तापिपिटकं सर्वस्ताधारभूतंभवतिएवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वसाधारकत्वं भवति इतिभावः प्रथमं तीर्थंकरनामकर्मोदय वर्तितयाप्रायः ॥
भूतार्थेनापिपरोपकारायप्रकाशितंतद्यथेत्युदाहरणोपदर्शने आचारइत्यादि द्वादशपदानि वक्ष्यमाणानि निर्वचनानीतियांठानि तत्यणंति तत्रद्वादशांगेण

आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७
अंतगडदसाउ ८ अणुत्तरोववाइदसाउ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

गीसूत्र ज्ञानादिकगुणरत्ननो आधारछे कहोछे तेकहेछे आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमांहिसाधुनोआचारपामीये । बीजुंसूत्रकृतांग जेहमांहिस्वसमयपरसमयनी व्याख्यातापामीये २ त्रीजुंस्थानांग तेमांहिएकथकीमाडीदसलगेंसंख्यानादसअध्ययनछे ३ । चोथोसमवायांग जिहांएकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांचमोविवाहप्रज्ञप्तीजेहमांहिछत्रीससहस्त्रप्रश्नपामीयेएतलेभगवतीसूत्र ५ छठोज्ञाताधर्मकथांग जिहां १९ न्यायप्रनेपछंठकोडिधर्मकथाएछठो ६ सातमोउपासकदशांगउपासकश्रावकतेहनादशअध्ययनछे ७ आठमो अंतकृतदशांगजेणेयतीएससारनोअंतकीधोतेहनापाठवर्गजेमांहिछे नवमोअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेहयतीअनुत्तरविमानेउपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ९ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमांहिअंगुष्ठादिकाप्रश्नोअधिकारछेतोहिवडांपांचआश्रवपांचसंवरद्वारदशम १० अध्ययनछे १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाकछेएतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीया अध्ययनछे ११ बारमोदृष्टिवादते १४ पूर्वएक

मियजंक्ारे यसच्चतुर्थमंगं समवायइत्याख्यातं। तस्यायमर्थः आत्मादिरभिधेयोभवतीतिगम्यतेतत्यथेतिवाचनांतरद्वितीयसंबंधात्सूत्रव्याख्येति । इहचविदु षाम्प्रदार्थमभिदधता सक्रमेणवासा वभिधातव्यइति व्याख्येयस्तत्राचार्यः एकत्वादिसंख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकामआदावेकत्वविशिष्टानात्मनञ्चसर्वपदार्थाभा जकत्वेनप्रधानत्वादात्मादीन्सर्वस्ववस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिःसूत्रैराह स्थानांगेएकार्थानिप्रायस्तथापिकिंचिदुच्यते एकआत्माकथंविदितमितिगम्यते इदञ्चसर्वसूत्रेष्वनुगमनीय तत्रप्रदेशार्थतयाअसंख्यातप्रदेशोपिजीवद्रव्यार्थतया एकः अथवा गतिचण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपो त्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्ष येकत्वमात्मनइति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष

तत्थणं जेसेचउत्थेअंगे समवाएत्तिआहिते तस्सणंअयमठे पं० तंजहा एगेआया एगेअणाया

अंगएद्वादशांगोतेद्वादशांगोमांहिजेहतेह चोथोअंगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगसरीखोअंग समवायांगसूत्र आहियेकह्योसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि-कपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहिये अर्थाधिकारसूत्रेकहैतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनोभोक्ताआत्माछेतेमाटेप्रधानपणायकीआत्माप्रथम अवतस्योचेतनावतआत्माकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजीवअनंताछेपरंषट्द्रव्यनोअपेक्षाएजीवद्रव्यएकजकहोयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअ र्थकहियेछे १ तेअनुक्रमेकहेछे एकआत्माजीवसामान्यप्रकारेएकपणोएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितघटादिकपदार्थ एकदंडभूंडोव्यापारवोयोगत्रणिनोतेदंड

नं पारियानिकमितियदुच्यते अथ्वीत्यादि अस्तिजिदाते ऐकेषांचिन्नैरयिकाणा मेकपल्योपमं स्थिति रितिश्चालाप्रज्ञप्ताप्रवेदितामया अन्यैश्चजिनैः साचचतुर्थप्र ॥ ८

गेएजोयणसयसहस्संआयामविक्खंभेणं प० सव्वट्ठसिद्धेमहाविमाणेएगंजोयणसयसहस्संआयामविक्खंभेणं प०
अद्दानक्खत्तेएगतारे प० चित्तानक्खत्तेएगतारे प० सातिनक्खत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अ
त्थेगइआणंनेरइआणं एगंपलिओवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए नेरइआणं उक्कोसेणएगंसागरोव
मंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगसागरोवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआ
णं एगंपलिओवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणंएगंसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥

जनलांबपणैंअनेपिछुलपणैंकह्यो। आर्द्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे। चित्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे। स्वातिनक्षत्रनोएकतारोकह्यो। एहतेरत्नप्रभापहिलीन
रकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनों एकपल्योपमस्थितिआउखोभगवंतेकह्योछे। एणीरत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीने नारकीयांनो उत्कृष्टाए-
कसागरोपमस्थितिआउखोकह्योछेभगवंते बीजीएनरकपृथवीने नारकीयानोजघन्यपणे एकसागरोपमस्थितिआउखोकह्यो अनंतज्ञानवंते असुरकुमारभवन
पतीप्रथमनिकायना देवतानो केतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्योभगवते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोभाभेरोएक सागरोपमस्थितिआउखो

स्तटे मध्यमावसेयेति एवमेकंसागरोपमं त्रयोदशेप्रस्तटेउत्कृष्टाश्थितिरिति असुरिन्दवज्जियाणंतिचमरवलिवर्जितानां भोमेज्जाणंति भवनवासिनांभूमौपृथि व्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवत्वात्तेषामिति तेषांचैकंपल्योपमं मध्यमाश्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्वेपल्योपमे सात्राहच दाहिणदिवड्ढपलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाणं ति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानिवर्षाण्यायुर्येषांते तथा तेचतेसञ्ज्ञिनश्चसमनस्काश्चेति पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेत्यसंख्येयवर्षायुः सञ्ज्ञिपचेंद्रियतिर्यग्योनिका स्तेषांकेषांचिदेहैमवतैरण्यवतवर्षयो रुत्पन्ना स्तेषा मेकंपल्योपमश्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गर्भेगर्भाश्रयेव्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांतेगर्भव्युत्क्रांतिका नसमूर्च्छन

असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणदेवाणंअत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंति यमणुयाणं अत्थेगइयाणंएगंपलिउवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणंएगंपलिउवमंठिई प० ।

कह्यो असुरकुमारेंद्रचमरेन्द्रवलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानो एकेकानेकेतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो । असंख्यातावर्षनाआउखानासन्नी गर्भजपंचेंद्रियतिर्यंचनोएतलेहैमवंतऐरण्यवंतयुगलचे चनागर्भजतिर्यंचनोयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्यंचनो आउषोउत्कृष्टोजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुंस कगर्भजमनुष्यनूंआउषूंपूर्वकोडिनूंपणिकह्योछेतेमाटे अत्थेगइयाणंपाठग्रह्योकेतलाएकनूएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो। असंख्यातावर्षनाआउखानागर्भज

जाइत्यर्थ. वाणमंतराणंदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीनां तासामर्द्धपल्योपमस्यप्रतिपादितत्वात्जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां नापिचन्द्रादिदेवीनां पलियंचसयसहस्स चन्दाणविआउजाणी इतिवचनात् सोहम्मेकप्पेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीता:सौधर्मेहिपल्योपमाद्धीनत राश्थितिर्जघन्यतोपिनास्ति इयचप्रथमप्रस्तटेऽवसेया सोहम्मेकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणंएगंसागरोवमभित्यत्र देवानामेवग्रहणं नतुदेवीनांउत्कृष्टतोपितत्रतासां पचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वात् तथा एकंसागरोपममितिमध्यमस्थित्यपेचया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसद्भावात् गस्तटापेचयास्त्वेषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यमावसे

जोइसियाणं देवाणंउक्कोसेणं एगंपलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई प०। सोहम्मेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं एगंपलिओवमठिई प०। सोहम्मेकप्पे देवाणंअत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं जह

संज्ञीपचेन्द्रियमाणसनूंएतलेहिमवंतऐरण्यवतक्षेत्रसंबंधीयुगलियांमाणसनोकेतलाएकनोपल्योपमस्थितिआऊखूंकह्योभगवंतेवाणव्यंतरदेवनो उत्कृष्टोएकपल्यो पम जघन्य १० सहसवरसनोकह्योजोतिषीचंद्रमाविमानवासीदेवतानोउत्कृष्टोएकपल्योपमएकवर्षलाखेअधिकएवडीस्थितिकहीतीर्थंकरदेवे। सौधर्मप्रथम देवलोकेदेवनो जघन्यएकपल्योपमस्थितिआऊखोकह्यो सौधर्मदेवलोकेदेवतानोकेतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआऊखो देवीनोसागरोपमनकहिवोउत्कृ ष्टोपचासपल्योपमकह्यो ईशानबीजेदेवलोके देवनोजघन्यभाखेरी एकपल्योपमएवडीस्थितअनंतग्यानीये कही ईशानेदेवलोके देवनोकेतलाएकनो एकसाग

या। ईसाणेकप्पेदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेनदेवादेव्यश्चगृह्यंते यतस्तत्रसातिरेकपल्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिरेवनास्ति ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणमित्यत्रदे वानामेवग्रहणनदेवीनां तत्रतासामुत्कर्षतोपिपंचपंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमनुंमानु षोत्तरं लोकहित मित्यत्रचकारोद्रष्टव्यः ससमुच्चयस्यद्योतनीयत्वाद्विमान देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानिचविमानानि सप्तमप्रस्तटेवसेयानिस्थित्यनु सारेणच देवानामुच्छ्वासादयो भवंति तान्दर्शयन्नाह तेषमित्यादि येषांदेवानामेकंसागरोपमस्थिति स्तेदेवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इतिशेषःआनंति प्राणंति एतदेवक्रमेणव्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंतिनिःश्वसंति वाशब्दोविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्षसहस्रस्यान्त इतिशेषआहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

ग्नेणंसाइरेगंएगंपलिउवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। जेदेवासागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणंउक्कोसेणंएगंसाग

रोपमनीस्थितकही। ईशान देवलोके सातमेप्रतरेजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणेविमांणे देवतपणेउपनाछे। ते देवतानी उत्कृष्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवताएकअर्द्धमासेएतलेएकणिपखवाडे आणमंतियोडोस्वासलै पाणमंतिघणो लेआणमतिप्राणमतिएहअंतरवत्तिस्वासउसरसंतिनीससंतिएहनाअवत्तिकोइकआचार्यएमकहेछे जेदेवतानेजेतलासागरोपमआउखोतेहनेतेतलेपखवाडेसासो

लानांग्रहणमाभोगतोभवति अनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतोति गाथेह जस्सजस्सागरोवमा ठिइतस्सतत्तिएहिंपक्खेहिं ऊसासो देवाणंवा ससहस्सेहिंआहारोत्ति संतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिद्धियत्ति भवा भाविनोसिद्धिर्मुक्तिर्येषांते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्यमनुष्यजन्मनो ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यति अष्टविधमहर्द्धिंप्राप्त्याभोत्स्यंते केवलज्ञानेनतत्वं मोक्ष्यंतेकर्मराशेःपरिनिर्वास्यति कर्मकृतविकाररहाच्छीतीभविष्यन्ति कि मुक्तंभवतिसर्वदुःखानामंतकरिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाश्रयणादेकतया वस्तून्यभिधायाधुना विशेषमप्याश्रयणाद्द्वित्वेनाह दोदंडेत्यादि सुगमसाद्दि

रोवमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सऋद्धमासस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणंएगस्सवाससहस्स आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंभवग्गहणेणं सिज्झिस्सं ति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंडापन्नत्ता तं०

सासवाहे तेतले सहस्रेवर्षे आहारनोइछाउपजे । जंचोस्वास ते उत्स्वास नीचोमेल्हिवोतेनोसास तेहदेवने ऐकसहस्रवर्षे आहारनोअर्थउपजे । संतेकाह तांछेएकेकाभवसिद्धियाकहतांभाविनोछोणारोछे ढूंकाडोसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभयजोव संसारमांहितेहलघुकर्मीएकभवनेआंतरेसीझस्ये कृतार्थथास्ये वूझ स्ये केवलज्ञानेकरीसर्वसंसारनापरमार्थजाणिस्ये कर्मकोधोविकारतेहनारहितपणायकोठाढाहोस्ये । सर्वशारीरीदुःखनोमानसीदुःखनोअंतकरिस्यें- एतलेरकठाणोकहियो ॥ १ ॥ द्विवेबीजोअधिकारकहेछेबेदंडकह्या भगवंतेजेणेकरीपरनाप्राणहणीयेतेदंडकह्या तेवारेछे अर्थदंड तेआत्मानेअर्थे पर

स्थानकसमाप्तेनंतरमिह दंडराशे बंधनार्थंसूत्राणांत्रदंनचत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंत्रयोदसकमुच्चासाद्यर्थंत्रयमिति तत्रार्थंनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो हिंसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांद्विपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटेमध्यमा द्वितीयायांद्वेसागरोपमेस्थिति:पाटप्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव दुवेरासी प०। तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेबंधणे प०। तजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुव्वाफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प०। उत्तराफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० पुव्वाभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० उत्तराभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं दोपलिओवमंठिई प०। दुच्चाएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइंठिई प०। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ

नेअर्थेआगलानाप्राणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणेंपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिश्चे वेराशिसमूहकही तेकिसी कहेछे। जीवराशिजीवनासमूह अजीवराशि अजीवनासमूह बेप्रकारे बंधनकह्या तेकहेछे रागबंधण रागेकरीकर्मनोबंधपडे एमज द्वेषबंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनाबेताराकह्या भगवते उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रना बेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रतणा बितारा कह्या। उत्तराभाद्रपदनक्षत्रनाबेताराकह्या एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये केतलाएकनारकीनो चोथेपाथडे बेपल्योपमस्थितआउखूंमध्यमकह्यो बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छठेपाथडे बेसागरोपममध्यस्थितिआ

पंचकं नवतत्त्वार्थसप्तकं स्थित्यर्थंनवकं मुक्त्यासाध्यर्थंत्रयमिति। तत्रदंड्यतेचारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मेतिदंडादुःप्रयुक्तमनःप्रभृतयः मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडेनमनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनानिगुप्तयः मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्यानीवशल्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः सैवशल्यं मायाशल्यमणित्यलंकारे एवमितरेऽपि नवरंनिदानं देवादिरिद्धीनांदर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानान्ममैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शनं मत्वार्थश्रद्धानमिति तथा गौरवाणिमभिमान

तउदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे। तउगुत्तीउ प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती। तउसल्ला प० तं० मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिस्ये ऐतले बीजोठाणो पूरोथयो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तीजोठाणो कहेछे। तीनदंडक ह्या जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्ररूपधनगमाडीये ते दंडकहीये २ मनेकरी आत्मादंडीये प्रसारकारीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंड पणिइमज २ त्रिणिगुप्ती गोपविवो ते गुप्ति कहिये [तिकहेछे मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ एम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यछे तीरनीपरे शल्यसरीखा श ल्य भाल दुखदायकपणाथकी ते कहेछे मायाकपटतेहीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकापदवीनो वांछवो २ मिथ्यातशल्य

पूजाचार्यत्वादिलक्षणयागौरवमृद्धिप्राप्त्यभि
लोभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्रऋद्ध्यानरेंद्रादि
मानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थः एवंरसेनगौरवंरसगौरवं सातयागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्रज्ञानस्यविराध
नाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिह्नवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनंसम्यग्दर्शनक्षायिकादिचारित्रसामायिकादीनि । तथाअसंख्यातवर्षायुषांपंचेंद्रि

तउगारवा प० तं० । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तउविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं
सणविराहणा चरित्तविराहणा मिगसिरनक्खत्तेतितारे प० । पुस्सनक्खत्तेतितारे प० । जेठानक्खत्ते
तितारे प० । अभीइनक्खत्तेतितारे प० । सवणनक्खत्तेतितारे प० । अस्सिणिनक्खत्तेतितारे प० भरणी
नक्खत्तेतितारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंतिन्निपलिओवमाइंठिई प० । दो

ससारचक्रवालमांहिभमवानोकारणकह्योतिकहेछे । ऋद्धिगारव
तेशुद्देवगुरुधर्मनोअसद्दहिवोविपरीतनोकरिवो २ त्रिणिगारवछेजेणेकरीआत्माभारीथाय
तेनरेंद्रादिकनोऋद्धितथाआचार्यादिकनीऋद्धितेणेकरीअभिमानकरतोआत्माभारीकरे रसेकरीमधुरादिकस्वादेकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेर
सातानेगारवेकरीसातागारव ३ त्रिणि विराधनाखंडनाकही तेकहेछे सूत्रादिकज्ञानतेहनीविराधना प्रत्यनीकपणोकरिवोतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यक
दर्शनक्षायकादिकसम्यक्ततेहनूंविराधवूंअयर्णवादनूंबोलिवूंतेदर्शनविरधना २ सामायिकादिकचारित्रनूंविराधवूंखंडवूंतेचारित्रविराधना ३ मृगसरनक्षत्रना

च्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि
सागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणदेवाणं अत्थेगइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासा
उयसन्नि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निग
म्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं
तिन्निपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प०

त्रणितारा कह्याकेवलज्ञानीये पुष्यनक्षत्रनात्रणितारा कह्या । जेष्ठानक्षत्रनात्रणितारा कह्या अभिजित् नक्षत्रनातीनतारा कह्या श्रवणनक्षत्रनात्रणितारा क
ह्या अस्विनीनक्षत्रनात्रणितारा कह्या भरणीनक्षत्रनात्रणतारा कह्या एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो त्रणिपल्योपममध्यमआउषूंकह्यूं
बीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनोउत्कृष्टो त्रणिसागरोपमनूंआउखोकह्यो त्रीजीवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनो जघन्य त्रणिसागरोपमआउखोक
ह्यो असुरकुमारभवनपतीनी पहिलीनिकायनादेवतानोकेतलाएकनो त्रणिपल्योपममध्यमआउखोकह्योछे असख्यातवर्षनाआउखाना संज्ञीगर्भज पचेंद्रिय
तिर्यंच एतलेदेवकुरू उत्तरकुरूनागर्भज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनो आउखोकह्यो । असख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्य देवकुरुउत्तरकुरुना

यतिर्यग्मनुष्याणांदेवकुरूत्तरकुरुजन्मनां त्रीणिपल्योपमानीति । तथाआभंकरं प्रभंकरं आभाकरंप्रभाकरं चंद्रंचंद्रावर्त्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रवर्णं चंद्रलेश्यं चंद्र
ध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूट चंद्रोत्तरावतंसक विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्यानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणांषट्

जेदेवा आभंकरं पभंकरं आभाकरं पभाकरं चंदंचंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्झयं चं
दसिंगं चंदसिद्धं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरो
वमाइंठिई प० । तेणंदेवातिण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदे
वाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिआहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवग्गहणेहिं
सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपल्योपम आउखो कह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनो त्रणिपल्योपमआउखो कह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रनी
जेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनो त्रणिसागरोपममध्यमआउखोकह्योजेदेवताआभंकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७
चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ण ९ चंद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेंसनत्कुमारमाहेंद्रदेवलोकेंदेवतापणे
उपनाछे तेहदेवतानोउत्कृष्टोत्रणि सागरोपमआउखो कह्यो तेहदेवतानेंनिहूंअर्द्धमसवाडे थोडोस्वासले घणोस्वास ज चोस्वासतेउत्स्वासनीचोस्वासमूंकवोते

कंनचत्रार्थंस्थित्यर्थंषट्कंशेषंतथैवद्व्यपिपाठः अर्थस्थित्यर्थंषट्कंनचत्रार्थंत्रयंशेषंतथैव अंतर्मुहूर्त्तं यावच्चित्तस्यैकाग्रतायोगनिरोधश्चध्यानं तत्रार्त्तं मनोज्ञामनोज्ञ ॥ टी

वस्तुवियोगसंयोगादि निबंधनचित्तविक्लवलक्षणं रौद्रंहिंसानृतचौर्यधनसंरक्षणाभिधानलक्षण । धर्ममाज्ञादिपदार्थस्वरूपपर्यालोचनैकाग्रतायुक्तं पूर्वगत

श्रुतावलंबनध्याने तत्रमनसोऽत्यंतस्थिरतायोगनिरोधश्चेति । आत्मध्यानं तथाविरुद्धाचारित्रंप्रति स्त्र्यादिविषयाःकथा विकथाः तथासंज्ञा असातवेद

॥

प० तं० कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए चत्तारिज्झाणा प० तं० अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे ध

म्मज्झाणे सुक्कज्झाणे चत्तारिविगहाउ प० तं० इच्छिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसन्ना प०

॥

नीसास तेहदेवताने उत्कृष्टो त्रिहुंवर्षंसहस्रे आहारनोअर्थंउपजेआभोगआहारलेछे एकेकसंसारमांहिभव्यजीव जेहत्रिहुंभवनेअंतरे सीझसेकृतार्थथास्ये बूझ

स्ये कर्मबंधथकी मूंकास्ये समस्तदुःखनोअंतकरस्यै इतित्रीजोठाणोसमाप्तं हिवेचोथोठाणोकहेछेच्यारकषायछेकषकहीये संसारतेहनोआयलाभहुस्ये जेहथीक

षायकहियेक्रोधिकरीसंसारनोलाभहुस्येतेमाटेक्रोधकषाय १ एममानकषायमानअहंकार २ मायाकषामायाकपट ३ लोभकषायलोभतृष्णा ४ च्यारिध्यानक

ह्याध्यानतेअंतमुहुर्त्तलगेचित्तनुंएकाग्रपणूंतथायोगनिरोधतेकहेछे मनोज्ञवस्तनोसंयोगअमनोज्ञवस्तनोवियोगनोचिंतविवोतेआर्तध्यान १ हिंसामृषाचोरीधन

रक्षणनो चिंतविवोतेरुद्रध्यान२भगवंतनीआज्ञापदार्थनोआलोचवोतेधर्मध्यानपूर्वगतश्रुतनूंआलंबनुत्रिणयोगनूंनिरोधवोते शुक्लध्यान जेणेकरीचारित्रादिक

नीयमोहनीयकर्मोदयसंपाद्या आहाराभिलाषादिरूपाचेतनाविशेषाः तथासकषायत्वाज्जीवस्यकर्मणोयोग्यानांपुद्गलानां बंधनमादानबंधनम्। तत्र प्रकृत
यः कर्मणोंऽशाभेदाः ज्ञानावरणीयादयोऽष्टौतासांबंधः प्रकृतिबंधः तथास्थितिस्तासामेवावस्थानं जघन्यादिभेदभिन्नंतस्याबंधोनिर्वर्त्तनंस्थितिबंधः तथाऽनुभा
वोविपाकस्तीव्रादिभेदोरसस्तस्यबंधोनुभावः तथाजीवप्रदेशेषुकर्मप्रदेशानामनंतानंतानांप्रतिप्रकृति प्रतिनियतपरिमाणानांबंधः संबंधनंप्रदेशबंधइति तथा

त्ता तं० आहारसन्नाय भयमेहुणपरिग्गहसन्ना चउव्विहेबंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे अणुभागबंधे
पएसबंधे चउगाउएजोयणे प०। अणुराहानक्खत्तेचउतारे प०। पुव्वासाढनक्खत्तेचउतारे प०। उत्तरासा

नोविराधनाहोयतेविकथाचारकहीछे तेकहेछे स्त्रीभलीवखाणीयेभूंडीबखाणीयेतेस्त्रीविकथा भातरांध्यानेअन्ननोवखाणबोविखोडवोतेभातविकथा १ राजा
नंभलूंभूंडूंकहिवोतेराजविकथा देसएअवखाणअेएकनिंदोडजोतेदेसविकथा ४ च्यारसन्नाकहीअसातावेदनीयमोहनीकर्मनेउदयेंजपजेतेसंन्नाकहीयेआहा
रसंन्ना १ भयनोवेदवोतेभयसंन्नाकहीये २ मैथुननोअभिलाषातेमैथुनसंन्ना ३ परिग्रहनोअभिलाषतेपरिग्रहसंन्ना ४ चिंहुप्रकारेबंधजीवनेकर्मनेयोग्य पुद्गल
नोबांधवोतेबंधकहीये तिहांकर्मनाअंशभेद ज्ञानावरणीयादिक ८ आठ तेहनोबांधवोतेप्रकृतिबंध १ तेहआठेकर्मनी स्थितिरहियोजघन्यउत्कृष्टकोइकाल
तीव्रादिकभेदेंअनेकप्रकारेरसतेहनोबंधबोतेरसबंध जीवनाप्रदेशनेविषे अंतकर्मप्रदेशतेस्थितिबंध प्रकृति दीठनियतपरिमाणनोबांधवोतेप्रदेशबंध ४ उच्छेदां
गुलेच्यारगाउनोएकयोजनकह्योभगवंते अनुराधानक्षत्रनाच्यारताराकह्या पुर्वाषाढानक्षत्रनाच्यारतारा कह्या उत्तराषाढानक्षत्रनाच्यार तारा कह्या एणी

नंताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेननिर्वृत्तापारितापकी प्राणातिपातक्रिया प्रतीतेति । तथा काम्यन्ते अभिलष्यन्ते इतिकामास्तेषतेगुणाशपुद्गलधर्माः शब्दाद
यइतिकामगुणाः कामस्यवादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयइति तथा आश्रवद्वाराणिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि संवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपा
याःसंवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रवद्वारविपरीतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतःकर्मक्षपणात्तस्याःस्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावन्निर्जरास्थानानि
प्राणातिपातविरमणादीनि एतान्येवसर्वशब्दविशेषितानि महाव्रतानिभवंति तानिचपूर्वंसूत्रैरभिहितानि स्थूलशब्दविशेषितानि अणुव्रतानिभवंति नि

प० तं० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं सव्वाउमुसावायाउवेरमणं सव्वाउअदत्तादाणाउवेरमणं सव्वाउमेहु
णाउवेरणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं पंचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा रसा गंधा फासा पंचआसवदारा
प० तं० मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मत्तं विरई अप्पमत्तया

वीतिप्राद्देभिवी परप्राणने परितापयो ताडनादिकदुखनो उपजाववो ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राण
तिपातकी पंचमहाव्रतश्रावकनांवत नी अपेक्षायें घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कह्या तेकहेछे सर्वथकी मन वचन कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती
भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधें लोभें मृषा झूंठोबोल
बाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीव स्वामि गुरु अदत्तथकीविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथकी औदारिक

तदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रेर्यासमिति गमने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा

जंराख्यानत्वंपुनरेषांसाधारणमिति । आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रुपकरणपरिच्छदस्य निक्षेपणा

षासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति द्वि चत्वारिंशद्दोषवर्जनेनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः

वस्था पारिष्ठापनसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तथोच्चारस्य पुरीषस्य प्रश्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्ठीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेष्मणो

अकसाया अजोगया पंचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ मेहुणा उवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पंचसमिईउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडम

मैथुन नवभेदेवैक्रियमैथुनएव १८ भेदेमैथुनथकोविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचोथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहथीविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमोमहा

व्रत पांचकामगुण कामियेअभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलस्वभावतेकामगुण अथवा कामसदनतेहना दीपावक ते कामगुणकह्या तेकहेछे

शब्दतेसांभलवी रूपते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रवते कर्मआववानोउपाय तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेह

नेआश्रवद्वारकह्या तेकहेछे मिथ्यात्वतेविपरीतसद्दहणा तेहपापआविवानो उपाय १ एमअविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रो

धादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोआगमरोकवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्त्वतेशुद्धदर्शन १ वि-

रतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणूं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्ज्जरातेदेशथकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूंखपाव-

णं जूओकरिवो तेनायानककहितांउपाय तेनिर्ज्जराठाणकह्यापांचेभेदे तेकहेछे जीवमारिवाथकोविरमवोजसरिखो एहकर्मखपाविवानोउपाय १

जल्लस्यदेहमलस्य परिष्टापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिदोषपरिहारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-
दयोगतिस्थित्यवगाहोपयोगसर्गादिलक्षणास्थितिः सूत्रेषुउत्कृष्टादिविभागएवमनुगंतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ त
इयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापठमाएसुजेठा । साबीयाएकणिठियाभणिया ॥ तरतमजोगोएसो । दसवाससहस्सरय

त्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिई । पंचअत्थिकायाप० तं० धम्मत्थि काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनक्खत्तेपंचतारे प० पुणव्वसु

एकमृषावादवेरमणं २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ परिग्रहरोविरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवोतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-
चालतीसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवोतेईर्यासमिति १ निरवद्यवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभातपणीनूंलेवोतेएषणासमतिकही ३ । आदानक
हतांभांडमात्रउपकरणने मूंकतां समति पूंजीजोईलेवो जोईमूंकिवो तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्टा प्रश्रवण मूत्र खेल थूक सिंघाण नाकनींमल रिंट
जल्लमैलएतलापरठतांसमतितेस्थंडलदोषटालीपवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्तिकायअस्तिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्तिकायकहीये
तेकहेछे धर्मकहियेंचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलनेविषे अवकासदेवा
नोस्वभाव जीवास्तिकायउपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकह्या इ

पलियं१दोसार
णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदस ६ सत्तरेवअयराइं ॥ सोहम्मजावसुक्को । तदुवरिंइक्किक्कमारोवा ॥ ३ ॥
२साहिय३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउदहस७ सत्तरस८ सहस्सारे तदुवरिंइक्किक्कमारोवेत्ति तथावातंसवातमित्यादीनिद्वादशवाताभिलापेनविमानना

नक्खत्तेपंचतारे प० हत्थनक्खत्तेपंचतारे प० विसाहधणिठानक्खत्तेपंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवी
ए अत्थेगइआणंनेरइयाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्थेगइआणं नेरइयाणंपंचसागरो
वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणंपंचपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेग
इयाणंदेवाणं पंचपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई
प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पभं पभंतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्झयं वा

स्तनचत्रना पांचताराकह्या विशाखानक्षत्रनांपांचताराकह्याधनिष्टानक्षत्रनापांचताराकह्या इणीयरत्नप्रभापहिलीपृथवीनें केतलाएक नारकीनीं पांचपल्यो
पममध्यआउषूंकहियें तीजीवालुकापृथवीनेंविषे केतलाएकनारकीनो पांचसागरोपममध्यआउखोकहियें असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानींपांच
पल्योपमआउखोकह्यो भगवंतें सोधर्मईशान पहिले बीजेदेवलोके केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आउखोकह्यो तीजेसनत्कुमारमाहिंद्रचउथेदेवलोकनेवि
षेकेतलाएकदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआउषूंकह्यो भगवंते तीजेचउथे देवलोके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । वीजेंप्रतरे ४ ॥ वाताव
र्त्तनामके ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ण ६ । वातलेश ७ । वातध्वज ८ । वातशृंग ९ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए

मानिताल्पेवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमयतत्त्वसुबोधं नवरमिहलेश्या १ जीवनिकाय २ बाह्या २ ऽभ्यंतरतपः ४ समुद्घाता ५ वग्रहार्थानिस

त्राणि षट नक्षत्रार्थंविधिस्थित्यर्थानिषट्उच्छासाद्यर्थत्रयमेवेति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिदं। कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेश्या

यसिंगं वायसिद्धं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं

सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूडं सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव

माइंठिई प० तेणंदेवापचण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेसिणंदेवाणं पंच

हिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ सतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजे पंचहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव

अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ ॥ छलेसाउपन्नत्ता तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

ह १२ विमाने तथावली। सूर १। सुसूर २। सूरावर्त्त ३। सूरप्रभ ४। सूरकांत ५। सूरवर्ण ६ सूरलेश ७। सूरध्वज ८। सूरशृंग ९। सूरसिद्ध १०। सूरकू

ट ११। सूरोत्तरावतंसक १२। एह २४ विमानेदेवतापणेउपनाछे तेहदेवतानें उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआउखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचश्वा

मासे थोडोसासले घणोसासले नोवोसासमूके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेगये आहारनोअर्थउपजेछे केतलाएक संसारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे

सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये ससारसागरथकी सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति पांचमूठाणोसम्प्रत्त ॥ ५ ॥ छठोठाणोकहेछे। छलेश्याकही

शब्दःप्रयुज्यतइति तथाबाह्यतपः बाह्यशरीरस्यपरिशोषणेनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति। आभ्यंतरंचित्तनिरोधप्राधान्येनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति तथाछद्मस्थोऽकेव

पम्हलेसा सुक्कलेसा छजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस काए छव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाउ कायकलेसो संली णया छव्विहेअभिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणउ वेयावच्चं सज्झाउ झाण उस्सग्गो छद्माउ

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गथकीआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायं लेश्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनोपनोकृष्णलेश्या १। नीलासूडानें वर्णेतेनीललेश्या २। अलसीनाफूलसरीषोकापोतलेश्या ३। हींगलूपरेंल्यांसरीखा तेजोलेश्याजांणिये हरतालसरीषोपद्मलेश्या। ५। संखसारीषोउजलोशुक्ललेश्या ६। संसारमांहि छप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेछे तेकहेछे पृथवीकाय पृथवीमाटीकायसमूह १। एमज अपजलकायपाणी २। तेयकायअगनि ३ वायुकाय वायरो वनस्पतीकायतृणवृक्षादिक ५ त्रसकायबेंद्रियादिक पचेंद्रियलग छप्रकारे बाह्यशरीरने शोषेकर्मखपावे तेबाह्यतप तेहनोकरिवो तेहबाह्यतपकर्मकहिये तेकहेछे अणसण उपवासएकथकीमांडी छमासलगी उणोदरीउण पेटेजठिवो पूरोआरहानलेवो २। वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३। रसनोंपरित्याग आंबिलनिवी प्रमुखकरिवो कायशरीरे कृशतादितापलोचआतापनादि कनोंकरिवोसंलीनताअंगउपांगसंवरी अणशनादिकनोकरिवो छप्रकारेअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मकह्यो तेस

साणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणंछपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयंवाई सयंभू सयंभूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगंत वीरसेणियं वीरवत्तं वीरप्पभं वीरकंत वीरवन्नं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिद्धं वीरकूडं वीरुत्तरव डिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणंछसागरोवमाइंठिई प० तेणदेवाछण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं छहिवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ ॥

तीजोवालुकप्रभा पृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आऊखोंकह्यो। असुरकुमारदेवतानीं केतलाएकनीं छपल्योपमआऊखोकह्यो। सौध र्मईशान देवलोकने विषे केतला एकदेवतानी छपल्योपम आऊखोकह्यो। तीजेसनत्कुमार चोथे माहेंद्र देवलोके केतलाएकदेवतानो छसागरोपम आऊखो कह्यो। तीजेचोथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयवादी १। स्वयंभू २। स्वयंभूरमण ३ घोस ४। सुघोस ५। महाघोस ६। कष्टिघोस ७। वीर ८। सुवीर ९। वीरगत १०। वीरसेनिक ११। वीरावर्त्त १२। वीरप्रभ १३। वीरकांत १४। वीरवर्ण १५। वीरध्वज १६। वीरशृंग १७। वीरसिद्ध १८। वीरकूट १९। वीरोत्तरावतंसक २०। एहवेविमाने देवतापणे ऊपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो छसागरोपम आऊखोकह्यो तेदेवता छठे अर्द्धमासे एतले छठेपखवाडेसासो सासले षणोसासले उ चोलेवोतेऊसास नोचोमेहिवोतेनोसास तेंदेवताने छहजारवर्षे आहारनों अर्थजपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवनेआंतरे सीझस्ये

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेस्वयंभ्वादीनिविशतिविमानानीति ॥ ६ ॥ अथसप्तमस्थानकविव्रियते तत्रकंठं
नवरमिहभयसमुद्घातमहावीरोवर्षधरवर्षचोणमोहार्थानिचसूत्राणिषट् नचत्रार्थानिपंच स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीण्येवेति तत्रेहलोकभयंयस्मा

संतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजेबहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥
सत्तभयठाणा प० तं० इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलो
गभए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए
तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेभगवंमहावीरे सत्तरयणीउ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था स

वूझस्ये मूकासे भवमांहिथी सर्वदुखनो अंतकरिस्ये मोचजासे इतिछठोठाणोसंपूर्ण ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेछे सातभयनाठामकह्या तेकहेछे
स्वजातीयथकीभय उपजेतेइहलोकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यआश्रीउपजेते आदानभयवाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आक
स्मिकभय आजीविका जीवकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनोभय तेमरणभय अश्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअश्लोकभय सातसमुद्घातपद
नो अर्थछएठाणेकह्योछे-तेकहेछे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तेजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोकेवलीसमुद्
घाततेहकोइक केवलीच्यार अघातीयाकर्मखपाववाअर्थे केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलगें विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरे श्रमण तपस्वी भगवंतमहा

जातीयात् परलोकभयंयद्विजातीयात्आदानभयं द्रव्यमाश्रित्यजायते अकस्माद्भयंबाह्यनिमित्तनिरपेक्ष्यंस्वविकल्पाज्जातं शेषाणिप्रतीतानि नवरं मश्लो
कोऽकीर्त्तिरिति। समुद्घाताःप्राग्वत् नवरं केवलिसमुद्घातो वेदनीयनामगोत्राश्रयइति। तथा रत्नि विततांगुलिहंस्तइति जर्द्धोच्चत्वेनेतिहोत्याबभूवेति तथा

तवासहस्सपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमंते निसढे नीलवंते रूप्पी सिहरी मंदरे सत्तवासा प०
तं० भरहे हेमवंते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाउ स
त्तकम्मपयडीउ वेएई महानक्खत्तेसत्ततारे प० कत्तिआइआसत्तनक्खत्ता पुव्वदारिआ प० महाइआसत्तन

वीर सातरत्निविततांगुलहाथ रत्निकाहिये एतलेसातहाथऊंचापणेहुया। सातवर्षधरपर्वतकहियेभरतादिकक्षेत्र तेहनाधरणहारकह्या। मर्यादाकारीतेकहे
छे। भरतक्षेत्र हिमवंतक्षेत्र मर्यादाकारीतेलघुहिमवंतपर्वत हिमवतक्षेत्र हरिवर्षक्षेत्र मर्यादाकारी तेमहाहिमवत पर्वत हरिवर्षक्षेत्र महाविदेह मर्यादा
कारी रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकक्षेत्रमर्यादाकारी निषधनीलवंतपर्वत रम्यक ऐरण्यवतक्षेत्र मर्यादाकारीरूपीपर्वत ऐरण्यवतऐरवत क्षेत्र मर्यादा
कारी शिखरीपर्वत। पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारी मेरुपर्वत। जंबूद्वीपमांहिसातवासाकहिये सातक्षेत्रछै तेकहेछे भरतक्षेत्र मनुष्यनो १ हिमवतक्षेत्रय
गलियांनूं २ हरिवर्षक्षेत्रयुगलियांनूं ३ महाविदेहक्षेत्रचोथो कर्मभूमियामनुष्यनो ४ रम्यकक्षेत्रयुगलियांनूं ५ एरण्यवंतक्षेत्रयुगलियांनो ६ एरवतक्षेत्रमनुष्यनो ७
क्षीणसर्वंगापिक्षयगयोछे मोहनीकर्म जेहनो एहवाभगवंतपूज्ययतो मोहनीयकर्म वरजीनें सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १। दर्शनावरणीय २। वेदनी

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा त्यादी न्युत्तरदारिकाणीति सिद्धांतगतमिहतुमतान्तरमाश्रित्यकृत्तिकादीनिसप्तपूर्वद्वारिकादीनिभणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौतुबहुतराणिमतानि दर्शितानीहार्थ

क्खत्ता दाहिणदारिआ प० अणुराहाइआसत्तनक्खत्ताअवरदारिया प० धणिठाइआसत्तनक्खत्ता उत्तरदारि या प० पाठांतरेण । अत्तीयाइयासत्तनक्खत्ता प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्थेगइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प०

य ३ । आउखो ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेंवेदे भोगवें मघानक्षत्रना सातताराकह्या कृत्तिकाआदिलेईनें सातनक्षत्र पूर्वद्वारिकाकह्या पूर्वदिशिजाएद्वारने भलूंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकह्या । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकह्या । धनिष्ठादिक सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकह्या । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयेरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्यम आउखोकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषें नारकीनोउत्कृष्टोसातसागरोपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषें नारकीनो सातसागरोपमजघन्य आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषें केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुअत्थेगइयाणं देवाणंसत्तपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पे देवाणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा

सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिं देकप्पेउक्कोसेणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पेअत्थेगइ

याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा सम्मं समप्पभं महप्पभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणं

कुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तण्हं

अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आ

हारट्ठे समुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावसव्वदु

पाउखोकाहो । नीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कृष्टो सातसागरोपम आउखोकाहो । माहिंद्रचउथे देवलोके देवतानोउत्कृष्टो झाझेरोसातसागरोप

म आउखोकाहो । ब्रह्मपांचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपमआउखोकाहो । सनत्कुमारदेवलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ २ ।

प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्कुमारावतंसक विमान ८ । एआठविमाननेविषे जेदेवताउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टोसात साग

रोपम आउखोकाहो । तेहदेवता सातमें पखवाडे सासोसासले घणोसासलेवे नोचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहस्से सातहजारवर्षें आहारनो अ

भिलाषाउपजे । केतलाएकभव्यजीव जेहसातभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति सातमोठाणोसमस्तं ॥ ७ ॥

इति स्थितिसूत्रेसमाद्दीनिग्रष्टौविमाननामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकव्या ख्यायते। सुगमंचैत नवर मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यसूत्रजंबू शाल्मलीजगतीकेवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीणीति। तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनितान्येव मदप्रधानतयादर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि जात्यामदोजातिमदएवमन्यान्यपि अथवामदस्यस्थानानितान्येवाह जाइमएइत्यादिशेषंतथैव तथाप्रवचनस्यद्वादशांगस्य तदाधारस्यवा संघस्य मातरइव प्रवचनमातरः ईर्यासमित्यादयोद्वादशांगेभिहिता आश्रित्य साचात्प्रसंगतोवाप्रवर्त्तंते भवतिचयतो यत्प्रवर्त्तंते तस्यतदाश्रित्यमातृकल्पतेति संघपचेतु यथा शिशुर्मातरममुंच नात्मलाभंलभते एवंसंघस्तामसुंचत्संघत्वंलभते नान्यथेतोर्यासमित्यादीनांप्रवचनमातृकत्वमेवेति तथा

रकाणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अठ्ठमयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए अठ्ठपवयणमायाउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण

हिवे आठनीठाणोकहैछै। आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या। तेकहैछै जातिमदजातितेमातृपच तेणेकरीनद अभिमान तेजातिमद १। इमकुलजेपितृपचतेणेकरीमद तेकुलमद २। बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३। रूपतेसौंदर्यपणो ४। तपतेछठ आठमादिक ५। श्रुतजेशास्त्र घणोभणे तेणेकरीमद ६। लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७। ऐश्वर्यतेठकुराई ८। यह आठमदकह्या। आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनूं आधारतेसंघ तेहने मातासरिखी माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये। तेकहैछै ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचाले तेईर्यासमिति १। भाषानिवद्यबोलेते भाषासमिति २। ४२ दूषणटाली आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३। उपकरणपूंजीलेवी मूंकवीते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजीनिर्दोष स्थंडिले

रणीनाविवक्षानुमतव्येति सुभेत्यादिश्लोकः तथाअष्टौनक्षत्राणि चन्द्रेणसार्द्धंप्रमर्दं चन्द्रोमध्येनतेषांगच्छतीत्येवंलक्षणंयोगसंबंधंयोजयन्ति कुर्वन्ति अनार्षंऽभिहि
तं श्लोकाश्रयम् पुणव्वसुरोहिणीचित्ता महाजेठ्ठणुराहकत्तियविसाहा चंदस्सयजोगत्ति । यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगीन्यपिकादाविज्ञपन्ति
यतीलोकश्रीटीकाकृतोक्त। एतानिनक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेणदक्षिणेनच युज्यन्ते कदाचिच्चन्द्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथाचिरादीन्येकादशविमान

अठ्ठनखत्ताचंदेणं सद्धिंपमद्दंजोगंजोएंति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेठा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठ्ठपलिओवमा
इ ठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणंअठ्ठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थे
गइयाणं अठ्ठपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अठ्ठपलिओवमाइंठिई प०
बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अठ्ठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अच्चिं १ अच्चिमालिं २ वत्तिरोयणं

श्रीधर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनक्षत्रचंद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगी साथवारे तेकहेछे । कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्रा ५
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो आठपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीने विषेकेतलाएक
नारकीनो । आउसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोकनेविषे केतलाएकदेवतानो

नामानीति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावबोधम्। नवरमिह वग्गगुप्ति १ तदगुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन ३ पार्श्वार्थसूत्राणां चतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थंच यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनावरणार्थंषतुष्टय खित्याद्यर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपाया: नोस्त्रीपशुपंडकै: संसक्तानि संको

पभंकरं ३ चंदाभं ४ सूराभं ५ सुपइट्ठाभं ६ अग्गिच्चाभं ७ रिट्ठाभं ८ अरुणाभं ९ अरुणुत्तरवडिंसगं वि
माणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा अट्ठण्हंअद्धमासाणं
आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं अट्ठहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुपज्जइ
संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे अट्ठहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥
नवबंभचेरगुत्तीओ प० तं० नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्ताभवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता भ

आठपल्योपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानों आठसागरोपमआउखोकह्यो। पांचमेदेवलोकें जेदेवता अर्चि १। अर्चिमाली २। वैरोचन ३। प्रभंकर ४। चद्राभ ५ सूराभ ६। सुप्रतिष्ठाभ ७। अग्निराध ७ रिष्टाभ ८। अरुणाभ १०। अरुणोत्तरावतंसक ११। एम ११ विमाने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाडे श्वासोश्वासलेजं चोसासले नीचोस्वासले नीचोस्वाससूके तेहदेवताने आठेवर्षसहस्त्रे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जेआठभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदु:खनो अंतकरीस्ये। इति आठमोठाणोसमत्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेछे। नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिनीपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

र्णानि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिता भवतीत्येवा १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया२ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा

यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिंद्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो

कयिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टैवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी। नो

पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाणं यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी। नोपूर्वरत पूर्वक्रीडित मनुस्मर्त्ताभवति रतंमैथुनंक्रीडितंस्त्रीभिः सहतदन्याक्री

डितिसप्तमी। नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगंधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोश्लोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादंच

वइ नोइत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता नो पणीयरसभोई नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलिआइं समर

ते कहैछे। नही स्त्रीपशुपंडक संसक्त व्याप्तशयनपर्यंकादिक आसन ते बाजोटादिकसेवितानहुयें। स्त्रीनीकथावार्तानकहे। स्त्रीना समुदायने सेवेनही

स्त्रीना इंद्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखें एकाग्रचित्तध्यायेंनही। प्रणीतरसभोजी नहोय गलत्स्नेहरसबिंदुजिमेनही पाणीसरस भोज

न अधिकमात्राएअधिकजीमे नहीं बत्रीसकवलउपरांत जीमेनही स्त्रीने पाछल्यासंभोगपूर्वक्रीडा संभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते

अनुरागीथईनसांभले एमज रूडारूपजोवे नही रूडागंधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरें न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्मानी श्लाघा नवांछे एतलेश्लं

मोसातसौख्य प्रतिबद्धयापि भवति सातासातवेदनीया दुदयमाप्य प्रीयाल्लौख्यंतत्तथा अनेनच प्रथमसुखस्य व्युदास इतिनवमी
नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । मोसातसौख्य प्रतिबद्धयापि भवति सातासातवेदनीया दुदयमाप्य प्रीयाल्लौख्यंतत्तथा
इदंच व्याख्यानंवाचनाद्वयानुसारेणक्ततं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तत्रभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि
चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंध प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नक्षत्रं साधिका नवमुहूर्त्तांश्चंद्रेण सार्द्धंयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशो
त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्ठिभागैः षट् षष्ठ्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्ठिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तत्रोत्तर

नोसिलोगाणुवाई नो इत्तान्नवइ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोगंधाणुवाई नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाई
नोसिलोगाणुवाई नो
इत्तान्नवइ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोगंधाणुवाई नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाई नोसिलोगाणुवाई नो
सायासोक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरगुत्तिउ प० तं० इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणंसेवणया
जावसायासुक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिन्ना लोगविजउ सीउसणिज्जं सम्मत्तं
आवंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुत्तं महपरिन्ना पासेणंअरहापुरिसादाणीए नवरयणीउ उड्ढ उच्चत्तेणंहो

गार नकरे साता सुखनेंविषे प्रतिबद्ध नहोयें न डूबीरहै नवब्रह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहै तेकहैछे । स्त्रीपशुपंडके संसक्तव्याप्तजे शय्यापल्यंका
दिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाछलया नवबोल वखाण्याछे ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिथाय नउमूंबोले जेसातासुखनेविषे
प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कह्या तेकहैछे । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ सम्य
क्त ४ । आवंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोहाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधाननवरत्नि

॥ बहुसमरमणिज्जाओ इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽस्यतस्माद्भूमिभा

स्यांदिशि स्थितानि दक्षिणाशास्थित चंद्रेण सहयोगमनुभवंतीतिभावः उवरिल्लेत्ति उपरितनं ताराख्पं तारकजातीयं चारंभ्रमणं चरतिकरोति

गात्तेपर्वतापेक्षया नापि स्वाचारापेक्षयेति तात्पर्यं आबाहाएत्ति अतरेकत्वेतिशेषः नवमुखेषु जगतीरध्रेभित्येनैव तावत्प्रमाणाः ज

नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पचयोजनसत्कामत्स्याः सभवति तथा नदीमुखेषु जगतीरध्रेभित्येनैव तावत्प्रमाणाः ज

जंबूद्दीवेणंदीवे अभीजियाइयानवनक्खत्ता चंदस्सउत्तरेणंजोगं

जोएइ तं० अभीजिसवणोजाव भरणी इमीसेणरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ नवजो

यणसए उड्ढं अबाहाएउवरिल्लेताराख्वे चारचरइ जंबूद्दीवेणंदीवे नवजोयणियामच्छापविसिंसुवा ३ विजय

स्या अभीजिनक्खत्तेसाइरेगेनवमुहुत्ते चंदेणंसद्धिंजोगंजोएइ

नवहाथ ऊंचपणे देहहुया अभीचनक्षत्रथाकेरी नवमुहूर्तलगे चद्रमासाथेंयोग जोजे सवधकारे अभीचिथकी मांडीनव नक्षत्र चद्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेसं

बंधकरें चाले तेकहैछे। अभीचि १। श्रवण २। धनिष्ठा ३। शतभिषा ४। पूर्वभाद्रपद ५। उत्तराभाद्रपद ६। रेवती ८। अश्विनी ८। भरणी ९। एनव

नक्षत्रजाणिवा। एणोयेरत्नप्रभा पहिलो पृथिवीनो घणोसमो घणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनोऊपलयोभाग तेहथकी नवशतयोजनऊंचे आंतरेएतले पृथि

वीथकी नवशतयोजनऊंचो जइये तिहांऊपिलो ताराख्प एतलेशनीश्वरनोतारोजं वोछे भ्रमणकारेछे पृथिवीथकी सातसेंनेऊयोजन तारामंडलछे। ७९०

योजने तारा १०। योजनेसूर्य ८०। योजनेचंद्रमा ४। योजनेअठ्ठावीस नक्षत्र ४ योजनबुधनोतारो ३ योजनमगल ३ योजनशनैश्वर सर्वमिली नवसेयोजन

थया। जंबूद्वीपमांहीं नवयो जनलांबामच्छपेसेछे लवणसमद्रमांहि पांचसेयोजननांमच्छछे एणेजगतीनेछिद्रे नदीमुखें नवयोजननामच्छ जंबूद्वीपमांही

गतीरंध्री चित्लेनएतावानेव प्रवेशइति लोकानुभावोवायमिति विजय द्वारस्यजंबूदीपसंबंधिनः पूर्वदिश्यवस्थितस्य एगमेगाएत्ति एकैकस्मिन् बाहाएत्ति बाहौ ॥

स्सणंदारस्सएगमेगाए बाहाए नवनवभोमा प० वाणमंतराणं देवाणं सभाउसुहम्माउनवजोयणाइंउड्ढं उ
च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनवउत्तरपगडीउ प० तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला
थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पभाएपुढ
वीए अत्थेगइयाणंणेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवसागरो
वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थे

खाडोमांहीआवे जंबूद्वीपना विजयद्वारने एकेका बाहानेपासे नवनवभोमाजगरछे तथा उत्तठामकह्योछे वाणमंतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयोजन ऊंचीऊंप
पणेंकहीजाणवी। दर्शनावरणीयबीजोकर्म तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहेछे सुखें जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३
चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४। थीणद्धी अर्धवासुदेवनो बलहुवे ५। चक्खुदंसणकहियें आंखतेहनो आवरण पडल तेचक्षुदंसणावरण ६। चक्षुविनाशेष
थाकतां च्यारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचक्षुदंसणावरण ७। अवधि दंसणावरण ८। केवलदंसणावरण ९। एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नार
कीनो नवपल्योपम आउखोकह्यो। चउथी नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो नवसागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपल्यो
पमआउखोकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवपल्योपम आउखोकह्यो। ब्रह्मदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम

समाधानान्यथा भेदाना चित्तसमाधिस्थानानि तत्र धर्मो जीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादयः स्वभावास्तेषां चिंतानुप्रेक्षा धर्मस्य वा श्रुतचारित्रात्मकस्य सर्व
ज्ञभाषितस्य परिज्ञानादिनिगदितधर्मस्य: प्रधानोयमित्येव चिंताधर्मचिंतावा अव्योवत्यमाणसमाधिस्थानांतरापेक्षया भिन्नलपार्थः सइति यः पाव्याण भागो
तस्य साधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वस्मिनादौऽतीतेकाले ऽनुपजाता तदुत्पादेशयार्थपुद्गलपरावर्त्तान्ते आगामस्यावश्यंभावात् समुत्पद्येत जायेत सर्वा प्रयोजनाय चेयम
तपाह सर्वं निरवशेषंधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगोत्पादादिकं श्रुतादिरूपवा जाणित्तए अवरिज्ञयाज्ञातु ज्ञात्वा च प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय
धर्मं तदिदं तुभिदमु क्तंभवति धर्मचिंताधर्मज्ञानकारणभूता जायतइति प्रपंच समाधेरुत्पत्तिकारणस्य स्थानमुक्तमप्रमाणमेव भवतीति प्रथमं तथास्वप्नस्य निद्रावशवि
ज्ञानस्य दर्शनसंवेदनं स्वप्नदर्शनं तत्रावाप्तिमाणमाप्ति रूपकासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथाभगवतो महावीरस्या ऽस्थिकग्रामे शूलपाणियक्षोपसर्गावसाने किंप्रयो
जनंचेदं मित्याह आहातच्चं सुमिणंपासित्तएत्ति यथा येनप्रकारेणतथ्यः सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थः तं स्वप्नं स्वप्नफलमुपचारात्तं द्रष्टुं ज्ञातुं प्रबन्धंभाविनोऽस्यादेः
शुभस्य फलस्यदर्शनायसाधोः स्वप्नदर्शनमुपजायत इतिभावः क्वचित्सुजाणंतिपाठ स्तत्रावितथस्वप्नस्य यावि सुयानंसुगतिं द्रष्टुं ज्ञातुं सुज्ञानं वा भाविशुभार्थपरि

संधम्मंजाणित्तए सुमिणदंसणेवासे असमुप्पन्नपुब्वेसमुपज्जिज्जा अहातच्चंसुमिणंपासित्तए सन्निनाणवासे

गाथि १ तथास्वप्ननो देखवो जेस्वप्नदीठे भवनामाणानो गामिक्योसे तेवा दीठे असमुत्पन्नपूर्वज एहवो पूर्वदीठोनथी तेस्वप्नमो स्वप्नप्रयोजन पछातथं सुमिणंपासित्ता १०
ए यथातथ्यज्ञानही एहवोस्वप्ननो फलजाणि वाने अर्थ भवसमोचजाणकार शुभस्वप्नदेखो चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीरस्वामीए छेहलीरात्रिये
स्वप्नपाम्या प्रभाते श्रीलप्रामजपनूं एहवोजूं समाधिठाणू २ । सन्ना ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितनें संज्ञीकहिये तेहनूंज्ञान तेजातिस्मरण

च्छेदसंवेदितुमिति कल्याणसूचका वितथस्वप्नदर्शनाच्चभवति चित्तसमाधिस्थानमिदं द्वितीयं तथासंज्ञानंसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाद दीर्घकालिकोपदे शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञायाद्येति सायस्यास्ति ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञानं सज्ञिज्ञानं तच्चेहाधिकृतसूत्रान्यथा सूपपत्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुव्वभवेसुमरिएत्ति पूर्वंभावात्स्मर्त्तुंस्मृतपूर्वं भवस्यसवेगात्समाधि रुत्पद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शन वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्वाद्दर्शनंददति किंफलमि त्याह दिव्यांदेवर्द्धिप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यांदेवद्युतिंविशिष्टांशरीराभरणादिदीप्तिंदिव्यं देवानुभावंउत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावं द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे वदर्शनाच्चागमार्थेषुश्रद्धधानाद्यं धर्मेबहुमानश्चभवति ततश्चित्तसमाधिरितिभवति देवदर्शनचित्तसमाधिस्थानमितिचतुर्थं तथाअवधिज्ञानवासेतस्यासमुत्पन्नपू

समुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा पुव्वभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा दिव्वं देवड्ढिं दिव्वं देवजुत्तं दिव्वंदेवाणुभावंपासित्तए ओहिनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंजाणित्तए ओहिदं

कहिये से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्वं पूर्वेंउपनूंनथी सेइ अर्थेंउपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थें पूर्वभवसभरे विशेष संवेगउपजे एत्रीजूंचित्तसमाधि स्थानवा ३ तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्वं पूर्वेंउपनो नथी तेहजेने उपजे ते सेंअर्थेंउपजे। दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानो अनुभाव वैक्रिय करिवानी सामर्थ्यइ देखवानेअर्थें देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु इ एहचउथूठाणूं ४। अवधिज्ञान तेहजेने पूर्वेंनथी उपनूं तेहजेने उपजे अवधिज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थें विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एणां

भवतिचविशिष्टज्ञानाश्चित्तस

वंसमुत्पद्येतकिमर्थंमतआह मणोगतेजाणित्तएइत्याद्य अवधिनामर्यादया नियतद्रव्यक्षेत्रकालरूपेण लोकंज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थः मणोगतेभावेजाणित्तए अ

माधिरिति पंचमतदिति । एवमवधिदर्शनसूत्रमपीतिषष्ठं । तथा मनःपर्यवज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येतकिमर्थंमतआह समुत्पद्ये

ढ्ढतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनांपंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानांमनोगतान् भावान्ज्ञातुमेतद्ज्ञानायेत्यर्थः इतिसप्तमं । तथाकेवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्ये

त केवलंपरिपूर्णंलोक्यतेदृश्यते केवलालोकोनेनेति लोकालोकस्वरूपं वस्तुतत्त्वंज्ञातुं केवलज्ञानस्यच समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इह्वामनस्यतया केवलि

नश्चित्तचैतन्यमयस्येय मित्यष्टमं । एवंकेवलदर्शनं सूत्रंनवरंद्रष्टु मितिविशेष इतिनवमं । तथाकेवलिमरणंयाम्नियतेक्रुर्यात् इत्यर्थः किमर्थंमतआह सर्वदुःखप्र

सणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा उहिणालोगंपासित्तए मणपज्जवनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जि

ज्जा जावमणोगएभावेजाणित्तए केवलनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा केवलं लोग जाणित्तए केवलदं

सणावासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा केवललोयंपासित्तए केवलिमरणंवामरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए ।

चमूंठाणूं ५ अवधिदर्शन सेतेहनेपूर्वें उपनूं नथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेंउपजे अवधिदर्शनेकरी लोकस्वरूपदेंखवाने अर्थें एछठ्ठंठाणूं ६ मनपर्यवज्ञानसेजेहने

पूर्वें उपनूंनथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेंउपजे अढाईद्वीपमांहे सज्ञी पंचेंद्रियनो मनोगतभावजाणे एहवूंज्ञानपामी चित्तसमाधिहोय एसातमूंठाणूं ७ केव

लज्ञान सेजेहने पूर्वेंउपनूंनथी तेहजेहने उपजवाने अर्थें केवलज्ञानलो काजाणिवाने अर्थें एह चित्तसमाधिनूं आठमूंठाणूं ८ केवलदंसण सेजेहने पूर्वेंउपनूंनथी

तेह जेहने उपजवाने अर्थेंउपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थें एहचित्तसमाधि नवमूंठाणूं ९ केवलीनेमरणे एतलेकेवलज्ञान उपार्जीनेमरे तेसे अर्थें सर्वदुःख

हाणायेति इदंतुकेवलिमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति। तथाअकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुक्षाति कल्पवृक्षाः।
उवभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उवत्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिंगत्ति भाजनदायिनः तुडियंगत्ति तुर्यांगसंपादकाः

मंदरेणपुव्वएमूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० अरिहाणं अरिठनेमीदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था क
ण्हेणंवासुदेवे दसधणुइंउड्ढंउच्चत्तेणं होत्था रामेणंबलदेवेदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था दसनक्खत्ता नाणवुड्ढि
करा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो। तिन्निअपुव्वाइमूलमस्सेसा। हत्थोचित्तायतहा। दसवुड्ढिकरायना
णस्स १ अकम्मभूमयाणंमणुआणं दसविहारुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुडि

यवकरिवानेअर्थे ए इकेवलोमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरुपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेपिहुलपणेकह्यो अरिहंतअरि
ष्टनेमी बावीसमोतीर्थंकर दशधनुषउंचपणेहुया कृष्णवासुदेव नवमो तेहनो देहदशधनुषउंचोउंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषउंचा उंचपणेहुया
दशनक्षत्र ज्ञाननां वृद्धिकरणहार कह्या भगवंते तेकहेछे मृगशिर १। आर्द्रा २। पुष्य ३ त्रणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४। पूर्वाषाढ ५। पूर्वाभाद्रपद ६। मूल ७
आस्लेषा ८। हस्त ९ चित्रा १०। एह दशनक्षत्र ज्ञानने वधारेएह मांहि भणवाबेसे तो काहीं विघ्नउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया
नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनेत्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ क्षेत्र युगलियानां सास्वतांछे। तिहांनां माणसें युगलियाने दशप्रकारेवृक्ष एतले कल्पवृक्ष।
उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आवीरह्या थकाभोग्यआवे वांछापूरवे एहवा कह्यातेकहेछे। मत्तांगका मद्यनाकारणभूत जाणिवा १ भाजनदातार २

दीवत्ति दीपशिखाः प्रदीपकार्यकारिणः जोइत्ति ज्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्ररसाभोजनदायिनः मणंगात्राभरण ॥ टीका

दायिनः गेहाकाराः भवनलेनोपकारिणः अनग्नलसवस्चल तद्वतुलादनग्नाइति घोषादीन्येकादशविमाननामानीति । अथैकादशस्थान तदपिगतार्थं नवर ॥ मूल

ऋंगा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिऋंगा गेहागारा ऋनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दशजोयणसहस्साइठिई प० इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए ऋत्थेगइ

ऋाणं नेरइऋाणं दसपलियउवमाइठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ

वीए ऋत्थेगइयाण नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइ

याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० ऋसुरकुमाराणं देवाणं ऋत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा ॥

वाजित्रना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ७ घरनेकामआवनार ८ वस्त्रना

दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो

दशपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकावासा कह्या । चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कृष्टो दससागरोपमो

आउखोकह्यो । पांचमो धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दससागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनूं केतलाएकनूं जघ

न्य दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । असुरेंद्र चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्क

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं भोमिजाणं अत्थेगयाइणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० वायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प० वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिउवमाइठिई प०बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाण जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं

ष्ट जघन्य आउखो एकसागरोपम झाझेरोछे। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपल्योपमकह्यो। बादर प्रत्येक वनसतीकायनो उत्कृष्ट दस सहस्रवर्ष आउखोकह्यो भगवते। वानवतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दशसहस्रवर्ष आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतनो दशपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमे ब्रह्मदेवलोके केतलानो उत्कृष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो। छठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य दससागरोपम आउखोकह्यो। पांचमे देवलोके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर ५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंगलावर्त १० ब्रह्मलोकावतसक ११ एणेविमाणे देवतापणेउपना तेहनो देवतानो उत्कृष्टो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवंते। तेहदेवता दशपखवाडे सा

माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिभोजिनः अबद्धकच्छस्य पंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तंच अट्ठमिचउद्दसी सुपडिमट्ठाएगराईया। पचाउं असिणाणवि
यडभोई मउलियडोदिवसबंभयारीएय। रत्तिपरिमाणकडो पडिमावज्जोदिसुत्ति ५। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि
वर्जकः यावित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तीत्यनिशादी वियडभोईत्ति विकटे प्रकटप्रकाशेदिवानरात्राविर्त्यथः दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुंक्तेऽमुनावस्य
वहरतीति निकटभोजी मोलिकडेत्ति अबद्धपरिधानकच्छइत्यर्थः षष्ठीप्रतिमेतिप्रक्रतं अयमत्रभावः प्रतिमापंचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या
वत्षष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरूपादिप्रतिज्ञानात्प्रत्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः श्रावकः सप्तमीप्रतिमेति
प्रक्रतं इयमत्रभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरंभः पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि
ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञातः आष्टोऽष्टमीप्रतिमेति। इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जन मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति
तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञातः श्रावको नवमीति भावार्थश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरे रप्यकारयतो

री रत्तिपरिमाणकडे दिवाविराउविबंभयारीच्यासिणाई विच्छ्रओई मोलिकडे सचित्तपरिन्नाए आरं

भोजी दिवसेजिमे मोलिकडतनथी बांध्योपहिरणानो काछजेणेमासछलगे छट्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पच्चक्खाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा
रकारे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलचणते जेणेपरिज्ञात पच्चख्योते आरंभपरिज्ञात श्रावक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेख्या
४ रंभनेविषे परिज्ञात पच्चखाणछे जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा श्रावककहिये एतलेनवमासलगे परपाहिं काममकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेश्रावकने निमित्ते उद्देसी

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमेति। तथाउद्दिष्टं तमेवश्रावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ठ भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेतिप्रकृतं इहायभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधाकर्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुण्डितशिरसः शिखावतोवा केनापिकिंचिद्गृहव्यतिकरे पृष्टस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमीप्रतिमेति। तथा श्रमणेति निर्ग्रन्थसद्वेयस्तदनुष्टान करणात् सश्रमणभूतः सा धुकल्पइत्यर्थः चकारःसमुच्चये अपिसंभावनेभवति श्रावकइतिप्रकृतं हेश्रमण हेआयुष्मन्इति सुधर्मस्वामिना जंबूस्वामिन मामंत्रयतोक्त मित्येकादशीति। इहचे यभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलोचस्यवा गृहीतसाधुनेपथ्यस्य ईर्यासमित्यादिकं साधुधर्म मनुपालयतो भिक्षार्थंगृहिकुल प्रवेशेसतिश्रमणो पासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षांदेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नश्रमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासन् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरेत्वेवंवाचना दसणसावएप्रथमा कयवयकंद्वितीया। कयसामाइए तृतीया। पोसहोववासनिरए चतुर्थी। राइभत्तपरिन्नाए पंचमीसचित्त

न्नपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिठभत्तपरिन्नाए समणभूएआविन्नमइ समणाउसो लोगंताउ इक्कारसएहिं एक्का

भातकरी तेजेणेपरिज्ञात पच्चख्यो तेउद्दिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगें दशमोप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाएं पाछिली २ प्रतिमानोकिरिया साथलेता जइये एतलेइग्यारमी प्रतिमाएंश्रमण भूतइए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले क्षुरमुण्डितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवी जीमे मासइग्यारलगें इग्यारमीप्रतिमा साधुनोवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारेकहियेमुझश्रमणोपासकने भिक्षाद्योकोणेकपूछ्योथोको कहेहूं श्रावकछूं एतलेइग्या रमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमन्त्रेछे हेआयुष्मन् चिरंजीवी सांभलि लोकनाछेहडाथकी इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेयोजनेश्रावा

परियाएपढो दियाबंभयारी राओपरिमाणकडेसत्तमी दियाविराओवि बंभयारी। असिणाणपयाविभवति वोसट्ठकेसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिन्नाएनवमी
उद्दिठ्ठभत्तवज्जएदसमी समणभूएयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्तुआरंभपरिज्ञातइतिनवमी प्रेष्यारंभपरिज्ञातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः
श्रमणभूतश्चैकादशीति तथा जंबूद्वीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनकत्वेतिशेषः
ज्योतिषज्योतिश्चक्रचारपरिभ्रमणं। चरत्याचरति तथालोकांतात् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एक्कारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित
यावत्त्वेतिशेषः ज्जोतिसतेति। ज्योतिश्चक्रपर्यंतः प्रज्ञप्तइति इदंचवाचनांतरं व्याख्यात उक्तंच एक्कारएक्कवीसा सयएक्काराहियायएक्कारा। मेरुअलोगावाहे
जोइसचक्कचरइत्ति। अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकद्वय व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतित्तिमक्खायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

रेहिंजोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसाहिं जोयणसए
हिं जोइसंचारंचरइ समणस्सणंभगवओमहावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गि
भूई वायभूई वियत्ते सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे मूलेनक्खत्तेएक्कारसतारे प०

धायेपश्नतेकहतांकह्यो भगवते। एतलेअलोकाथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्ररह्योछे। ज्योतिषनोछेहडोकह्यो भगवंते। जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोचो
पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिषचक्रचारचरे भ्रमणकरे। श्रमणने भगवंतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर
णहारहुया। तेअनुक्रमे कहेछे आगले। इन्द्रभूति १। अग्निभूति २। वायुभूति ३। व्यक्तनामे ४। सौधर्मा ५। मंडित। ६। मौर्यपुत्र ७। अकंपित ८। अच

द्यमर्थो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपव्वए धरणितलाओसिहरतलेएक्कारस ॥
भागपरिहीणे उच्चत्तेणंपन्नत्ते। अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कंभापेक्षया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्स
उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रश्नः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततश्चोच्चत्वेनांगुलेगतेंगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एवमेकादशस्वं
गुलेष्वंगुलंहीयते एतेनैवन्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततोनवनवत्यांयोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयंते। ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ
शिखरेइति अथवा धरणीतलाद्धरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह
उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतेर्हीनोमूलं विष्कम्भापेक्षया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कम्भ

हेट्ठिमगेविज्जयदेवाणं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जविमाणसतंभवइत्तिमक्खायं मंदरेणंपव्वए धरणितलाउसिहरतले ॥

लभ्राता ८। मेतार्य १०। प्रभास ११। मूलनक्षत्रना इग्यारताराकह्या नवग्रैवेयकमानमाहें सघले हेठलीत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारअ
धिकएकसो विमानभवनछे भगवंतेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानछे तिहांलगे विखंभनी अपेक्षाए एकारसभाग ॥
परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलऊंचा बडीये तिहां विखंभपणे एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार
गाऊयेगाऊ हीनकरिये। इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरा। पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये। इमकरता नेउंसहस्र योजने ऊंचोवडिये
तिहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन ऊगरां। पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो ऊण्डोभूमिमध्ये नेउंसहस्र भूमिथकी ऊंचोस

॥ टीका

॥ मूल

स्येति ब्रह्मादीनिद्वादशविमाननामानि। द्वादशस्थानमथतत्त्वसुगमं। नवरंस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागिकादशसूत्राण्याह। तत्रभिन्नूर्णांविशिष्ट संहननश्रुतवतां प्रति

एक्कारसन्नागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं एक्कारसपलिउव
माइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं
अत्थेगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमा
इंठिई प० लंतकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्प
भं बंभकंतं बंभवण्णं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिगं बंभसिठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताएउववन्ना
तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाएकारसराहं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ ॥

वेंमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत। मूलेदससहस्र पिहुलो। शिखरनेविषे एकसहस्र पिहुलो जाणिवो। एहअर्थ श्रीमहावीरें सुधर्मास्वामी पांचमे गण
धर आगले वखाण्यो। एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। पचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतला
एक नारकीनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतीनो केतलाएक देवतानो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोक
नेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छठेदेवलोकें केतलाएक देवनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। छठेदेवलोकें जेहदेवता
ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिद्ध १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माश्रभिग्रहाभिक्षुप्रतिमा तत्रमासिक्यादयः सप्तमासिकान्ताः सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिर्ज्ञेयेति तथासप्तसप्तमरात्रिंदिवान्याहो

स्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसएहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआजवसिद्धि आजीवा एक्कारसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंक रिस्संति ॥ ११ ॥ बारसभिक्खुपडिमाउ पन्नत्ता तंजहा मासिआभिक्खूपडिमा दोमासिआ भिक्खूपडिमा तिमासिआभिक्खूपडिमा चउमासियाभिक्खूपडिमा पंचमासियाभिक्खूपडिमा छमासियाभि क्खूपडिमा सत्तमासियाभिक्खूपडिमा पढमासत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा दोच्चासत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा त

ने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवताने इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता इग्यारे पखवाडे अर्द्धमासे स्वासोस्वास घणोले ऊंचो स्वासले नीचोस्वास मूंके तेहदेवताने इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थ वांछाउपजेछे। संसारमाहें केतलाएक भव्यजीव जेह ग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सी झस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये। इतिइग्यारमुं ठाणुंसमाप्तं ॥ ११ ॥ हिवे बारमो अधिकार लिखियेछे। भिक्षु उत्तमसंहननने धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वनूं त्रीजूंवस्तु तेहनो पारगामीहोय। उत्कृष्टो दसपूर्व कोईएकगुरुनी आज्ञा मांगी गछमांहि पिणहोइ महासत्वनो धणीजे यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे। पहिली भिक्षुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनो एकदाथीले एकमासदीठ भातपाणी नी एकेकदाती वधारे सातमासलगे सातमेंमासे सातसात भातपाणीनीदातीले लवणखड मात्रदाती कहिये १। बीजी प्रतिमा बिमासिकी २। त्रीजीप्रति

निकाचनंछंदनं निमंत्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्योपध्याहारैः शिष्यगणप्रदानेनस्वाध्यायेनच सम्भोगिकं निमंत्रणशुद्धः शेषंतथैव तथाअब्भुट्ठाणेतियावरेत्ति अभ्यु
त्थानमासनत्यागरूपमित्यपरं सम्भोगासम्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राभ्युत्थानं पार्श्वस्थादेःकुर्वं स्तद्विसम्भोग्यउपलक्षणत्वाच्चाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राघूर्णकग्लानाद्यव
स्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवंप्रश्नलक्षणं । तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिंवापृथग्भावलक्षणं कुर्वन्न
शुद्धो सम्भोग्यश्चाप्येतान्येवंयथागम्यं कुर्वन्नशुद्धः सम्भोग्यएवेति तथाकिइकम्मस्सयकरणेत्ति कृतिकर्मवन्दनकन्तस्य करणंविधानं तद्विधिनाकुर्वन्शुद्धः इतरथा
तथैवासम्भोग्यस्तत्रचायंविधिर्यः साधु र्वातेनस्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्तः ससूत्रमेवास्खलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तशिरोनयनादियच्छक्नोति तत्क
रोत्येवंचाशठप्रवृत्तिर्वदन विधिरितिभावः वेयावच्चकरणेइयत्ति वैयावृत्त्य माहारोपधिदानादिना अङ्गमर्दनादि मात्रकार्पणादिना अधिकरणोपशमनेनचोपष्टं
भकरणं तस्मिंश्चविषयेसम्भोगोभवतीति । तथासमोसरणंति जिनस्नपनरथानुयानपट्टयात्रादयोबहवः साधवोमिलन्ति तत्समवसरणं इहचक्षेत्रमाश्रित्यसाधूनां
साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येप्यवग्रहाउपलक्षितास्तेचानेके तथा वर्षावग्रह ऋतुबद्धावग्रहो वृद्धवासावग्र
हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रहः प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्क्षेत्रंवर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपत्तृणादिभिः साधुभिर्भिन्नगच्छस्थैरनुज्ञाप्यते ससाधारणोयत्तुक्षेत्रमे

करणे वेञ्जावेच्चकरणेइ समोसरणं संनिसिज्जाय कहाएअपबंधणे दुवालसावत्तेकितिकम्मे प० तं० दुउणयं

गी ४ । संभोगी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसंभोगी ५ निकाचन निमंत्रण माहोमांही शिष्यउपाध्यायादिकै करतोशुद्ध ६ । व
डेराआएथकां उठीउभा थाइवो ७ । अपरकहतां अभिरतबोल तथा विविधंकरी कृतिकर्म वांदणानो करवो वडांनेवांदणानो देवो ८ । वेयावचनमो करवो

कसाधवोनुग्राप्याश्रिता: सप्रत्येकोवग्रहइति । एवंचैतेश्ववग्रहेषु आकुश्यादिना अभाव्यंमचित्तंशिष्य मचित्तंवस्त्रादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं तदनर्पयत: समनोज्ञा अमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसंभोग्या: पार्श्वस्थादोनांचावग्रह एवनास्ति तथापियदितत् चेत्रकुलकमन्यन्नैवचसंविग्नानिर्वहंतिततस्तत्तद्वेत्रंपरिहरं त्येशायं पार्श्वस्थादोनांवावग्रहत्वेनं विस्तोर्णं संविग्नाश्चान्यत्र न निर्वहंति ततस्तत्रापि प्रविशंति सचित्तादिवगृह्णति प्रायश्चित्तिनोपिनभवंतीति आहच समण समणुन्ने अदिन्न अणा भवगिण्हमाणेवासंभोगवीसुकरणं पृथक्करणमित्यर्थ: इयरेयअलंभेणन्निन्ति इतरान्पार्श्वस्थादोनित्यर्थ: तथा सन्निसिज्जायत्ति निषद्या आसनविशेष: साचसंभोगकारणभवति तथाहि सनिषद्यागत आचार्यो निषद्यागतेन संभोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्ध: अथामनोज्ञापा र्श्वस्थादिसाध्वोगृहस्थै: सह तदापायश्चित्तीभवति तथाकहाएयपवधणेत्ति कथावादात्रनिषद्या विनानुयोगंकुर्वंत: शृण्वत: प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि ष्ट: सूत्रार्थौप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाएयपबंधणेत्ति कथावादादिकापंचधातस्या: प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनंतत्रसंभो गाऽसंभोगोभवत: तत्रसमभ्युपगम्यपचावयवेन त्र्यावयवेनवाक्येन यत्तत्समर्थनंसछलजाति विरहितो भूतार्थोऽन्वेषणापरोवाद: सएवछलजाति निर्गतस्थानप रोजल्प: यत्रैकस्यपचपरिग्रहोस्तिनापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्तावितण्डा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्र: कथाश्रमणीवर्जै: सहकरोति श्रमणीभिस्तुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थवेलायांवा लोचन्नपिविसंभोगा र्हइति रूपकद्वयस्य संचेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपंचमोद्देशकभाष्यादवसेयइति तथादुवालसावत्ते किइकम्मेत्ति द्वादशावर्त्तंकृतिकर्मवन्दनकं प्रत्रसंवाद मावर्त्तंतामेवास्यानुवन्दनशेषांच तत्कर्मानभिधित्सितंरूपकमाह दुओणएत्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रणमनमित्यर्थ: द्वेऽवनतेयस्मिंस्तद्द्व्यवनतं तत्रैकंय

अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनति द्वितीयं। पुनर्यदावग्रहानुज्ञापनायैवावनमतीति
द्वाप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया श्रमणोजातोरचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवंभू
यथाजातं श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनिःक्रमणलक्षणंच बारसावयंति द्वादशावर्ताः सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं
तएवंवन्दते तदव्यतिरेकाद्या यथाजातंभण्यते छातिकर्मवंदनकं। प्रथमप्रविष्टस्यचामणाकाले शैष्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनिःक्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति
स्याद्द्वादशावर्त्तते। तथाचउसिरन्ति चत्वारिशिरांसियस्मिस्तच्चतुःशिरः प्रथमप्रविष्टस्यचामणाकाले शैष्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनिःक्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति
भावना। तथातिदिगुत्तंति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरेपि तिसृभिःअज्ञागुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसन्ति द्वौप्रवेशौयस्मिस्तद्द्विप्रवेशं तत्रप्रथमोवग्रहमनुज्ञाप्य
प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगनिक्खमणंति एकनिःक्रमणमवग्रहादावसिक्यानिर्गच्छतः द्वितीयवेलायां ह्यवग्रहान्निर्गच्छति पादपतितएव

जहाजायं कितिकम्मं बारसावयं चउसिरं तिगुत्तं दुपवेसं एगनिक्खमणं विजयाणंरायहाणी दुवालसजोय

आहार पाणी संभोगीने आपीदेतो मानाधिक परठवतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ९। समोसरण तेघणा यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण संभोग
साधुनो अपयछलेइ एकाठोरहियो १०। संनिषद्यागत संभोगीसाथें एके बैसतो बेसी शास्त्रचिंतन करतो पासत्थासाथे करतो विसंभोगी ११ संभोगीसाथें क
थाप्रबंध करतोयुक्त १२। पासत्थासाथें करतो विसंभोगी ॥ बारें आवर्तमाहें तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवंते श्रीवर्द्धमानसामी ऍं तेकहेछे बेअयनत बेवेला
मस्तकनमाडयो गुरुनी थापनाकीजे तेहथकी अढाठहाथ बेगला रहीपडिकमीए अउठहाथमाहीं अवग्रहकहियें उभाथका इच्छामिखमासमणो कहियें बिहु
वांदणी बिहुवेला मस्तकनमाडियें पछेअवग्रहमाहिं आविये यथाजातमुद्रा जन्मअवसरी बालकनीपरें चलोटोभरीहाथजोडीरही कृतकर्मवांदणा १२ आ।

सूत्रंसमापयतीति तथाविजय राजधानी असंख्याततमेजंबूद्वीपे आद्यजंबूद्वीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पल्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं बंधिनीति तथारामोनयमोबलदेवः देवत्त्विंगयत्ति देवत्वंपंचमदेवलोके देयत्त्वंगतः तथासर्वजघन्यारात्रि रुत्तरायणपर्यंताहोरात्रस्यरात्रिः साचद्वादशमौहूर्ति

णसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसव्वाउयं पालित्तादेवत्तिंगए मंद रस्सणं पव्वयस्सचूलिआमूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं प० जंबूदीवस्सणंदीवस्स वेइआमूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं प० सव्वजहन्निआराइ दुवालसमुहुत्तिआ प० एवंदिवसोविनायव्वो सव्वठसिद्धस्सणं

वर्त छव्वेला गुरुनेपगें वांदणाकीजे। अहोकाय एपाठकहीविहुवेलाथई १२ आवर्तथया चोसरां ४ वेला गुरुनेपगें मस्तकनमाडिये। त्रिणीगुप्ती मनवचन कायानी गुप्तिकीजे। उपवेसवीवेला वांदणानेअर्थे अवग्रहमांही आवीने एगनिखमण अवग्रहबाहिरि पहिलेवांदणे एकवेला नीकलो बीजीवेला गरुपगें बेठा ज वांदणो समापीएपाठकही एहसमवयांग वृत्तिनोभाव। जंबूद्वीपनी पूर्वनी पोलीनोधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपेंछे बारयोज नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेपिहुलपणेंकही रामबलदेव कृष्णवासुदेवनो बडोभाई बारसेवर्ष सर्वआउखूंपालीने देवपणूंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोछे। तेहनेसेविचि ४०० योजनऊंचो चूलिकाछे। तेहनोमूल १२ योजनवीचो आठउपरि शिखरे च्यारयोजन पिहुलपणो कह्यो। जंबूद्वीपनो चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन ऊंचीछे। जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेंकही भगवंते सर्वजघ न्यरात्रि उत्तरायणने छेहडे कर्कसंक्रांतिनी आसाढीपूनिमनी घणीनान्हीरात्रि बारहमूहूर्तहुई एतले २४ घडीनो रात्रिकही। एमदिवसपणिजाणिवो।

काचतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरेका सामान्या एवंदिवसोविति। सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसत्ति।

महाविमाणस्स उवरिल्लाउचूलिआउ दुवालसजोयणाइं उड्ढंउप्पइत्ता इसिपब्भारनामपुढवी प० इसिपब्भाराएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसित्तिवा इसिपब्भारत्तिवा तणूइवा तणूअरित्तिवा सिद्धित्तिवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंभेत्तिवा बंभवडिंसएत्तिवा लोकपडिपूरणात्तिवा लोगग्गचूलिआइ

क्षिणायननो छेहल्योदिवस मकरसंक्रांति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगई थकेंसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी र्वार्थसिद्ध महाविमान कह्यो तेहनी उपरिली चूलिका शिखरायथकी १२ योजनछे ऊंचो उत्पत्तिने जईने ईषत्प्राग्भार नामपृथिवी सिद्धशिलाकही रत्नप्रभा दिक बीजी पृथिवीनो अपेक्षाये ईषत् थोडोछे प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनो तेइईषत्प्राग्भार सिद्धशिलाछे तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते कहेछे। ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषत्प्राग्भार बीजी पृथिवीनो अपेक्षाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे हडेमाखि नाआंख सरीखी पातली ३ तनुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुतेथके जीवनाकार्य सीझे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धहुआछे तेहनूं आलयकहता घरते सिद्धाल य ६ तिहां जीवपहुंताथकी कर्मथकी मूंकाणातेमुक्ति ७ मुक्ताजेसिद्ध तेहनूं आलयघरते मुक्तालय ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते हनो मुगटरूप १० लोक १४ राजलोक तेजीणेकरी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथें चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलो कागूचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो बारपल्योपम आऊखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

वा इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं बारसपलिओवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थे
गइयाणं नेरइआणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं बारसपलिओवमाइं
ठिईप० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं बारसपलिओवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्थेगइ
आणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिंदज्झयं कंबु कंबुग्गीवं पुंखं सपुंखं महापुंखं
पुंडं सपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को
सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा
नीस्ससतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ सतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा

नो बारसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपती देवतानो बारपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानकल्पें देवलोकें केतलाएक देवतानो बार पल्योपम आउखोकह्यो। लातक छठादेवलोकें केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आउखोकह्यो। लातककल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २। कंबु ३। कंबुग्रीव ४। पुंख ५। सपुंख ६। महापुंख ७। पुंड्र ८। सपुंड्र ९। महापुंड्र १०। नरेन्द्र ११। नरेन्द्रकांत १२। नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३। एणे १३ विमाने देवतापणे ऊपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो बारसागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो बारअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास वर्णाले ऊंचोले नीचोउस्वासले

मायाप्रत्ययी मायानिबंधनः ११। एवंलोभप्रत्ययोपि १२। ऐर्यापथिकः केवलयोगप्रत्ययःकर्मबंध उपशांत मोहादीनां सातवेदनीयबंधः १३। तथाविमाणप
त्थडत्ति विमानप्रस्तटाउत्तराधर्यव्यवस्थिता तथासोहम्मवडिसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्यार्द्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेत्रयोद
शप्रस्तटे शक्रावासभूतविमान सौधर्म्मदेवलोकस्याऽवतंसकः शिखरकः सद्भवप्रधानत्वादित्येवं यथार्थनामकमिति णंकारोवाक्यालंकारे अर्द्धत्रयोदशयेषुतान्य
र्द्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचेतिविग्रहः सार्द्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्द्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपंचेंद्रिय तिर्यगतौकुलकोटिनां योनि
प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्रप्राणिनामायुर्निकथन सभेदमभिधीयते तत्प्राणायुर्द्वादश पूर्वंतस्यत्र
योदशवस्तूनि अध्ययनवद्विभागविशेषाः तथागर्भेगर्भाशये व्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रांतिकाः तेचते पचेंद्रियतिर्यंगयोनिकाश्चेतिविग्रहः प्रयोजने मनोवा

वडिंसगेणं विमाणे अद्धतेरसजोयणं सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० जलयरपंचिंदिअ तिरिक्खजोणि
आणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुव्वस्सतेरसवत्थू प० गब्भवक्कंति
अपंचेंदिआतिरिक्ख जोणिआणं तेरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे

छे। सत्यमनोयोग तेसाचिमनेचितवो १। जूठमनो व्यापारते मृषामनोयोग २। सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावनो चितवो ३। असत्यामृषामनोयोग ते
पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक
छीजयोनिनेविषे अनेकआकारे जीवजिमगोबरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेछे तेकुलकहीये। जिहांप्राणीना आउखाना भेदकहिये तेप्राणीनोबारमो

कायाना व्यापाराणांप्रयोगः सत्रयोदशविधः पंचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारकाहारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तोहिसंयमिनाम
नस्तः संयमसंयतस्यसंयतमनुष्याणामेव नतिरश्चामिति तत्रसत्यासत्योभयानुभयस्वभावा श्चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति अष्टौपुनरौदारिकादयः पञ्च
कायप्रयोगाः एवंत्रयोदशेति । तथासूर्यमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूर्यमंडलयोजनं तत् । णमित्यलंकारेत्रयोदशभिरेकषष्ठिभागै र्येषां भागानामेकष
ष्ठायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य संबंधिभिरूनंप्रज्ञप्त मष्टचत्वारिंशयोजनभागाद्व्यर्थः वचाभिलापेनद्वादश वक्षराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

अ्सच्चामोसमणपउगे सच्चवइपउगे मोसवइपउगे सच्चामोसवइपउगे अ्सच्चामोसवइपउगे उरालिअ्सरीरका यपउगे उरालिअ्मीससरीरकायपउगे वेउव्विअ्सरीरकायपउगे वेउव्विअ्मीससरीरकायपउगे कम्मसरीरकाय पउगे सूरमंडलं जोयणतेरसेहिं एगसठिभागेहिं जोयणस्सऊणंअ्मीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अ्त्थेगइअ्याणं

मनोव्यापार साचोनही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेसत्यवचनयोग १ एमनृषावचनयोग तेहनूंकारण २ । सत्यासत्य तेमिश्रभाषाएं बोलवो
२ । असत्यामृषा तेव्यवहारवचनयोग जाणवो लेदे एहवीभाषा ४ । कायाना सातयोगछे तेमांहि आहारक १ । आहारकमिश्र २ । एह तिर्यंचनेनहोय
तेहोय तेहपूरवधरनेहोई तेमाटे पांचकाययोगलीजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश
रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाएं। कार्मणशरीर काययोग ५। एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ यथा सूर्यनूंमांडलू योजनने एकसठीए तेरभा
गेऊणोकह्यो । एतले एकयोजनना ६१ भागकीजे तेहवा १३ भाग सूर्यनूंमंडलछे । एतले एकसठीया ४८भागसर्यनूंमांडलूं पिहुलूंछे । एणीएरत्नप्रभा पहिलो

तथाउप्पायपुव्वेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्पायमग्गेणियंचत्ति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यत्रतेषामेवाग्रम्परिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीय
तइयचवीरियंपुव्वति। यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोच्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवादं अत्थिनत्थिपवायंति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतयत्रप्रोच्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्तो

बेंदियाअपज्जत्तया बेंदियापज्जत्तया तेंदियाअपज्जत्तया तेंदियापज्जत्तया चउरिंदिआअपज्जत्तया च
उरिंदियापज्जत्तया पंचिंदिआअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निपज्जत्तया पंचिंदिआसन्निअपज्जत्तया
पंचिंदियासन्निपज्जत्तया चउद्दसपुव्वा प० तं० उप्पायपुव्वमग्गेणीयंच तइयंचवीरियपुव्वं अत्थीनत्थिप्प

लक्षणपरिचारें पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियगोभेद १। सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणेआहारादिक चारपर्याप्त पूरीकीधी तेपर्याप्ता २।
बादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३। बादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४। बेंद्रियअपर्याप्ता ५। बेंद्रियपर्याप्ता ६। तेंद्रियअपर्याप्ता ७। तेंद्रियपर्याप्ता ८। चतुरिंद्रियअपर्याप्ता ९
चतुरिंद्रियपर्याप्ता १०। पचेंद्रियअसन्नी अपर्याप्ता ११। पचेंद्रियअसंज्ञीपर्याप्ता १२। पचेंद्रियसंज्ञीअपर्याप्ता १३। पचेंद्रियसज्ञीपर्याप्ता १४। एकेंद्रियमांहि
४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय ३ स्वासोश्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता निणिकरी मरेते अपर्याप्त। बेंद्रिय १ त्रेंद्रिय
२ चउरींद्रिय असंज्ञीसमूर्छिम पचिंद्रियमांहि पांचपर्याप्ति चारमूलनी पांचमीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि जेतलीकही तेमांहीएक
उछीहोय तेअपर्याप्तिकहियै। चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे बखाणीसेंकहीये अनुक्रमे। उत्पातपूर्व जेमांहो द्रव्यपर्याप्तानो उत्पादछे १। बीजोअग्र
णीय जेमांहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २। त्रीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३। अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव

माणप्पवायंचत्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चप्पवायपुव्वंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनवा सभेदेनयत्र प्रो च्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंवत्ति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कम्मप्पवायपुव्वन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्र वादमिति पच्चक्खाणंभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विद्याअणुप्पवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशया वर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवझ्पाणाउ बारसंपुव्वन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवध्यमेकादश यत्रप्राणाजीवाआयुश्चानेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो किरियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयंते तत्क्रियाविशालापुर्व्वं तह बिंदुसारवत्ति लोकशब्दोत्रलुप्तोद्रष्ठव्य. तत

वायं तत्तोनाणप्पवायंच सच्चप्पवायपुव्वं तत्तोआयप्पवायंपुव्वंच कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवेनवमं वि ज्जअणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसपुव्वं तत्तोकरियविशालंपुव्वं तहबिंदुसारंच अग्गेणीअस्सणंपुव्वस्स चउ

प्रकूयो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेंकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्वं सत्यसंयम तथा सत्यवदन तेह जेहमां चिहुभेदेंकह्यो ६ । तिवारपछे आ त्मप्रवादपूर्वं जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वंनवमूं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांव र्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्यानाअतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इग्यारमूं जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार पछीक्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिका क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्या १३ बिंदुसार जेह

स्यस तथा चयवीतरागछद्मस्थोऽयमप्यंतर्मुहूर्त्तमेवेति तथा संयोगीकेवली मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथा अयोगीकेवली निरुद्धमनःप्रभृतियोगः शै
लेशीगतो ह्रस्वपंचाक्षरोद्गिरणमात्रंकालंयावदिति चतुर्दशंजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतैरवत्योजीवे इहभरतमेरवतचारोपितगुणको /दंडाकारपनस्तयज्ञो
वेभवतः तत्रभरतस्य हिमवतोऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः श्रेणिजीवाः ऐरवतस्यच शिखरिणः परतोनंतरप्रदेशाश्रेणीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्रवट्टिस्सत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे संजोगीकेवली अरहेवयाउणजीवाउ चउद्दसचउद्दराजोयणसहस्साइं चत्तारि
अएगुत्तरेजोयणसए छच्चएकूणवीसेभागेजोयणस्स आयामेणं प० एगमेस्सणंरन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ

जिमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोक्षपकश्रेणी करतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमूंकी बारमेवडेतेह ११। वार
मोक्षीणमोह सर्वथापि क्षीणछे मोहजिहांक्षिणवीतराग १२। तेरमो सयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवंत केवलज्ञानी १३। चौदमो असंयोगी केव
लो मनप्रभृतियोगरुंधि जिहांरुंध्याछे ह्रस्वपंचअक्षरकालमान १४ गुणठाणकालमान मिछे १ सासण २ अविरय ३ परभवियाउगसे सगुणठाणमिछस्सति
अभगछायलियाहोय सासणे १ तिन्नीसयरचाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपणग ५ तेरसम १३। लहुपचक्खरचरम १४ अंतमुहुते सगुणठाणा १८ भरतएरवत एहबिहु
क्षेत्रना जीव तिहा हिमवंतपर्वतथकी ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगी लांबीभरजीवा प्रत्यंचाकारें अने ऐरवतक्षेत्रनाजीव शिखरीपर्वतथवी परहीश्रेणी जाणी
वी एहबेहुजीव चौदचौदयोजन सहस्रनो चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाछभागआयाम लांबापणेकह्या एकएकने राजाने पूर्वादिक
चणिसमुद्र चउथोहिमवंत पर्वत एतलालगी भूमिमा शतभाग ४ छे। जिहांतिह भूमिनोधणी एहवो चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमांहि जे

त्वारोन्ताविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षयंतिवस्तूनीति यदाह रत्ननिगद्यते तज्जातौयदुत्कृष्टमिति गाथावइत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहियत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी वढ्ढइत्ति वर्द्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहसप्ताद्यानिपचेंद्रियाणि शेषाण्येकेंद्रियाणीति औकांतमित्यादौन्यष्टौविमानानांनामानीति

चउद्दसरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावइरयणे गहावइरयणे पुरोहियरयणे वढ्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूद्दीवेणदीवे चउद्दसमहानईओ पुव्वावरेणलवणसमुद्दं समुप्पंति तं० गंगा सिंधु रोहिआ रोहिअंसा हरिया हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकांता सुवन्नकूला रूप्पकुला रत्ता रत्तवई इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयायाणं नेरइआणं

उत्कृष्टवस्त तेहनेरत्नकहिये तेकहेछे। स्त्रीरत्न १। सेनापतिरत्न २। गृहपतिरत्नतेकोठारी ३। पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४। वार्द्धकीसूत्रधार ५। अश्व घोडोरत्न ६। हस्तिरत्न ७। एहसातपचेंद्रियरत्न। असिखड्गरत्न ८। दडरत्न ९। चक्ररत्न १०। छत्ररत्न ११। चर्मरत्न १२। मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३। काकिणीं सुवर्णमयी अहिरणसाठाणि ७ एह एकेंद्रियरत्न चौद १४ कह्या। जंबूद्वीपनेविषेचौद महानदीजाणवी। पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्पे पहुचेछे। पूर्वलवणसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पहुंचे तेकहेछे। गंगा १। सिधु २। रोहिता ३। रोहितंसा ४। हरिता ५। हरिकांता ६। सीता ७। सीतोदा ८। नरकांता ९। नारिकांता १०। सुवर्णकूला ११। रूप्यकूला १२। रक्ता १३। रक्तावती १४। एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदोपल्योप

चउद्दसपलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० अ
सुरकुमाराण देवाणं आत्थेगइयाणं चऊद्दसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं
देवाण चउद्दसपलिउ वमाइ ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प०
महासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंतं सिरिमहि
अं सिरिसोमनस लंतयं काविठ्ठ महिंदं महिंदकत महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
देवाणं उक्कोसेणं चऊद्दससागरोवमाइ ठिई प० तेणंदेवा चऊद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंति
वा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं चऊद्दसहिंवाससहस्सेहिं आहारठ्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइआज्ज ॥

म आउखोकह्यो पंचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो चौदपल्योपमआउ
खोकह्यो। सोधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपल्योपम आउखोकह्यो। लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकह्यो
महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकह्यो छठ्ठेदेवलोके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीमहातक २ श्रीसोमनस १ लां
तक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेन्द्रोत्तरावतसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्ठो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। तेह
देवता चौदेअर्धमासे पखवाडे घणोस्वासले थोडोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केएक भव्यजीव चौ

अथपनदशस्थानके सुगमेविकिंचिल्लिख्यते इहस्थितेरर्वाक्सप्तसूत्राणि । तत्रपरमाश्चतेऽधार्मिकाश्च संक्लिष्टपरिणामत्वात्परमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसृषु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयंतीति तत्रांबेत्यादिश्लोकद्वयं एतेचव्यापारभेदेन पंचदशभवंति तत्रअंबेत्ति यःपरमाधार्मिकदेवो नारकान् हतिपातयति बध्नाति नीत्वावारं२ खतलेविमुंचति सइत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवत्ति यस्तुनारकान्निहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति सोंबरिषीति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारादितानधःशातमपतनादिकरोति वर्णतश्चश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति शबलइतिचापरः परमाधार्मिकइति प्रक्रमः सचांत्रवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतश्चशबल. कर्बुरइत्यर्थः ४ रुद्दोवरुद्दोत्ति यःशक्तिकुन्तादिषुनारकनान् प्रोतयतिसरौद्रत्वाद्रौद्रइति

वासिद्धिआ जीवाजेचउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहम्मीआ प० तं० ॥ अंबे अंबरिसीचेव सामसबलेत्तिआवरे रुद्दावरुद्दकालेअ महाकालेत्तिआवरे असिपत्तेधणूकुंभे वालुए वेअरणीत्तिय खरस्सरेमहाघोसे

दभवग्रहणे सोझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति चौदमोठाणो समाप्तो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनो अधिकार लिखियेछे पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी सक्लिष्ट परिणामनाधणी त्रिणिनरकलगे नारकीने वेदनानादेणहारकह्या तेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव नारकीने हणीपाडे अवर आकाशे उछाले तेअंबकहिये १ । हण्यानारकीने रायथस्तेकरि अनेक खडकल्पीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंबरीषकहिये २ । जेहनारकीने हाथपगनें प्रहारेंकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकोकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हइयाकालिजा उपाडेतेशबलकहि

५ यस्तुतेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरौद्रत्वादुपरौद्रइति ६ कालेत्ति य:कंडूादिषुपचतिवर्णत: कालश्चसकाल: ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति
प्रक्रम: सचश्लक्ष्णमांसानि खण्डयित्वाखादयति वर्णतश्चमहाकालइति असिपत्तेत्ति असि: खड्गस्तदाकारपत्रवद्वनविकुर्व्य यस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र
पातनेन तिलशश्छिनत्तिसोऽसिपत्र: ९ धणुत्ति योधनुर्विमुक्तार्द्धचन्द्रादिभिर्बाणै: कर्णादीना च्छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्तिय: कुम्भादिषुतान्
पचतिसकुम्भ: ११ वालुत्ति य: कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तत्तप्तासुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेत
रणीत्तिचपरमाधार्मिक: सचपूयरुधिरत्रपुताम्रादिभिरतितापात्कलकलायमानैर्भृतां विरूपतरणप्रयोजनमस्यांते वेतरणीति यथार्थांनदींविकुर्वंस्तत्तारणेन
कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्वरेत्ति योवज्रकण्टकाकुल शाल्मलीवृक्ष नारकमारोप्यखरस्वरं कुर्वंतकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्वरेति १४ महाघोसेत्ति योभी

ये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणाथकी रुद्र ५। नारकीना आंगोपांग भाजेते अत्यतरौद्र ६। नारकीने कडाहीमां घालीने पचावे तेकाल ७।
महाकाल अपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममासना खंडकरीखाय वर्णकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृक्ष हेठी नारकीने वेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे
विकुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी ९। तेहना धनुषथकी अर्द्धचंद्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे
भेदे तेधनुषनाम १०। कुम्भत्ति कुंभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुंभ ११। कदंबपुष्पाकारे वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरे पचावे तेवा
लुक १२। वैतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरूतावी महातप्त कलकलायमानेभरी तेमांहि नारकीने वोलेकदर्थे तेहवैतरणीनाम १३। खरस्वरइति वज्रम
य कांटासहित शाल्मलीवृक्ष विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चढावीनेताणे जिमकांटा ऊपरि लूगडूंनाखीने ताणी तेखरस्वर१४महाघोसेति वीहता नासता

तवत् पलायमानान् नारकान् पशुन्इववाटकेषु महाघोषं कुर्वन्विरुणद्विसमहाघोषइति १५ इमेएपन्नरसाहियं एवमित्यंबादिक्रमेणते परमाधार्मिकाः पञ्च दशाख्याता: कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराहूणमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वणिपौर्णमास्याममावास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरागंकरोति सपर्वराहु र्यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहच। किण्हंराहुविमाणं निच्चंचदेणहोइअविरहियं। चउरंगुलमप्पत्तं हेठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो ऽसौध्रुवराहुः णमित्यलंकारे बहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिययन्तिप्रतिपदं प्रथमतिथिमादौकृत्वेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागंपंचदशभागेनेति वीप्सायांद्विर्वचनादि

एतेपन्नरसाहिआ णेमीणंअरहा पन्नरसधणूइंउद्धं उच्चत्तेणंहोत्था णिच्चराहूणं बहुलपक्खस्सपडिवए पन्नरसति भागेणं चंदलेसआवरेत्ताणं चिठन्ति तं० पढमाएपढमंभागं बीआएदुभागं तइयाएतिभागं चउत्थीएचउभागं पंचमीएपचभागं छठीएछभागं अठमीएअठभागं नवमीएनवभागं दसमीएदसभागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पशुनीपरि इचाडेघालीमेले पोकारकरे तानेरूधीमेले तेमहापाप परमाधर्मी एते पनरजातीना परमाधर्मीकह्या १५। नेमिनाथ अरिहंतएकवीस मा पनरधनुषऊंचा अंचपणेकह्या। राहुना बिहिंभेद पर्वराहु ध्रुयराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पौर्णमासीएं अमावास्याएं चद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अधारापख नोरात्रीएं चंद्रमाने पनरमभागे चंद्रमानो लेश्यादीप्ति आवरीने आछादीने तिष्ठेरहे तेकहेछे। एक पडिवामांडि प्रतिदिनें राहुचंद्रमानो एकएककला आ छादे पहिली पडिवाहोय १। बीजेदिने वीजोभाग २। त्रीजेदिने त्रीजोभाग ३। चउथें चौथोभाग ४। पचमीए पांचमोभाग ५। छठेछठोभाग ६। सातमे सातमोभाग ७। आठमेदिने आठमोभाग ८। नवमीए नवभाग ९। दशमीए दशमभाग १०। एकादशीए इग्यारभाग ११। बारसे बारभाग १२। तेरसे

पुद्गलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः त्यमनःप्रयोगः एवंशेषेष्वपि । नवरमौदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव
वैक्रियेणमि अयंचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको
श्रयंचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः
वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य चौदारिकस्यमिश्रतायस्येयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा
स्यायावद्वैक्रियपर्याप्त्यानपर्याप्तिंगच्छति एवमाहारकेण

उरालिय उरालियसरीरकायपउगे असच्चामोसवइपउगे मोसवइपउगे सच्चमोसवइपउगे जगे सच्चवइपउगे
मीससरीरकायपउगे वेउव्वियसरीरकायपउगे वेउव्वियमीससरीरकायपउगे आहारयसरीरकायप्पउगे आहा

केवलीनेत्रीजे चौथे जिवारें केवली ८ समयना केवलसमुद्घातकरें १५ । योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाययोग
पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकी पांचमेकार्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपल्योपमआउखोकह्यो ।
सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरेपल्योपम नी पनरेंसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो ।
सातमेदेवलोकें जेदेवता नंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ आउखोकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो ।
४ । नदकांत ५ । नदवर्ण ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नंदमिष्ठ १० । नदकूट ११ । नंदोत्तरावतंसक १२ । एहबारविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेशाद्दायामौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रतेत्येकेत्वा हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदनिनिवृत्तौ सत्यां तस्यैवप्रधानत्वा त्तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकापरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्यः पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य जत्याहारकं तावदौदारिकेण सहमिश्रतेति आइनतत्तेनसर्वथाकुत्वं पूर्वनिर्वर्तितं तिष्ठत्येवतत्कायं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ ह्यात्येवं तथाकर्मणःशरीरकायप्रयोगे विग्रहेसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमचेदं नवरं

रयमीसयसरीरकायप्पत्तगे कम्मयसरीरकायपत्तगे इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरस पलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाण अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकतं णंदवस्सं णंदलेस णंदज्झयं णंदसिगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तर

ने उत्कृष्टी पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवतापनरे पखवाडे सासोसासघणोले अंचोश्वासले नीचोश्वासमूंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा रनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव पनरभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखमा अंतकरस्ये मोचजास्ये इति पनरमूंठाणूंसम्मत्तं ॥ १५ ॥

गाथाषोडशकादीनि शिष्यसूत्रेश्वमाराजासूत्राणि तत्सूत्रकृतांगस्य प्रथमश्रुतस्कंधे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म
ध्ययनं षोडशमेतानि गाथाषोडशकानि तत्सयेयति नाष्त्रिकादि समय प्रतिपादकमध्ययनं समयएवोच्यते वैतालीयछंदोजातिबद्धं वैतालीयमेवमेषा

वडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर
सएहं अद्धमासाणं आणमंतिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पन्नरसहिं वाससह
स्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेपन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति
मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहासोलसगा प०
तं० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरएधम्मे

तेनेसोलसो अधिकार लिखियेछे । सूत्रकृतांगने पहिलेश्रुतस्कंधे सोल अध्ययन माहि गाथा षोडशोनाम सोलमोछे । तेगाछेछे । समयएति नास्तिकादिमतनो आधाक
प्रथम अध्ययन समयनामछे १ । वैतालिकछंदेगाध्यातेवैतालिय २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७
वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । समाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । धिगिसय निसठीपाखंडीनीजस जिहांतिसमोसरण १२ । सत्यभाषकादीते यथातथा
नाम १३ । ग्रंथत्यागाध्ययन १४ । ग्रंथनोत्यागथा यमकछंदेगाथाजोतियमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्ययननो जिहांभावणामीये तेगायानाम १६ । सोलनागायकाभाग
वंते पापनाहिंयेसंसार तेहनो गायलाभहोय जेहथी तेमापायकाणा तेगाछेछे । अनंतानुबंधी क्रोध जेह अनंतामवनो अनुबंधकरे जावजीवरहे सम्यक्तआविवा

णां यथाभिधेयनामानि समोसरणेत्ति समवसरणं नयाणां षड्धिकानां प्रवादिशतानां मतपिंडनरूपं अहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तनतद्यथा तथिका ग्रथाभिधायकग्रथः जमइत्ति यमकीयं यमकानिवद्धंसूत्रं गाहतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गायोगाथावातत्प्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रेगाथा

समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए गंथे जमइए गाहा सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे अणंताणुबंधीमाणे अणंताणुबंधीमाया अणंताणुबंधीलोभे अपच्चक्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खाणकसाएमाया अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणेकोहे पच्चक्खाणावरणेमाणे पच्चक्खाणावरणामाया पच्चक्खाणावरणेलोभे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया संजलणेलोभे मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधेया प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपभेय गिरिराया रयणुच्चए पियदंसणे मज्झलोगस्सनाभीय अ

नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २। अनंतानुबंधीमाया २। अनंतानुबंधीलोभ ४। एमज अप्रत्याख्यानक्रोध अणुव्रतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यामलोभ ४। प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १। एमज प्रत्याख्यानमान २। प्रत्याख्यानमाया ३। प्रत्याख्यानलोभ ४। संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ संज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषाययथया। मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे। मदर १। मेरु २। मनोरम ३। सुदंसण ४। स्वयंप्रभ ५। गिरिराज ६। रत्नोच्चय ७। प्रियदर्शन ८। मध्यम लोकनीनाभि १०। अर्थ ११। सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदक्षिणादे १२। सूर्यावरण रात्रे सूर्यने आवरेआछादे १३।

लोकस्य मज्झेलोगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिरित्यर्थः उत्तरयति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्त्तित्वाद्यदाह सव्वेसिंउत्तरोमेरुत्ति दिसाईयत्ति दिशामादि
रित्यर्थः वडिसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सद्भावावतंस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयस्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब
ल्योर्दक्षिणोत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचचावली चचाभिधान राजधान्योर्मध्योद्गताऽवतरत्यार्थ्रपीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयोज
नसहस्राण्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेपुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्ध्वं गतंतस्यचोत्सेधवृद्धि षोडशसहस्राण्यऽतउ
च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राण्युत्सेधपरिवृद्धा प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामानि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानक तत्रव्यक्तं

त्थेअ सूरिआवत्ते सूरिआवरणेतिअ उत्तरेय दिसाइअ वडिसेइअ सोलसमे पासस्सणंअरहतो पुरिसादाणी
यस्स सोलससमणसाहस्सीउ उक्कोसीआणंसंपदाहोत्था आयप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरबली
णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० लवणेणंसमुद्देसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

भरतादिकक्षेत्रथकी उत्तरदिशाछे तेमाटे उत्तरकह्यो १४। दिशानो आदिछेजेहथकी तेदिगादि १५। अवतंस सर्वपर्वतनो मुगट१५पछे एम १६ मांमड
या। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासोभागी तेहनेसोले श्रमण सहस्र उत्कृष्टोसाधुनी संपदाहुई जाणवी। आत्मप्रवादनूंपूर्व तेहना
सोलह वस्तुकह्या। भगवंते अधिकार विशेषेकह्या। चमर चचावली चचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीलयन तेहअवासनी पीठीका सोलसहस्र
योजनलांबपणे पिहुलपणेकह्यो। लवणसमुद्रथकी जगतीथकी पचाणूं सहस्रयोजनेईहतिहां मध्यभागेदगमाले दससहस्र योजननेविषे नगरना गढनोपरि

॥ टीका ॥

॥

हपरिवड्ढीए प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० पंच मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया णं सोलसपलिउवमाइ ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिउवमाइठिई प० जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव त्तं महाणंदियावत्तं अंकुसं पलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वतोभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवासोलसहिं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससतिवा तेसिण देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइयाभ

पाणी ऊंचोगयोछे। तेहनी ऊंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। पां चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलेसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमार देवनी केतला एकनोसोलेपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदे वलोके केतलाएकदेवनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। महाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनोसोलेसागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता आवर्त १। विदावर्त २ नंदिकावर्त ३। महानंदिकावर्त ४। अंकुश ५। प्रलब ६। भद्र ७। सुभद्र ८। महाभद्र ९। सर्वतोभद्र १०। भद्रोत्तरावतंसक ११। एह इग्यारविमाने देव तापणेउपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलेसागरोपन आउखोकह्यो। तेदेवता सोलपखवाडेस्वासोस्वासघणोले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेदे

रूप चैत्रसमासागाथाभिरवगंतव्यमेता. । दसजोयणसहस्सा लवणसिहाचक्कवालउरुंदा । सोलससहस्साउच्चा सहस्समेगंतुउगाढा । देसूणमद्धजोयण लवणसि
होवरिदगंतुकालदुगे । अतिरेगं परिवड्ढइ हायएवाऽवि । अब्भंतरियवेल धारंतिलवणोदहिस्सनागाण । बायालीयसहस्सा ओसत्तरिसहस्सावाहरियं । सट्ठीना
गसहस्सा धरतिअग्गोदयसमुद्दस्स । वेलंधरआवासा लवणेयचउदिसिचउरो । पुव्वादि अणुक्कमसो गोथुभ १ दगभास २ संख ३ दगसीस ४ । गोथुभ १ सित
ए २ सखे ३ मणोसिले ४ नागरायाणो । अणुवेलधरवासा लवणेविदिसासुसंठियाचउरो । कक्कोडे १ विज्जुप्पभे २ केलासरुणप्पभेचेव । कक्कोडयकद्दमए केल
सरुणप्पभेय नागरायाणो । बायालीससहस्से गंतुउयहिंमिसव्वेवि । चत्तारिजोयणसए तीसिकोसचउग्गयाभूमी । सत्तरसजोयणसए इगवीसेजसियासव्वे

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाउ भूमिभागाउ

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतछे गोथुभ १ । एम दक्षिणादिके दगभास २ । सख ३ । दगसीस ४ । तेहनाधणीगोथूभ १ शिव २ । भद्र ३ । मणसिल
अनुवेलधरनापर्वतविदिशिए ईशानकोणेकर्कोट १ । एमजअग्निकोणेविद्युतप्रभ २ । केलाश ३ । अरुणप्रभ ४ । एहनाधणीनागराजकर्कोट १ कर्दम २ की
लास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दससहस्रयोजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीछे तेहउपरि सोलसहस्रछगाज जचापाछे तिहां दिनप्र
ति एवेटकवेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलधर वेलमाहिलिपासे जंबूदीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखंडभणी ७२ सहस्रदेवता छसहस्रग्रिष्ठे वाटेकरी पा
णीबांधता उपराठांमारेछे । वेलधरअनुवेलंधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकसतरसेयोजन ऊंचाऊंचपणेकह्या । जगतीथकी पंचाणूं यो
जनसहस्रजइये समुद्रमांहि तिहां दससहस्रजोजन चक्रबालसमुद्रपाणीछे तिहांथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी जचाआकाशेगयाछे तोसमुद्रपाता

चारणाणंति जंघाचारणानां विद्याचारणानांच तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिछिकूट उत्पातपर्वतो यत्रागत्य मनुष्यक्षेत्रागमनायोत्पतति सचैवो ऽसंख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्यतिक्रम्यभवति रुचकेंद्रोत्पातपर्वतस्त्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ

सातरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उड्ढंउप्पातित्ता ततोपच्छा चारणाणं तिरिच्छगती यावत्तती चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररस्रो तिगिंछिकूडेउप्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० बलिस्सणं असुरिंदरुयगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

समांहिजंडो एकयोजनसहस्रऊंचो सोलहस्रसब्बगोयसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागछे तेहथकोभाभेरोबीकोसअधिकसत्तरयोजन सहस्रलगेऊंचोउत्पति उडीनेएतलेलवणसमुद्रनी शिखालगेजघाउत्पतितिवारेपछें जघाचारण विद्याचारणनी तिरछीगति पर्वततले तिरछिदीपे रुचिकवरद्वीपे एममंदीश्वरद्वीपें जीवप्रतिमावादिवाजाई चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानो इन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगिछकूट। उत्पातपर्वत जिहां चमरेंद्रादिकपातालथकी आवीनेमनुष्यक्षेत्रें आविवाभणीउत्पते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहिये। तेअसंख्यातमे अरुणसमुद्रथकी दक्षिणदिशें ४२ सहस्रयोजनजईये तिहां पांमिएते तिगिछकूट। १७२१ योजन ऊंचोऊचपणेंकह्यो। बलींद्रनो असुरेंद्रनो बलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतरसे एकवीस ऊचोऊंचपणे तेहोपणि अरुणसमुद्र असंख्यातमो तेहमांहि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो। सतरप्रकारेमरणकह्यो तेकहेछे। क्षणक्षणयितिएं आउखनोदल उछायायते आवीचिमरण १। अवधिमर्यादातेणेकरी मरवोते अवधिमरण जिमनारकोनरका

वीईमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयआयुर्दलिकविच्युतिलक्षणाअवस्था यस्मिं सदावीचि अथवावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीची दीर्घत्वंतुप्राकृतत्वात्तदे
वभूतमरणंअवीचिमरण प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचटनलक्षणं तथाअवधिर्मर्यादा तेनमरण मवधिमरणं यानिहि नारकादिभवनिबंधनतया यु'कर्मदलियान्यनुभूय
म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्द्रव्यापेक्षया पुनस्तद्ग्रहणावधिं यावज्जीवस्य मृतत्वादिति तथा आत्यंतियमरणेत्ति आ
त्यंतिकमरण यानिनारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्द्रव्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दात्यंति
कमिति वलायमरणेत्ति संयमयोगेभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीनां व्रतिनांमरण वलान्मरणं। तथा वशेनेंद्रियविषयपारतंत्र्येण ऋताबाधितावशार्त्ताः स्नि
ग्धदीपकलिकावलोकना कुलशलभवत् तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदयस्य सोंतःशल्योभिमानादिभिरनालोचितातीचार स्तस्यमरणमंत'
शल्यमरण तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जंतुस्तद्भवयोग्य मेवायुर्बद्ध्वापुनः तत् क्षयेनम्रियमाणस्ययद्भवति तत्तद्भवमरणमेतच्चतिर्यङ् मनुष्याणामेव
,तद्देवनारकाणा तेषां तेष्वेवोत्पादाभावादिति तथाबालाइव बालाअविरता स्तेषां मरणबालमरण तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषांमरण पंडितमरण बालपंडि

आवीइमरणे उहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडि

युभवनि बधनकामदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यतिक मरण तेजेनरकनंपूरूं आउखूं भोगवीओवलती फरीने बीजीभवें तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम
रेते वलातमरण ४। पतंगादिकनी परेइंद्रियनेवशे मरेतेवशार्त्तमरण ५। अपराधअणालोई मरेतेअंतःशल्यमरण ६। जेआउखूंभोगवी मरेवलीउपराठो बी
जेभवेतेहीजआवे जिममनुष्यतिर्यंच पीतानूं आउखूं भोगवीकरी वलीबीजेभवेतेहीजसूं आउखूंपामे ७। अविरतीनूं मरणतेबालमरण ८। सर्वविरतीयतीन

॥

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं। तथाछद्मस्थमरणमेव केवलिमरणंतु प्रतीतं। वेहासमरणंति विहायसि व्योमनिभवं वैहायसं विहायोभवत्त्वंच त स्य वृक्षशाखाद्युद्बंधनेसति भवेत् तथागृद्धैः पक्षिविशेषै रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभिश्च स्पृष्ट स्पर्शनंयस्मिन् तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षण त्वाउंदरादियत्र तद्गृध्रपृष्ट मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भक्षयतो महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेतिवदूहं। तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेष्ट्यते आसामनशनक्रि यामितीगिनी तया मरणमिंगिनीमरणं तच्चिचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्नि.प्रतिकर्मशरीरस्यें गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्था नं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमितिविग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममसममिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

तमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धपिठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगि णीमरणे पाउवगमणमरणे सुहुमसंपराएणंभगवं सुहुमसंपरायभावेवट्टमाणो सत्तरसकम्मपगडीओ णिबंध

मरणतेपण्डितमरण ९। श्रावकनूंमरणते बालपण्डितमरण१०। छद्मस्थपणेमरेते छद्मस्थमरण११। केवलीपणेमरेते केवलमरण१२। गलेफांसोलेईमरे तेविहा सकमरण १३। गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आंपणीआत्माखवाडोमरेते गृध्रपुष्टमरण १४। भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५। चारेआहा रपच्चखी भूमिनियमोसंस्थारिमूये भवतोवैयावचनकरावेते इंगिनीमरण १६। पादपवृक्षनोशाखाछेदी भूमिएपडेचलतोहालेनही तिमसंथारेकद्या पछीसा धुहाले बोलेनहीपासुंपालटे नहीतेपादपमरण१७। सूक्ष्मसपराय दशमूंठाणूं सूक्ष्मसलोभनोअसंख्यातमोभाग किट्टिरूपजेहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावेंवर्ततोथ

तद्भवतीति । तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः क्षपकोवासूक्ष्मलोभकषाय किट्टिकावेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थित नातीतागत सूक्ष्मसपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बंधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वंतरे गुणस्थानकेषुबंधप्रतीत्यान्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका सातप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बधमश्रित्यनुयाति शेषाः षोडशैहैवव्यवच्छिद्यंते । यदाह नाणं ५ तराय ५ दसगं दंसणचत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसायं मिवोच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परेनबध्नंतीत्यर्थः ॥ सामानादीनि सप्त

ति तं० आभिणिबोहियणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चक्खुदंसणावरणं अचक्खुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदंसणावरणं सायावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चागोयं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं सत्तरपलीउवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

को तथा चपभावेंवर्ततोथको एकसोवीसप्रकृतिबंधछे तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबंधपाडे तेवारहछे । आंभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रुतज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदसणावरण ६ । अचक्षुदंसणावरण ७ । अवधिदंसणावरण ८ । केवलदसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभांतराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६ । वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सतरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीएं केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

रससागरोवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु
माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं
सत्तरसपलिउवमाइ ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पे दे
वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअ सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं भा
विअं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरस
हि अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्से

तरसागरोपमआउखोकह्यो। छठीतमापृथिवीएं केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरप
ल्योपमआउखूंकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोंके केतलाएकदेवतानो सतरपल्योपमआउखोकह्यो महाशुक्रदेवलोके सातमेदेवतानोउत्कृष्टो सतरसागरोपमआउ
खोकह्यो। सहस्रार आठमेदेवलोके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम आउखोकह्यो। सातमेदेवलोके जेदेवता सामायिक १। सुसामायिक २। महासामा
यिक ३। पदम ४। महापदम ५। कुमद ६। महाकुमद ७। नलिन ८। महानलिन ९। पोंडरीक १०। महापोंडरीक ११। शुक्र १२। महाशुक्र १३।
सिंह १४ सिंहकांत १५। सिंहविद १६। भाविक १७॥ एहविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टोसतर सागरोपमआउखोकह्यो। जेहदेवतासतरे

श्रोभावर्जनं प्रतीतं तथा आचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिंडेषणाद्याः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्कंधात्मिकाः सचनवब्रह्मचर्याभिधाना ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपस्तस्यैवचेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह। नवबंभचेरमईओ अठारसपयसहस्सीओ। हवइसपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति यस सचूलिकाकस्येति विशेषणं तत्तस्य चूलिकासत्ता प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नदोटीकाकता अठारसपयसहस्साणि पुणपढमसुय खंधस्सनवबंभचेरमइयस्स पमाणं विचित्तत्थाणोय सुत्ताणि गुरुवए सवोतेसि अत्थोजाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं पदोग्रेति पदपरिमाणे नेति तथा बंभित्ति ब्राह्मीआदिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितेनैव यादर्शिताचरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्तस्या

गवतो सचूलिआगस्स अठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंभीएणंलिवीए अठारसविहलेखविहाणे प०तं०

पल्यंकोमां भोजनविरति एमकायषट्क पांचप्रावरअनेछठो उत्तमकाय एम १२ अकल्पो अकल्पनीयपिंडशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४। पल्यंकोमां चादिक १५। निषद्यासिंहासन १६। स्नानशरीरधोइवो १७। शोभावर्जन शरीरश्रृंगाररचना १८। आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे तहनां पूज्यनांबीजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसहस्रजेतले अर्थनीसमाप्ति तेहपदकहीए। पदाग्रेंसर्वसंख्याएंकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परंचूलिकाछे। पांचबीजेश्रुतस्कंधे १८ सहस्रपदमांहिनही उक्तंच। नवबंभचेरमइओ अठारसपयसहस्सीओ। हवइयपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति। अनेंसूत्रमांहि चूलिकाग्रहोछे ते एकसूत्रनासंबंधीमाटे परंतेहनोप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो। ब्राह्मीश्रीआदिनाथ भगवंतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानाभेदकह्या।

आदर्शलिपिर्यमित्यलंकारे लेखोल्लेखनं तस्याविधानंभेदो लेखविधानं प्रथमं तद्यथा एतत्स्वरूपं नष्टमिति मदर्शितम्। तथायल्लोके यथास्ति यथावाना स्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायस्तत्तदेवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वंतस्य। तथा धूमप्रभापंचमी। अष्टादशोत्तर मष्टादशयोजनसह स्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिंडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रातावित्यर्थः उत्कर्षेणोत्कर्षतोऽष्टादशमुहूर्त्तोदिवस

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्ठिया भोगवयत्ता वेयणतिया णिण्हइया अंकलिवि गणिअलिवि गंधव्वलिवि आदंसलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिंदि लिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअट्ठारसवत्थू प० धूमप्पभाएणं पुढवीए अट्ठारसुत्तरंजोयण सयसह स्सं वाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्तादिवसेभवइ सइउक्कोसेणं अट्ठारस

तेकहेछे। ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदंकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १। जवनलिपि २। दोषऊपरिका ३। वरोहियाप्रभृति णिन्हइयापर्यंत नामविशेषजाणिवा ११। अंकलिपि १२ गणितलिपि १३। गांधर्वलिपि १४। आदर्शलिपि १५। माहेश्वरलिपि १६। दामलिपि १७। बोलिंदिलिपि १८। आस्तिनास्तिलोएसासएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउथूंपूर्व तेहना १८ वस्तु अधि कारविशेषकह्या। धूमप्रभापांचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहल्यपणे जाडपणेकही। पोसाआसाढमासइक्ति एकदाउत्कृष्टपणेअ ठारमुहुर्तीयोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आसाढीपुनीमे अठारमुहूर्तीयोदिवसहुए सतित्ति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहूर्ती रात्रिहुई। एणीए रत्नप्र

अट्ठारसपलिउवमाइं ठिई प०
मुत्तारासत्तीजवइ इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारसपलिउवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया
छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारससागरोवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण अट्ठारसपलिउवमाइं ठिई
णं अट्ठारसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अत्थेगइयाणं
प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारससागरोवमाइं ठिई प० आणएकप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं
जहन्नेणं अट्ठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठिसालं समाणं दुमं म
हादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सह
स्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं अट्ठारससागरोवमाइं ठिई प० तेण देवाणं अट्ठा

आ पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो अठारपमल्योपम आउखोकह्यो छट्ठीतमा पृथिवीयें केतलाएकनारकीनो अठारसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकु
मारदेवतनो केतलाएकनो अठारपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्मईशानकल्पें केतलाएकदेवतानो अठारपल्योपम आउखोकह्यो। सहस्रारआठमेदेवलोके
केतलाएकनोजघन्यो अठारसागरोपम आउखोकह्यो। आठमेदेवलोके जेदेवता काल १। सुकाल २। महाकाल ३। अंजन ४। रिष्ट ५। साल ६। समान
७। द्रुम ८। महाद्रुम ९। विशाल १०। सुसाल ११। पद्म १२। पद्मगुल्म १३। कुमुद १४। कुमुदगुल्म १५। नलिन १६। नलिनगुल्म १७। पौंडरीक
१८। पौंडरीकगुल्म १९। सहस्रारावतंसक २०॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे। तेहदेवतानो अठारसागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता अठारअ

भवति षत्रिंशद्घटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांतौ रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि विंशतिर्विमाननामानि ॥ १८ ॥

अथैकोनविंशतितमस्थान तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टांता स्तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्कंधवर्त्तीनि उक्खि

रसेहिं अट्ठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंति तेसिणं देवाणं अट्ठारसवास सहस्से हिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जेअट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चि स्संति परनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्झयणा प० तं०। उक्खित्तणाए संघाडे अंडेकुम्मेअ सेलए तुंबेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के ते

ढेमासे पखवाडे स्वासोस्वासले वणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतनो अठारहवर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे। कीतलाएकभव्यजीव अठारभवनेअांतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॥ इति अठारमूंठाणूं समाप्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेछे। ज्ञाताछठोअंग तेहने प्रथमश्रुतस्कंधे १९ न्यायरूपनीतेमार्ग सूचकअध्यनकह्या। तेकहेछे यथाक्रमे। उत्क्षिप्तज्ञाय जेहाथीएं पगउपाड्यो पगहेठिशशलोराख्यो तेहमेघकुमारहुयो १। धनावहसेठीनो संघाडकज्ञाय २। त्रीजोमोरडीनाईडानो ३। चउथोकाछवानो ४। पांचमो सेलकाचार्यनो ५। छठोउकडानो ६ सातमो रोहिणीलघुवहूनो ७। आठमोमल्लिकुमारीनो ८। माकंदीसुतजिनरक्षतेजिनपालक ९। दशमोचंद्रमानो १०। इग्यारमोदावदवनामवृक्षनो ११। बा रमोउदकज्ञायजितशत्रु सुबुद्धिमंत्रीनो १२। मंडुकडेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहुतानो १४। पनरमोनंदिफलनो १५। सोलमो अमरकंका

त्तेला दिसाभिरूपकद्वयमिदं च षष्ठांगाधिगमावसेयमिति । तथा जंबुद्वीवेणं इत्यादीभावनारुत्तय: स्वस्थानादुपरियोजन शतंतपतोऽधशाष्टादश शतानि । तत्र च समभूतलेऽष्टौभवंति दशचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहे हि निम्नीभवद्भूमिकतिम विजयद्वयस्यदेशे अधोलोकदेशेसहस्त्रमिति द्वीपांतरसूर्यां स्तूर्द्ध्वशतमधोष्टशतानि चेत्रस्यसमत्वादिति तथा शुक्रमूत्रेनवखत्तादिति विभक्तिपरिणामाच्चनै: समंसहचारंचरणं चरित्वाविधेयेइति तथाकालाभोत्ति पं

तलीइच्च नंदिफले अवरकंका आइसे सुंसमाइत्र अवरेत्र पोंडरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्दीवेणंदीवे सूरिच्चा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उद्धंमहातवयइ सुक्कोणंमहग्गहेअवरेणं उइअसमणे एकूणवीसंणक्खत्ताइंस मंचारंचरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ जंबूद्दीवस्सणंदीवस्स कलाउ एगूणवीसंछेअणाउ प० एगूणवीसं

राजधानीनो द्रुपदीनो १६ । सतरमो आकीर्णघोडानो १७ । अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुंडरीक कुंडरीकनो न्यायउगणीसमो १९ जंबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो उगुणवीस योजणसत उपरितेहेठि मिलीनेतपे एतले पोंतानाविमानथी एकसोयोजन ऊंचोतपे प्रकाशे अनेसमभूतलेगइ आठसे योजन नीचोतपे पलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे छेहलो विजयछे जिहां तिहां मेरुनी अपेक्षा एकसहस्रयोजन भुंइंजाइछे तिहां प्रकाशे एतले एव सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे । शुक्रमहाग्रह पश्चिम दिसें उगीयको उगणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकारीने पश्चिम दिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्वीपद्वीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतले भरथक्षेत्र ५२६ योजन अनेंउपरि छकलातेह एकयोजनना १९ छेदनाभ

चसएकव्वीसे कृत्तकलाविव्यइंभरहवासमित्यादिषु जंबूद्दीपगणितेषु या:कलाउच्यंते तायोजनस्यैकोनविंशतिभागच्छेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभाव:
आगारमज्झेवसित्तत्ति अगारंगेहं अस्त्येकोनविंशति चिरकालंराज्यपरिपालनत: आमर्यादायदीचां वसित्वाउषित्वा तत्रावासंविधायेति अध्येध्यप्रव्रजिता: शे
षास्तुपंच कुमारभावएवेत्याह । वीरअरिठ्ठनेमिं पासमल्लिंचवासपुज्जंच । एएमोत्तूणजिणे अवसेयाआसिरायाणोत्ति ॥ १९ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्थयरा अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ताणं आगाराओअणगारियंपव्वइआ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढ
वीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं
एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प०
सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसंपलिओवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

नरूप एतलेभाग करी एहवी छकला प्रमाकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मल्लिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थंकरविना वीजा
उगणीसतीर्थंकर गृहस्थाश्रमेवसीने मुंडपणूंपाम्या द्रव्यमुंडलोचादिकाभावमुंड तेकषायत्याग गृहस्थाश्रमथकी अनगारपणाथकी प्रव्रज्याघरनथी जेहनेते
अनगारीतेहपणूंपाम्या । एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक
नारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पे केतलाएक
देवतानोउगणीस पल्योपम आउखोकह्यो । आनतनवमेकल्पेउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानो

राजनीतिपरीभाषी आचार्यादिषु परिभवकारी सचात्मानमन्यांशासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरव: तानाचारदोषेण शीलदोषेण च गा
नादिभिर्वायच्छतीत्येवंशील: सएवचेतिस्थविरोपघातिक: ६ तथाभूतान्येकेंद्रियांस्तानन्यर्थंत उपहंतीति भूतोपघातिक: ७ तथासंज्वलतीति संज्वलन: प्रतिक्षणं
रोषण: ८ तथाक्रोधन: सकृत्क्रुद्धोऽत्यंतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्ठिमांसिक: पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकारी १० अभिक्षणं २ अवधारयित्तति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण
मवधारयिताशंकितस्याप्यर्थस्य निशंकितस्याप्यर्थस्य नि:शंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अपहारयितापरगुणाना मपहारकारी यथा अदासादिकमपिप
रभणति दासस्त्वचोरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणानां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणानांति पुरातनानां कलहानां क्षमितव्युपशमितानां
च भितक्षेनोपशांतानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादो य:सचेतनादिरजोगुंडितेनहस्तेन दीयमानांभिक्षांगृह्णाति तथायोऽस्थंडिलादे:
स्थंडिलादौ संक्रामसपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधेकारणे सचित्तादिपृथिव्यां कल्पाविना अनंतरितायां आसनादिकरोति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त

रिज्जासी थेरोवघाइए भूउवघाइए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अभिक्खणं ओहारइत्ताभवइ णवाणंअधिक
रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताभवइ पोराणाणंअधिकरणाणं खामिअविउ सविआणंपुणोदीरेत्ताभवइ ससर

गाउलादिक तेपूर्वे अनुतापछे उपनानथी तेहनगजालेछे १२। पुरातनजूनानेकलहाने खमावीजायगो उपशमाव्याछे तेहनेपुनरपिवली उदारकाउपदारे १३।
सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजस्करणाएंकार्णेभिरदेताले अथवासचित्त अचित्त स्थंडिलजेपगनपूंजे १४। अकालेस्वाध्यायकरे पहिले अच्छेपनेपाछिले अच्छ
रें कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकाने भणेपोदमदरलगी उकालिका दशवैकालिकानभणो १५। अकालेभणतांदेवतादिकानोउपद्रवहोय। कलहकारे १६। शब्दकारे

या अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्त्तव्यकारी १६ तथाशब्दकरः रात्रौमहताशब्देनोल्लापःस्वाध्यायादिकारको गृहस्थ भाषाभाषकोवा १७ । तथाझंझाकरोत्येव येनगणस्य भेदोभवति तत्तत्कारी येनच गणस्यमनोदुःखंसमुत्पद्यतेतोझंझा १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्तम यं यावदशनपानाद्यभ्यवहारी १९ एषणाऽसमितश्चापि अनेषणांनैव परिहरति प्रेरितश्चासौसाधुभिः कलहायते तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवोकोपराधो वर्तते एवंचात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिदं विंशतितममिति २० तथाघनोदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानर्द्धयः साहस्त्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतोबन्धसमयादारभ्यबन्धस्थितिः स्थितिबन्धइत्यर्थः प्रत्याख्याननामकंपूर्वंनवमं सातादीनिचैकविंशतिर्विमानानीति ॥

रक्तपाणिपाए अकालसज्झायकारए आविजइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणभोई एसणासमिते आ विभवइ मुणिसुव्वएणअरहा वीसधणूइं उड्ढउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविणंघणोदही वीसंजोयणसहरसाइं बाह ल्लेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरण्णोवीसं सामाणिअसाहस्सीउ प० णपुंसयेअणिज्जस्सणं कम्मस्सवीसं

रात्रिएमाटे सादेसझायकरेगृहस्थनेपरी उपडोबोले १७। झंझकार जेणेकरी गछनोभेदहोय एहवोकरे १८। सूरप्रमाणभोजी सूर्यंआथमे तिहांलगीन जिमे १९। एषणाऽसमित असूझतो भातपाणीले वीजोयती दूसीषदेतां कलहकरे २०। एहवीसअसमाधिस्थानकह्या २०। मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष उंचाउचपणेथया। सातमीनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनोदधि। वीसयोजनसहस्र जाडपणेकह्यो। प्राणतदेव लोकदशमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेंद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकह्या। नपुंसकवेदनीयंकर्म अर्थात् नपुंसककर्म

सागरोवमकोडाकोडीउ बंधउ बंधठिई प० पच्चक्खाणपुव्वस्सवीसंवत्थू उस्सप्पिणिमंडले वीसंसागरोवम कोडाकोडीउकालो प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ याणं वीसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससारोवमाइ ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमा इ ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थियं पलं रुइलं पुप्फं सुपु

॥

नी वीससागरोपम कोडीबंधसमयथकीमांडी बंधनो स्थितिकह्यो। प्रत्याख्यान नवमापूर्वनावीसवस्तु अधिकारविशेषकह्या। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीमंड लें वीससागरोपम कोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो। एणी ए रत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोक ह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो वीसपल्योपम आउखोकह्यो प्राणतदशमेका ल्पे देवनोउत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। आरणइग्यारमेकल्पे देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्पे जेदेवता। सात १। विसात २ सिद्धार्थ ३। उत्पल ४। भित्तिल ५। तिगिच्छा ६। दिसा ७। सौवस्तिक ८। पल ९। रुचिर १०। पुष्प ११। सुपुष्प १२। पुष्पावर्त १३। पुष्पप्रभ १४।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसूत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलंकर्बुरं चारित्रंयः क्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त्र
योगात्साधवोपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेष कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलोभवत्येकः १ एवंमैथुनंप्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २

प्फं पुप्फावत्तं पुप्फपज्ञं पुप्फकंतं पुप्फवन्नं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमा
णं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइं प० तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आ
णमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमु
प्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परि
निव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एक्कवीसंसबला पन्नता तंजहा।

पुष्पकांत १५। पुष्पवर्ण १६। पुष्पलेश्य १७। पुष्पध्वज १८। पुष्पशृङ्ग १९। पुष्पसिद्ध २०। पुष्पोत्तरावतंसक २१। एहविमाने देवतापणे उपनाछे तेह देव
तानो उत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोलें उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे
आहारनो अर्थउपजे। कैतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॥ इतिवीसमूं ठाणूं सम्पत्तम्॥

॥ २० ॥ हिवे एकवीसमो अधिकार लिखियेछे॥ एकवीस सबलाकह्या जेणेकरी शबल चारित्र करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकर
तोथको साधुपणो शबलकह्यो तेकहेछे। हस्तकर्मसुष्टिजापकरतो शबलकह्यो।१। मैथुनप्रतें सेवतोथको शबल २। रात्रिभोजन करतोथको ३। आधाक



तथारात्रिभीजनं दिवांगृहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिश्चतु भिंभंगकं रतिक्रमादिभिश्चभुंजानः ३ आधाकर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ उद्देशिकं क्री
तमाहृत्यदीयमानंभुंजानः उपलक्षणत्वात् पामिच्चाच्छेद्यानिसृष्टमहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्प्रत्याख्यायापात्तपदार्थेषमर्थतोऽयगन्तव्यानि अभीक्ष्णंप्रत्याख्याया
शनादिभुंजानः ७ अन्तः षण्मासानामेकतोगणाद्गणमन्यसंक्रामन् ८ अन्तर्मासस्यत्रीनुदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अन्त
र्मासस्यत्रीणिमायास्थानानिस्थानमितिभेदः १० राजपिण्डंभुंजानः ११ आकुट्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिका हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुट्यामृषावादंच

॥ हत्थकम्मंकरेमाणे सबले मेहुणंपडिसेवमाणे सबले राइभोयणंभुंजमाणे सबले आहाकम्मंभुंजमाणे सबले
सागारियंपिंडं भुंजमाणे सबले उद्देसियंकीयं आहट्टदिज्जमाणं भुंजमाणे सबले अभिक्खणं अभिक्खणं
पडियाइक्खित्ताणं भुंजमाणे सबले अंतोछण्हं मासाणंगणाओ गणसंकममाणे सबले अंतोमासस्स तओदगले
वेकरेमाणेसबले अंतोमासस्सतओमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिंडंभुंजमाणेसबले आउट्टियाए पाणाइवायं

र्रीभोजन भुंजतोथको ४। जेहनो उपासरोहुयों, तेहघरथानाघरनोपिंड आहारभुंजतोथको ५। उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणीकरे तेउद्दश
वातथा मोलवेचातो गाण्यो आहृतसमाहृतआण्यो आहारतेतोशबल ६। अभीक्ष्णं वलीवली अशनादिक पच्चक्खीने जीमतो ७। छेहले छम्मासमांहि गच्छ
पालटथको शबल ८। एकमासमांहि निणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९। मासमांहि निणिठाण सेवतोथको १०। राजपिंडभुंज
तो ११। आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकानेहणतो १२। आकुटि एमृषावाद वदतो १३। आकुटीए अदत्तादान प्रतिलेतोथको १४। आकुटीए

दन् १३ अदत्तादानंरहन् १४ आकुट्येवानंतर्हितायांपृथिव्यास्थानं वानैषेधिवाचेत् यत्कायोत्सर्गंस्वाध्यायभूमिं वाकुर्वन्नित्यर्थः १५ एवमाकुट्या सस्निग्धसरज स्कायापृथिव्या विस्तारवत्यां सचित्तवत्यांशिलायां लेष्टौवा कोलावासेदारुणि कोलाघुणाः तेषामावासः १६ अन्यस्मिंश्च तथाप्रकारे सप्राणेसबीजादौ स्थाना

करेमाणेसवले आउट्टियाए मुसावायंवदमाणे सबले आउट्टिआएअदिन्नाणंगिरहमाणे सबले आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीएठाणं वानिसिहियंवावेलिमाणेसबले एवंआउट्टियाचित्तमंताए पुढवीए एवंआउट्टि या चित्तमंताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहियंवा चेतेमाणेसबले जीवपइट्ठिएसपाणेसबीएसहरीए सउत्तगेपणंगदगमट्टीमक्कडासंत्ताणए तहपगारठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतेमाणे सबले आउट्टियाए मूलभोअणवा कंदभोयणवा तयाभोयणंवा पवालभोयणवा पुप्फभोयणंवा फलभोयणंवा हरियभोयणंवा

सचित्त पृथिवीऊपरि बैसतो अथवा सूवतो या स्वाध्याकरतो १५। सचित्तशिला तथा पाषाण पृथिवी सचितऊपरि घुणसहितकाष्ठ ऊपरिबैसतो सूवतो अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६। जीवप्रतिष्ठित एहवो सप्राण बीजप्रमुखऊपरि बैसतोथको एकेंद्रिय बेइन्द्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रय इत्यादिक जीवविराधना करतोअथवा ऊपरिसूतो सज्झायकरतो १७। आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कंदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन वलीफलभोजन हरियभोजन करतोथको १८। एकवर्षमांहि दसदगलेपकरतो सबल १९। वर्षमांहि दसमायाठाण सेवतोथको २०। अभीक्ष्णम् वलीवली आतो

ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीस पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण एक्कवीसंपलि उवमाइ ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीसंसागरोवमाइं ठिई प० अच्चुतेकप्पे देवाणं जहन्ने णं एक्कवीस सागरो वमाइ ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छं सिरिदामं कंडं मल्लकिट्टं चावोन्नतं आरणवडिं सग विमाण देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कवीसाए अ द्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणदेवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आ हारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेएक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

नकल्पें कीतलाएक देवतानो एगवीस पल्योपम आउखोकह्यो। आरण इग्यारमेकल्पें देवतानो उत्कृष्टो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। अच्युते बारमेक ल्पे देवतानो जवन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ कांड ३ माल्यकृष्ठ ४ चापोन्नतं ५ आरणावतंसक ६ एहछ विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो एकवीसे अर्द्धमासे पखवाडे सासोस्लास यणोले उंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। कीतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये

सक चेतिवट्त्रिमाननामानोति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमंतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणिषट्स्थितेरर्वाक् तन्नमार्गच्यवननिर्ज्जरार्थं परिषह्यंते इति परीषहाः दिगिंछत्ति बुभुक्षासैवपरीषहो दिगिंछापरीषहइति सहनचास्यमर्यादानुल्लंघनेन एवमन्यत्रापि १ तथा पिपासात्तृट् २ शीतोष्णेप्रतीते ४ तथाद शयमशकाश्च दंशमशकाउभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्वामहत्त्वकृतश्चैषाविशेषो ऽथवा दंशोदंशनंभक्षणमित्यर्थः तत्प्रधानामशका दंशमशकाः एतेचयूकामत्कु णमल्लोटकमक्षिकादीना मुपलक्षणमिति ५ तथाचेलानांवस्त्राणांवासर्वथावीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वेषांवाऽभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि

झिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० । दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे

मोक्खजास्ये इतिएकवीसमूं ठाणूंसमस्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमो समवाय लिखियेछे। बावीस परीसह परिसामस्तपणे निर्जराने अर्थेसहिवो खमवो तेपरीसहकह्या। तेकहेछे। दिगंछा परीसह दिगछाशब्द देशीभाषाए क्षुधा तेहनो सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो तेदिगंछापरीसह १। एम पिपासा तृषापरीसह २। शीतठाढ तेहनोपरीसह ३। उष्णतापनोपरीसह ४। डास मसा तथा जू माकणनो परीसहवो ५। आंचलवस्त्रनो अभावनोपरी सह ६। अरतिमानसी विकारपरीसह ७। स्त्रीनोपरीसह ८। चर्यांग्रामादिकनेविषे अनियत विहारनोपरीसह ९। सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १०। अम

कार: ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैषेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमि: १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसति: संस्तारकोवा ११ आक्रो
शोदुर्वचन १२ बधोयष्ट्यादिताडन १३ याञ्चाभिक्षण तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ तृणस्पर्श: संस्तारकाभावे तृणेषुशयानस्य १७ ज
ल्ल शरीरवस्त्रादिमल १८ सत्कारपुरस्कारौ वस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसंपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करण सन्मानन सत्कारपुरस्कार: १९ प्रज्ञानंसामान्येनम
त्यादि ज्ञविदज्ञानमितिसूयते २० दर्शनसम्यग्दर्शनसहनचास्यक्रियादिवादिनां विवर्जनत: श्रमणेपिनिश्चलचित्ततयाधारण २१ प्रज्ञास्वयविमर्शपूर्वको वस्तुप
रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादशांग'सचपचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ भेदात्तनदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे बहपरीसहे जायणापरीसहे
अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरी
सहे दंसणपरीसहे दिठिवायस्सणंबावीसंसुत्ताइं छिन्नछेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं

नोज्ञ तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा संथारानो परीसह ११ । आक्रोश वा दुर्वचनपरीसह १२ । वधयष्ठ्यादिकें ताडवो तेहनोपरीसह १३ । याचनाभिक्षानो
मागिवो तेपरीसह १४ । अहारादिकनी अप्राप्ति तेपरीसह १५ । रोगमदवाड तेहनोपरीसह १६ । संथारासबधी तृणतेनोपरीसह १७ । जल्लशरीर वस्त्रा
दिकनोमल तेहनो परीसह १८ । सत्कार तेवस्त्रादिकनी पूजाजठो अभ्युथादवो तेणेकरी पुरस्कार सन्मान तेहनोपरीसह १९ । प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह
नोपरीसह २० । ज्ञानमतिश्रुत तेनज्ञो तेअज्ञानपरीसह २१ । दंसणतेसम्यक्त्व तेहथकी जेचलवो तेदंसणपरीसह २२ । दृष्टिवाद बारमो अंगतेहना पाचभेद

द्वाविंशतिःसूत्राणि तत्रसर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयाद्यर्थस्तवनासूत्राणि च्छिन्नच्छेयणाइयाइंति ग्रहयोनयः सूत्रंच्छिन्नंच्छेदनेच्छति सच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल मुक्कट्ठमित्यादिश्लोकः सूत्रार्थतः च्छेदनस्थितो नद्वितीयादिश्लोकानपेच्यते इत्येव यानिसूत्राणिच्छिन्नछेदनयवति तानिच्छिन्नछेदनयिकानि तानिचस्वसमयायाः जिनमताश्रितायाः सूत्राणांपरिपाटिः पद्धतिस्तस्याः स्वसमयसूत्रपरिपाट्यांभवन्ति तयावाभवंतीति तथा अच्छिन्नच्छेयणपियाइं त्ति ग्रहयोनयः सूत्रमच्छिन्नंच्छेदेनच्छतिसोच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादिश्लोको ऽर्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेचमाण इत्येवंयान्यच्छेदनयवंति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता निचाजीविकासूत्रपरिपाट्या गोशालकमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसर्वंन्यात्मकप्रतिवद्धसूत्रपद्धत्यां तयावाभवन्ति अचररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्यो

अछिन्नछेअणाइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए

परिकर्म १। सूत्र २। पूर्वगत ३। प्रथमानुयोग ४। चूलिका ५। तिहां चौथेभेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाचको सूत्रकहिये छिन्नछेयनया इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहतांछेद्यांखंड्यांछेदवेकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोमंगलमुक्किट्ठं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थथको छेदवेकरीरह्योबीजाश्लोकनी अपे चा वाञ्छानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवंत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्धतिने विषेछे। बावीससूत्र अ छिन्नछेदनयकछे नयकहतां सूत्रछेदवेकरी छिन्नथी खंडितनथी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थथको बीजाश्लोकनी वांछाकरी तेबावीससूत्र अछिन्नछेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिवद्धसूत्र परिपाटी सूत्रपद्धतिनेविषेछे। बावीससूत्र त्रिकनयवंत तेहगोसालकमतानुसारीय

न्यापेक्षमाणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाच्चिन्त्यन्ते यानिनयद्विकत्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते त्रैराशिकसूत्रपाद्या इहत्रैराशिकागो
शालकमतानुसारिणोऽभिधीयते यस्मात्त सर्वंत्र्यात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवोजीवाजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचितायामपि ते
त्रिविधनयमिच्छति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिक उभयास्तिकश्चेति एतदेवनयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथाचउक्कनइयाइति नयचतुष्का
भिप्रायात्तेश्चिन्त्यंतेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कंचैव नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राहीच तनयः सामान्यग्राहीससंग्रहेंऽतर्भूतो विशेषग्रा
हीतुव्यवहारे तदेवसंग्रहव्यवहार ऋजुसूत्राः शब्दादित्रयंचैकएवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामणवादीनांपरिणामोधर्मः पुद्गलप
रिणाम सच पंचवर्णगंधद्वयरसपंचस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुइति भेदद्वयक्षेपादाविंशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्य यत्तिर्यग्गामवाय्वादिः अगुरुल

बावीसंसुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवन्नप
रिणामे नीलवन्नपरिणामे लोहियवन्नपरिणामे हालिद्दवन्नपरिणामे सुक्किलवन्नपरिणामे सुब्भिगंधपरि

सूत्रपरिपाटीएछे। जिम नयचितानेंविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक
२ लोकालोक ३ एहवा ३ छे। राशीना बावीससूत्रछे । बावीससूत्र चतुष्कनयवतकह्या नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूचक २२ सूत्र
स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेछे। बावीसभेदें पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेंछे। कालव
र्णकरी परिणतथ्याम तेकालवर्णपरिणाम १। एमजनीलवर्ण परिणाम २। लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३। हालिद्रपीतवर्णपरिणाम ४। शुक्लश्वेतवर्णपरिणा

णामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुरर
सपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणा
मे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे गुरुलहुपरिणामे इमी
सेण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० छट्ठीए पुढवीए उक्कोसे
णं बावीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं साग
रोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण बावीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६। दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७। तीखेरसे परिणत तेतीक्ष्णरस परिणाम ८। कटुकरस परिणाम ९। कषायरस परिणाम १०। अंबिलरस परिणाम ११। मधुररस परिणाम १२। कर्कशस्पर्शे कारी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३। मृदुस्पर्शपरिणाम १४। गुरुस्पर्श परिणाम १५। लघुस्पर्शपरिणाम १६। शीतस्पर्श परिणाम १७। उष्णस्पर्श परिणाम १८। स्निग्धस्पर्श परिणाम १९। रूक्षस्पर्श परिणाम २०। अगुरुलघुस्पर्श परिण तद्रव्य तेस्थिरसिद्धिचेत्र घटाकारेंरह्यामनुष्यचेत्र बाहिर जोतिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यग्गामि जोतिषविमान जाणिवो तथा वाल्लुआदिक २२ एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो छट्ठीतमापृथिवीयेंउत्कृष्टो बावीससागरोपमआउखोकह्यो हेठेसातमपृथिवीयें केतलाएकनारकीनो जघन्योबावीससागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो सौधर्मईशानदेवलोके

॥

जावपासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा
तित्थंकरा पुव्वे मंडलिरायाणो होत्था तं० अजितसंभव अभिणंदण
कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण तेवीस सागरो
वमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुर
कुमाराणं देवाण अत्थेगइयाण तेवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवी
स पलिउवमाइ ठिई प० हेठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे
देवा हेठिमहेठिमगेवेज्जयविमाणंसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं

॥ गनापारगामीहुया। तेकहेछे। अजित १। सभव २। अभिनदन ३। सुमति ४। जावत्प्रथ्वे पार्श्वनाथ छेहडे वर्द्धमानस्वामीलगें ऋषभनाथआदिअरिहन्त को
शलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया। जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें चौवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मडलीक राजाहुया ते
कहेछे। अजितनाथ सभव अभिनदन यावत् वर्द्धमानस्वामीलगें ऋषभ अरिहत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिहुया। एणीयें रत्नप्रभा
पृथिवीयें केतलाएक नारकीनोतेवीस पल्योपम आउखोकह्यो। छठेसातमी पृथिवीये केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेव
तानो केतलाएकनो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठिममध्यम ग्रैवेयके एत
ले बीजे ग्रैवेयके देवतानो जघन्यतिवीससागरोपम आउखोकह्यो जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृ

चत्वारिसूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधेषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसप्ततेषांचान्वर्थस्तदधिगमाधिगम्यइति ॥ २२ ॥ च
तुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउक्ति जंबूद्वीपलक्षणक्षेत्रस्य

ठिई प० तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं दे
वाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणे
हिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥
चउव्वीसं देवाहिदेवा प० तं० । उसभ अजित संभव अभिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुवि
धि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म संति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वद्धमाण

छी तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही। तेहदेवता तेवीसे पखवाडे स्वासोस्वासादिक बोलकरें जचोले नीचोमूंके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वां
छाउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेत्रेवीसभवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मुंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति तेवीसमो समवाय सम्प्रत्तम्
॥ २३ ॥ हिवे चौवीसमो समवाय लिखियेछे। चौवीस देवाधिदेव देवइन्द्रादिक तेसांहि अधिकादेव पूज्यपणाथकोते देवाधिदेवकह्या तेकहेछे ऋषभ १
अजित २। सभव ३। अभिनंदन ४। सुमति ५। पद्मप्रभ ६। सुपार्श्व ७। चद्रप्रभ ८। सुविधि ९। शीतल १०। श्रेयांस ११। वासुपूज्य १२। विमल १३
अनत १४। धर्म १५। शांति १६। कुथनाथ १७। अरनाथ १८। मल्लिनाथ १९। मुनिसुव्रत २०। नमिनाथ २१। नेमिनाथ २२। पार्श्वनाथ २३। वर्द्धमान

वर्षीणांवर्षधराणां ऋजुसीमाजीवोच्यते आरोपितज्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्चलघुहिमवच्छिखरिणोः प्रमाणं २४ ९ ३२ । अष्टत्रिंशद्भागश्चयोजनस्य किं

चिद्विशेषाधिकः अत्रगाथा चउवीससहस्साइं नवयसएजोयणाणबत्तीसे चुल्लहिमवंतजीवा आयामेणंकलद्धंचत्ति ॥ १ ॥ कलार्धमितिएकोनविंशतिभागस्यार्धं

तत्राष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिर्देवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनामष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्काणां एककल्पोपपन्न वैमानिकानां एवंचतुर्विंशतिः

सेंद्राणिचमरेंद्रादाधिष्ठितानिशेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रायेषुतान्यहमिंद्राणि अत्रामिंद्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिंद्राणि अवि

द्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशांतिकर्मकारीणि उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगतः सर्वाभ्यंतरमण्डल

प्रविष्टः सूर्यःकर्कसंक्रांतिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यंगुलिकांपौरुषीं प्रहरैभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते निर्वर्त्यछात्वा णंवाक्यालंका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णववत्तीसे जोयणस
ए एगं अट्ठतीसइभागंजोयणस्स किंचिविसेसाहिआउ आयामेणं प० चउवीसंदेवठाणासइंदिया प० से

२४ । मेरुथकी तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमांहि छेहल्यो लघुहिमवंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्योशिखरिए विहुंवर्षधरपर्वतनी जीवाचेत्रनी अने

वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४९३२ योजन नवसे बत्रीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अडीया ३८ थाय एहवी अर्धकला कांइक

विशेषाधिक लांबपणीकही । चोवीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेंद्र

रेनिवर्त्तंते सर्वाभ्यन्तरमंडलात्द्वितीयमण्डलमागच्छति आहच आसाढमासेदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदीप्रवहति वोढुंप्रवर्त्तते सचपद्मद्रहात्तोरणेम

साऋहमिंदा ऋपुरोहिऋा उत्तरायणगतेणंसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायंणिव्वतइत्ताणं णिऋहति गंगा सिंधूउणं महाणदीउपवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती उणंमहाणदीउ पवाहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० ऋहेसत्तमाए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० ऋसुरकुमाराणं देवाणं ऋत्थेगइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं ऋत्थेगइया

क इन्द्रसहितकह्या । शेषथाकता नव ग्रैवेयक पांचअनुत्तरना देवता अहमिंद्र सेवक स्वामीनोभावनही । उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे स वाभ्यन्तरमांडले कर्कसंक्रांतिदिने सूर्य चोवीस अगुले हस्तप्रमाणे नपनीछाया एपोरुषीछाया प्रहरदिवसनी छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तेरहे । आसाढे सि दुपयाइति वचनात् । गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी । प्रवहे तोजेस्थानकथकी पद्मद्रहथकी निकली तेप्रवाहनेविषे साति रेकझाझेरो चोवीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथकी २५ कोसहुई । रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुंडरीकद्रहने विषे सातिरेक झाझेरो २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो झांझेरापणाथकी २५ कोस । एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चोवीसपल्योपम आउखोकह्यो । हेठीएं सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनो चोवीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवनो केतलाएकनो चोवीस पल्योपम आउखो

निर्गमइहसंभाव्यते नपुनर्यंइत्यत्रप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रेहि जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥

णं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा हेठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहि आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २४ ॥

पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पचजामस्सपणवीसं भावणाउ प० तं० इरिआसमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

कह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो चौवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेबीजूं ग्रैवेयक तिहांना देवतानो जघन्यो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता चौवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारिबोलकरे तेहदेवताने चउवीसवर्ष सहस्से आहारनो अर्थंउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेचौवीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये॥ इति चौवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिवे पचीसमो समवाय लिखियेछे। पहिला श्रीआदिनाथनेवारे छेहल्या महावीर तीर्थंकरनेवारे यतीना पचमहाव्रतनी पचवीस भावनाकही महाव्रतराखिवाना उपाय तिहां पहिला महा

॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधनवरमिह स्थितेरर्वाग्नवसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्सन्ति पञ्चानांयामाना महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा ओत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रेर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा लोकभाजनभोजन आलोकनपूर्वभाजनपात्रेभोजन भक्तादेरभ्यवहरण अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचिंत्यभाषणतादिकाद्धिती यस्यतत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञान ज्ञातायांचसीमायांस्वयमेव उग्गह मिति अवग्रहस्यानुग्रहणता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः २ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां संविग्नानामवग्रहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

लोयभायणभोयणं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ५ अणुइंतिभासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयवि वेगे हासविवेगे ५ उग्गहअणुणवता उग्गहसीमंजाणणया सयमेवउग्गहंअणुगेराहणया साहम्मियउग्गहंअ

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे। ईर्यासमितीयें मार्गें जोईचालवो एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १। एमसगलेकहेछे मनोगुप्ति २। वचनगुप्ति ३। आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४। आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निक्षेप मूकवो तिहां समिति पूंजीकरी पछे लेवो मूंकिवो ५। हिवे बीजा महाव्रतनी भावना पांच विचारी बोलवो १। क्रोधनो त्यागछांडिवो २। लोभनोत्याग ३। भयनोत्याग ४। हासजो छांडिवो ५। हिवे त्रीजा महाव्रतनी भावना पांच। गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थे अवग्रह आज्ञानो जणावणो १। अवग्रहगृहस्थेदीधेथके सीमामर्यादानो ज णावणो २। सीमाजाणेथके स्वयमेवपोतेज अवग्रहनी अनुग्राहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३। साधर्मिक अनेरा यतीनेअवग्रहमागिएं तथा उपाश्रयने

भवत्यन्यथावारोधितेतिवाचनांतरे आवश्यकानुसारेणद्दश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्गत्या संक्लिष्टपरिणामद्गत्युक्तमयमपि द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तादिका: कर्मप्रक्र

तोर्वंध्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिग्रहणं विकलेंद्रियोद्वित्रिचतुरिंद्रियाणामन्यतम: णमित्यलंकारे पर्याप्तीन्याअपिवध्नातीत्यप

र्याप्तग्रहणमपर्याप्तकएवध्नाता अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावध्नातिसोप्येता: संक्लिष्टपरिणामोवध्नातीति संक्लिष्टपरिणामद्गत्युक्ता मयमपिद्वीन्द्रियाद्यपर्याप्त

सा उग्गहपडिमा सत्तिकसत्तया जावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्झयणंपणवीसइमं मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए

सीय चूलिकानो अधिकारनथी परचूलिकावाह्री सूत्रमांहि तेमाटे इहांनिसीथपद ग्रन्थाख्य विमुत्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पचवीसनो जाणिवो

आचारांगे बीजीश्रुतस्कंधछे तेमांहि पहिलेश्रुतस्कंधे नवअध्ययन तेमांहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रम

णें विछे दीपल्योपूछ्यायें आठअध्ययन उगर्या तेहना उद्देशा ४४ छे एकावनमे ठाणिलिख्याछे। हिवे बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि

अंतर्भव्याछेतो पहिला श्रुतस्कंधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ एवं पचवीस अध्ययनकह्या। अने पहिला श्रुतस्कंधना ९ अध्ययनना उद्देसा

६० बीजा श्रुतस्कंधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशाथया। हिवे बीजे श्रुतस्कंधे १६ अध्ययनछे तेमांहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे

आगल्या ७ अध्ययन एकसरां बीजी चूलिकारूप पनरमं अध्ययन त्रीजी चूलिकारूप सोलमं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचमी निशीथाध्ययननो इहां अ

धिकारनथी। मिथ्यादृष्टि। विकलेंद्रिय बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रिय अपर्याप्तथका संक्लिष्टपरिणामे महाभूंडो अध्यवसायें उपार्ज्योंकर्म तेहनी पचवीस उत्तर

प्रकृतिबांधे तेकहेछे। तिर्यंचगति नामकर्म १। विकलेंद्रिय जातिनाम २। औदारिक शरीरनाम ३। तैजस शरीरनाम ४। कार्मण शरीरनाम ५। हुंडक

कषायोग्यबध्नाति तत्रविगलिंदियजातिनामति कदाचित् द्वीन्द्रियजात्यासह पचविंशतिः कदाचित्त्रीन्द्रियजात्या एवमितरथापीति । गगेत्यादि पंचविंशतिगं
व्यूतानि पृथुत्वेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहओत्ति द्वयोर्दिशोः पूर्वतोगगा अपरतः सिधुरित्यर्थः पद्महृदाद्विनिर्गते पच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वादक्षि

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठ्ठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगडीओणिबंधति तिरियगतिनामं विगलिं
दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मणसरीरनाम हूडगसठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग
नामं छेवठ्ठसघयणनामं वन्ननाम गधनामं रसनामं फासनाम तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघाय
नामं तसनाम बादरनाम अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनाम असुभनाम दुभगनाम अणादेज्जना
मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनाम २५ गंगासिंधूओणंमहाणदीओपणवीसगाऊयाणि पोहत्तेणं घडमुहपवित्तिए

सस्थाननाम ६ । औदारिक शरीरना अगोपाग ७ । छेवठ्ठसघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यचनी आनुपूर्वी
१३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपघातनाम १५ । त्रसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम
२१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनादेयनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गगासिधूनदीपचवीस पचवीस गाऊनेप्रवाहे पिहुलपणे पद्म
द्रहथकी निकली पांचसय योजन हिमवतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशि प्रवर्ती वडमुहपवत्तिएण घडानामुखनीपरी पचवीसकोस पिहुलीजीभीयें मगर
मुखप्रणालीयें मुक्तावलीहारसंठाणे सस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतथकी हेठीउतरी गगानदी गगाप्रपात कुडमां पडेछे सिधुनदी सिधुप्रपाते पडे

णाभिमुखेप्रवृत्ते घडमुहपवित्तिएणंति घटमुखादिव पंचविंशतिक्रोशे पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्तेनमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं
स्थितेन प्रपतज्जलसतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयोः प्रपततः एवरक्तारक्तावत्यौ नवरंशिखरिवर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

णं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति रत्तारत्तवईउणं महाणदीउपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि
त्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेणं रयणप्प
भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीस पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया
णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण पणवीसं पलिउवमाइं
ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाण अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० मज्झिमहेठिमगेवेज्जाणं दे

छे। रक्तारक्तावती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी पचवीसगाउ पिहुलपणे पुंडरीकद्रहथकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पांचसय योजन चालीने मगरमु
खप्रणालीयें मुक्ताहारसंठाणप्रपातेकरि हेठीउतरीके रक्ता रक्ताकुंडमांहिपडेछे रक्तवती रक्तावतीकुंडमांहि पडेछे। लोकबिंदुसार चौदमा पूर्वना पचवीसव
स्तुअधिकार विशेषकह्या। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो पचवीस पल्योपम आऊखोकह्यो। हेठीयें सातमी पृथिवीयें केतलाएकनो
२५ सागरोपम आउखोकह्यो। असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योप
म आउखोकह्यो। मध्यम हेठिम ग्रैवेयके एतले ऊंचेग्रैवेयक विमाने देवतानो जघन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके त्री

पुडरीकद्रहादाग्रपततइति तथालोकबिन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालायत्नश्रुतस्कन्धेऽध्ययनेच याव ॥

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भ वसिद्धियाजीवा जेपणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ छव्वीसंदसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला प० तं० । दसदसाणं

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो २५ सागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले जंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे । छेकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये संसारना परितापथकी ठाढाथा स्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये इति पंचवीसमो ठाणो सम्मत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छव्वीसमो समवाय लिखेछे । छवीस दशाकल्प व्यवहारना उद्देश नकाल जेह श्रुतस्कंधे जेतला अध्ययनहुया तेतला उद्देसनकाल उद्देशनना अवसरकह्या तेकहेछे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना

सद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं०

छकप्पस्स दसववहारस्स अणवदि सद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं० मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगं दुगंछा इमी सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्जायाणं देवाणं जहन्नेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेट्ठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देशन कालथया। जेहने अनादि अनंत अभव्यपणो सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्यसिद्ध कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चौथो तेहनीमूल २८ प्रकृतिछे तेमांहि अभव्यजीवने निपुजी करणतो आवरे छवीसकर्मना अशकर्मनी प्रकृति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेछे। मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसोले कषाय अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानीय ४ सञ्ज्वलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनी भेलतां १७। प्रकृति स्त्रीवेद १८। पुरुषवेद १९। नपुसकवेद २०। हास्य २१। अरति २२। रति २३ भय। २४। शोक २५। दुगछा २६। एणीपरत्नप्रभा पृथिवीये केतलाएक नारकीनो छव्वीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठीये सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानो २६ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानें केतलाएक देवनो २६ पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यम २ ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयके देवतानो जघन्य २६

म्यध्ययनान्युद्देशकाया तनतावंतएवउद्देशनकाला उं इशावसरा:श्रुतोपचाररूपाइति। तथा अभव्यानांनिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्ता यांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मांशाभवतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिरत्रानकमपिव्यक्तासेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितेरर्वाक् तत्रअनगाराणां साधूनां गुणाचारित्रविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि ५ इंद्रियनिग्रहाश्चपंच क्रोधादिविवेकाश्चत्वारः सत्यानित्रीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना करणसत्यंयथा

तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं छव्वीसंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेछव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं०। पाणाइवायाओ वेरमणं मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ वेरमणं मेहुणाओ वेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चक्खिं

सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम हेठिम एहवाले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो२६ सागरोपम आउखोकह्यो। ते हदेवता छव्वीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले अथवाले, नीचोमेले तेहदेवताने २६ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीवजे२६ भवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये संसारदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छव्वीसमो समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमो समवाय लिखेछे सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र विशेषरूपगुणकह्या तेकहेछे। प्राणातिपातनो विरमण १। मृषावादनो विरमण २। अदत्तादाननो विरमण ३।

उत्तरउत्ति प्राकृतत्वादुद्दलकोवियोजकोजंतुः तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मांशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योद्दलि
तत्वादिति। तथाश्रावणमासस्य शुद्धसप्तम्यांसूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिका हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषीछायां निर्वर्त्य दिवसक्षेत्ररविकरप्रकाश्यमाकाशमिव
र्द्धयन् प्रकाशहान्याज्ञानिनयन् रजनीक्षेत्रमंधकाराक्रांतमाकाशमभिवर्द्धयन् प्रकाशहानिवृद्धिंनयन् चारश्चरति व्योममण्डलेभ्रमणङ्करोति अयमत्रभावार्थ
पूर्ष्ङ्गालस्थूलन्यायमाश्रित्य आषाढ्याचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीछायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायांगुलवर्द्धते ततश्चश्रावणशुद्धसप्तम्यामंगुलत्रयवर्द्धते
सातिरेकैकविंशतितमदिनलात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकैरंगुलैः सहसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रांतिरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

ण मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं
गुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताण दिवसखेत्तंनियट्टमाणे रयणिखेत्तंअभिणिवड्ढमाणेचारंचरइ इमीसेणं
रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण सत्तावीसं पलिउवमाइ ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थे

मोहिनी माहियी। श्रावणसुदि सातमदिने सूर्यहस्तागमायें लगनी छायायेनापियें तेमाहिं २७ अगुलीयें पोरसीनी छायाने निवर्तावी करीने दिवसनूंक्षेत्र
सूर्यनोप्रकाश घटाडतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनीकात आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथकी पोसीपुनिमलगे मासे
मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनप्रतिविभाग दिवसघटाडी रात्रिवधारे। एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकीनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो
केठिएं सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो

समदिनं तत्रोत्तारूपापोरुपीछायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरमिहपंच स्थितिःप्राक्सूत्राणि तत्रआचारः प्रथमांगस्तस्य

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि
उवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसंपलिउवमाइं ठिई प० मज्झिम
उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेण सत्तावीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देव
त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तावीसाए अद्धमासे
हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे स
मुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छट्ठे विमाने देवतानो जघन्य सत्तावीस सागरो
पम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानो उत्कृष्टो सत्तावीस सागरोपमनो स्थितिकहो। ते
हदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्ने आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोचजा
स्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिवे अठावीसमो समवाय लिखेछे। अठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विपेश

प्रकल्पोऽध्ययनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोऽध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रक्वचित्ज्ञानाद्याचारविष येऽपराधमापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तदत्त पुनरन्यमपराधविशेषमापन्नस्तत स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यंमासिकं प्रायश्चित्तमारोपितमित्येव मासि क्यारोपणाभवति तथापचरात्रिकशुद्धियोग्यमासिकस्यशुद्धियोग्यचापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वदत्तप्रायश्चित्ते सपचरात्रिमासिकाप्रायश्चित्तारोपणात्सपचरात्रमा सिक्यारोपणाषट् ६ एवद्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्यः ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाःतथासार्द्धदिनद्वयस्य पचस्यचोपघातनेनलघूनांमासादीनांप्राचीं नप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वद्धेणतुसजुयंकाउं॥देज्जायलहुयदाणे गुरुदाणतत्तियचेवत्ति ॥ यथामासार्द्धं १५ पचवि शतिकार्द्धंच सार्द्धद्वादशवर्षसर्वमीलने सार्द्धसप्तविंशतिरिरितिलघुमासाः तथामासद्वयार्द्धं मासोमासिकस्यार्द्धंपच उभयमीलनेसार्द्धोमासइति लघुद्विमासिकं २५ तथातेषामेवसार्द्धदिनद्वयाद्यनुघातनेनगुरूणामारोपणा आनुघातिकारोपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्तावतोनांतच्छुद्धीनामारोपणाकृत्स्नारोपणा

मासियाआरोवणा सपचराइमासियाआरोवणा सदसराइमासियाआरोवणा सपन्नरसराइमासियाआरोव

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनो प्रकल्पस्थापिवो तेआचारप्रकल्प अठावीसभेदेंकह्या तेकहेछे। किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपा म्यो तेहनो कांइक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेश्रो तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेमासिको प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिका रोपणाइइ पहिली १। सपंचरायेति पंचरात्रीयें शुद्धियोग्य तथा मासें शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पचरात्रिसहित मासप्राय श्चित्त आरोपणाथकी सपचरात्रि मासिकी आरोपणाकही बीजी २।एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाआरोवणा सपंचवीसराइमासियाआरोवणा एवंचेवदोमासियाआरोवणा सपंचराइ दोमासियाआरोवणा एवंतिमासियाआरोवणा चउमासियाआरोवणा उवघाइयाआरोवणा अणुघाइया

मासिकारोपणा ३। एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४। सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५। संपचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६। एमज पूर्वंनेपरी कहीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे बेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेबेमासिकारोपणाकही ७। पचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीये अपराधे प्रासनेपूर्वदत्त प्रायश्चितने पंचरात्रिसहित बेमासिक आरोपणाकरवी तेसपंचरात्रि वेमासिकारोपणाकही ८। एमज सदसरात्रि बेमासिकारोपणा नौमी ९। सपनरसरात्रि बेमासिकारोपणा १०। सवीसरात्रि बेमासिकारोपणा ११। सपंचवीसरात्रि बेमासिकारोपणा १२। पूर्वनोपरीछे त्रिमासिकारोपणा एव १८। चौमासिकारोपणा एवं २८ मासनोअर्द्ध १५। अनेपूर्वंपूर्वंपचवीसनोअर्द्ध १२॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनूंअर्द्ध मासवली मासार्द्ध १५ बिहूंमिली देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७॥ दिनआरोपो तेहउपघातकारोपणा पंचवीसमी २५। यदाह। अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वद्धेणंतु संजओकाओ। देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तियचेव॥ बेमासमांहिथकी अढोदिनकाढी एतले १ मासदिन साढासत्ताईस एहने उपघातआरोपणाकही तेमांहि अढोदिनघाति एतले पूराबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधलाग्योहोय तेहने तेतलोपूरी आलोयणां आरोपी तेहकृत्स्नारोपणा २७ जेहने घणोजघणो अपराधलाग्योछे परंछमासी उपरांत आलोयणनथी तोवीजा सग

२६ तथाबहुनपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतेषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वेवांतर्भाव्यंशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साऽकृत्स्नारोपणेत्यष्टाविंशतिरेतस्य
सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावांस्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवचितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्यैत
द्घातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायंतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिसूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्पे एतावताय आयरियव्वे भव
सिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ
णिज्ज मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आभिणिबोहिअणाणे अठा

लायेकर्म छमासीमांहि अंतर्भव्याछे एमजाणी छमासीप्रते आरोपीये तेअकृत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलेओ आ
चार आचरिवोकह्यो। जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीछे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथामोहनीयकर्मनो अठावीस कर्मनाअंशकर्मनोप्रकृतिसत्ताये
कही तेकहेछे। सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १। मिथ्यात्व वेदनो मिथ्यात्वमोहनी २।सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनो एतले मिश्रमोहनी ३। सोलकषाय अणंता
नुबंधी यादिक कषकही संसार तेहनोआय लाभहोय जेहथकी तेकषाय कषायसरीखूं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोह
नी कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेंलिखीछे। आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठावीसप्रकारेकह्यो तेकहेछे। श्रोत्रेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

श्रुभयोरादेयानादेययोश्चपरस्परंविरोधित्वेनैकदावस्थभावादव्यभचरद्भ्यातीत्युक्तं तत्रचैकशब्दग्रहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकसूत्रेविंशतिस्ताएव प्रकृतयो

वीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे चरिकंदियअत्थावग्गहे घाणिंदियअत्थावग्गहे जिभ्भिंदियअत्थावग्गहे फासिंदियअत्थावग्गहे णोइंदियअत्थावग्गहे सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदिअवंजणोग्गहे जिभ्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदिअ वंजणोग्गहे सोतिंदियईहा चिरिकदियईहा घाणिदियईहा जिभ्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियईहा सोतिंदियावाए चरिकंदियावाए घाणिंदियावाए जिभ्भिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिअ

प्रकारें ग्रहिवो तेअर्थावग्रह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी कांइक अर्थनो ग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावग्रह २। एम घ्राणेंद्रियार्थावग्रह ३। जिह्वेंद्रियार्थावग्रह ४। स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह ५। नोइंद्रियमन तेहनो अर्थावग्रह तेह नोइंद्रियार्थावग्रह ६। शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराइं तिवारपछी शब्दज्ञान उपजे तेश्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह ७। गंधपुद्गल नासिकामांहि आवी भराइं तिवारपछी गंधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रह ८। एम जिह्वेंद्रियव्यंजनावग्रह ९। स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावग्रह १०। आंखीने अने मननोव्यंजनावग्रह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावग्रह जाणिवा। श्रोत्रेंद्रियेकरी शब्दनेविषे ईहा ईवी आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकरेस्त्रीनो एहश्रोत्रेंद्रियईहा ११। आंखेंकरी आलोचवो स्थाणुर्वापुरुषोवा एहचक्षुरिंद्रियईहा १२। एमघ्राणेंद्रियईहा १३ जिह्वेंद्रियईहा १४। स्पर्शनेंद्रियईहा १५। नोइंद्रियईहा १६। तेमनकरी आलोचवो। ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहे। श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेंकरी निश्चयकरिये ते श्रोत्रेंद्रियावाय १७। एम चक्षुरिंद्रियावाय तेखीलाने जपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८। इमघ्राणेंद्रियावाय १९। जिह्वें

ऽष्टानांतुस्थाने अष्टावत्याबध्नातिएतदेवाह एवंचेवेत्यादि नानात्वंविशेषः ॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि स्थितेःप्राक् तत्रपापोपदानानिश्रुतानि तेषाप्रसंगस्तथासेवनारूपः पापश्रुतप्रसंगः। सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्तः पापश्रुतविषयतया

अत्थेगइयाणं अट्ठावीसंपलिओवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अट्ठावीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उवरिम गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं उक्कोसेण अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहि आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेअट्ठावीस भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसगेणं प० तं। भोमे उप्पाए सुमिणे अं

पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम हेठिम एतले सातमे ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही। मध्यम उपरिम एतले सातसे छठेग्रैवेयक विमाने जेदेवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी अठावीस सागरोपमनी स्थितिकही। तेदेवता अठावीस पखवाडे सासोस्वास ऊंचोले घणोले नीचोमेलै तेदेवतानें अठावीस वर्षसहस्रगयें आहारनी वंछाउपजै। छेकेतलाएक भव्यजीव जेअठाईस भवनें आतरे सोभस्यें बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्यें मोक्ष जास्यें अठावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवे गुणतीसमो समवाय लिखियेंछै। उगुणतीस प्रकारे पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापश्रुतान्येवोच्यतेऽतएवाह भोमेइत्यादि तत्रभौम भूमिविकारफलाभिधानप्रधान निमित्तशास्त्र तथाउत्पातं मह्जरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवस्वप्न स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदक अंगंशरीरावयवप्रमाणस्पंदितादिविकारफलोद्भावकं स्वरंजीवाजीवाश्रितस्वरस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनंमषादिव्यजनफलोपदेशक लक्षण लाञ्छनाद्यनेकविधलक्षणव्युत्पादक मित्यष्टावेतान्येवसूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाच्चतुर्विंशतिः तत्रागवर्जितानामन्येषां सूत्र सहस्रप्रमाणं वृत्तिर्लक्षप्रमाणावार्त्तिकवृत्तेर्व्याख्यानरूपकोटिप्रमाण मंगस्यतुसूत्रंलक्षणवृत्तिःटीकावार्त्तिकमपिपरिमितमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्जानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या

तरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे तोमेतिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए एवंएक्केक्कंतिविहं विकहाणुजोगे

तशास्त्र तेपापश्रुत तेहनोप्रसग सेवारूप तेपापश्रुतप्रसंग कह्या । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकपादिक फलनी सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्र जेआकाशथी रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहनां फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशथी जपनो गृहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अगफुरकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कह्यो तेत्रिहुंभेदे कहेछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेंकरी एमजपूर्वे अष्टांग निमित्तकह्यो तेत्रिणभेदे । एव सर्वमिली २४ भेदथया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञप्त्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मन्त्रानुयोग चेडादि

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेटकादिमन्त्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि हरमेखलादि ॥
योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्यः सकाशाद्य.प्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुतत्वानामनुयोगो विचारस्तत्कारणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थः
सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकांतरिताषण्मासा एकोनत्रिंशद्रात्रिदिवसपरिमाणेनभवंति स्थूलन्यायेनक्षणपक्षे प्रत्येकरात्रिदिवस्यैकस्यक्षयादाहच। आसाढव
हुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गुणवइसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमत्रभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागानां द्वात्रि
शत् ऋतुमासश्च त्रिंशदेवदिनानिभवन्तोति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासाऽहोरात्रिषष्टिभागाना त्रिंशतासाधिकोभवति ततश्चप्रत्यहोरात्रं चद्रदिनमेकैकेनद्विष

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अन्नतित्थियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिआइंरा इंदियग्गेण प० भद्दवएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फग्गुणेणमासे वइसाहेणंमासे मासोचंददिणाणं

कमन्त्रसाधनोपायशास्त्र २७। योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८। अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कापिलादिक थी प्र ॥
वर्त्यो पोतानो आचार तेहनो अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह अर्थ २९ । आसाढमास गुणत्रीस रात्रिदिवसनो २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूरोथाय
एकतिथि अधारा पखवाडानी घटै एम एकांतरित छेपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय। यदाह ॥ आसाढवहुलपक्खे । भद्दवएकत्तिएअपोसेअ ॥
फग्गुणवेसाहेसुअबोधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनों। कातिक मास २९ रात्रि दिवसनो । पोसमास २९ रात्रि दिवसनों।
फागुणमास २९ रात्रिदिवसनो। वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनो। चद्रदिवस पडिवातिथि एगूणत्रीसमुहूर्त्त भाखेरानो २९ मुहूर्त्तनो कह्यो। जीवभला

ष्ठिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्ठ्याचंद्रदिवसानामेकषष्ट्यहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्विहचंद्रप्रज्ञप्तेरवसेयइति तथाचन्ददिणेणंति चंद्रदिनं प्रतिपदादि

कातिथिः तच्चैकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंशद्दिनानि . त्रिंशच्चदिनद्विषष्ठिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिन चंद्र

मासस्यत्रिंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ता द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्ठिभागालभ्यंतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे

णवैमानिकेषुत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्बध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पंचेंद्रियजातिः २ वैक्रियद्वय ४ तैजसकार्मणशरीरे ६ समचतु

रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघात १४ पराघातं १५ उच्छ्वासं १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रस १८ बादरं १९ पर्याप्त

२० प्रत्येकं २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभगं २४ सुस्वर २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थं

एगूणतीसंमुहुत्ते सातिरेगेमुहुत्तगेणं प० जीवेणंपसत्थज्झवसाणजुत्ते भविएसम्मदिठी तित्थकरनामसहियाउ णामस्सणियमा एगूणतीसउत्तरपगडीउनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प

अध्यवसाय युक्तायको भव्यक्त सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चे २९ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेविषे देवतापणे उपजे। ते

कहेछे। देवगति १। पंचेंद्रिय जाति २। वैक्रिय शरीर ३। वैक्रियागोपांग ४। तैजस ५। कार्मण ६। समचउरससंस्थान ७। वर्ण ८। गंध ९। रस १०।

स्पर्श ११। देवानुपूर्वी १२। अगुरुलघु १३। पराघात १४। उपघात १५। यशनाम १६। प्रशस्तविहायोगति १७। त्रस १८। बादर १९। पर्याप्त २०।

प्रत्येक २१। स्थिर अस्थिर मांहियेक २२। शुभ अशुभ मांहियेक २३। शुभग २४। सुस्वर २५। आदेय अनादेय मांहियेक २६। यशः कीर्त्ति २७। निर्माण

भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिउवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम्म गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणतीस वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

२८। तीर्थंकरनामकर्म २९। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनीं २९ पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठें सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनीं २९ सागरोपमनो आउखो कह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानीं गुणत्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। सौधर्म ईशानेंकल्पें केतलाएक देवतानीं २९ पल्योपम आउखोकह्यो। उपरिम मध्यम ग्रैवेयके एतले आठमें ग्रैवेयके देवतानी जघन्यत. २९ सागरोपमनी स्थितिकही। जेहदेवता उपरिम हेठिम ग्रैवेयकें एतले सातमे विमाने देवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी २९ सागरोपमनी स्थिति कही। तेहदेवताने २९ पखवाडे सासोसास च्यार प्रकारेहोय। तेहदेवताने २९ सहस्र वर्षेंगए आहारनी इच्छा उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये स

कारवेति ॥ २९ ॥ त्रिगसमंस्थानकंसुगमं नवरं स्थितेरर्वागष्टौसूत्राणि तत्रमोहनीयंसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्यस्थानानिनि
मित्तानि मोहनीयस्थानानि तथाआवितसेत्यादिश्लोकः यश्चायंत्रसान्प्राणान्स्त्र्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतेनमारयति कथमाक्रम्यपादा
दिनासइतिगम्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्संक्लिष्टचित्तत्वाच्चभवशतदुःखवेदनीयमात्मनोमहामोहंप्रकरोति १ तदेवभूतंत्रसमारणेनैकं मोहनीय
स्थानमेवसर्वत्रेति १ सीसाश्लोकः शीर्षवेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेनयः कश्चिद्वेष्टयतिस्त्र्यादित्रसानितिगम्यते अभीक्ष्णभृशन्तीव्रोऽशुभः समारःसइति इत्यस्यगम्यमानत्वा
त्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनआत्मनो महामोहप्रकुरुतइति यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

च्छिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ तीसंमोहणियठाणा प० तं०। जेयावितसेपाणे । वारिमज्झेविगाहिया ॥ उदएणकम्ममारेई । महामोहंपकुव्वइ ॥ १ ॥ सीसावेढेइजेकेई ।

सारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये। इति गुणत्रीसनो ठाणो समत्तम् ॥ २९ ॥ हिवे तीसमो ठाणो लिखियेछे
त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या। तिहां सामान्येकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या। तेकहेछे। जेकोइ
स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पांणीमाहे बोलीनें उदक शस्त्रें करीने आक्रमें तेमहामोहनीय कर्मबांधे। भवनाशतसहस्रलगें वेदनीयकर्म उपार्जें १। शीर्षा
वेष्ठनेकरी चर्ममय बाधेंकरी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थें बींटे तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारतानें महामोह उपजाविवापणाथकी आत्मानें

सत्यामृषा किंचित्सत्यानि वह्नि

मानत्वात् सद्भूतस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टमं ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थः. सत्यामृषा किंचित्सत्यानि वह्न मानत्वात् सद्भूतस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टमं ८ अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान् सथानिवस्तूनिग्राह्यानिवाभाषते अक्षीणझंझः अनुपरतकलहः यःसइतिगम्यते माहामोहंप्रकरोतीति नवमं९ अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान् नीतिमानमात्यः सतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्र दारंवा अर्थागमस्योपायं ध्वसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति संबंधः किंकृत्वा विपुलं प्रचुरमित्यर्थः विक्षोभ्य सामंतादिपरिकरभेदेन सक्षोभनादनायकं तस्यक्षोभंजनयित्वेत्यर्थः कृत्वाविधाय णमित्यलंकारे। प्रतिवाह्या मनधिकारिणीं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार न् राज्यवाखयमधिष्ठायेत्यर्थः। तथाउपगंतमपि समीपमागच्छतमपि सर्वस्वापहारकृते प्रावृतेना तुल्योपमैः करुणैर्वचनैरनुकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थः भं पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशंकृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भि र्वचनै रेताद्दृशस्ताद्दृशस्त्वमित्यादिभिरित्यर्थः भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

कम्मंअत्तकम्मणा ॥ अदुवातुममकासित्ति। महामोहंपकुव्वइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसउ। सच्चमोसाइंभासइ अज्झीणझंझेपुरिसे। महामोहंपकुव्वइ ॥ ९ ॥ अणायगस्सनयवं। दारंतस्सेवधंसिया ॥ विउलंविक्खोभइत्ताणं

यकर्म उपार्जे ८। जाणतोथको पर्षदामाहि बेसीने सत्यामृषा कांइक सांची कांईएक झूठी वाणीबोलेकलहथकी ओसरयोनथी निवर्त्यो नथी तेपुरुष महामो हनीयकर्म उपार्जे ९। नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहवा राज्यना नयवंत अमात्यमंत्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय प्रति ध्वसे विनसाडे स्युं करी ध्वंसे प्रचुर सामंतादिकप्रति विक्षोभीने भेदपाडीने वली करीनें स्यू करीने कलत्रथकी अथवा अर्थागमद्वारथकी लेवाने योग्य नथी एहवी राज्य लक्ष्मीयें पोतेंज अधिष्ठान करीने तथा समीपें आवताने एतले सर्वधन लीयेंथकें दीनस्वरेंकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने झांपीने सामो

विदारयतियोसोमहामोहं प्रकरोतीतिदशमं १० अकुमारभूतो ऽकुमारब्रह्मचारीसन् यः कश्चित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु गृद्धोवसकश्चस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्ते समहामोहप्रकरोतीत्येकादश ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोयः कश्चित्तत्कालएवासेव्याब्रह्मचर्यं ब्रह्मचारी साप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपचनायवदति तथाच एवमर्थाभावं सतामनादेय भणन् गर्दभइवगवामध्ये विस्वरंनदवृषभवन्मनोज्ञ नदतिमुञ्चति नदनादशब्दमित्यर्थः तथायएवंभणन्नात्मनोऽहितो नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगशाठ्यानृतं प्रभूतभाषते यथैवंनिदितभाषते वाया स्त्रीविषयगृद्धया

किच्चाणपडिवाहिर ॥ १० ॥ उवगंतपिकंपित्ता । पडिलोमाहिवग्गुहिं ॥ भोगभोगेवियारेइ । महामोहंप कुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेई । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिद्धेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥ अबंभयारीजेकेई बंभयारीत्तिहंवए ॥ गद्दहेव्वगवंमज्झे । विस्सरनयईनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएबाले । माया

ओसियालो करीने प्रतिकूलवचने करी रे तूं एहवो नीचछे एहवा वचनेंकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकनें भोगविवाने अर्थे विदारे हरे तेमहामोहनीय कर्म करे १० । नथी कुमार भूत एतले परण्यो छे जेकोई लोकमाहि हुं कुमारभूतछुं एतले बालब्रह्मचारी छुं छूं एहवूं कहे वली स्त्रीसाथें गृद्ध लोलुप वली स्त्री ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेंवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथको जेकोई लोकमाहि छुं ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छूं एहवो कहे ते शोभा रहित साधुजनने अग्राह्य गर्दभनीपरें गायना टोलामां वृषभनीपरें मनोज्ञ नथी एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लपट थईने माया सहित मृषा घणूं बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकारी

हेतुभूतया सद्दत्थंभूतोमहामोहंप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानंराजामात्यादिकं वा निश्रितआश्रितउद्वहते जीविकालाभेनात्मानंधारयति कथंयशसातस्य राजादेः सत्कोयमितिप्रसिद्धाअभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहंप्रकरोतीति त्रयोदशं १३ ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संप्रग्रहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रभ्वादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाग्रसाधारणाआगताप्राप्ता अतुलंवायथाभवतीत्येव श्रीः समागता आगता श्रीकस्यप्रभ्वाद्युपकारकविषये ईर्ष्यादोषेणाविष्टोयुक्तः कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षण पापेनाविलमाकुलवाचेतोयस्य सतथा योंतरायंव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगानां चेतयतेकरोति प्रभ्वादे रसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्दशं १४ सर्प्पीनागीयथाअण्डउडं

मोसंबक्ककंमसे ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥
तस्सलुप्पइवित्तम्मि । महामोहपकुव्वइ ॥ १५ ॥ ईसरेणअदुवागामेणं । अणिस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससंपयहीण
स्स । सिरीअतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणआविठ्ठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेअंतराअंचेएइ । महामोहपकु

आत्मानेधारे अने राजसंबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवायकी तेआश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३। ईश्वरें ठाकुरें अथवा ग्रामें जनसमूहें अनीश्वरहुतो तेईश्वरकीधो असमर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वें अनीश्वरहुतो संपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी अतुल असाधारण आवी पामीछे जेहनेते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादोषें मच्छरदोषेकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेंकरी आकुल व्याप्योछे चित्त जेहनो एहवो जेकोइ उपकारी प्रभुने अंतरायप्रति चेतेकरे तेहनो आजीविकानो विच्छेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४। सर्पिणी जिम पोता

अण्डककूटं स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटं संबद्धदलद्वयरूपंहिनस्ति एवंभर्त्तारंपोषयितारं योविहिनस्ति सेनापतिंराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपा
ठकवासमहामोहंप्रकरोतीति तन्मरणेबहुजनदुःस्थताभवतीति पंचदशं १५ योनायकंवाप्रभुराष्ट्रस्य राष्ट्रमहत्तरादिकमितिभावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु
निगमस्यवाणिजकसमूहस्य कश्रेष्ठिनंश्रीदेवताङ्कितपट्टबद्धांकितभूत बहुरवंभूरिशब्दं प्रभुतरयशसमित्यर्थः हत्वा महामोहम्प्रकुरुतेइतिषोडश १६ बहुजनस्यपच
षादीनांलोकानां नेतारंनायकं द्वीपद्वद्वीपःसंसारसागरमतानामाश्वासस्थान अथवादीपद्ववदीपो ऽज्ञानाधकारावृतबुद्धिदृष्टिप्रसराणां शरीरिणांहेयोपादे
यवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् तं अतएवत्राणमापद्रचणंप्राणिनां एतादृश याद्दशागणधरादयोभवति नरं प्रावचनिकादिपुरुषहत्वामहामोहम्प्रकरोतीति सप्तदश

वृइ ॥ १७ ॥ सप्पीजहाअंडउडं । भत्तारंजोविहिंसइ ॥ सेणावइपसत्थारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ १८ ॥
जेनायगंचरट्ठस्स । नेयारंनिगमस्सवा ॥ सेट्ठिंबहुरवंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ १९ ॥ बहुजणस्सनेयारं ।
दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहपकुव्वइ ॥ २० ॥ उवट्ठियंपडिविरयं । जेभिक्खुंजगजीवणं ॥

ना ईण्डानापुट समूह हणेमारे। तिम पोताना भर्तार पोषकने हणेमारे सेनापतिये राजाये प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारे तेमहामोहनीय कर्म
करे १५। जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक्समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेष्ठि नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टबद्ध तथा घणायशनो
धणी एहवाने हणेमारे ते महामोहनीय कर्मकरे १६। बहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभूत
आपदाथकी रचक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७। प्रव्रज्यानेविषे उपस्थित सावधान थयोछे तथा सर्वसावद्य थकी निवर्त्यो जे कोइ

१७ उपस्थितप्रव्रज्यायांप्रविव्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरतं सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतंसाधुंसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतशोभनंवातपः श्रितमा श्रित क्वचित् जेभिक्खुजगजीवणतिपाठः तत्रजगन्ति जगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्मांच्छुतचा रित्रलचणाद्भ्रंशयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादश १८ यथैवप्राक्तन मोहनीयस्थान तथैवेदमपि अनतज्ञानिना ज्ञानस्यानतविषयत्वेन अचयत्वेनवाजि नानामर्हता वरदर्शिना चायिकदर्शनत्वात् तेषा येज्ञानाद्यनेकातिशयसपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवणवअवर्णवादोवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथाना स्तिकवान् सर्वज्ञोज्ञेयस्यानतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाणं अज्जवियअणतओअलोगोवि अज्जविनकोइविउहं पावतिसव्वसुयंजीवो अहपावतितोसभोहोइ अ लोउनवेयमठतित्ति अदूषणचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञानं युगपल्लोकालोकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकातर्वर्त्तिदीपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमा दिति बालोऽज्ञोमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितम १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रातस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोचपथस्यदुष्टोद्विष्टोवा ऽपकरोति

कम्मधम्माउब्भंसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २१ ॥ तहेवाणतणाणीणं । जिणाणंवरदंसिण ॥ तेसिंअवण्णवंबा ले । महामोहंपकुव्वइ ॥ २२ ॥ नेआइअस्समग्गस्स । दुठेअवयरईबहु ॥ तंतिप्पियतोभासेइ । महामोहंप

भिचु जगजीवन अहिंसादि धर्मं जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मथकी भ्रसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। तिमज पूर्वनीपरी अनतज्ञानी अनत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणो तथा ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

अपकारंकरोतीति बहुअत्यर्थंपाठांतरेणापहरति बहुजनं विपरिणमयतीतिभावः तंमार्गंतिप्पयंतीत्ति निदनभावयति निंदयाद्वेषेणवावासयति आत्मानंपरं चयःसमहामोहंप्रकरोतीति विंशतितम २० आचार्योपाध्यायैः श्रुतंस्वाध्यायंविनयंच चारित्रग्राहितः शिचितः तेनैवखिंसतिनिन्दति अल्पश्रुताएतइत्यादि ज्ञानतः अन्यतीर्थिकसंसर्गकारिणइत्यादिदर्शनतः मन्दधर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिनः इत्यादि चारित्रतः यःसएवंभूतोबालो महामोहंप्रकरोतीत्येकविंश तितम २१ आचार्यादीन्श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिभिस्तर्पितवतः उपकृतवतः सम्यकृनतान्प्रतितर्पति विनयाहारोपध्यादिभि र्नंगत्युपकरोतीति तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथास्तब्धोमानवान् समहामोहम्प्रकरोतीति द्वाविंशतितमं२२ अबहुश्रुतयः कश्चिच्छ्रुतेन प्रविकत्थते आत्मानंश्लाघते श्रुत वानहमनुयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभणति आत्मनःस्वाध्यायवाद वदति विशुद्धपाठकोह मित्यादिकंयः स

कुव्वइ ॥ २३ ॥ आयरियउवज्झाएहिं । सुयंविणयंचगाहिए ॥ तेचेवखिंसइबाले । महामोहपकुव्वइ ॥ २४ ॥ आयरियउवज्झायाणं । सम्मंनोपडितप्पइ ॥ अप्पडिपूयएथद्धे । महामोहपकुव्वइ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुएयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणे आचार्यं उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र ग्रहिवाड्यो सिखाड्यो तेहीज आचार्यने खीसे निंदे बाल अज्ञानी ते महामो हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्पेंनही उपरांठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे२२। अबहुश्रुत अपंडितथको जेकोइ श्रुतेंकरी शास्त्रेंकरी आत्माने प्रविकाथे श्लाघायेहुं श्रु तवतछुं एम कहे वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहुं पाठकछुं एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपेकरी पोताना आत्माने

तेषुवा गलप्यतृत्प्तिमगच्छत् आस्वादते अभिलषति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर णादीतिः यशःकीर्त्ति वर्णः शुक्लादिः शरीरसंबन्धी देवानां वैमानिकानांबलशारीरं वीर्यंजीवप्रभवं पस्त्यत्यध्याहारः तेषामिह अपेक्ष्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अश्लाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोल्लापेन देवानामृद्धिर्देवानांद्युतिरित्यादिका काव्याख्येयं नकिंचिद्देवानामृद्ध्यादि कामस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः यएवभूतः समहामोहं प्रकरोतीति एकोननिंशत्तम २९ । अपश्यन्योब्रूतेपश्यामिदेवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्येवपूजाम र्थयतेयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोहं प्रकरोतीति त्रिंशत्तम ३० । रौद्रादयोमुहूर्त्तायादित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषाचमध्येमध्यमाः षट्

अदुवापारलोइए ॥ तेतिप्पयंतोआसयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३२ ॥ इड्ढीजुईजसोवन्नो । देवाणंबलवी रिय ॥ तेसिंअवणवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३३ ॥ अपस्समाणोपस्सामि । देवेजक्केयगुज्झगे ॥ अणाणी जिणपूयट्ठी । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३४ ॥ थेरेणंमंडियपुत्ते तीसंवासाइंसामण्णपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे

देवतानी बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यचने व्यंतर विशेषने गुह्यकने अ नादरतो थको हुआदरछु एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहंतनी पूजानो अर्थीछे गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३० मोहनीय स्थानकह्या । स्थविर मंडितपुत्र छठो गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने सिद्धथयो । छतार्थथयो तत्वनो जाणकार थयो यावत्

जावसव्वदुक्खप्पहीणे एगमेगेणं अहोरत्ते तीसंमुहुत्ते मुहुत्तगेणंप० एएसिणंतीसाएमुहुत्ताणं तीसंनामधेज्जा ॥

प० तं० रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अभिचंदे माहिंदे पलंबे वंभे सच्चे आणंदे विजए विस्ससेणे पाया

वच्चे उवसमे ईसाणे नट्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते नठवे

भूमहे रिसभे सव्वठसिद्धे रक्कसे ३०। अरेणंअरहा तीसंधणु उड्ढंउच्चत्तेण होत्था सहस्सारस्सणं देविंदस्स दे

वरन्नो तीस सामाणियसाहस्सीओ प० पासेणंअरहा तीसवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अण

गारियं पव्वइए समणेभगवं महावीरे तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए

सर्वेकरी कर्मथको मूकाणो सर्वदुःखथको प्रचीणथयो। एकएक अहोरात्र त्रीस मुहूर्तनो होय। ते त्रीसमुहूर्तना त्रीसनामधेयनामकह्या। तेकहेछे। रौद्र १ ॥

शक्त २। मित्र ३। वायु ४। सुपीत ५। अभिचद्र ६। माहेंद्र ७। प्रलव ८। ब्रह्म ९। सत्य १०। आनद ११। विजय १२। विश्वसेन १३। प्राजापत्य १४।

उपशम १५। ईशान १६। नष्ट १७। भावितात्मा १८। वैश्रमण १९। वरुण २०। शतऋषभ २१। गाधर्व २२। अग्निवैश्यायन २३। आतप २४। आवर्त्त

२५। नष्टवान् २६। भूमहान् २७। ऋषभ २८ सर्वार्थसिद्ध २९। राचस ३०। अरनाथ अठारमा तीर्थंकर त्रीस धनुष ऊंचपणेथया। सहस्रार नामा आठ

मा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या। पार्श्वनाथ अरिहंत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास मांहि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणे यतीपणो पाम्या

श्रमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणो पाम्या। रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या। एणीयें र

रयणप्पभाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ
याणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प०
असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं
तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं
उक्कोसेण तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्सस
तिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजी
वा जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करि

त्नप्रभा पृथिवीने विषें केतलाएक नारकीनो त्रीस पल्योपमनो आउखोकह्यो। हेठे सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो त्रीस सागरोपमनी स्थितिकही
केतलाएक असुरकुमार देवतानी त्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम उपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य त्रीस सागरोपम
नी स्थिति कही। जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी उत्कृष्टी त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देव
ता त्रीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले जघोले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्रगये आहारनी अर्थ उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे त्रीसभवने अंत

कदाचिद्दिनेऽन्तर्भवंति कदाचिद्रात्राविति ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तमंस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिबोधिका

स्संति ॥ ३० ॥ एक्कतीसंसिद्धाइगुणा प० तंजहा खीणे ग्राभिणिबोहियणाणावरणे खीणे सुयणाणावरणे खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवनाणावरणे खीणे केवलनाणावरणे खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे खीणे निद्दा निद्दानिद्दा खीणे पयला पयलापयला खीणे थीणद्धी खीणे सायावेअणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे खीणे दंसणमो

रे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंत करिस्ये मोचजास्ये ॥ इति त्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३० ॥ हिवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे। एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांडी ऊपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहेछे। चीण थयोछे आभिनिबोधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्वथापि मतिज्ञानावरण चय गयो छे जेहनो १। चीणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २। वली अवधिज्ञानावरण चय ३। मनःपर्यवज्ञानावरण चय ४। कीवलज्ञानावरणचय ५। चक्षुदर्शनावरणचय ६। अचक्षुदर्शनावरणचय एतले आंखटाली बीजा च्यारइंद्रिय अचचु तेहना आवरणनो चय ७। अवधिदर्शनावरणचय ८। कीवलदर्शनावरण चय ९। सुखेंजागे ते निद्रा तेहनोचय १०। दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनो चय ११। बैठांजभां आवे ते प्रचला तेहनोचय १२। चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला तेहनोचय १३। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बल तेहनोचय १४। सातावेदनीयकर्मचय १५। असातावेदनीयकर्मचय १६

वरणादिमयस्वरूपाइति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कंभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी त्यधिकमण्डलशतभवति मण्डलचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनशते पचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवंति तथालवणसमुद्रं त्रीणित्रिं

॥ हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइआउए खीणे तिरिआउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुभनामे खीणे असुभनामे खीणे दाणंतराए खीणे लाभांतराए खीणे भोगांतराए खीणे उवभोगांतराए खीणे वीरिअंतराए ३१ मंदरेणंपव्वए धरणितले एक्कतीसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियमंडलं उव

दर्शनमोहनीय एतले सम्यक्त मोहनीय चय १७। चारित्रमोहनीय चय १८। नरकायुचय १९। तिर्यंचायुचय २०। मनुष्यायु चय २१। देवायु चय २२। उच्चैर्गोत्रचय २३। नीचैर्गोत्र चय २४ शुभनाम चय २५। अशुभनाम चय २६। दानांतराय चय २७ लाभांतरायचय २८। भोगांतराय चय २९ वीर्यांतराय चय ३०। उपभोगांतरायचय ३१। मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छसे त्रेवीस योजन कांइक न्यून परिधीये कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार योजन पिहुल पणेछे तेहनो परिधी त्रिगुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रेतीस योजन कही। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जम्बूद्वीप मांहि एकसो चौरासी मंडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमंडलें उपसंक्रमी आवीने सूर्य मकर सक्रांतिदिने भ्रमण करे। तेणें दिनें भरतक्षे

शदधिकानियोजनशतान्यवगाह्यैकोनविंशत्यधिकं सूर्यमण्डलशतंभवति तत्रचसर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानांपर्यंतिमं तस्यचायामविष्कम्भौ लक्षंषट्शतानि षष्ठ्यधिकानियोजनानांषष्ठ्यधिकानि परिधिसुवृत्तक्षेत्रगणितन्यायेनत्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानिपंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावच्चक्षेत्रमादित्योऽहोरात्रद्वयेनगच्छति तत्रचषष्ठिमुहूर्त्ताभवन्ति षष्ठ्याभागापहारे यल्लब्धंतन्मुहूर्त्तगम्यक्षेत्रप्रमाणं भवति तच्च पंचसहस्राणित्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५। १५। ६० मुहूर्त्तं एतच्चदिवसार्द्धेनगुण्यते यदाचसर्वबाह्यमण्डलेसूर्यश्चरति तदादिनप्रमाण द्वादशमुहूर्त्ताः तदर्द्धंचषट् अतः षड्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणित मुहूर्त्तगतिप्रमाणं चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणभवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१। ३० अभिवर्द्धितमासोऽभिवर्द्धितसंवत्सर

अट्ठहिं एक्कतीसेहिं संकमित्ता चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिंअएक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाएसट्ठिभागे जोयणस्स सूरिएचक्खुफासं हव्वमागच्छइ अभिवड्ढिएणं मासे एक्कतीसं

त्रगत मनुष्यने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचवीसभाग अधिक वेगलोयको सूर्य चक्षुस्पर्शे शीघ्र आवे । एतलेपोसी पूनिमे मकर सक्रांतिदिने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठीया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहांना मनुष्यने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्धितमास त्रीजे वर्षे आवे तेरहमासनो वर्ष होय । ते अधिक मास एकत्रीस रात्रिदिवस प्रमाणेंसातिरेक कांइएक भाझेरोजांणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे तेआदित्यमास सूर्यमा

णत्ति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या त्नान्यस्यैकथयेदित्यर्थः २ आवईसुदृढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसंग्रहाय साधुनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि स्सिओवहाणेयत्ति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्रितंच तदन्यनिरपेक्षमुपधान परसाहाय्यानपेक्षतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिक्षासेवितव्या सा चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षाद्यासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निप्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नायत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू जाद्यर्थिनेनाऽप्रकाशयद्भि स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषहादिजयः ९ अज्जवेत्ति आर्जवः ऋजुभावः १० सुइत्तिशुचिः सत्यसयमइत्यर्थः ११ सम्मदिट्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाधिस्वचेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणओवएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

निप्पडिकम्मया ॥ ५ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिट्ठी समाहीय । आयारे

कहो अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आव्यांथके दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रायें अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ । सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिक्षानी सेवा ५ । शरीरनो निष्प्रतिकर्मना करवी एतले सुश्रूषानकरवी ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोथको तपकरे ७ अलोभताकरवी ८ । तितिक्षा परीषहनो जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० सत्यसनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनूं स्वस्थपणूं १३ । आचार सहित थईने मायानकरे १४ । विनय युक्तहोय मायानकरे १५ । अदीनपणूं १६ । सवेग ससारथीभय अथवा मोक्षनी इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

चारोपगतःस्या न्नमायाकुर्यादित्यर्थ. १४ निर्योपगतोभवेन्नमायांकुर्यादित्यर्थ. १५ धिइमइयत्ति धृतिर्धानामतिर्धृतिमतिरदैन्य १६ संवेगोत्ति संवेगःसंसा राद्भयमोक्षाभिलाषोवा १७ पणिहित्ति। णिधिर्मायाशल्यंनकार्यमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठान १९ संवरश्च आश्रवनिरोधः २० अत्तदोसोवसंहारेत्ति स्वकीयदोष स्यनिरोधः २१ सव्वकामविरत्तयति समस्तविषयवैमुख्य २२ पच्चक्खाणेत्ति प्रत्याख्यानमूलगुणविषय २३ उत्तरगुणविषयच २४ विउसग्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावभे दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ लवालवेत्ति कालोपलक्षण तेन क्षणे २ सामाचार्यनुष्ठानकार्य २७ झाणसंवरजोगेत्ति ध्यानसेवसंवरयोगो ध्यान संवरयोगः २८ उदएमारणंतिएत्ति मारणांतिकेपिवेदनोदयेनक्षोभःकार्य २९ संगाणंयपरिणत्ति संगानांज्ञपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणजुवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे । पणिहीसुविहिसंवरे ॥ अत्तदोसोवसंहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥

पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमादेलवालवे ॥ झाणे संवरजोगेय । उदएमारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणंयपरिन्ना

शुभ अनुष्ठान करिवो १९ । संवर आश्रवनिरोध २० पोताना दोषनो निरोध रोकिवो २१ । सर्वविषयथी विमुखपणो २२ । पचक्खाणनो करिवो २३ । व्युत्सर्गं द्रव्यथकी उपधीनो त्याग भावथकी विणगोरवनो त्याग २४ । प्रमाद टालिवो २५ । क्रियानोकाले समाचरिवो २६ । धर्मध्यानादि करिवो २७ । संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपजे मनने क्षोभ न करिवो २९ । संगनो परिज्ञा स्वजनादिक संगनो पचक्खवो ३० । प्रायश्चित्तनो करिवो ३१ । आराधना करी मरे ३२ । एह बत्रीस योग संग्रह जाणिवा ॥ बत्रीस देवेंद्र कह्या ते कहे छे । चमरेंद्र १ । बलेंद्र २ धरणेंद्र ३ । भूतानेंद्र ४ । वेणुदेव ५ ।

॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानकं तत्र आय'
वस्तुभेदा यथाराजप्रश्नकृताभिधान द्वितीयोपांग इतिसम्भाव्यते द्वात्रिंशत्पात्रप्रतिबद्धमितिकेचित्
सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्यशातना: खण्डनानिरुक्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्निकस्य बहुपर्यायस्य आसन्नमासत्ति यथारजोचलादिस्तस्यलगति
तथागन्ताभवतीत्येवमाशातनाशैक्षस्ये त्येवसर्वत्र पुरओत्ति अग्रतोगताभवति सपक्खत्ति समानपक्ष समपार्श्वंयथाभवति समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थ' चिठ्ठतिस्था
तात्रासिताभवति यावत्करणा दयाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याइहद्रष्टव्यास्ताश्चैवमर्थत आसनपुर: पार्श्वत:स्थानेन तिस्रोऽत्रनिषीदनेनदतिस्र: तथाविचारभूमौ

रसति ॥ ३२ ॥ तेत्तीसं आसायणाओ प० तं०। सेहेराइणिअस्स पुरओ गंता भवइ आसाय
णासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्खंगंता भवइ आसायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स आसन्नंगंता भवइ
आसायणासेहस्स ३ एवंएएणअभिलावेणं सेहेराइणियस्स पुरओचिठ्ठित्ता भवइ आसायणासेहस्स ४ सेहेरा
इणियस्स सपक्खंचिठ्ठित्ता भवइ आसायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स आसन्नंचिठ्ठित्ता भवइ आसायणासेह

इति बत्रीसमोसमवाय थयो ॥ ३२ ॥ हिवेतेत्रीसमोसमवाय लिखियेछे। तेत्रीस आशातना। ज्ञानदर्शनचारित्रप्राप्तिनो सातवो खडवो तेआ
शातना कही तेकहेछे। शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्निकघणी दीक्षानोधणी तेहने आसन्नो ढूंकडोगताहोय चालेएहपहिलीतेआशातनाशिष्यने १।रा
त्निकअडानेआगलथकोगताहोयचालेतेआशातनाशिष्यने २। रात्निकने सपक्ष्कहताबरावरीचालेतो आशातनाशिष्यने ३। इम एणे अभिलापें शिष्यबडा
आगलऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ४। शिष्यगुरुनेआगल ऊभोरहेतेआशातनाशिष्यने ५। शिष्यगुरुने बराबरऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ६। शिष्यगुरु

गतयोः पूर्वतरमाचमतः शैक्षस्याशातना १० एवं पूर्वगमनागमनमालोचयतः ११ तथारात्नौ कोजागर्त्तीति पृष्टे रात्निकेन तद्वचनमप्रतिशृण्वतः १२ रात्निकस्य

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरओनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपक्खंनिसीइत्ताभवइ
आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसन्नंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएएणअभिलावेणं
सेहेराइणिएणंसद्धिंवहिया विहारभूमिंनिक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसेहतराए आयामइपच्छाराइणिए आसा
यणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसद्धिं बहियाविहारभूमिं वा निक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसेहतराएआलोएइ
पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सराओवावियालेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत
त्थसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पडिसुणेत्ताभवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुव्वं सलवत्तए तंपु

ने आगलथको बेसे तेआशातनाशिष्यने ७। शिष्यगुरुने बराबरे बेसे तेआशातनाशिष्यने ८। शिष्यआसन्नकहतां ढुकडोथकोबेसे तेआशातनाशिष्यने ९। एवएणे
अभिलापे ९। आशातना। शिष्यगुरुबेहुफरेगयाथका तिहांशिष्यपहिलोआचमनलेई जलशुचि करे तेआशातनाशिष्यने १०। शिष्यगुरुसाथें वहिर्भूमिकडिलें
चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकाये जाताथका पडिक्कमिवा पहिलो पडिक्कमे पछेगुरुपडिक्कमे तेआशातना शिष्यने ११। शिष्यगुरुनेपहिलेहीज आवणहा
रसाथे गुरु बोल्याविना बोले तेआशातना शिष्यने १२। शिष्य प्रत गुरुयें पूछ्यो कवण रात्रियेसूतोछे अथवा कवण जागेछे एहवं पूछेथके शिष्य जागतो थ

२१ भिचावेलावर्त्ततेइत्यादिवचनतः पर्षदर्भिदानस्य २७ गुरुपर्षदभेदोनुत्थितायास्तथैवव्यवस्थिताया धर्मकथयतः २८ गुरोः संस्तारकंपादेनघट्टयतः २९ ॥
गुरो. सस्तारकेनिषीदतः ३० उच्चासनेनिषीदतः ३१ समासनेप्येव ३२ वयस्मिश्चत्तमासूत्रोक्ताच रात्निकस्यालपतस्तत्रगतएवासनादिस्थितएव प्रतिशृणोति

मिणेत्तवइ आसायणासेहस्स २४ सेहेरायणियस्स कहकहेमाणस्स नोसरसि एववत्ताभवइ आसायणा० २५ सेहेराइणियस्स कहकहेमाण
सेहेराइणियस्स कहकहेमाणस्स कहआच्छिदित्ताभवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराइणियस्स कहकहेमाणस्स तीसेयपरिसाए अणुट्ठिआए
स्स परिसभित्ताभवइआसायणासेहस्स २७ सेहेराइणियस्स कहकहेमाणस्स २८ सेहे
अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपितच्चंपि तामेवकहंकहेत्ताभवइ आसायणासेहस्स सेज्जासंथा
राइणियस्स सेज्जासंथारगपाएणं संघट्टित्ता हत्थेणअणुन्नवेत्तागच्छइ आसा० २९ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथा
रए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता तुयट्टित्तावा आसा० ३० सेहेराइणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा
चिट्ठित्तावा निसीइत्तावा तुयट्टित्तावा भवइआसायणासेहस्स ३२ सेहेराइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

शिष्यने २५। जेशिष्य गुरुये धर्मकथा कहता थका धर्मकथानो छेदन करे तेआशातना शिष्यने २६। शिष्यगुरु सभाये बेठा थका भिचानी वेलाथई इत्यादि
कहीने पर्षदानो भेदकरे ते आशातना शिष्यने २७। शिष्य गुरु सभाये बेठा थका पर्षदाप्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना शिष्यने २८। शिष्य गुरुना
आसनप्रतें पावयकी संघट्टकरे ते आशातना शिष्यने २९। शिष्य गुरुने आसनें बेसे ते आशातना शिष्यने ३०। शिष्य गुरु थकी ऊंचे आसने बेसे ३१।

आगत्यक्षिप्रत्युत्तरंदेयमिति यश्चस्याशातनेति ३३ तेत्तीसभोमत्ति भौमानिनगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंसूरिएइत्यादि इहसूर्यस्यमण्डलयो रतरे द्वेद्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्विगुणपचयोजनानि पचत्रिंशच्चैकपष्ठिभागा एतावताहीनविष्कंभं सर्वबाह्यमण्डलाद्द्वितीयं मण्डलंभवति ततश्चक्षेत्रपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकपष्ठिभागैर्न्यून द्वितीयमडलसर्वबाह्यमडलाद्भवति एवंतृतीयमंडले एतद्विगुणेनहीनभ वति तथाहि तद्विष्कंभतएकादशभिर्योजनै र्नवभिश्चैकपष्ठिभागैः पर्यन्तिमाद्धीनभवति परिधितस्तुपवत्रिंशतायोजनैः पचदशभिश्चैकपष्ठिभागैर्न्यूनभवति तच्च त्रीणिलक्षाणि अष्टादशसहस्राणि द्वेशतएकोनाशीत्युत्तराःषट्चत्वारिंशच्चैकपष्ठिभागाइति तथान्तिममण्डलान्मंडले२ द्वाभ्यामुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यांदिनवृद्धिं

चेवपडिसुणित्तानवइ आसायणासेहस्स ३३ चमरस्सण असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचंचाएरायहाणीए एक्का मेक्कावाराएतेत्तीसं २ भोमा प० महाविदेहेण वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० जयाणंसू रिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ताण चारंचरइ तयाणं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से

गुरुने समान आसने बेसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुयें कांइक वार्त्ता पूछ्यां थकां आसने बेठोई उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एह तेत्रीस आशा तना कही ३३ ॥ असुरेंद्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेंद्रनी चमरचंचा राजधानीने विषे एकेके वारे तेत्रीस तेत्रीस नगरने आकारे भला स्थानक कह्या । जंबूद्वीप संबधी महाविदेहक्षेत्र तेत्रीस हजार योजन झाझेरा पिहुलपणे कह्यो । जिवारे सूर्य सर्वबाह्य मंडल थको त्रीजे मंडले आवीने भ्रमणकरे तिवारे भरतक्षेत्रगत मनुष्यने तेत्रीस हजार योजनथकी दृष्टिगोचर आवे । ते पोसी पूनिमे मकर सक्राति पछें माह बदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायणे

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्ताश्चत्वारश्चैकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणम्भवति तदर्द्धं चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ठ्यधिक शतत्र

यस्त्रयेण स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वात् परित्यक्तांशाः ३१८२२९ तृतीयमंडलपरिधौगुणितेसति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतेयल्लभ्यते तत्तृतीयमंडलेच

क्षुः स्पर्शप्रमाणभवति तच्चद्वात्रिंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अंशानामेकषष्ठ्याभागलब्धाश्च एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४९। ६० त्रयोविंशतिश्चैक

षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३। ६१ एतत्तृतीयमंडले चक्षुःस्पर्शस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्न्यूना तत्रसातिरेकस्ययोज

नस्यापिन्यूनसहस्राता विवक्षितेतिसम्भाव्यते चतुर्दशेमंडलेपुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणंभवति प्रतिमंडलयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथममंडलमानेप्रक्षेप

हि किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइ ठिई अप्पइठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प०

चाल्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे मांडले तेत्रीस हजार भांभेरो दृष्टिगोचर आवे। त्रीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे बारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस

ठिया च्यार भाग प्रमाणे दिवस होय। अने सर्वबाह्य मडले सूर्य होय तिवारें ओकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगलें थकें इहां

ना माणसने दृष्टिगोचर आवे। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनो तेत्रीस पल्योपमनो आउखो कह्यो। छेठे सातमी पृथिवीयें पूर्वादिक दिस

थकीमाडी काल १। महाकाल २। रुरुक ३। महारुरुक ४। एह चिह्न नरकावासाना नारकीनो उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनो स्थिति कह्ही। विचले

णादिति ॥ ३३ ॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाइसेसंति बुद्धानांतीर्थंकरतामप्यऽतिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषाः अवस्थितमवट्ठि

असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेतेत्तीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंबुद्धाइ

अथ्यइठाण नरके नारकीनी जघन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्रीस सागरोपमनी स्थितिकही। जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता तेत्रीस पखवाडे गयेथकें स्वासोस्वासले घणोले उंचोले नीचो मूंके तेह देवतानें तेत्रीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे ॥ छे केतला एक भव्यजीव जे तेत्रीस भवने आंतरे सीभस्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्ष जास्ये। इति तेत्रीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

अभावं केशाश्चशिरोजाः श्मश्रूणिचकूर्चरोमाणिचशेषशरीरलोमानि नखाश्चप्रतीतादृतिद्वन्द्वैकत्वमित्येकः १ निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयष्टिस्तनुलतेतिद्वितीयः २ गोक्षीरपाण्डुरंमांसशोणितमितितृतीयः ३ तथापद्मचकमलंगंधद्रव्यविशेषोवा यत्पद्मकमितिरूढ उत्पलंच नीलोत्पलमुत्पलकुष्टंवा गंधद्रव्यविशेषस्तयोर्योगंधः सयत्रास्ति तत्तथोच्छ्वासनिःश्वासमितिचतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिहारं अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यमंसचक्षुषानपुनरवज्ञादिलोचनेन इतिपंचम ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्कंजन्मप्रत्ययं आकाशकेचक्रंषष्ठ तथाआगाशगतव्योमवर्ति आकाशकंवा प्रकाशमि

सेसा प० तं० अवठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलठी २ गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६

हिवे चौत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौत्रीस बुध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनी अपेक्षाये अधिक पणो वाक्या तेकहेछे । वधेनहीमस्तकनाकेश श्मश्रूडाढीमूछ शरीरनारोम । नीरोगवलीनिर्मलशरीर २ । गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३ । पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वासोश्वास नो गंध ४ । अदृश्यदीसेनही मांस चक्षुयेंकरी येतले चर्मचक्षुयेकरी एहवोप्रछन्नगुप्तआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५ । एणीयेकह्मस्तद्दष्टीयें येपांचअतिशयथया । तेमांहिपहिलो मूकीबीजायकोपचमालगें चारअतिशय जन्मथकी मांडी ने होय ५ । जेहनोआकाशगत धर्मचक्रचाले ६ । आकाशगत छत्र ७ । आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८ । आकाशनीपरें अत्यंत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९ । आका

त्यर्थः चक्रंधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशवेछत्रमितिसप्तमः एवमाकाशगंछत्रंछत्रत्रयमित्यर्थः ७ आकाशकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णकेइत्यष्टमः ८ आगा सफालियामयन्ति आकाशमिवयदत्यत मच्छंस्फटिकं तन्मय सिंहासनसद्दपादपीठमितिनवमः ९ आगासगओत्ति आकासगतोऽत्यर्थंतुङ्गमित्यर्थः कुडिभिस्सिस घुपताकाः सभाव्यस्ते तत्सहस्रैः परिमंडितश्चारावभिरामश्चातिरमणीय इतिविग्रहः इंदज्झओत्ति शेषध्वजापेक्षया तिमहत्वादिद्रयासौध्वजश्च इन्द्रध्वजइति पुरओत्ति जिनस्याग्रतोगच्छतीतिदशमः १० चिठ्ठतिवानिसीयतिवेत्ति तिष्ठतिगतिनिवृत्यानिषीदंत्युपविशतितत्क्षणादेवत्ति तत्क्षणमेवाकालहीनमित्यर्थः पत्रैः सच्छिन्नइतिवक्तव्येप्राकृतत्वात् संच्छन्नपत्रइत्युक्तं सचासौपुष्पपल्लवसमाकुलश्चेतिविग्रहः पल्लवा अंकुराः सच्छत्रः सध्वजः सघंटः सपताकोऽशोकवरपादप

आगा आगारागयं छत्तं ७ आगासगयाउ सेयवरचामराउ ८ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगा सगउ कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इंदज्झउ पुरउ गच्छइ १० जत्थ जत्थ वियणंअरहंताभगवंताचिठं तिवा निसीयतिवा तत्थ तत्थ वियणं तक्खणादेव सछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सछत्तो सज्झउ सघंठो सपडा

आगत एतले अत्यंतऊंचो लघुपताकाना सहस्रकारी परिमंडित मनोहर एहवोइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेक्षायें मोटो तेमहेंद्रध्वजजिननेआगलथकी चाले १० । जिहा जिहां अरहंत भगवंत ऊभारहे अथवा वैसे तिहांतिहां तत्काल पत्रें करीछायो अने फूलपल्लवेंकरी सर्वतः व्याप्त ध्वजारहित घंटापताका सहित वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरें ११ । वेगलो थोडोपूठें मस्तकने प्रदेशें तेजमंडल भामंडल होय तेभामंडल अंधकारने दसोदिशे नसाडे १२ । जिहां

नीयत्ति प्राकृतादीनांषण्णांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा प्रसमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणार्द्धमागधीत्युच्यते
तयाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश: २२ भासिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणंति आर्यानार्य देशोत्पन्नानां द्विपदा
मनुष्याचतुष्पदागवादय: मृगाआटव्या: पशवोग्राम्या. पक्षिण: प्रतीता: सरीसृपा उर:परिसर्पाभुजपरिसर्पाश्चेति तेषांकिमात्मन आत्मातया आत्मीययेत्यर्थ:
भाषा तया भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्ध: किंभूतासौभाषेत्याह हितमभ्युदय: शिवंमोक्ष: सुखश्रवणकालोद्भवमानन्दंददातीतिहितशिवसुखदे तिनयोविंश:
२२ पूर्वंभवान्तरेऽनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्धं निकाचित वैरममित्रभावोयेषांतेतथा तेपिच आसतांमध्येदेवावैमानिका असुरानागासभवनपतिविशेषा:

जक्खा कक्खगतुडियथणियअनुया चामरुक्खेवणं करंति २० पच्चाहरउ वियणं हियगमणीअ जोयणनीहारी
सरो २१ भगवंचणं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ २२ सावियणं अद्धमागहीभासा भासिज्जमाणी
तेसिंसव्वेसि आरियमणारियाण दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण अप्पप्पणोहियसिवसुहदायभास

नलगे विस्तरतो शब्दहोय २१। भगवंत छ भाषासाहि अर्द्धमागधीभाषायेंकरी धर्मप्रतें कहे २२। तेहीजपणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनांउप
नानेंद्विपदमनुष्यने चतुष्पदगवादिकने मृगआटवोजीव पशुग्रामसबंधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्मानेहित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनंदतेहने
देएहवी भाषापणि परिणमे २२। भवांतरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकबद्धनिकाचित वैर बाध्या जेणे एहवादेव मावैनिक १। असुरनागकुमार एहभवनप
तोदेव सुवर्ण शोभनवर्णोपेततेज्योतिषीयच राक्षस किंनर किंपुरुष एह चारव्यं..र विशेष गरुडलांछनपणाथकी सौपर्णकुमार भवनपति विशेष गंधर्वमहोर

सुवर्णाःशोभनवर्णा एतेचज्योतिष्कायचराचसकिन्नराःकिंपुरुषाःव्यंतरभेदाःगरुडागरुडलांछनत्वात् सुपर्णकुमाराभवनपतिविशेषाःगन्धर्वामहोरगाश्चव्यंतरवि
शेषाएव एतेषांद्वंद्वः पसंतचित्तमाणसा प्रशांतानिसमंजसानिचित्तानि रागद्वेषाद्यनेकविधविकाररहिततया विविधानिमानसान्यंतःकरणानियेषांते प्रशांतचि
त्तमानसा धर्मंनिशामयंति इतिचतुर्विंशः २४ वृद्धवादतयाइदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वंदंतेभगवंतमितिगम्यते
इतिपंचविंशः २५ आगताः संतोऽर्हतः पादमूले निःप्रतिवचनाभवंति इतिषड्विंशः २६ यत्रयत्रापिचदेशे तत्र २ त्ति तत्रतत्रापिच पंच
विंशती योजनेषु ईतिर्धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिसप्तविंशः २७ मारिर्जनमरकइत्यष्टाविंशः २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्यं तदुपद्रवका

ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेराविय णं देवासुरनागसुवन्नजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगा अरहओ
पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अन्नउत्थियपावयणियाविय णमागया वंदंति २५ आगया
समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणा हवंति २६ जओ जओ विय णं अरहंतो भगवंतो विहरंति तओ तओ

गव्यंतरविशेष एहसगला वैरभावछाडीने अरिहंतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशांतथयोछे चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रतें साभले २४।
अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाधणीतेहीपणिआव्यायकाभगवतप्रतें वादें २५। तेह अन्यशास्त्रनावादीप्रतिवादीआव्यायका
अरिहंतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थथया २६। जेणेप्रदेशे अरिहंत भगवंतविहरे विचरे तिहां योजन पचवीसलगे ईति धान्यादिउप
द्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७। मारी लोगमरकीनहोय २८। स्वचक्र स्वदेशी काटक उपद्रवनकरे २९। परचक्र परदेशी काटकानो भयनहोय ३०।

रिनभवतीति एकोनत्रिंश: २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितित्रिंश: ३० अतिवृष्टिरधिकावर्षइत्येकत्रिंश: ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावइतिद्वात्रिंश: ३२ दुर्भिक्षं दुःष्कालइतित्रयस्त्रिंश: ३३ उप्पाइयावाहिक्ति उत्पाता अनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तद्धेतुकाये ऽनर्थास्तेऽत्रौत्पातिका स्तथाव्याधयोज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति चतुस्त्रिंशत्तम: ३४ अन्यच्च पव्वाहरओइतआरभ्ययेभिहितास्ते प्रभामंडलंचकर्मक्षयकृता: शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृताइति एतेचयदन्यथापिदृश्यंते तन्मतांतरमेवमंतव्यमिति चक्कवट्टिविजयत्ति चक्रवर्त्ति विजेतव्यानिक्षेत्रखण्डानि उक्कोसेणंएएचोत्तीस तित्थगरासमुप्पज्जतित्ति,समुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थ: नलिकसमयेजा

विंयणं जोयणपणवीसाएण ईती नभवइ २७ मारी नभवइ २८ सचक्कं न भवइ २९ परचक्कं न भवइ ३० अइवुठी न भवइ ३१ अणावुठी न भवइ ३२ दुभिक्खं न भवइ ३३ पुव्वुप्पन्नाविंयणं उप्पाइया

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनहोय ३१। अनावृष्टि अवर्षणनहोय ३२। दुर्भिक्षकालनहोय ३३। पूर्वे उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा व्याधि ज्वरादिक तत्कालेंही उपशमें ३४। एह एकवीसआथकीमांडी चौत्रीसमालगे अनेप्रभामडल एतला अतिशय कर्मक्षयथकीहोय शेषवीजाभवप्रत्ययथकी वीजादेवकृतछे मतांतरे अन्यथा पणिछे। एहचौत्रीस अतिशयकह्या॥ जंबूद्वीपनेविषे चौत्रीस चक्रवर्तीयें जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखंड तेचक्रवर्तिविजय कह्या तेकहेछे। मेरुथकी पूर्वापर महाविदेहेंमिलो ३२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिलो विजयखड ३४ जंबूद्वीपनेविषें ३४। दीर्घवैताढ्यकह्या बत्रीस महाविदेह विजयमा ३२। भरतऐरवतना २ एवजंबूद्वीपनेविषे उत्कृष्टआरे ३४। तीर्थंकरउपजे विदेहना बत्रीसविजय भरतऐरवतना २ एवं ३४ एकेंसमेंजन्मआश्रीचारहोय शीताशीतोदाने बिहुकांठे एकसमयें बेबेहोय अनेपर्तता ३४ कह्या। महाविदेहेंरात्रीयेंतिवारे भरतऐरवते दिवस

त्सी चतुर्गासिवेकदाजन्मसंभवात्तथाहि मेरोपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनेभवतोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरेवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो
स्तदानींदिवससद्भावा अभरतैरावतयोजिनोत्पत्तिरर्द्धरात्र एवजिनोत्पत्तेरिति पढमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांत्रिंशन्नरकावासानालचाणि पचम्यांत्रीणिषष्ठ्यापचो
नलचं सप्तम्यां पंचनरका एवं सर्वं मीलने चतुस्त्रिंशल्लचाणिभवंतीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे

वाही खिप्पामेवउवसमंति ३४ जंबूद्दीवेणंद्दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो भरहेरवए जंबूद्दीवेणंद्दीवे चोत्तीसंदीहवेयड्ढा प० जंबूद्दीवेणंद्दीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमछठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प०

होय अनेरद्धांरात्रिहोय तिवारें तिहां दिवसहोय। तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्रीसनो जन्मसमकालेनकह्यो। मेरुनो पूर्वपश्चिम शिलात
लने उपर दोयदोय सिंहासनछे एहथी बेबेनो होज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो। असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र
असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवासशतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या। पहिलो नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीयें ३ लाख छठीयें पांचऊणा
एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिली चौत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्रीससमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैंत्रीसमो
समवायलिखेछे पैंत्रीस सत्यवचनना अतिशयकह्या। संस्कारवचन संस्कृतलक्षणवतपणो १। उदात्तत्व ऊंचेस्वरेंबोलवो २। उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल

न दृष्टा एतेतुग्रथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवद्वक्तव्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६ अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविद्ध २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदार २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उपगतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलम् २६ अद्भुतं २७ अनतिविलंबितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिगृहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति। वचनम् महानुभावैर्वक्तव्यमिति तत्रसंस्कारवत्वसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्वृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्राम्यता ३ गभीरशब्दंमेघस्येव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वसरलत्वम् ६ उपनीतरागत्व मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षात्र्यतिशयाः अन्येत्वर्थाश्रयास्तत्रमहार्थत्वम् वृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम् पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुःशिष्टतासूचकत्वं वा १० असंदिग्धत्व असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणाविषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

वो ३। गभीर जडेस्वरेबोलवो ४। बोलतां प्रतिशब्दहोय ५। सरसवचनबोलवो ६। मालकोसादि राग सहित स्वरें बोलवो ७। थोडेवचनें अर्थघणोएहवूं बोलवो ८। पूर्वापर विरोध रहित ९। सिद्धांतनो प्रतिपादक १०। संदेह रहित ११। अनेरावादीना वचने पराभवे नही १२। सांभलहारनो मनहरे १३। दे

सृतत्वम् सुसंबंधस्यसतः प्रसरणं अथवाऽसंबद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परेण पदानां वाक्यानांवासापेक्षता १७ अभिजातत्वंचवक्तुः प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २० अर्थधर्माभ्यासानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वम्अभिधेयार्थस्यातुच्छत्वगुंफगुणविशेषवा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्लाघत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्लाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिंगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्रोतॄणां जनितमविच्छिन्न कौतुकं येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबितत्वंचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तृमनसोभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवाभिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितंरोषभयाभिलाषादिभावानां युगपदासकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्तं यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा

अकालें उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकारी अणमिलतोनहोय १५। कहिवाने वस्तुने अनुसारेहोय १६। पहिलापदने पाछिलूंपद सापेक्षपणेबोलवो १७ प्रत्यक्ष समभवायोग्य बात कहिवो १८। घृतगुडनीपरे मधुर अनुभवे १९। अनेराना मननेव्यथा नकरे एहवो २०। अर्थ धर्म सहित बोलवो २१। उत्कृष्ट अर्थनूं कथक २२। परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३। प्रसंसा करवा योग्य २४। कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलनारना चित्तने चमत्कारकरे २६ बोलतां उतावलोनहोय २७। रही रही ने अक्षर उच्चारण करवूं एहदोषरहित २८। भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुयें संबद्ध क्रोधभयादि रहित बोलवो २९। जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिवो ३०। वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षाये बोलवो ३१। वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२।

सकृदेकदापूर्णिमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिका पदत्रयमाना माहच चेत्तासोएसुमासेसुतिपया

मियाचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ २४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुंकेज्जं २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गो ३० चरणविही ३१ पमायठाणाइं ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयणं ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्तीय ३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुहम्मा बत्तीसजोयणाइं उड्ढउच्चत्तेणं होत्था समणस्सणं भगवउ महावीरस्स छत्तीस अज्जाणंसाहस्सीउ होत्था चेत्तासोएसुमासेसु सइछत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

पालनो २१ । रथनेमीनो २२ गौतम गणधर केशीअणगारनो २३ । सुमति गुप्तिनो २४ । जयघोष विजयघोषनो २५ । समाचारीनो २६ । खलुंकीयं गर्गाचार्यनो २७ । मोक्ष मार्गनो २८ । अप्रमादनो २९ । तप मार्गनो ३० । चरण विधिनो ३१ । प्रमादस्थानकनो । ३२ । कर्मप्रकृतिनो ३३ । लेश्याध्ययन ३४ । अणगारमार्गनो ३५ । जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन ऊंची कही । श्रमण तपस्वी भगवंत श्रमण महावीरने छत्रीस आर्याना सहस्र थया । एतले छत्रीस सहस्र साधवी हुई । चैत्रअने आसोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने छत्रीसे अंगुले सूर्य पोरुषी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाणे त्रणनी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया त्रिणनी होय

होऽपोरसीति ॥ ३६ ॥ सप्तत्रिंशत्स्थानकम् पव्यताम् नवरम् कुंथुनाथस्येहसप्तत्रिंशद्गणधराउक्ता आवश्यकेतुपञ्चत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमव ताद्रिजीवयोरुक्तप्रमाणसम्वादगाथा सत्ततीसउहस्सा छच्चसयाजोयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किंचूणासोलसकलायत्ति कलाएकोनविंशतिभागोयो जनस्येति तथाविजयादीनिपूर्वादीनिजंबूद्वीपद्वाराणि तन्नायकास्तन्नामतोदेवास्तेषांराजधान्यस्तन्नामिकाएव पूर्वादिदिक्षुइतोऽसंख्येयतमे जंबूद्वीपइति चुद्रि

कायंनिवुत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणंअरहउ सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्था हेमवयएरन्न वयाउण जीवाउ सत्ततीस जोयणसहस्साइं छच्चचउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाउ आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारे पोरुषी होय। इति छत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३६ ॥ हिवे सैंत्रीसमो समवाय लिखे छे॥ कुंथुनाथ अरिहंत ने सैंत्रीस गच्छ। अने सैं त्रीस गणधर कह्या। आवश्यके पैंत्रीस सांभलिजेछे तेमतांतरछे। हिमवंत क्षेत्र १। ऐरवत २। एहबेहु युगलक्षेत्रनो जीवा सैंत्रीस सैंत्रीस योजन सहस्र छ से चि हुत्तरियोजन ३७६७४। १८ काला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजनना कांइक विशेषऊणी लांवपणे कही। सगलाई जंबूद्वीप ना पूर्वादि दिशे चार पोलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूर्वे विजय दक्षिणे वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैंत्रीस योजन ऊंच पणे कह्यो। क्षुद्रिकायें लहुडीयें विमान प्रविभक्ती कालिकश्रुत विषे पहिले वर्गे सैंत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदीठ उद्देशाना काल कहतां अवसरकह्या। आ

हतैरुपमाक्षता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषण्णांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयो. पूर्वेतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोच्चेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति श्चतुर्थ्यां दश पचम्यात्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति। नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनीयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति॥ ३९ ॥

स कुलपव्वया प० त० तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोच्च चतुत्थ पंचम छठ सत्तमासु णं पचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ प० ॥ ३९ ॥ अरहओ

चेत्र अढाई द्वीप तेमांही ३९। कुल पर्वत चेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कह्या लोकमाहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणछें तेकहेछे। जबे द्वीप माही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमांहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध मांहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर थया इषुकार चार पर्वत बेधातकी खंड मांहि बेपुष्करार्द्ध माहि एव ४। मेरू ५। जबूद्वीप मांहि एक मेरू धातकीखंडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धमाहि २ मेरू एवं ५ मेरू स र्वमि लीकुल पर्वत ३९ थया। बोजो नरक पृथिवी यें २५ लाख नरकावासा चउथी ये १० लाख पांचमी यें ३ लाख छठ्ठीयें पाचे ऊंणा १ लाखसातमी ये ५ नरकावासा सर्वमिलो ३९। लाख नरकावासा कह्या। ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनोयनो २८। गोत्रनो २ आउखानो ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३९ मोसमवाय सपूर्ण ॥ ३९ ॥ हिवे चालीसमो समवाय लिखे छे। अरिष्टनेमी

चत्वारिंशत्स्थानकव्यक्ता नवरं वइसाहपुग्निमासिणीएत्ति यत्केषुचित् पुस्तकेषुदृश्यतेसोपपाठः फग्गुणपुन्निमासिणीएत्ति अत्राप्ययेयद्धयमुच्यते पोसेमासेचउप्पया इतिवचनात् पोषोपूर्णिमास्यामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फाल्गुनेचचत्वारिअंगुलानिपतितानीत्येवं फाल्गुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुलि कापौरुपीच्छायाभवति कार्त्तिक्यामप्येवमेव यतः चेत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी त्युक्तं ततः पदत्रयस्यषड्त्रिंशदंगुलप्रमाणस्य कार्त्तिकमासातिक्रमे

णं अरिठ्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीउ होत्था मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० संती अरहा चत्तालीस धणूइंउड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुण्णिमासिणीएणं सू

अरिहतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनो संपदाथई। मेरुपर्वत ऊंचो एक लाखयोजनछे ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन ते विचे चूलिका चोटीनो परि जोगइ मेरुनी चूलिका चालीस योजन ऊचो कह्यो। शांतिनाथ सोलमा अरिहत चालीस धनुष ऊचा थया उत्तरेंद्र नागराजा भूतानंदना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या। एतले चालीस लाख भवन कह्या। क्षुद्रिका यें लहुडीये विमान प्रविभक्तियें एतले त्रीजे वर्गे ४० उद्देश नकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या। एतले जेतला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या। फागुणनी पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणें तृणनी छाया मावीये तेहनी ४० अगुल प्रमाणें पोरसी छाया प्रतें निवर्तावीने चार भ्रमण करे। कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अंगुल प्रमाणे पोरसी हुये पछे साते २ दिवसे

वाहाएत्ति व्यवधानापेक्षयायदतरंतदित्यर्थः कालोयणोत्ति धातकीखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकेंद्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरंकरोति यदुदयादंगानांशिरःप्रभृतीनांउपांगानांचांगुल्यादीनांविभागोभवति तच्छरीरोपांगनाम बध्यमानानांच संबंधकारणं शरीरोपांगनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानांच संबंधकारणंशरीरबन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलानागृहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसंघातनाम तथास्थायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनाविशेषोभवति तत्संहनननाम संस्थानसमचतुरस्रादिलक्षणंभवति तत्संस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

मुद्दे बायालीस चंदाजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा बायालीसंसूरियापभासिंसुवा ३ समुच्छिमभुयपरिसप्पाण उक्कोसेण बायालीसंवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० तं० गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरवंगनामे सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

तेकहेछे। नरकादिक नीगतिपामवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जाति पामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एम जे कर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अंगोपांग अंगते अंगुलीनखादि ते अंग उपांग ४ औदारिकादिक पांच शरीरनो बंधनो करवो ते शरीर बंधननाम ५ औदारिकादि पांचशरीरनांपुद्गल ग्रही ने रचनानो करिवो ते शरीरसंघातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचनाना विशेषतेसंहनननाम ७ संस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गंध सुगंधादिक सुरभि गंध दुरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

प्रतिजिह्विकादिरात्मोपघातकोजायते तदुपघातनाम तथायतोंगावयव एवंविधात्म ॥
दगुरुलघु स्वशरीरंजीवानांभवति तदगुरुलघुनाम तथायतोंगावयवः
तथायदुदयादुच्छासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छास
कोदृश्चाव्वगाहि परेषामुपघातकोभवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतरालेगतौजीवोयाति तदानुपूर्वीनाम

रसनामे फासनामे अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आयव ॥
नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे बायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे
साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दुभगनामे

जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकरी आत्माने ॥
जाणिवा ११ सर्व गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनो शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरु लघुनाम १३
उसास नीसासलीजे तेउसा
उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अं.ाराल गतियें जोव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६
जेह कर्मने उ
स नाम १७। जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८। जेह कर्मने उदें शरीर उद्योतवंत होय ते उद्योत नाम कर्म। १९।
जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर
द्वयें भलो भूंडो गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २०। जेह कर्मना उदय थको जीव चाले ते त्रस नाम २१।
जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय तेबादर ना
रहै ते स्थावर नाम कर्म २२। जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३।
जेह कर्मने उदये अनता जीवनो एक शरीर पामिये ते
म कर्म २४। पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५। पूरी पर्याप्ति नकरै तेअपर्याप्ति नाम २६।
अंगोपांग ताख्यांथका तूटे ते
साधारण नाम २७। जेह कर्मनें उदयें एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९।

नाम तथायदुदयाज्जीवस्तापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यबिंबपृथिवीकायिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायतः शुभे तरगमनयुक्तोभवति तद्विहायोगतिनाम त्रसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणांदन्ताद्यवयवानांनिष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतश्चभ्रूजिह्वादीनाम स्थिराणानिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवंशिरःप्रभृतीनांशुभानां तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेषाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातोजीवदेहेषुस्त्र्या दिलिंगाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमान निर्माणनामेति पचमछट्ठीओसमाउत्ति दुःखमाएकांतदःखमाचेत्यर्थः पढमवीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीउ अभितरियंवेल धारंति महालियाएणं विमाण पविभत्तीए बितिएवग्गे बायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पंचमछट्ठीउसमाउ बायालीसं

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहुने वल्लभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहुने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४ जेह कर्मनेउदये कंठभलोहोय तेसुस्वर नाम ३५। भूंडोकंठहोय ते दुस्वर नाम ३६ जेहकर्म थी बचन सहुने मान्यथाय तेआदेयनाम ३७। बचनकोईनमाने ते अनादेय नाम ३८। यशकीर्त्ति वाधे ते जसोकित्तिनाम ३९ यश कीर्त्ति नहोय ते अजस कीर्त्ति नाम ४०। ठामो ठाम अंगोपांगनो रचिवो ते निर्माण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहुने पूज्यथाय ते तीर्थंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बैतालीस हजार नागदेवता जंबूद्वीप तरफनी पाणीनी वेला प्रते धरेछे। वडी विमान प्रविभक्तीयें बीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या॥ एकेक अवसर्प्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छट्ठो दुःखमा

ति ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते कम्मविवागज्झयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्यफलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानिएतानिच एकादशांगद्वितीयांगयोः सम्भाव्यतइति जंबूदीवस्सणमित्यादि जम्बूद्वीपपौरस्त्यातान्तोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विष्कम्भ्य सहस्रतदर्धिकाया द्वाविंशतेरल्पत्वेना विवक्षणा देव त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणिभवन्तीति एवचउदिसिपित्ति उक्तादिगतभाविन चतस्रोदिशउक्ता अन्यथा एवंति

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयाउ समाउ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा प० । पढमचउत्थपचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे

दुखम दुखमा बेहुं मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो छठो २१ हजार वर्षनो बेहु मिली ४२ सहस्र प्रमाणे कह्यो एरीक उत्सर्पिणी काले चढतेकाले पहिलो आरो अने दूजो आरो बेहुं मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे कह्यो ॥ इति बैतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालीसमो समवाय लिखेछे ॥ तेयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म विपाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एवं ४३ अध्ययन कह्या। पहिली यें ३० लाख चौथीयें १० लाख पांचमीये ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक पृथिवी नां मिली तेयालीसलाख नरकावासा कह्या। जंबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना छेहल्या प्रदेश

द्दिशिपश्चिमायांस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्दीवस्सणं दीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणंतेयालीसंजोयणसहस्सा ॥

इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वयं नवरं पश्चिमायांसंखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते

चतुश्चत्वारिंशतं ऋषिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोक

च्युताभाषितानिक्वचित्पाठः देवलोयचुयाणं चोयालीसंइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइंति पुरुषाः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानोयकालविशेषा

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥

चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउआलीसंपुरि

थी मांडीने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहलो प्रदेश ४२ हजार योजन प्रमाणे आबाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थ ॥

की ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एवं ४३ सहस्र योजन थया । एम चिहुदिशे दक्षिण जगतीथकी मांडी

दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख २ उत्तरदिशे दगसीम ४ वली विमान प्रविभक्तियें त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या ॥

इति तेतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चोमालीसमो लिखिये छे। चोतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेवीहवाछे

देवलोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चोतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशे

पनो परें अनुक्रमें सावर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुक्रमें सीधा निरंतर पणे ४२ पाट मोक्षे गया यावत् शब्दे कारी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया। दक्षि

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिठ्ठन्ति आनुपूर्व्या अणुबधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन सातत्येनसिद्धानि जावंतिकारणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख ॥
पहीणाइ इतिहष्य महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकालाःप्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेलिदंलिख्यते समयखेत्ते त्ति
कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्रः सीमंतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

सजुगाइं अणुपिठ्ठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस ॥
हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥
समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण
सयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं

णादिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजाना चौतालीस लाख भवनावास कह्या। वडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष ॥
कह्या॥ इति चौतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पैंतालीसमो लिखेछे। पैंतालीसलाख योजन प्रमाणे पहिलो पृथिवीये पहिले पाथ
डे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पैंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान
मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पैंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पैंतालीसलाख योजन लांब

ते जयाणमित्यादि प्रकटमायमाणस्य जंबूद्वीपस्याभ्यंतरतोऽशीत्युत्तरयोजनशते २८०ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्कंभोभवति तत्परिधिस्त्रीणि लक्षाणि
पंचदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८९ एतत्सूर्यो मुहूर्त्तानां षष्ट्यागच्छतीति षष्ट्याऽस्य भागहारे मुहूर्त्तगतिर्लभ्यते साच पंचयोजनसहस्राणि द्वेचैकपंचा
शदुत्तरे योजनशते एकोनत्रिंशच्च षष्टिभागा योजनस्य ५२५१ । २९ यदा चाभ्यंतरमंडले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तो दिवसप्रमाणं तदर्द्धेन नवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्त
गतिर्गुण्यते ततश्च यथोक्तं चक्षुःस्पर्शप्रमाणमागच्छतीति अग्गिभूइत्ति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्तस्य चेह सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवास उक्तः आवश्यकेतु ष
ट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासंपूर्णत्वादविवक्षा प्रकटसंपूर्णस्यापि पूर्णत्वविवक्षेति सम्भावनया न विरोध इति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशत्स्थानको

तयाणं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए
यसट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ थेरेणं अग्गिभूई सत्तचालीसंवासाइं अगारमज्झेव
सित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारिय पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्क

सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढी पूनिमे आवी रह्यो तिये निषध पर्वतने ऊपरि ४५ मांडलाछे तेमांहिथी पहिले मांडले उपसंक्रमीने भ्रमणकारे तिवारे इहां भर
तक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेसे तेसठि योजन अने १ योजनना ६० ठीया २१ भाग एतलो वेगलो थको दृष्टिगोचर आवे। स्थविर बडा वयपर्या
यणतेजारी अग्निभूति बीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुंड थईने गृहस्थाणमथी साधुपणो पाम्या। इति सेतालीसमो समवाय
संपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिवे अडतालीसमो समवाय लिखेछे ॥ एकेका चिहुदिगिनां अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अडतालीस हजार पाटण जाणा।

क्किमपिलिख्यते । पट्टणंति विविधदेशपण्यान्यागत्ययत्रपतति तत्पत्तनंनगरविशेषः पत्तनंरत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सत्ति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्ग
णागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्पठ्यते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेत्ति सूर्यविमानं येषाभागानामेकषष्ठ्यायोजनंभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो
दशभिस्तैर्न्यूनंयोजनमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपंचाशस्थानकेलिख्यते । सत्तसत्तमियाणं सप्तसप्तमानिदिनानियस्यांसासप्त २ दिनानिभवंति सप्तसु
सप्तकेषु अतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपंचाशतावादिनैर्भवतीति पडिमत्ति अभिग्रहः छन्नउणभिक्खासएणत्ति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदि
नमेकोत्तरयाभिक्षावृद्धा अष्टविंशतिभिक्षाभवति एवसप्तानामपिपण्णवतिभिक्षाशतंभवति प्रथमा प्रतिपत्तक सेकोत्तरयावृद्धायथोक्ता भिक्षामानंभवति तथा

वाहिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणंअरहओ अडयालीसंगणा अडयालीसं गणहरा होत्था सूर मंडलेणं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं भि

धर्मनाथ अरिहंत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया । आवश्यके ४३ पणि लख्याछे तेमतांतरछे । सूर्यनो मंडल एक योजन ना एकसठि
या ४८ भागप्रमाणे विष्कंभपणे अने पिहुलपणे कह्यो । एक योजनना एकसठ भाग करिये ते मांथी १३ भाग ओछो सूर्य मंडलछे ॥ इति अठतालीसमो
समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एकूनपचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विषे एहवी भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते
सप्तसप्तमिका भिक्षूनीप्रतिमा उगुणपंचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीयें पूरीथाय । एकसो छन्नूं १९६ भिक्षाये करी यथासूत्रोक्त विधियें सिद्धांतोक्तमार्गें आरा
धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ त्रीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७ । एम बीजे सप्तकें पहिले दिन २ बीजेदिन ४ त्रीजेदिन ६ एमसातमेंदिन १४ । एम

ति प्रथमेसप्तके प्रतिदिनमेकैकभिक्षाग्रहणात् सप्तभिक्षाभवंति द्वीतीयेद्वयो२ र्ग्रहणाच्चतुर्दश एवंसप्तमेसप्तानांग्रहणा देकोनपंचाशद्दित्येवंसर्वमीलनेयथोक्ता
मानभवतीति अहासुत्तंति यथासूत्रंयथागमंसम्यक्कायेनस्पृष्टाभवंतीति शेषोद्रष्टव्यः सपन्नजोव्वणाभवंतित्ति नमातापित्रपरिपालनामपेक्षंतइत्यर्थः ठिइत्ति
आयुष्का ॥ ४८ ॥ तनपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनंतजिज्जिनकालभावी तथावांचणत्ति उत्तरकुरुषुनीलवदादीनां पञ्चानामानुपूर्व्याव्यवस्थिता

त्तमपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नउयभिक्खासएणं अहासुत्तं आराहिया भवइ देवकुरुउत्तरकुरा
सुण मणुया एगूणपन्नराइंदिएहिं सपन्नजोव्वणा भवंति तेइंदियाण उक्कोसेण एगूणपन्नराइंदिया ठिई
प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सणं अरहओ पंचासंअज्जियासाहस्सीओ होत्था अणंतेणं अरहा पन्ना

बीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ त्रीजेदिन ८ एम सातमेदिन २१। एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ त्रीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम
पांचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० त्रीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५। एम छट्ठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ त्रीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२
एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ त्रीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४९। एमसर्वमिली १९६ भिक्षाथई। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे युगलिया
मनुष्य ४९ रात्रि दिवसें ४९ अहोरात्रीयें संप्राप्त यौवन होय एतले ४९ दिनलगे माइत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्ते। तेइं
द्रिय जीवनो उत्कृष्टो ४९ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो। इति ४९ समवाय संपूर्ण ॥ ४९ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखेछे। मुनिसुव्रत बीस

नांमहाह्रदानांपूर्वापरपार्श्वयोः प्रत्येकदशकांचनपर्वताभवंति तेचसर्वेंशतं एवदेवकुरुषुनिषधादीनां महाह्रदानां पार्श्वतः शतम्भवति सर्वएतेजंबूद्वीपेद्वि शतमानाभवंति तेयोजनशतोच्छ्रिताः शतमूलविष्कंभा स्तन्नामकदेवनिवासभूतभवनालंकृतशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपचाशस्थानकं। तत्र

सं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढउच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेण प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वाउणं तिमिस्स गुहा खंडगप्पवाउ गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं२

मा अरिहतने पचास आर्यानी साध्वीनी संपदाना सहस्र थया। अनंतनाथ तेरमा अरिहंत पंचास धनुष ऊंचा ऊंचपणे थया । अनंतनाथने वारें पुरुषोत्तम नामा चौथो वासुदेव पचास धनुष ऊंचो ऊचपणे हुयो। सगलाई दीर्घ वैताढ्य ३४ जंबूद्वीपना ६८ धातकीखंडना ६८ पुष्करार्द्धना एवं १७० दीर्घ वैताढ्य मूलने विषे पचास पचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणें कह्या। लातक छठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या । सगला जंबूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत छे एकेक वैताढ्यें बेबे गुफा छे तेमाहि तिमिश्रागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नीसारानी एबिहुं गुफा पचास पचास योजन आयामपणे कही। उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेका ह्रदने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश काचन पर्वतछे तेसर्वेमिली एमज देव कुरुने विषे १०० सर्वेमिली २०० कांचनगिरि हुआ। ते सगला काचनगिरि शिखर तलने विषे पचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसो योजन ऊ

बम्भचेराणंति आचाराः प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमे सप्तोद्देशका इति सप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वारः चत्वारः एवं पंच अष्टौ चत्वारः षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुप्पहेत्ति चतुर्थोबलदेव अनंतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैकपञ्चाशद्वर्षलक्षाण्यायुः पुनरुक्तमावश्यकेतु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदमतांतरमिति एकावन्नउत्तरपगडीओत्ति दर्शनावरणस्यनव नाम्नोद्विचत्वारिंशदित्येकपञ्चाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपञ्चाश

जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ५० ॥ नवण्हंबंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविठा प० एवंचेवबलिस्सवि सुप्पभेणं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे दंसणावरणनामाणं दोण्हंक

चाछे। इति ५० समवाय सपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मो समवाय लिखेछे। आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे नव ब्रह्मचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते हना ५१ उद्देशानाकाल कह्या। प्रथमाध्ययने ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१ उद्देशनकाला कह्या। बीजो विचार २५ ठाणें जाणिवो सही। चमरेंद्र असुरराजनो सुधर्मासभा एकावन से स्तंभेकरी संनिविष्ट सहित कही। बलेंद्र अ सुरेंद्रनो असुरराजानो सभा सुधर्मा ५१ से स्तंभेकरी सन्निविष्ट कही। अनंतनाथने वारे सुप्रभनामा चौथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उत्कृष्ट आउखो पालीने सिद्धबुद्धथयो सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथयो मोक्षगयो। आवश्यके ५० लाखवर्षकह्या तेमतांतर। बीजोकर्म दर्शनावरणीय तेहनी उत्तरप्रकृति ९ छठोनामकर्म तेहनी

स्थानक॥ तत्रमोहणिज्जस्सकम्मस्सत्ति। इहमोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षुक्रोधादिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवेसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्ता तथा पिकषायसमुदायापेक्षया द्विपचाशन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चंडिकेत्ति चाण्डिक्यं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेत्ति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नत्त उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेत्ति

म्माण एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीउ प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स वावन्नंनामधेज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए। माणे मदे दप्पे थंभे अणुक्कोसे गव्वे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे। माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्हे किब्बिसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे। लोभे इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रकृति ४२ बिहुकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही। इति ५१ समवायथयो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखेछे। मोहनीय चौथोकर्म तेहना ५२ नामधेयकह्या। मोहनीयकर्ममांहि ४ कषाय अवतस्याछे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे। क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अक्षमा ५ सज्वलन ६ कलह ७ चांडिक्य ८ भंडण ९ विवाद १०। मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९ उन्नत्त १० उनाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूमनीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दंभ ९ कूड १० जिह्म ११ किल्विषिक १२ आचरणता १३ गूहनता १४ बचनता १५ परिकुंचनता १६ सातियोग १७। लोभाश्रितनाम १४। लोभ १ इच्छा २ मूर्छा ३ कांक्षा ४ गृद्धि ५

जीवामहाहिमवन्नी अडकलाछकलाश्रीति ॥ १ ॥ सवच्छरपरियागत्ति संवच्छरमेकं यावत् पर्याय: प्रव्रज्यालक्षणो येषां ते संवत्सरपर्याया: महदुमहालएसु
महाविमाणेसुत्ति महांतिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया आत्यंतमुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालयास्तेषु महांतिचतानिगम्यस्थानि विमानानिचेति
विग्रह: एतेचाप्रतीता अनुत्तरोपपातिकांगेतु ये धीयते तत्र त्रयस्त्रिंशत् बहुवर्षपर्याया सेति ॥ ५२ ॥ चतु:पंचाशस्थानको लिख्यते । पाउणित्तत्ति प्राप्य

याउणं जीवाउ तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं
जीवाउ तेवन्नंजोयणसहस्साइं नवयएगतीसे जोयणसए छच्चएगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं प०
समणस्सणं भगवउमहावीरस्स तेवन्न अणगारासवच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महइमहालएसु महा
विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

जीवा प्रत्यंचारूप त्रेपनत्रेपन योजन सहस्र झाझेरी लांब पणे कही । महाहिमवत बीजो वर्षधर एह बिहु वर्षधरनी जीवा प्रत्यंचा त्रेपन २ सहस्र योजन
प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहाइ छकला । ५३९३१ योजन १९ । ६ कला आयामे लाब पणे कह्या । श्रमण भगवंतमहावीर
ना ५३ अणगारयती सवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय दीक्षा जेहने एहवा ५३ हुया । पछे सथारोकरी अनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो विस्तीर्ण
महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूर्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टो त्रेपन वर्ष सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

एगणिसेज्जाएत्ति एकेनासनपरिगृहेण वागरणाइंति व्याक्रियंते अभिधीयते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापाद्यमानाः पदार्थाः वागरिच्छत्ति व्याकृतवांस्तानि चा प्रतीतानि अनंतनाथस्येह चतुःपंचाशद्गणा गणधरा प्रोक्ता. आवश्यकेतु पंचाशदुक्ता स्तदिद मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाशत्

भरहेरवएसुणं वासेसु एगमेगाएउसप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्न २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा ३ तं० चउवीसं तित्थकराबारसचक्कवट्टी नवबलदेवा नववासुदेवा अरहोण अरिट्ठनेमी चउवन्नराइंदियाइं छउमत्थपरिया यपाउणित्ता जिणेजाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी समणेभगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्ना इं वागरणाइं वागरित्या अणंतस्सणं अरहओ चउपन्नं गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह

हिवे ५४ मो समवाय लिखेछे। भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे एकेकीयें अवसर्पिणीयें एकेकीये उत्सर्पिणीये चोपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे। उपजस्ये ते कहेछे। २४ तीर्थंकर। १२ चक्रवर्ती। ९ बलदेव। ९ वासुदेव। सर्वमिलो ५४ थया। अरिहंत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पालो ने जिन हुया केवली। सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसकल संसारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्या ये एके आसणे बैठे ५४। व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवंत कहता हुया। अनंतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया। इति चोपनमो समवाय थयो॥ ५४ ॥ हिवे ५५ मोसमवाय लिखेछे। मल्लिनाथ अरिहंत पचावन वर्षसहस्र लगे उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया बुद्धथया यावत् शब्दे सर्वदुःख थकी

स्थानकेलिदं लिख्यते। मंदरस्से त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो र्विष्कम्भमध्यभागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपार्द्धे पंचसहस्रक्षेपेण पञ्चपंचाशदेव भव न्तीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां द्वान्ते पूर्य माणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविष्कम्भेन च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेनच लक्षद्वय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना ज्जगतीमाने पृथग्भणने मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पञ्चचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणक्षेत्रापेक्षया भिधीयते तत स्यैव मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किंचिदूनापि पंचपञ्चाशत्

उपणपन्नंवारासहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंता उ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पणपन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिपि वि जयवेजयंतजयंतअपराजियति समणेभगवंमहावीरे अतिमराइयंसि पणपन्न अज्झयणाइ कल्लाणफलविवा

प्रक्षीण रहित थया। मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थको छेहल्या प्रदेश थको जंबूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांत छेहलो प्रदे शएह ५५ योजन सहस्र आवाधा बिचाले आंतरो कह्यो। मेरुथको विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते माहि दश सहस्रनो मेरुघालिये एतले सर्वमि ली ५५ सहस्र योजन थया। इहा यद्यपि विजय द्वारनो पश्चिमांत ग्रह्योछे परजगतीनो पूर्वांत लीजे तो पूरा५५ सहस्र योजन थया। एमज चिहुंदिसे मे रु पर्वतमांहि घालता मेरुथको दक्षिणदिसे वैजयत द्वारनो पश्चिमे जयंतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो । श्रमण भगवंत महावीर छेहलीरा

पूर्णतया विवचितेति अतिमरायंसित्ति सर्वायुः कालपर्यवसानरात्री रात्रेरंतिमे भागे पापायां मध्यमायां नगर्यां हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्त्ति कमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यंकासनेनिपण्णः पंचपचाशदध्ययनानि कल्लाणफलविवागाइंति कल्याणस्य पुण्य स्य कर्मणः फलं कार्यं विपाच्यते व्यक्तीक्रियन्ते यै स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याख्याय प्रतिपाद्य सिद्धोबुद्धः यावत्करणात् मुत्ते अंतकडे परिनिब्बुडे सव्वदुक्खप्पहोणेत्ति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशति रिति पचपंचाशत् दंसणेत्यादि दर्शनावरणी

गाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्न निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिराहं कम्मपगडीणं पणपन्न उत्तरपग डीउ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्दीवेणंद्दीवे छप्पन्नं नक्खत्ताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

त्रियें कार्त्तिकवदी अमावसनी रात्रिये पालठीवाली बैठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमे हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्य विपा कीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा। पाप फल विपाक मृगापुत्रादिकना कह्या सिद्धा तनेविषें सिद्ध थया बुद्धथया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी पचीणथगा । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकह्या बीजीयें २५ लाख बिहुं नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कह्या। दर्शनावरणीय प्रकृति ९ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमत्रीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही। इति ५५ मो समवा यथयो ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मोसमवाय लिखेछे। जबूद्वीप द्वीपने विषें ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग सबध योजना करता हुया संबध करेछे संबंध

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्त्र इत्येवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथषट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते। जंबूद्दीवेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते र्भावात् षट्पंचाशन्नक्षत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा श्रोक्ता. आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिद मतातर मिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते। गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणपिटकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययनं विमुत्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कंधे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशीथाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशाना मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पंचदश सूत्रकृते

॥ ५६ ॥ तिराहं गणिपिडगाणं आयारचूलियाव ज्जाण सत्तावन्नं अज्झयणा प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ अरहउ णं विमलस्स सत्तावन्नं गणा गणहरा होत्था ॥

बारस्ये एतले जम्बूद्वीपमांहि २ चंद्रमाछे एकेका चंद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ बिहु चंद्रमाना मिली ५६ नक्षत्र होय। विमलनाथ अरिहंतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे। इति ५६ समवाय संपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखेछे। त्रिण गणी कहिये आचार्य तेह ने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचारांग प्रथम श्रुत स्कंधे ९ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनछे। तेमांहीथी छेहल्या अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगडांग पहिले श्रुतस्कंधे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठाणांगे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कह्या। तेसूत्रनानाम कहेछे अनुक्रमे आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३। जगतीथकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

द्वितीयांगे प्रथमश्रुतस्कन्धेषोडश द्वितीयेसप्त स्थानांगे दशैत्येव सप्तपंचाशदिति गोस्तूभेत्यादी भावार्थोयं द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभपर्वतयोरंतरं सहस्र गोस्तुभस्य विष्कम्भः द्विपंचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रंतरं दशसहस्रमानत्वा वडवामुखविष्कम्भस्य तदर्धं पंचेति ततो द्विपंचाशतः पंचाना च मीलने सप्त पंचाशदिति जीवाधनुःपिष्ठत्ति मंडल खण्डाकारं तेन इह सूत्रे सम्वादगाथायां सत्तावन्नसहस्सा धणुपिट्ठ गउयदुमयदसकालत्ति ॥ ५७ ॥

चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स वज्रमज्भदेसभाए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अ्रबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दयसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था महाहिमवंतरूप्पीणवासहरपव्वयाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

माहि पूर्वदिशे गोस्तुभनामा वेलधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांतथकी छेहला प्रदेशथकी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्य देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो एतले गोस्तुभ पर्वतथकी मूल पृथु ५२ सहस्र योजने वडवामुख पाताल कलशछे अने ते वडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनो मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला कारता ५७ सहस्र योजन थया। एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशथको माडो केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमज पश्चिमे शंखनामा वेलंधरथकी संडो यूपकनामा पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। उत्तरे दगसीम वेलधर थको ईश्वरनाम पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। मल्लिनाथ अरिहंतने ५७ मन पर्यवज्ञानी ५७०० थया। जम्बूद्वीप लवण मंडलचेत्र तेमांहो हिमवत बीजो वर्षधर रूपी पांचमो एहवीजे वर्षधर पर्वतनो धनुपृष्टि ५७ योजन सहस्र वली बेसय अने बाणो

स्तिनचंद्रमासो भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिरहोरात्रात्सोभवति यत्रेहद्विषष्ठि भागद्वयमधिकं तन्नविवक्षितं । सम्भवस्यैकोनषष्टिः पूर्व
लक्षाणि गृहस्थपर्याय उक्तोत: आवश्यकेतु चतु:पूर्वांगाऽधिकासोक्तेति ॥ ५८ ॥ अथषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० संभवेणं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए मल्लिस्सणं अरहओ एगूणसट्ठिं ओहिनाणिसया होत्था ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंडले सूरिए सट्ठिए सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाइए लवणस्सणं समुद्दस्स सट्ठिनागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेका मासे तीसतीस दिहाडा जोइये तो बिहु मासना ६० दिन जोइये तो ५९ किम कह्या । कृष्ण पक्षनो पखवाडा थी मांडी पूनिमे मास पूरो थाय एके मासे दिन २९ अने एक दिनना वासठिया बतीस भाग होय एह २९ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन बे भाग थाय ते पाछला ५८ दिन मांहि घालिये एतले ५९ दिननो ऋतु होय उपरि २ भाग उगरया ते अल्पमाटे न लेखव्या जाणिवा । संभवनाथ अरिहंत त्रीजा उगुणसठो पूर्व लाख लगे गृहस्थाश्रम माहि बसीने मुंड द्रव्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारियं गृहस्थाश्रम थकी अणगारितायतो पणूंपाम्या । अ॰ वेश्यक चार पूर्वांग लगी गृहस्थाश्रम वाह्यो छे । मल्लिनाथ अरिहंतने उगणसठिसे अवधि ज्ञानी थया ॥ इति ५९ समवाय थयो ॥ ५९ ॥ हिवे ६० मोसमवाय लिखिछे । सूर्यना १८० मांडला छे एकेका मांडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेंजगे । लवण समुद्रनो अगोदक शिखानो पाणी साठ हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन ऊंची पाणीनी वेल तेऊपर २ कोस पाणीवटे वधे ते अग्रोदक सोमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

नां सूर्यमंडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ठ्यापष्ठ्यामुहूर्त्तैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एक स्मिन्द्वियत्रस्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अमोदयति षोटशसहस्रोच्छ्रितायां वेलायायदुपरिगव्यूतद्वयमानं हद्विहानिस्वभा वतदग्रोदकं प्रतिपतति भोदोच्यस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवनं वंभरसति ब्रह्मलोकाभिधान पंचमदेवलोकेंद्रस्य सष्ठिर्त्ति सौधर्मेद्वात्रिंशदीशानेचाष्टा वर्धतिविमान लक्षाणीतिकृत्वा षष्ठिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानकं तत्रपचेत्यादि पचभिः सम्वत्सरैर्निष्ठक्तमिति पदसांवत्सरिकं तस्यषमि त्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचाय भावार्थः युगंहि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

लेणं असुरहा सट्ठिंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० बंभस्स ण देविंदस्स देवरन्नो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सट्ठिं विमाणा वाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया। वलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या। ब्रह्मनामा ५ मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशानें २८ लाख विमान बेहुं देवलोकनां मिली साठलाख विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेछे। चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच वर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चंद्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवा थी पौर्ण

तद्यथा चंद्रश्चंद्रोऽभिवर्द्धितश्चंद्रोभिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाण चन्द्रसम्वत्सर स्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यह्नांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकत्रिंशदह्नां एकाविंशत्युत्तरंचशतं चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ । १२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यह्नांत्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४ ६२ तदेवंत्रयाणांचन्द्रसंवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसंवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासश्च त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकषष्ठिःऋतुमासाइति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो त्रिधाविभक्तस्तत्रप्रथमोभाग

सट्ठिं उऊमासा प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पढमेकंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चंदमंडले

मासीये पूरी थाय एहमास मान १२ गुणोकीजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे तिवारे१०६२ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय १२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने१२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान ३८३ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणाकीजे ७६७ सातसे सडसठ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थायतेहने पहिले ३ चंद्र वर्षका मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० ने ३० भागें हरियेतो १ युगनेविषें ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन ऊंचपा

एकषष्ठिःसहस्राण्युक्ताः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदितिप्रोक्ताः चैत्रसमासेतु कन्देनसहलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्ता स्तत्र प्रथमकांडं सहस्रं द्वितीयंत्रिष
ष्ठि स्ततीयंषट्त्रिंशदिति । चन्द्रमण्डले चन्द्रविमानमित्यलक्षतो एगसट्ठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पञ्चाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितंविभागैर्व्यवस्थापिते
समांशंसमविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांशं योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पञ्चाशद्भागप्रमाणत्वा त्तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवंसूर्यस्यापिमण्डलंवाच्यम्
अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् हितत्रचापरमंशांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठिस्थानका पञ्चेत्यादि तत्रयुगेत्रयश्चंद्रसंवत्स
राभवंति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवन्ति द्वौचाभिवर्द्धित संवत्सरौभवत स्तत्रचाभिव र्द्धितसंवत्सर स्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

एगसट्ठिं विभागविभाइए समंसे प० एवंसूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठिं पुन्निमाउ बावट्ठिं अमावसाउ प० वासुपुज्जस्स णं अरहउ बासट्ठिं गणा बासट्ठिं गणहरा होत्था सुक्कपक्क

कह्यो । मेरु पर्वत ९९ हजार योजन ऊंचोछे तेहना वेभाग कीजे तेहना पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजननोकह्योछे चैत्रसमाससमेतो
वादसहित मेरु येकलाख योजन प्रमाण छे तेहना तीनभागकीधाछे पहिलो १ हजार योजननो बीजो ६३ हजार योजननो त्रीजो ३६ हजार योजननो
चद्रमानी मडल चंद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पनभाग प्रमाणें व्यवस्थापितछे तेमाटे समांस समभाग कह्योछे। चंद्रमाना मंडलमांहिथी ५
विषमांस नीकल्या तोरह्या ५६ समांस एणीपरे सूर्यमडल मांथी १३ विषमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय सपूर्ण ॥ . ६१ ॥ हिवे ६२ मो
लिखेछे। पांच संवत्सरनो युगहोय तेमांहि ६२ पूनिम अनें ६२ अमावास्या कहो १ युगमाहि २ चद्रवर्ष होय तेमांहि मास २६ वारेत्रिक २६ पूर्णिमाअने २६

मास्यइत्येवं द्विषष्ठिस्ताभवंति इत्येवममावास्याअपीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्ठिर्गणागणधरासीत्ता आवश्यकेतु षट्षष्ठिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति । सुक्कपक्ख
रुत्यादि शुक्लपक्षस्य संबन्धो चन्द्रो द्विषष्ठिभागान् प्रतिदिनंवर्द्धते एवंकृष्णपक्षे चंद्रः परिहीयते अयंभावार्थः सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाणं निच्चं
चंदेण होइ अविरहियं चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठाचंदस्सतं चरइ ॥ १ ॥ बावट्ठिं बावट्ठिं दिवसे२ उसुक्कपक्खस्स जंपरिवड्ढइ चंदो खवेइ तंचेवकालेण ॥ २ ॥ पन्नरसयभागेणय
चंदंपन्नरसमेवतंचरइ पन्नरसयभागेणय पुणोवितच्चेववक्कमइ ॥३॥ एवंवड्ढइचंदो परिहाणीएवहोइचंदस्स कालोवाजोण्हावाएयणुभावेणचंदस्स ॥४॥ तथातत्रैवो
क्तं सोलसभागाकाऊण उडुवइं हायएत्थपन्नरस तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवड्ढएजोण्हत्ति ॥१॥ तदेव भणितद्वयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रिं
शदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशोवस्थितएवास्तेशेषाः प्रतिदिवस द्विषष्ठिंकृत्वा वर्द्धन्ते ततःपंचदशे चंद्रदिनेसर्वेसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पंचद
शेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्यं व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावठिं २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतेगाथे एवं व्याख्याते

स्सणं चंदे बासठिं बासठिं भागे दिवसे दिवसे परिवढइ तंचेवबहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्द्धितवर्ष २ तेहनां मास २६ होय तेमाटे पूनिम २६ अमावास्या२६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अनें ६२ अमावास्या
होय । वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागें बढे एतले चंद्रमंडलनां ६२ भाग कल्पनाय
कोजेपखे १५ तिथि भागेहरिये तिवारे झाझेरा च्यार च्यार भाग आवे तो पनरेदिन लगी राहुविमान झाझेरा च्यार २ भाग चंद्रमाने मूकें चद्रज्योत्स्नावधे
पनरेदिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपक्षे राहुविमाने झाझेराच्यार २ भाग दिवसे चद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली झाझेरा च्यार २ भाग करतां

वावट्ठिं २ इत्यत्र द्विषष्ठि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्द्धते चन्द्र श्चतुरंशाधिकान् द्विषष्ठिभागान् क्षपयन्ति तदे
व कालेनैतदेवाह पन्नरसइत्यादिना चद्रविमानं द्विषष्ठिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत श्चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्ठिभागानां
पचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पचदशभागेन चोत्तालचणेन चद्रमुपक्रम्य पचदशैवदिवसां स्तद्राहुविमान स्वरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति
अत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुतै र्निर्णयः कार्यइति सोहम्मीत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो स्त्रयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेंद्रयो
र्दिश ब्रह्मलोके षट् लांतके पंच शुक्रे चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो श्चत्वार एव सारणाच्युतयोः ग्रैवेयके ष्वधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे
ष्वेकइति द्विषष्ठि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक मुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानांता वृत्तविमानरूपा द्विषष्ठिरेव विमानेंद्रका भवन्ति
तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेव सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः पढ
मावलियाएत्ति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेक्षया आद्या अतस् आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमाम्मूलभूता विमानेंद्रकादारभ्य या चा

स्सीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासट्ठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

६२ भाग होय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १३ प्रतरछे तेमाहि पहिले प्रतरेपहिलो आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां
डिये तिहां पहिलो श्रेणियें पूर्वादिक येकेके दिशे आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणां मोटा कह्या। १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली
वतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराय परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनत्कुमार माहिंद्रें १२ ब्रह्में ६ लांतकें ५ शुक्रे ४ सहस्रारें ४ आनत प्राणते

शेषः अष्टावष्टकानियतो सो भवत्यत यतः षष्ठ्या रात्रिंदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा
वष्टाविति सकलनया दीयते भिक्षाणामष्टाशीत्यधिकं भवती ऽतउक्तं द्वाभ्यां चेत्यादि यावत्करणात् अहाकप्पं अहामग्गं फासिया पालिया सोहिया तीरिया
कित्तिया सम्म आणाए आराहियावि भवतीति द्रष्टव्यम् सर्वेत्रिणमित्यादि इतो ऽष्टमे नन्दीश्वराख्ये द्वीपे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोऽञ्जनकपर्वता भवन्ति तेषां च
प्रत्येक चतसृषुदिक्षु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति तासांच मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्तितेच षोडशपल्यंक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क
म्भेन मूलादिषु दशसहस्र विष्कम्भला त्तेषां क्वचित्तु विक्खभुस्सेहेणाति पाठ स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शनात् विष्कंभेनेति व्याख्येयं तथा उत्सेधेनो च्चत्वेन चतु

चउसठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रन्नो चउसठिं सामाणियसाहस्सीओ प० सव्वेविणं
दधिमुहापव्वया पल्लासंठाणसंठिया सव्वत्थसमा विक्खंभुस्सेहेणं चउसठिंचउसठिं जोयणसहस्साइं प०

आठेदिने ३२ भिक्षाथाय एम करतायकां आठ अष्टकलगी ३६ भिक्षालीजे एतले सर्वमिली २८८ भिक्षाये यथामार्गं आराधोहोय पालीहोयने असुरनिकाय
ना २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दक्षिण दिशि चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरें बली तेहने ३० लाख भुवन जिहुं भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख
आवास भवन कह्या। चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कह्या। जम्बूद्वीपथकी आठमूं नदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुंदिशि ४ अंज
नगिरिछे एकेक अंजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी वावी छे ते वावीने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वत छे एतले जिहुं। पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन
तेहने संठाणे आकारे संस्थित छे। सगले समान मूले विष्कंभ पणे पिहुलपणे दससहस्स योजन परिमाण जाणवा। उत्सेधे ऊंचपणे चउसठि २ हजार यो

ष्टिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मे द्वात्रिंशदीशाने अष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारि विमानलचाणि सर्वाणि चतुःषष्टिरिति चउसट्ठिं लट्ठीएत्ति चतुःषष्टिलष्ठ नांशरा यस्मिन्नसौ चतुःषष्ठिलष्ठिकः मुत्तामणिमयेत्ति मुक्ताश्च मुक्ताफलानि मणयश्चन्द्रकान्तादिरत्नविशेषाः मुक्ता रूपावा मणयोरत्नानि मुक्तामणयस्तद्विकारो मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्टिस्थानकं तत्र मोरियपुत्तेणति मौर्यपुत्रो भगवतो महावीरस्य सप्तमो गणधरः तस्य पञ्चषष्ठिवर्षाणि गृहस्थ पर्याय आवश्यके एवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो वृहत्तरो भ्राता मण्डितपुत्राभिधानः षष्ठो गणधरः तद्दीक्षा दिन एव प्रव्रजित स्तस्यावश्यके त्रिपञ्चाशद्वर्षाणि गृह स्थपर्याय उक्तो न च बोधविषयमुपगच्छति यतो वृहत्तरस्य पञ्चषष्ठिर्युज्यते लघुतरस्य त्रिपञ्चाशदिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मावतंसक विमानं सौधर्मदेवलोकस्य म

सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसुकप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रन्नोचाउरंत चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घेमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे पणसट्ठिं सूरमंड ला प० थेरेणंमोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराओअणगारियं पव्वइए

जन प्रमाण कह्या । सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चौसट्ठिलाख एतला विमानावास कह्या सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिना अंतना धणीने चउसट्ठिलष्टि कहतां सरी छे तिहां ते चतुष्षष्टि कहिये एतले ६४ सरी महग्घो महार्घ्यं वहुमूल्य मोती मुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्यो । ॥ इति ६४ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पैसठमो समवाय लिखेछे । जंबूद्वीपने विषे १८० सूर्यमंडलछे निषधमाथे ६३ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कह्या । स्थविर वयश्रुत पर्याये वडा मौर्यपुत्र सातमा गणध

अइगताइं अइरेगंनरभवोयंनाणाजीवाणसव्वद्धंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानके किंचिल्लिख्यते तत्रपंचसंवछरेत्यादि नचत्रमासोये नकालेन चंद्रोनचत्रमण्डलंभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति श्चाहोरात्रस्यसप्तषष्ठभागाः २७। २१। ६७। युगप्रमाणंचाष्टादशशतानि त्रिंशदधि कानीति प्राक्दर्शितम् १८३० तदेवंनचत्रमासस्योक्तप्रमाणराशिनादिनराशिसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकंलचंद्वाविंशतिः सहस्राणिषट्शतानिदशचेत्येवंरूपो विभज्यमानःसप्तषष्ठिनचत्रमासप्रमाणो भवतीति बाहाश्रीत्ति लघुहिम

होत्या आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसं वच्छरियस्सणंजुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयाउणं बाहाउ

६६ सागर आउखो। तथा अच्युतदेवलोगे त्रीण वेलाजाय तिहां उत्कृष्टो २२ सागरआउखो वाईतो ६६ सागरहोय। विचेंसनुष्यनोभव करेते भाभेरा मांहि गणिये इति ६६ समवाय सपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे। पचसवत्सरे युग १ पूरोथाय। तेयुग नचत्रमासे माबीये ६७ नचत्रमासहोय जेणे काले चंद्रमा नचत्र मडलनेभोगवे तेनचत्रमासकहिये तेनचत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय। पूर्वे ६१ मेंठाणें एक १८३० दिनकह्याछेते ६७ गुणांकरिये तिवारे एकलाख बाईस हजारछसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि वाधिये २७ अहोरात्रियें सडसठिया एक वीसभागे एकनचत्रमासहोय एहवे ६७ नचत्रमासे एकनचत्र युगपूराय। लघु हिमवतपर्वतनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवंतचेत्रनी प्रदेशपं

वज्जोवायाः पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानक्षेत्रप्रदेशपङ्क्ती हैमवतवर्षजीवांयावत्ते हैमवतबाहू उच्येते एवमैरण्यवतबाहू अपिभावनीयौ इहप्रमाणसंवाद. बाहासत्त, छिसइपणपन्नेतिन्नियकलाओत्ति कलाएकोनविंशतिभागः एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनुःपृष्ठात् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्स दसकलायधणुत्ति ॥ एव लक्षणात् ३८०४० । १० । १९ हिमवद्धनुःपृष्ठे धणुपिठ्ठकलचउक्क पणवीससहस्सदुसयतीसहियत्ति एवलक्षणे २५२३० । ४ । १९ । अपनीतेयच्छेषतदर्द्धी क्रतसञ्जवतीति आयामेनदैर्घ्येणेति मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वांताज्जम्बूद्वीपोपरस्यांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसानः पंचपंचाशद्योजनसहस्राणितावदस्ति ततः परद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तमविवक्षित्वसूत्रार्थः सम्भवति पंचपंचाशतोद्वादशानांच सप्तषष्टित्वभावात्

सत्तठिं सत्तठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिन्निय भागा जोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए

क्तिछे हिमवतक्षेत्रनो जीवालगें तेहिमवंतक्षेत्रनी बाहुसरीखीबाहुछे। एम शिखरीनो जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेऐरण्यवतक्षेत्रनी प्रदेशपंक्तिछे ऐर ण्यवंतक्षेत्रनी जीवालगे ते ऐरण्यवंतक्षेत्रनो बाहुकहिये। जेहिमवत ऐरण्यवंतक्षेत्रनीबाहू ६७ से ५५ योजन एकयोजनना उगणीसहाव्याचिणिकाला ६७५५। ३ १९ योजनना ३ भाग लांबपणे कही। मेरुपर्वतना पूर्वचरिमांतथकीपाडो लवणसमुद्रमांही पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल वणसमुद्राधिपति तेहनो निवासभूत गौतम द्वीपछे तेद्वीपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरूप वंत १० हजार योजन विष्कम्भलीजे अने तिहांथी ४५ हजारे पश्चिम जगती तिहांथी १२ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आंतरो थयो

धिनाचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलप्यतेच जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यांभारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिनइति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततितम
नकोजिनिअभिख्यते समएत्यादिमंदरवर्ज्जामेरुवर्जाः वर्षाणिचभरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वताश्चहिमवदादयस्तत्सीमाकारिणो वर्षधरपर्वताः समुदिताएकोन
सप्ततिः प्रज्ञप्ताः कथंपंचसुमेरुषु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पंचत्रिंशद्वर्षाणि तथाप्रतिमेरुषट्षट्हिमवदादयोवर्षधरास्त्रिंशत्तथाचत्वार एवेषुका

मुप्पज्जिंसुवा ३ एवंचक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पुक्खरवरदीवड्ढेणं अडसट्ठिं विजया एवंचेवजाववासुदेवा
विमलस्सणं अरहओ अडसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥
समयखित्तेणं मंदरवज्जा एगूणसत्तरि वासावासधरपव्वया प० तं० पणतीसंवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

कालें वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अनें एकेक विदेहें जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय। एकक्षेत्रे चक्रवर्त्ति वासुदेव न
होय। बत्रीस विजयनेविषें उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्तिहोय ४ वासुदेवहोय अनें २८ वासुदेवहोय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तो ६८ किममिले सूत्रमांहि एकसमे
एहवो पाठनथी तेमाटे कालभेदें पाठछे ६८ होय विजयने भेदें तेमाटे विरुद्ध नथी। धातकीखंडनोपरि पुष्करार्द्ध द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी
कहवी। उत्कृष्ट पदें ६८ अरिहंत कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा। विमलनाथ अरिहंत ने अडसठ हजार श्रमणयती हुय
उत्कृष्ट श्रमण संपदा थई ॥ ६८ ॥ हिवे ६९ मो लिखे छे। काले करी ओलखाव्यो जे क्षेत्र ते समयक्षेत्र कहिये ते क्षेत्र अढाई द्वीपने विषे
मेरु वर्जीने ६९ क्षेत्र अने वर्षधर कुलगिरि हिमवतादिक क्षेत्रनी सीमानां करणहार कह्या। ते कहेछे अढाई द्वीपे ५ मेरु छे एक मेरुने पासे सातसात

राइति सर्वसंख्ययैकोनसप्ततिरिति। मंदरस्येत्यादि लवणसमुद्रं पश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राण्यवगाह्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमु द्राधिपतेर्भवनेनालंकृतोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमातोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवति पंचचत्वारिंशतोजंबूद्वीपसबंधिमाद्वादशगा मन्तरसत्रमिनांद्वादशानामेवद्वीपश्रिष्कंभसंबधिनांचमीलनादिति।मोहनीयवर्ज्जानांकर्म्मणामेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवतीति कथं ज्ञानावरणस्यपंच दर्शना वरणस्यनव वेदनीयस्यद्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विचत्वारिंशद्गोत्रस्यद्वे अंतरायस्यपंचेति ॥ ६९ ॥ अथसप्ततिस्थानकेकिमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा

सुयारा मंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अवाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाण सत्तण्हं कम्मपगडीण एगूणसत्तरि उत्तरपगडीउ

भरत हिमवंतादिक चेत्रछे ते पांचसतां पेंत्रीस थाय एकेक मेरुने पासें हिमवत महाहिमवंतादिक ६।६। वर्षधर छे छपंच त्रीस वर्षधर थया धात की खंड मांहि २ इषुकार पर्वतछे पुष्करार्द्ध मांहि २ एवं ४ इषुकार पर्वतथया सर्व मिलो उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६९ मेरुनां पश्चिम चरमांत थी गौत म द्वीपनो पश्चिम चरमांत एहने ६९ हजार योजन नो विचाले आंतरो कह्यो। एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनी जगती छे तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननो पिहुलो छे ते सर्व एको करिये तिवारे ६९ हजार योजन थाय। मोहनीय कर्म वर्जीनें सात कर्मनो ६९ उत्तर प्रकृतिकही। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिलो उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६९ समवाय संपूर्ण ॥ ६९ ॥ हिवे ७० मो लिखे छे। श्रमण भगवान महावीर देव च्यार मास प्रमाण वर्षाकाल

यांचतुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्यसविंशतिदिवसाधिकेमासे व्यतिक्रांतेपंचाशतिदिनेष्वतीते ष्वित्यर्थः सप्तत्यांचरात्रिंदिनेषुशेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः वर्षास्वावासोवर्षावासःवर्षावस्थानपज्जोसवेइत्ति परिवसति सर्वथाकरोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषुदिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु वृक्षमूलादा वपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणामादानीयउपादेयः पुरुषादानीयः अबाहूणिया कम्मठि ई कम्मणिसेगेपणत्ते त्ति इह किलाबाधाविशिष्टमेवकार्मपुद्गलोपादान कृत्वा उत्तरकालं ज्ञानावरणीयादिकर्मणां स्वस्वमबाधाकालमुक्त्वा ज्ञानावरणीयादिप्र

प० ॥ ६१ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासाणसवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासपज्जोसवेइ पासेण अरहापुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेण अरहा सत्तरिंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मोहणिज्जस्स णं

नो ते मांहि २० रात्रिये अधिक मास वीतेथकें एतले आषाढी पूनिम थकी पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने संवच्छरी करी पछे शेष थाकतो ७० रात्रियें वर्षाकाल रह्यो पज्जोसवेई सर्वथापि करे। पार्श्वनाथ अरिहत पुरुषां मांहि श्रेष्ट प्रतिपूर्ण ७० वर्ष लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धथया सर्वदुःखक्षकीणथया एतले ३० वर्ष गृहवासे ७० वर्ष चारित्र सर्व मिलो १०० वर्षनो आयु जाणिवो। वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष ऊंचपणे हुया। मोहनीय कर्मनी स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अबाधायें ७ हजार वर्षं ऊणी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगविवाने अर्थे रचना पूर्वे जे बांध्योछे ते उदयकाले आणिओ एतले उत्कृष्टो ७० कोडाकोड सागरोपमनों जेणे समये मोहनीय कर्मनो बंधपाम्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगे तेकर्म

क्षतिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्येणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरू
पाच यतः स्थितिरवस्थानं तेनभावेनाप्राच्यवनं तत्र कर्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति
तत्र अबाहत्ति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणितं तावत्कर्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोनन्तरसमये कर्मदलिकं पूर्वनिषि
क्त उदये प्रवेशयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्मदलिकस्या ऽनुभवनार्थं रचना तच्च प्रथमसमये बहुकं निषिंचति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयसमये
विशेषहीन मेवंयावदुत्कृष्टस्थितिकर्मदलिकं तावद्विशेषहीनं निषिंचति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगबाहुं पढमाएठिईएबहुतरदव्व सेसेविसेसहीणंजावुक्कोसंतिसव्वेसिं
ति बाधृलोडने बाधत इति बाधा कर्मणउदयइत्यर्थः नबाधाअबाधा अन्तरं कर्मोदयस्येत्यर्थः तथा ऊनिका आबाधोनिका कार्मस्थितिः कर्मनिषेकोभवती
त्येवमेकेप्राहु रन्येपुनराहु रबाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्मनिषेको भवतिसच
क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित् । चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसम्ब

कम्मस्स सत्तरिंसागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिसामाणियसाहस्सीओ प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

उदयेनावे ते माटे ७० कोडाकोड सागर मांहि थी ७ हजार वर्ष ऊंणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कोइक कहेछे सात हजार वर्ष अधिक ७०
कोडाकोडि सागर लक्षण कर्म निसेक होय। माहेंद्र चौथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० समवाय सपूर्ण ॥ ७०

त्सरा भवन्ति तत्रादौ चन्द्रसम्वत्सरौ तृतीयोभिवर्द्धितसम्वत्सर श्चतुर्थश्चन्द्रसम्वत्सरस्तृतीयो भिवर्द्धितसंवत्सरएव तत्रच एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विष ष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अयञ्च द्वादशगुणः चन्द्रसंवत्सरोभवति त्रयोदशगुणश्चायमेवा भिवर्द्धितोभवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्वत्सरत्रयेदि नानांसहस्रं निवतिः षट्त्रिंशषष्टिभागाभवन्ति १०९२। ५। ५२ तथाआदित्यसंवत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्ठिश्चभवति तत्त्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिक भवति एवंच द्वितय चन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेवंपूर्यते ऽपरञ्चश्रावणकृष्णप्रतिपदिप्रारभ्यते एवंचादित्ययुगसंवत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसंवत्सरत्रयं पंचभिर्दि नैःषट्पञ्चाशताचदिनद्विषष्ठिभागैरूनंभवतीतिकृत्वा आदित्ययुगसंवत्सरत्रय श्रावणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसंवत्सरत्रयंत्वाषाढ्यां तत

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कंतेहिं सव्वबाहिराउ मंडलाउ सूरिएआउट्टिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

छिये ७१ मो लिखेछे। १ युग मांहि ५ संवच्छर होय ते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित २ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र संवच्छर एकेको चद्र मास २९ अहोरात्रि १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कीधा चद्र संवत्थाय तेहनां ३५४ दिन झांझेरा थाय २९। ३२। ६२ अहोरात्रि१२ गुणाकारिये तो अभिवर्द्धित वर्षथाय तोदोय चंद्र संवत् १ अभिवर्द्धित संवत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अनें आदित्य संवत्सरना त्रिण से छासठिथाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चद्रयुग अने सूर्ययुग येके आषाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग श्रावण वदी प डिवाये प्रारंभियें एम आदित्ययुग संवत्सरनो अपेक्षायें चंद्रसंवत्सरत्रिण पांच दिहाडे साठिया छप्पन भागें ऊणां कारिये। आदित्ययुग संवच्छर ३ श्रावण वदी पक्षना चद्र दिन थकी छहें दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संवच्छर ३ आषाढी पूनिमें पूरे तियारपछी सावण वदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

श्रावणकृष्णपक्षसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने मादित्य चरम् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीना चतुर्णांहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त तितमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्षणे सूर्यआवृत्तिं करोति दक्षिणायनान्निवृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्वत्स रेषूत्तरायणतिथयः क्रमेणैव यदुतबहुलस्ससत्तमीए १ सूरोसुद्धस्सतोचउत्थीए २ बहुलस्सयपाडिवए ३ बहुलस्सयतेरसीदिवसे ४ सुद्धस्सयदसमीए ५ पवत्तएपं चमोउआवट्टी एयाआउट्टीओसव्वाओमाघमासम्मित्ति दक्षिणायनदिनानिचैवं पढमाबहुलपडिवए १ बीयाबहुलस्सतेरसीदिवसे २ सुद्धस्सयदसमीए ३ बहुल स्सयसत्तमीए ४ सुद्धस्सचउत्थीए पवत्तएपंचमोउआउट्टी एयाआउट्टीओ सव्वाओसावणेमासेत्ति वीरियपुव्वस्सत्ति तृतीयपूर्वस्य पाहुडति प्राभृतमधिकारवि शेषः। अजितेत्यादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारत्व त्रिपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाधिकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न विवक्षित मिति

एकसत्तरिंपाहुडा प० अजितेणं अरहा एकसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता जा

सूर्य चालतोथको चउथा चंद्र युगना चउथा मासमांहि अंतर्भूतछे एकसो अढारमा दिन कार्त्तिकीयें एकसो बारमां पोताना मंडलमांहि सूर्यचार करे तिवारपछे सोआला सबधो मागसिरादिक मासमांहि एकत्तर मांडला सूर्य चरे पछे बहुत्तरिमें दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमांहिला सर्वबाह्यमां डला थको सूर्य आवृत्तिकरे प्रदक्षिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे ॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका अधिकार विशेष कह्या। अजितनाथ

गत्रुभित्रादोनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वा त्तथाविधप्रयोजनभेदाच्च अचरदोषा यैते भतिकार्श्यमतिस्थौल्यं वैषम्यमंक्तिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽव यवेषुवेति ॥ १ ॥ तथा गणित सङ्ख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद मपाटीप्रसिद्ध २ रूप लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्म्माणं ३ नाट्यकला भरतमार्ग स्थलिकलास्यविधान मित्यादिभेदादृष्टधा नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा सरूप चात्रभरत शास्त्रादवसेय ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्ग स्थलिकमार्ग भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छनाएकविंशतिः तानाएकोनपञ्चाशत्समा सखरमण्डल इत्यस्य विशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाद्यति वाद्यकला साच तत वितत शुषिर घन वाद्यानां चतुः पञ्चयेक प्रकारतया त्रयोदशधा ४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्तति रिति कलासंख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

लेहं १ गणियं २ रूव ३ नट्टं ४ गायं ५ वाइयं ६ सगरयं ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पोरकच्चं १२ अट्ठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविही १५ पाणविही १६ वत्थविही १७ सयणविही १८

ला १८ भेदें कहीछे ।१। गणित अकानीकला २। चित्राम करिवो ३ नाटकनीकला ४ गानकरिवानीकला ५ बाजित्र वजाभानीकला ६। कंठ सबधो स्वर ने ओलखिवानीकला ७। बाजित्रनीगतिनोजाणवो ८। ताल देवानीकला ९। जूवारमवानीकला १०। लोगथी आलाप संलापनी कला ११ नगररचा दिकनी कला १२। सारपासारमवानी कला १३। पाणीअनेमाटी एकाठीकरीधांअसुकयोग होय तेकला १४। अन्ननीपजाविवा राधिवानीकला १५। पाणी नीपजावानी विधि १६। वस्त्र नोपजाविवारगवानो पहिरवानीविधि १७। सोवानीविधि १८। आर्या सस्कृतनोबध तेहनो जाणिवो १९। प्रहेलिका

ज्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्थं २५ ञ्जाभरण विही २६ तरुणी पडिकम्मं २७ इत्थीलक्खणं २८ पुरिसलक्खणं २९ हयलक्खणं ३० गयलक्खणं ३१ गोणलक्खणं ३२ कुक्कुडलक्खणं ३३ मिंढयलक्खणं ३४ चक्कलक्खणं ३५ छत्तलक्खणं ३६ दंडलक्खणं ३७ असिलक्खणं ३८ मणिलक्खणं ३९ कागणिलक्खण ४० चम्मलक्खणं चदलक्खणं सूरचरियं राहुचरियं गह चरियं सोभागकरं दोभागकरं विज्जागयं मंतगयं रहस्सगयं ४१ सभासंचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

नीकला २०। मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१। प्राकृतबंध गाथानो जाणपणुं २२। श्लोक रचवानी कला २३। गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४। मधु रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५। आभरण घडवानी जडवानी पहेरवानी कला २६। तरुणी स्त्रीजातिने प्रति काम क्रियाकलापनोसिखाविवो २७। स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८। पुरुषना बत्तीस लक्षणजाणिवानी कला २९। घोडाना लक्षण जाणिवानी कला ३०। हाथीना लक्षण जाणिवानीक ला ३१। वृषभ लक्षण कला ३२ कूकुडाना लक्षण कला ३३। मीढाना लक्षण। ३४। चक्रना लक्षण ३५। छत्रना लक्षण ३६। दंडवंशलठीनालक्षण ७३। खड्गना लक्षण ३८। मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९। काकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४०। चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सू र्यनो चरित्र एहवो ज्योतो एमथास्ये एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो विद्या प्रज्ञप्ति रोहिणी तन्नत विचार मंत्र आराधे हरिणेगमेषीआवे। रहस्यगति प्रछन्न वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु मात्रना प्रयोग चार कटक मानो उ

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वत्थुमाणं ६४ खंधनिवेसं ४७ वत्थुनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसत्थं छरुप्पवायं ५० आससिक्खं ५१ हत्थिसिक्खं ५२ धणुव्वेय ५३ हिरण्णपाग ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६ धातुपाग ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुट्ठिजुद्ध ६० जुद्ध ६१ निजुद्ध ६२ जुद्धाइजुद्ध ६३ सुत्तखेड्डं ६४ वट्टखेड्डं ३५ नालियखेड्डं ६६ चम्मखेड्डं ६७ पत्तछेज्जं ६८ कडगछेज्जं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

तविवो ४१। युद्ध कटक नी रचना ४२। खधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३। नगरवासिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिक ४५। खधारकटकनो निवासस्थापन ४६। नगर निवेशनो वासवो ४७। वस्तुनोस्थापनावस्तुनिवेश ४८। ईषदर्थ थोडानूं घणूं घणानूं थोडूं करवूं ४९। त्सरूखड्गमुष्टित्था जुद्धशास्त्र तहत विचारनो जाणिवो ५०। घोडानो गति शिखाडवो ५१। हाथीनो गति शिखाडवो ५२। धनुर्वेद धनुर्धारी शास्त्र ५३। हिरण्यरूपानोपाक पचाववो ५४। सुवर्णनो पचाविवो ५५। मणिरत्नादिकनो पाक ५६। धातुतांबादिकनो पाक ५७। युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणिवो ५८। नियुद्ध अतिशय युद्ध जाणिवो ५९। युद्धनेश्रति क्रम करीने जूझवो ६०। मुष्टिये जूझवो ६१। लतावेलडोयेजूझवो ६२। वाहथी जूझवोतेबाहु युद्ध ६३। सूत्रनो खेडवोनेभ्रमोमाडो सूत्रनो छेदिवो ६४। वर्त वाटलो खेडूं मांडीने जूझियो ६५। नालिकाकामल डांडो तेहनो खडवो वेभूमांडीने वेधवूं ६६। चर्म खेडू वेडूमाडीवेधिवो ६७ पत्रपानडानो छेदिवो ६८। कडग सुवर्णादिकनाचूडो कुडलादिकनो छेदिवो ६९। मुयामनुष्यतिर्यंचने मंत्रयत्रिकरो सजोव करिवो ७०। जीवतामीनसचापोने निर्जीव करिवो ७१। शकुन पखीकाकादकना स्वरभेदनो जाणिवो ७२। एकलायई। सम्मूर्च्छिम खेचर

सुवि दंडतभर्वोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथत्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। हरिवासेत्ति अत्र सम्वादगाथा॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजोयणसहस्सा जीयासत्तरसकलायअद्धकलाचेवहरिवासेत्ति तथा विजयो द्वितीयोबलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिर्वर्षलक्षाण्यायु रुक्तं मावश्यकेतु पंचसप्तति रितीदमपिमतांतरमेव॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते। तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाउ णं जीवाउ तेवत्तरिं २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरे जोयणसए सत्तरसयएगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० विजएणंबलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थेरेणंअग्गिभूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पक्षीनो पचेंद्रियतिर्यंचनो उत्कृष्टो ७२ हजार वर्षनो स्थिति कही॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हवे ७३ मो लिखेछे। हरिवर्ष अने रम्यक एयुगल क्षेत्रसबंधी जीवा धिणचरूप तेहुत्तरी २ हजार योजन जाणवी। नवसे एक योजन ७३९०१ योजन। एक योजनना उगणीसभागया सत्तर भाग एकयोजननो वली उपरि अर्द्धभाग आयामपणे लांबपणेकही। विजय बोजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगें पूरो आउखुंपालीने सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगी सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हवे ७४ मो लिखेछे। स्थविर व

सप्ततिवर्षाण्यायु रत्नचार्यविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि गृहस्थपर्यायः द्वादश छद्मस्थपर्यायः षोडशकेवलिपर्यायइति निसहाओणमित्यादि अस्यभावार्थः किलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाह्रदः सहस्रद्वयविष्कम्भ श्चतुःसहस्रायाम स्तदेवंपर्वतविष्कम्भार्द्धस्य ह्रदविष्कम्भार्द्धेनन्यूनतायां शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येव प्रवाहो भवति वइरामयाएजिभियाएत्ति वज्रमय्याजिह्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति निषधपर्वतस्याधोवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्वीपेनालङ्कृतमध्यभागे

साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहाउणं वासहरपव्वयाउ तिगिच्छिदहाउ सीतोयामहानदीउ चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्ना

डा अग्निभूति श्रीमहावीरना बीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया। तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष छद्मस्थपर्याय १६ केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु। निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊचो उपरि १६ हजार ८ से ४२ योजन २ काला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेतेगछी महा द्रहछेते २ हजार योजन पिहुलो ४हजार योजन लांबोछे। निषध वर्षधर पर्वतथको तेगछीद्रहथको निकलो एहवो सीतोदामहानदी ७४ से २१ योजन साधिक एक काला एतले प्रवाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमईजीभीयें ४०० योजन लांबी५० योजन पिहुली वहीने जायछे। निषध पर्वतने हेठें वज्रमयी भूमिकाछे जेहनो एहवो ४८० योजन पिहुलो १० योजन ऊंडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडें महया मो

शीतोदापप्रातकुण्डे महयत्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दुहशीत्तिक्वचित्दृश्यते तदपपाठइतिसन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनैव कलशवदनेनैव प्रवर्त्तित स्तेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्संस्थान तेनसंस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वता अपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवर नीलवद्वर्षंवराद्दक्षिणाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जेत्यादि तत्र प्रथमायांत्रिंशत् द्वितीयायांपचविंशतिः तृतीयायांपञ्चदश पचम्यांत्रीणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनलक्षं सप्तम्यापचेत्येतानि मीलितानि चतुःसप्तति र्भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानको विमपिलिख्यते। सुविधे र्नवमतीर्थंकरस्य ना

सजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महयाघडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवडइएवंसीतावि दक्खिणमुहीत्ताणियव्वा चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरि नरयावाससयसहस्सा प०

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने सठाणें सस्थित एहवे प्रपातें पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सब्दें पडेछे। एम नीलवंत पर्वत उपरि केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती शीता महानदी नीलवंत पर्वत हेठें शीताप्रपात कुडनेविषे पडेछे। सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो। चौथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीयें ३० लाख बीजीये २५ लाख त्रीजीयें १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पांच ऊंणा १ लाख सातमीयें ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिवे ७५ मो लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ पुष्पदंत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया। सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगे

सख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्त्तः सप्तसप्ततिर्लवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते हट्ठस्सअनवगल्ल

स निरुवक्किट्ठस्सजंतुणो एगेजसासनीसासे एसपाणुत्तिवुच्चई १ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥

७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते। सक्कस्सेत्यादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरुण वैश्रमणाभिधानानां लोकपालाना चतुर्थउत्तर दिक्पाल

सहिवैश्रमणदेवनिकायिकाना सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यंतरव्यंतरीणा चाधिपत्यकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ

करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणा दक्षिणस्यामष्टात्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश

दित्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यत इहतूक्त मितिमतांतरमिद आहेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्म्म पोरेवच्चति पुरोवर्त्तित्व

देवाणं सत्तहत्तरि देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरि लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥

सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साणं

आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महारायत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थेरेणं अकं

जानो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी। दक्षिणदिशि सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवंइंद्रना ७८ लाख भव

नछे तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्त्तपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहेंकरावतो थको आपमानीपरे पाल

तोथको रहेछे। स्थविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणे ४८ वर्ष छद्म

मग्रगामित्व मित्यर्थः भट्टित्तति भर्तृत्वं पोषकत्वं सामित्तंति स्वामित्वं स्वामिभावत्वं महारायत्तंति महाराजत्वं लोकपालत्वमित्यर्थः आणाईसरसेणावच्चति आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारेमाणेत्ति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालेमाणेत्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरोमहावीरस्या ष्टमोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथ गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् छद्मस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टेणति उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना न्निवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिएत्ति आदित्यः पढमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिशंगच्छतो रवे र्यत्प्रथम त्तस्मा ननु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तालीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यंतरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशे अउत्तरिति अष्टसप्तति एगसट्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुट्टेत्तत्ति निर्वर्द्ध्यहापयित्वेत्य र्थः तथारयणिखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुट्टेत्तत्ति अभिनिवर्द्ध्यच वर्द्धयित्वेत्यर्थः चारंचरइत्ति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

पिए अठहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिएपढमाउ मंडलाउ एगू

स्थपणे ९ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया। उत्तरदिश गमन थकी निवर्त्यो प्रारम्यो छे दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्य पहिला मांडला थकी एकोन चालीसमे माडले एक मुहूर्तना अउहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रने रात्रिने अभिवर्द्धीवधारीने चार चरेछे एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यंतर मडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयी तिवारे एक मुहूर्त

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधय स्तु यद्यपि सप्तापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्यु स्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं ष
ष्ठपृथिवीबाहल्यार्धमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाण चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति भवति मतांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाहल्यत्वा
त्पंचमोमाश्रियेद सूत्रमवसेय यत स्त्वबाहल्यमष्टादशोत्तरं लचगुक्तं यतआह पढमाशीइसहस्सा १ बत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाय ३ अट्ठार ५ सोल ६ अ
ट्ठ ७ सहस्सलक्खोवरिंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकला द्दग्रब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या चत्वा
रिद्वाराणि विजयवेजयंतजयतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविष्कम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं केउ
स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि छठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाउ छठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं
एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० जम्बूद्दीवस्सणं दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन आंतरो जाणिवो। छठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागथकी एतले छठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनो मध्यभाग ५८
हजार योजन छठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो छे तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७९ हजार योजन आवाधाये बिचा
ले आंतरो कह्यो। एतले छठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह ग्रथने मते एतले तेहनो हेठिलो चरमांत ७९ हजार
योजन थयो। एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो। तेएहने मते छठीयेज कहिवो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्य मित्यर्थः एसणति एतदेकोनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्येवंलक्षण मबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थोन्तर मन्तर कथं ज म्बूद्वीपपरिधिः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूंषि १२८ अंगुलानि १३ सार्द्धानीत्येव लक्षणस्यापकर्षितद्वारशाखाविष्कम्भस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥ ७८ ॥ अथाशीतितमस्थानके किंचिल्लिख्यते। श्रेयांसएकादशोजिन स्त्रिपृष्टः श्रेयांसजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलःप्रथमबलदेवोपि तथा त्रिपृष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणू इं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था तिविठ्ठेणं वासुदेवे असीइंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था तिविठ्ठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था आउवज्झले कंडे असीइजोय

योजन कहिवो। जम्बूद्वीप नी जगतीना ४ द्वारछे पूर्वादिकें विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजो चार २ योजन पिहुलोछे। चार दरवाजानो परस्पर अंतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननोछे। जम्बूद्वीपनोपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाउ १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मांहीथी ४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीयें पूठे उगरया योजन चिहु भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये। इति ७९ मो संपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिवे ८० मो लिखेछे। श्रेयांस इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया। श्रेयांस जिननेवारे त्रिपृष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो। पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो। त्रिपृष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगे महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष जाणिवो। रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेहनां ३ कांडछे। प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

ष्क्रामय जंबूद्वीपात् प्रविशंश्च जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलशत भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसंक्रामति शेषाणि तु द्वौवाराविति इहच द्व्यशीतिविवक्षये वेद द्व्यशीतिस्थानकेऽवीत मितिभावनीय यद्यपि जंबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलानां भवति तथापि जंबूद्वीपादिकसूर्यचारनियमला च्छेशाण्यपि जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्यशुक्लपक्षषष्ठ्यामारभ्यद्व्यशीत्यांरात्रिदिवेष्वतिक्रांतेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया देवानंदाब्राह्मणी कुक्षित इत्यर्थः गर्भं त्रिशलाभिधानक्षत्रियाकुक्षिं संहृतो नीतो देवेंद्रवचनकारिणा हरिणैगमेषभिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्व्यशीतिरात्रिंदिवान्यधिकृत्य द्व्यशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितम रात्रिदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति महा

समणेभगवंमहावीरे बासीएराइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाउ गब्भं साहरिए महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसण बासीइंजोयणसयाइं अबाहाए अंतरेप०

समुद्रमांहिलो छेहिलो सर्वाभ्यंतर मांडलो सूर्य एकवेला वरिसे एक कर्क सक्रांतियें शेष थाकता १८२ मांडला बेवेलाफिरस्ये सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी जंबूद्वीपे निकलतो एकवेला जंबूद्वीप मांही पैसतो एम बेवेला १८२ मांडला सूर्यचरे भमे गगने फिरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी थकी मांडी ८२ रात्रिदिवसव्यतिक्रमे थके ८३ मीरात्री वर्ततेथके आशोजवदी १३ नीरात्रीये देवानंदानी कूखथकी गर्भ त्रिशला देवीनी कूखविषे हरिणैगमेषी देवताये साहस्यो पहुचाड्यो ॥ महाहिमवंत बीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊंचो छे ते महाहिमवंतनो ऊपरलो चरमांत छेहल्यो प्रदेश तेह थकी मांडी रत्नप्रभाना सौगंधिक कांडनो हेठिलो चरमांत एह ८२ शत योजन आबाधायें विचाले आंतरोकह्यो। कांड दूजो अपबहुल ३ तेमांही पहिलो कांड

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उपरिल्लाओत्ति उपरिमा च्चरमांतात् सौगन्धिककाण्डस्या धस्तनचरमान्तो द्व्यशीतिर्योजनशतानि ॥

अथ रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि कांडानि खरकाड पंककांडमब्बहुलकांडं चेति तत्र प्रथम काण्ड' षोडशविधं तद्यथा रत्नकांड १ वज्रकांडं २ एववैडूर्य ३ लो हिताच ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकांडचे ति १६ एतानि च प्रत्येकं सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगंधिककांडस्या ष्टमत्वा दशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येव द्व्यशीतिशतानीति एव रुक्मिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्यं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्र्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते। इह शीतलजिन स्य त्र्यशीतिर्गणा स्त्र्यशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकेत्वेकाशीतिरितिमतांतरमिदमिति तथा स्थविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधर: तस्य चत्र्यशीतिवर्षा

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेभगवंमहावीरे बासीइ राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए सीयलस्सणं अरहओ तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्था थेरेणं मंडि

१६ भेदे रत्नकांड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगंधिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ कांड प्रत्येकें १ सहस्र योजन प्रमाणछे तोसौगंधिक काड आठमो तो आठ कांड मि लीने ८० शत योजनथया अने वेसे योजन महाहिमवत जयोछे सर्वएकठा करतां ८२ शत योजनथया। इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिवे ८३ मो लिखेछे। श्रमण भगवंत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथके ८३ मी अहोरात्रि वर्त्तता थकां देवानंदाना गर्भ थकी त्रिशलाने गर्भे साहस्या हरिणि

णि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्यशीतिरिति तथा कोशलिएत्ति कोशलदेशभवः कौशलिकः तेसीइति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्यशीतिः तथा भरतश्चक्रवर्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्यशीतिमगारवासम ध्युष जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिजयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादित्रययोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्सर्वभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्ष

यपुत्ते तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसभेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता णं जावपव्वइए भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

गमेसीये पहुपाद्या। शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवश्यकें ८१ कह्या ये मतांतरछे। स्थविर मंडित पुत्र छट्ठो महावीरनो गणधर ८३ वर्षल गे सर्वायुपालीने सिद्धथयो सर्वदुःख रहित थयो ५३ वर्ष गृहस्थपणें १४ वर्ष छद्मस्थपणें १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्ष थया। ऋषभ आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांही वसीने द्रव्यभावभेदें मुंडथयीने अगार गृहस्थयकी अणगारी यतीपणूं पाम्या। २० लाख पूर्व कुमारपणें ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमें एव ८३ लाख पूर्व वर्ष। भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख पूर्व कुमारपणें ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एव ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया। राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहायज्ञान जेहनेछेते केवली विशेष जाणें ते सर्वसामान्य बोधथकी सर्वभावदर्शी थया। इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेछे।

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलित्वेन विहृत्य सिद्धइति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानकं किमपि लिख्यते। चतुरशीति नैरकलक्षाख्यमुना विभागेन तीसा यपणवीसा २ पणरस ३ दसेव ४ तिन्निय ५ हवंति पंचूणसयसहस्सं पंचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रेयांसएकादशस्तीर्थंकर: एकविंशतिवर्षलक्षाणि कुमारत्वे तावंत्येव प्रव्रज्यायां द्विचत्वारिंशद्राज्ये इत्येवं चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्ध: तथा तिविठुत्ति प्रथमवासुदेव: श्रेयांसजिनकालभावीति अप्रतिष्ठा

सयसहस्सा प० उसभेणं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविठ्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइठाणे नरए नेरइ

सातें नरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीयें ३० बीजीये २५ त्रीजीये १५ चौथीये१० पांचमीये ३ छठीये ५ ऊंणा १ लाख सातमीये५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना ऊपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखोपालीने सर्वदुःख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणें एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमंगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमंगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणें ४२ लाख वर्ष राज्यपणें २१ लाख वर्ष दीक्षा एव ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयूपाली सिद्धथया। सर्वदुःखथी प्रक्षीणथया

नी नरकाः सप्तमपृथिव्यां पञ्चानां मध्यम इति तथा समाणियत्ति समानर्धयः तथा बाहिरयत्ति जम्बूद्वीपकमेरुव्यतिरिक्ता शत्वारो मन्दरा शतुरशीतिः सह स्राणि प्रज्ञप्ताः अंजणगपव्वयत्ति जंबूद्वीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोंजनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि वासेत्यादि चत्तारियभागजोयणस्सत्ति एकोनविंशतिभागा इत्यर्थंगाथार्थं धणपिठ्ठकलचउक्कं गुणसीइसहस्ससोलसहियत्ति तथा पंकबहुलंकाण्ड द्वितीयं

यत्ताए उववन्ने सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं वाहिरया मंद रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं धणुपिठ्ठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सो लसजोयणाइं चत्तारियभागा जोयणस्स परिक्खेवेणं प० पंकबहुलस्सणं कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ

त्रिपृष्ट पहिलो वासुदेव श्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा छे तेमांरी विचलो अपइट्ठाण नरकायासेनारकी पणे उपनो। पहिला देवलोकनो राजा शक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहससामानिक देवता काह्या। जंबूद्वीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजासगलाधातकी खंडना २ पुष्करार्धना २ मेरु चोरासी चोरासीहजारयोजन ऊंचा ऊंच पणे काह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा छे सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जंबूद्वी पथकी आठमे नंदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागें पूर्वादिक चिहुंदिशि ४ अंजनका पर्वत छे चारोअजनका पर्वत चोरासी २ सहस्र योजन ऊंचा ऊचपणे काह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा सर्वमिली ८५ हजारना। हरिवर्षबीजो रम्यकपांचमो तेहनो धनुवती प्रत्यंचा चोरासी चोरासी सहस्र योजन उपरि सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिमिपे परिधीयें काही। रत्नप्रभायें तिणकांडछे तेमांही पंकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत छेहलो

तस्यष बाहल्य चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थं इति तथा व्याख्याप्रज्ञप्त्यां भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्द्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिर्द्वेलचे अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानामभवन्तीति तथा चतुरशीति र्नागकुमारा वासलचाणि चतुश्चत्वारिंशतो दक्षिणाया चत्वारिंशच्चोत्तराया भावादिति चतुरशीतिर्योनयोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराणियोनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगअगणिमारुय एक्केक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिंदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोंतिचउरो चोद्दसलक्खाउमणुएसुत्ति २

हेठिल्ले चरमते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पांचमोअंग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषे ८४ पदनां सहस्र छे पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरे आचारांगना १८ सहस्र पदछे पछे आगल्ये २ अंगे बेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अंगे २ लाख ८८ हजार पद थाय। नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिली नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या। ८४सहस्र पइन्ना यतीना कीधा ग्रंथविशेष कह्या। ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असंख्यातछे पणि समान वर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका आंक पर्यवसान छेह

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्सइति द्वितीयेहि तस्यश्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथाख्ये ह नगृह्यते भिन्नप्र स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या श्चतस्र स्तासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यौ चैकैकाध्ययनात्मिके तदेवं सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलिकाक स्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्देशनकालाना मेतावत्संख्यत्वा त्तथाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार श्चत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कंधेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश त्रय स्त्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकस राणि अध्ययनान्येवं तृतीयैकाध्ययनात्मिका एव चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखण्डमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्यु च्छ्रिताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वाग्रेण भवतः पुष्करार्द्धमन्दरावप्येवं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

आयारस्सणं भगवउ सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देसणकाला प० धायइखंडस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पाचमे ६ छठ्ठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिलो प्रथम श्रुतस्कंधे ५१ उद्देशा। बीजे श्रुतस्कंधे ५ चूलिका तेमांहि पाचमी निशीथ नामे ते इहां नग्रही बीजी ४ ग्रही तेमांहोली बीजी चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमांहीपहिली चूलिकाना साते अध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुंअध्ययने वेवे उद्देशा एव उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजी चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजी चौथी चूलिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिलो ८५ उद्देशा कालाथया। ८५ उद्देशानोधडो पूरो २५ मे समवायांगे मेलव्योछे। पूर्वापरधातकी खडे वेमेरुपर्वतछे ते वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमाणेकह्या एकसहस्र योजनऊंडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिलो ८५ सहस्रथया। एम पुष्करार्द्धे पणि कह्या।

दृग्द्वीपान्तर्गतः प्राकाराकृतीरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्सच सहस्त्रमवगाढस्ततुरगीतिरच्छित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वाग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छितायां प्रथममेखलायां व्यवस्थितस्या धस्याच्चरमांतात् सौगंधिककाण्ड स्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्त्य चरमात: पञ्चाशी तिर्योजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथ मष्टशतानि मेरोः सत्कयोनि प्रत्येक सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डाना मष्टसकाण्डमशीतिशतानीति ॥ ८५

सहस्साइं सव्वग्गेणं प० रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सव्वग्गेण प० नंदणवणस्सणं हेठिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एस णं पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प०

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांहो गढने आकारे मंडलाकारछे तेमाटे मंडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वाग्रे सर्वपरिमाणे कह्यो। भूमियकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊंचो चढोये तिहा प्रथममेखलानेविषे नंदन वन छे तेहना हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानो आठमो सौगंधिक कांड तेहनो हेठिलो चरमांत एह ८५ से योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभाये ३ कांड छे पहिलो १६ हजारनो कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमो सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया। नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजनथया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मो समवाय लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ बीजूंनाम पुष्पदंत अरिहंतने ८६ गणधर हुआ आवश्यके

नाशां मीलने सूतीत संख्याख्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेशते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिषशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धिकाकाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डाना मित्येवं मीलिते सप्ताशीति रन्तरभवतीति एवं रुप्पिकूडस्सवित्ति रुक्मिणिपंचमवर्षधरे यद्वितीय रत्नकूटाभिधानं कूट तस्याप्यत्तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्यं समानप्रमाणत्वा त्तयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानकं किंचिद्विव्रियते ॥

उवरिल्लवज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगडीउ प० महाहिमवंतकूडस्सणं उवरिमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥

मकर्मे ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई। महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह ऊंचो बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवत कूटछेते ५०० योजन ऊचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया। तेमहाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाने ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमांहि सोगंधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमात एतले आठो कांडना ८० से योजन थया अने महाहिमवंतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। महाहिमवत कूटनी परें पांचमोरूपीवर्षधर पर्वतनो रूपी नामकूट अने सोगंधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखे छे। चंद्रमा सूर्य असंख्या

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमासूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्येत्यर्थः अष्टाशीतिर्महाग्रहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यत्र श्रूयते तथापि सूर्यस्यापीन्द्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिट्ठिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वंगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पच प्रकारस्य सुत्ताइंति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवन्ति जहानंदीएति अतिदेशतः सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा त्तस्यच सहस्रविष्कम्भत्वा द्य थोक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभाससखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाश्रित्य वाच्यमतएवाह

एगमेगस्सणं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइं अट्ठासीइं महग्गहा परिवारो प० दिट्ठिवायस्सणं अट्ठासीइंसु त्ताइं प० तं० उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अट्ठासीइंसुत्ताणि भाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअट्ठासीइं जोयणसहस्साइं .

ताछे तेसहुने प्रत्येके अठ्यासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्यासीनो परिवार कह्यो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चंद्रमानोछे तोहीपणि सूर्य इंद्रछे तेहनो पिणएतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व बारमोअंग तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व कह्या तेहना सूत्राइंति बीजो सूत्र पूर्व तेहना ८८ सूत्रछे तेकहेछे। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवा। जिमनंदीसूत्रे कह्योछे तेम जाणिवो। मेरु पर्वतथको पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनछे तिहाथको पूर्वसमुद्रमांहि ४२ सहस्र योजन गोस्तूभपर्वतछे ते १ हजारपिहुलोछे सर्वमिलो ८८ हजार मेरुपर्वत

अत्र शतोनानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाण्येकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोननवतिरार्यिकासहस्राण्यु त्कृष्टार्यिकासंपत् अन्यत्र चैकोननवतिः सहस्राणि शतानिचनवभिरधिकानीति मतांतरमेतदिति ॥ ८८ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते। तत्र

ए पच्छिमेभागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे समणे ३ इमीसे उसप्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेभागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे हरिसेणेण राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था सन्तिस्सणं अरहओ एगूणनउइ अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

अवसर्पिणी ने चोथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८९ पखवाडे शेष थाकतां चोथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमें गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख प्रचीण थया। एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पछो ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडे गये थके चौथो आरो उतरी पांचमो आरो लाग्यो एह भाव जाणिवो। नमिनाथने वारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८९ वर्षलगे एकसोवर्ष उणी नव हजार वर्षलगे महाराज चक्रवर्त्ती हुआ। शेष थाकतां ११०० वर्ष मांहि कुमार पणे मंडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणु पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया। शांतिनाथ अरिहंतने ८९ हजार साध्वी एवो उणी हुई एतले ८९ सहस्र ८९९ उत्कृष्टी आर्या साध्वीनो संपदा हुई इति ८९ मो समवाय थयो ॥ ८९ ॥ हिवे ९० लिखेछे। शीतलनाथ

जितनाथस्य शांतिनाथस्य चेह नवतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु पञ्चनवतिरजितस्य षट्त्रिंशत्तु शान्तेरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयंभूस्तृतीय वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजयः पृथिवीसाधनव्यापारः सव्वेसिणमित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताढ्यानां शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छित त्वात् सौगन्धिकाकाण्डचरमान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा नवसु सहस्रेषु भवतः शतानां भावात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ९० ॥

नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था अजियस्सणं अरहओ नउइगणा नउइगणहरा होत्था एवंसंतिस्सविसयंभु स्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था सव्वेसिणं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधिय कंडस्स हेठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइं

दशमा अरिहंत ९० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया। आवश्यके ९५ गणधर कह्या एमतांतर। शां तिनाथ १६ अरिहंतने ९० गणधर हुया। आवश्यके ३६ कह्या ते मतांतर छे। विमलनाथकालीन सयंभू त्रीजो वासुदेव तेहने ९० वर्ष लगे विजय पृथिवी साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ९० वर्ष लाग्या एभाव। सगलाई वृत्त वैताढ्य २० जंबूमाहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरणवत ४ ए चिहुं क्षेत्रे शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताढ्य छे धातकीखंड माहि एवेजछे आठछे पुष्करार्द्धे आठ सर्वमिली २० वृत्त वैताढ्यछे सगला १ सहस्र योजन ऊंचा छे सग लाई वृत्त वैताढ्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थको रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छे तेहनो हेठिलो चरिमांत ९० से योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले वृत्त वैताढ्य १००० योजन ऊंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिली ९० से योजन थया ॥ इति ९० समवाय

स सप्तत्यासहस्रैः षड्भिःशतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः आयु

गोत्रवर्जानां प्रथमिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामान्तरायानां क्रमेण पच नव द्वा ष्टाविंशति द्विचत्वारिंशत् पंच भेदानामिति ॥

९१ ॥ अथ द्विनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते। द्विनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्श्यन्ते तत्र किल पंच प्र

तिमाउक्ता स्तद्यथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकाप्रतिमा ३ प्रतिसलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा श्रु

कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहियसया होत्था आउयगोयवज्जाणं छएहं कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्त

रपगडीओ प० ॥ ९१ ॥ बाणउइपडिमाओ प० थेरेणं इंदभूती बाणउइवासाइं सव्वाउयं पाल

जोसमुद्र ९१ लाख योजन साधिका आंभेरी ते कहेछे ७० सहस् ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ अंगुल एतलो परिक्षेप परिधि कही। कुंथुनाथ अरिहंत

ने ९१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र संबंधी अवधि ज्ञानी हुआ। चउथो आउखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष आठाता छ कर्मनी उत्तर

प्रकृति ९१ ज्ञानावरनीयनी ५ दर्शणावरणीनी ९ वेदनी २ मोहनी २८ नाम कर्म ४२ अंतराय ५ सर्व मिली ९१ उत्तर प्रकृति कही। इति ९१ समवाय

थयो ॥ ९१ ॥ हिवे ९२ लिखेछे। ९२ भेदे प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिलो ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३

प्रतिसंलीनप्रतिमा ४ एकविहार प्रतिमा ५ पहिलो समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२

भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदथया। उपधान प्रतिमा २३ यतिनी १२ श्रावकनी ११ एम २३ विवेकनी

तसमाधिप्रतिमा चारित्रसमाधिप्रतिमाच दर्शनं ज्ञानान्तर्गतमिति न भिन्नादर्शनप्रतिमा विवक्षिता तत्रश्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्ठिभेदा कथं आचारे प्रथमे श्रुतस्कन्धे पच द्वितीये सप्तत्रिंशत् स्थानांगे षोडश व्यवहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एताश्च चारित्रस्वभावा अपि विशिष्ट श्रुतवतांभवन्तीति श्रुतप्रधानतया श्रुतसमाधिप्रतिमात्वेनोपदिष्टा इतिसम्भावयाम: पचसामायिकच्छेदोपस्थापनीयाद्या चारित्रसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिक्षुश्रावकभेदा तत्र भिक्षुप्रतिमा मासाईसत्तताइत्यादिना भिहितस्वरूपा द्वादश उपासकप्रतिमास्तु दसणवए इत्यादिना भिहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति र्विवेकप्रतिमा त्वेका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे र्बाह्यस्य विवेचनीयस्यानेकत्वे प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसंलीनताप्रतिमाप्येकैव इन्द्रियस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोइन्द्रियस्वभावस्यच योगकषायविविक्तशयनासनभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसंलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चस्येकविहारप्रतिमैकैव नचेह सा भेदेन विवक्षिता भिक्षुप्रतिमास्वन्तर्भावितत्वादित्येवंद्विषष्टि: पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति र्महावीरस्य प्रथमगणनायक: सच गृहस्थपर्याय पञ्चाशत वर्षाणि त्रिंशति छद्मस्थपर्यायं द्वादशश्च केवलित्व म्पालयित्वा सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मंदर

इत्ता सिद्धे बुद्धे मंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते

धादिकनो त्याग एकभेद प्रतिसलीन तायें इन्द्रियनो गोपिवो एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ६२ पांच त्रेवीस एकएक सर्वमिली ९२ भेद प्रतिमाना थया। स्थविर इद्रभूति महावीरनो प्रथम गणधर गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थ पर्यायें ३० वर्ष १२ वर्ष केवल पर्यायें सगलो ९२ वर्षनो आउखोपालीने सिद्धथया मोक्षपहुता तलना ज्ञानीथया। मेरुपर्वतनो बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्र योजन तेहथकी ५ हजार योजननी जगतीहुई तेहथकी वेलधर नागराजानो आ

चउणउइसहस्साइं छप्पणं इयसयंकलादोय जीवानिसहस्सेसन्ति ॥ ९४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानको किंचिल्लिख्यते। लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि पंचनवतिः २ प्रदेशाउद्वेधोत्सेधपरिहानिभ्यांविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलापेक्षया सहस्रमुद्वेधउच्छत्व मित्यर्थः तदनन्तर मपंचनवतिमप्रदेशानतिक्रम्योद्वेधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपंचनवतिं प्रदेशान् गत्वा उद्वेधस्य प्रदेशाः परिहीयन्ते एवं पंचनवति २ प्रदेशाति क्रमे प्रदेशमात्रशोद्वेधस्य हान्या पंचनवत्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्वेधतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वम्भवतीति तथा समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधश्चोच्चत्व तत्र समधरणीतलरूपा त्तत्तटा त्पंचनवतिमप्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

निसह नीलवंतियाउणं जीवाउ चउणउइ जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसयं दोन्निय एगूणवीसइ भागे जोयणस्स आयामेण प० अजियस्सणं अरहउ चउणउइ ओहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥ सुपासस्सणं अरहउ पचाणउइगणा पचाणउइगणहरा होत्था जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स चरमंताउ चउद्दि

वा ९४ हजार योजन एकसोछप्पन योजन उपरि वे उगणीसहाउया भाग एकयोजनना ९४१५६ योजन १९ कला आयामपणे लांबपणेकाही। अजितनाथ परिहंतने ९४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति ९४ मो समवाय थयो ॥ ९४ ॥ हिवे ९५ मो लिखेछे। सुपार्श्व सातमा अरिहंतने ९५ गच्छ ९५ गणधर हुया। जम्बूद्वीपना चरमांतथकी पूर्वादिक चिहुंदिशि लवण समुद्रमांहि ९५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश जाणा। तेकहेछे। पूर्वे मुद्रमांहि बडवामुख। दक्षिणे केतुक। पश्चिमें यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखण्डथकी समुद्रमांहि उरहामध्यभाग भणी ९५ सहस

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिकी चोत्सेधहानि र्भवति एव पंचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव
त्यायोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्वेधता भवति लवणस्येत्ति अथचोद्वेधा
र्थं वोत्सेधपरिहानिस्तस्यापंचनवतिः प्रदेशाः प्रमाणा स्तेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशहान्यामुद्वेधः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंथुनाथस्य सप्तदशतीर्थंकरस्य
कुमारत्वमाडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येक त्रयोविंशते र्वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पंचनवतिर्वर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सि लवणसमुद्दं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० वल
या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्दस्स उभओ पासंपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाओ उब्वेहुस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपथकी परहा ९५हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेतो बिहूं ९५ मिली १ लाख ९० हजार योजन थया बिचाले दस स
हस्र योजन लगे समोपीठिकानेरूपे पाणीछे तिहा पृथ्वी तलनी अपेक्षाये १ हजार योजननी ऊंडी खाड पडीछे १ हजार योजन लगे ऊंचोपाणी चढ्यां
पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहियें तोते मध्यपिड १० हजार योजनलगे दगमालथकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय। त
था जबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतोही ९५ आंगुले एकअगुल तथा ९५ हाते १ हात ९५ योजने १ योजन एम ९५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशें २
मात्रायें २ उद्वेधपणो ऊडपणोघटाडीये एमकरता ९५ सहस्र योजन अतिक्रमेथके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय ऊंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट
थकी ९५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनो उत्सेधनो ऊचपणो प्रदेशें २ मात्राये २ हानिकरी भूमिऊडीकरताजईये एमकरतां

मौर्यपुत्रो महावीरस्यसप्तमगणधरस्तस्य पंचनवतिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्व छद्मस्थत्व कैवलित्वेषुक्रमेण पंचषष्टिचतुर्दशषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ९५ ॥ अथ षण्णवतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषण्णवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पंचाशत् उत्तरस्यांच षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव हारिएति व्यावहारिको येन गव्यूतादिप्रमाण चिंत्यते अव्यावहारिको लघुदीर्घो वा भवत्युत्सप्रमाणात् दंडोहि चतुःकरउक्तः करश्चतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्विं

णीए प० कुंथूणं अरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ ९५ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छन्नउइं छन्नउइं गामकोडीओ होत्था वायुकुमाराणं छन्नउइभवणावाससयसह

९५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनीऊंचपणी हजार योजनमोटले१ हजारनो ऊंडपणो समुद्रनोथाय एतलो। कुन्थुनाथ अरिहंत२ ३ सहस्र अने७५० वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ९५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मोर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ९५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृहवासमे ६५ छद्मस्थपणे १४ केवली पणे १६ सर्वमिली ९५ वर्षथया। इति ९५ मो समवाय थयो ॥ ९५ ॥ हिवे ९६ समवाय लिखेछे। एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ९६ कोडी गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ९६ लाख भवनावासा कह्या। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख बिहुंमिली ९६ लाख थया। व्यवहारिक दंड

शतौ चतुर्गुणितायां षस्ववतिः स्यादेवेति अभंतराओ इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्त्तः षस्ववत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्थः सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यश्चरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशांगुलमान शंकुमाश्रित्य षस्ववत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्तं प्रमाण भवतीति मुहूर्त्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रिययाच्छेदेनाष्टादश लचणेन द्वादशांगुलः शंकुर्गुण्यत इति ततोद्वे शते षोडशोत्तरे भवतः २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तर शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ पनीते षस्ववतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ९६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानकं

रसा प० ववहारिएणं दंडे छसाउइअंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अरके मुसलेवि अभिंतरउ आइ मुहुत्ते छसाउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ९६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ

तेजेणे गाउकोस चितवीयें अव्यवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दड ९६ अंगुल प्रमाणे कह्यो २४ अंगुल नोहाथहोय चिहुंहाथे १ दड होय एम करतां ९६ अगुल कह्या। एम ९६ अंगुलनोधनुषनालिका यूप भूसरो अच मूंशलएहसर्व ९६। ९६ अंगुलनो होय। निषधने माथे सर्वाभ्यं तर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यतर मंडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ९६ अंगुल छाया प्रमाणे होय १२ अगुलनो ढणउभोकरीये तेहनी छाया ९६ अंगुल होय तिवारे कर्क सक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ९६ अगुल २ घडो दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अ गुल ढण त्रिगुण कीजे एतले १८ बार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनो अर्द्ध १०८ एह आंकमाहि ढण प्रमाण अगुल १२ काढी पूठी ९६ अंगुल उगरे ॥ इति ९६ मो संपूर्ण ॥ ९६ ॥ हिवे ९७ मो लिखिछे। मेरु पर्वत १० सहस्र पिहुलो तेहथकी पूर्वनी जगती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

किञ्चिदभिधीयते। मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशतो गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति ॥
हरिषेणो दशमचक्रवर्त्ती देशोनानि सप्तनवतिम्वर्षशतानि गृहमध्युषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्राणि तदायुष्कस्येति ॥
९७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किञ्चिदभिधीयते नंदणवणेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन मेरोः पंचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पचयोजनशतोच्छ्रि

गोथुभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एव चउदिसिंपि अठरहं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीओ प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ताण जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥

नंदणवणस्सणं उवरिल्लाओ चरमंताओ पंडयवणस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसण अट्ठाणउइजोयणसहस्साइं अबा

सयोजन गोस्तूभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथको वेलवर नागराजानो गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ९७ सहस्र योजन आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज चिहुंदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकह्यो आठे कर्मनी ९७ उत्तर प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली ९७ उत्तरप्रकृति हुई। नमिनाथ अरिहंतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन काइकऊणा ९७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुंडथईने अगारथकी साधुपणूं पाल्यो ३०० वर्षझाझेरा दीक्षापाली १० हजारवर्ष सर्वायुपाली सीधोमोक्षपहुतो ॥ इति ९७ मोसमवायथयो ॥ ९७ ॥ हिवे ९८ मोलिखेछे। मेरुनो नंदनवनपहिलो मेख

तं तन्नतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्ग्रहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम तो नवनवत्यामेरो रुच्चैस्त्वस्य आद्ये सहस्रे अपकृष्टे यथो

क्तमन्तर भवतीति गोस्तुभसूत्रभावार्थः पूर्वंव न्नवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे चिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेयड्डस्सणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोप

पाठः सम्यक्पाठ श्चाय दाहिणभरहद्धस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पणत्ते इति यतोन्यत्रोक्तं नवचेवसहस्साइं छावट्ठाइं सया

इं सत्तभवे सविसेसकलाचेगा दहिणभरहधणुपट्ठति वैताढ्यधनुः पृष्ट त्वेवमुक्त मन्यत्र दसचेवसहस्साइं सत्तेवसयाहवंतितेयाला धणुपट्ठवेयढ्ढे कलायपसार

हाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अट्ठा णउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणभरहस्सणं धणुप्पिट्ठे अट्ठाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन ऊंचोछे तेमांहि ५०० योजना कूटऊंचाछे तेभूमीथकी तेकूटना शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगे नंदनवनकहीये मेरुपर्वत लाख योजनकह्यो तेमांहि १ हजार योजन भूमिमांहि १ सहस्रनो नंदनवन एव २ सहस्रनोकल्या लाखमांहियी तेमाटे नंदनवननो उपरिलो चर मांत मेरुने माथे पडकवनछे तेहनो हेठिलो चरमांत एह ९८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती छुईते थकी पूर्व समुद्रमांहि गोस्तूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोछे। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोछे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी वेलधर नाग राजानो आवास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्रमांहिछे। तेहनो पूर्वचरमात ९८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। एमचिहुदिशि दक्षि ण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शंख उत्तरसमुद्रमांहि दगसोम एहचिहुनोआंतरोगोस्तुभनोपरेजाणवो दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रनो धनुपृष्ट ९८।

९९ ॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते। नंदनवणेत्यादि अस्यभावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतिर्योजनश तानि चतु:पचाशच्चयोजनानि षट्योजनैकादशभागा बाह्योगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतु:पंचाशदधिकानि ष ट्चैकादशभागा स्तथा पचशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कम्भो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर मायोभवति पढमसूरिय

मंदरेणं पव्वएणवणउइजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थि मिल्ले चरमंते एसणं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं दक्खिणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते एसणंणवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० उत्तरे पढमसूरियमंडले नवणउइजोयणसहस्साइं

मेरूपर्वत ९९ सहस्र योजन ऊचो ऊचपणे कह्यो। भूमिथकी ५०० योजन मेरुने विषे ऊचा चढीये पहिली मेखला तिहां नदनबन पामीये तेह नंदन बन ५०० योजन पिहुलो छे नदनबननो पूर्व चरमांत तेहथी पश्चिम चरमांत लगी ९९०० से योजन आवाधाये बिचाले आंतरो कह्यो। मेरुनो विष्कभ मूले १०००० योजन नदनबन स्थाने बाह्य गिरि विष्कंभ ९९०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नदनबन मांहि मेरुनो विष्कंभपणो ८९ से योजन ५४ योजने ११ हीया ६ भाग नदनबन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलीजे अनेमेरुनो अभ्यतर विष्कभपणो लीजेतो ९९०० योजन आंतरो हुयो। एमज नदनवननां दक्षिण चरमातथकी नंदनबननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ९९०० से योजन थयो। निषधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडलोछे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कंकणने

मडलेत्ति इहजम्बूद्वीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योराशि: सप्रथममण्डलस्यायामविष्कंभ: सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशद धिकानि द्वितीयन्तु नवनवति: सहस्राणि षट्शतानि पचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पचत्रिंशदेकषष्टिभागा: काथ मण्डलस्यमण्डलस्यचान्तर द्वेद्वेयोज ने सूर्यविमानविष्कम्भ अष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागा: एतद्विगुणित पचयोजनानि पचत्रिंशदेकषष्टिभागास्चेति जातमेतच्च पूर्वमण्डलविष्कंभे क्षिप्तं जातमुक्तप्र

साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं प० दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खं

आकारे फिरतो पश्चिमनोनीलवंत ने माथे ते सर्वाभ्यंतर माडलो जम्बूद्वीपमाही १८० योजनछे पूर्वदिशिनो अने पश्चिमनो पणि एतलोज छे तो जंबूद्वीपन जीवा लांबपणे लाख योजनछे ते मांहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिमाकाढी लाख योजनमांहि थी पूठें पूर्वसर्वाभ्यतर मडल अने पश्चिम सर्वा भ्यतर मडलने ९९४० योजन आंतरो थयो । पहिलो सर्वाभ्यतर सूर्यनो माडलो ९९ सहस्र योजन सातिरेक भाझेरोते ६४० योजन आयाम पश्चिमे लांब पणे दक्षिण उत्तरे विष्कभपिहुलपणे आंतरो जाणिवो लाख योजन मांहिथी ३६० योजन काढी पूठें ९९६४० योजन जगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजो मांडलो अने पश्चिमनो बीजो माडलो ९९६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो । तेकेम पहिला माडलाथी बीजो मांड लो २ योजन अने मांडलानूं पिहुलपणूं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलोजविहुदिशमिलो पहिला बीजामांडलानां आंतराना योजन मंडल पिहुलपणो मिलो ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाभ्यतर मांडलाना प्रथमना आंकमाहि घातिये एतले ९९६४० योजन मांहो ५ योजन ६१ यापैंत्रीस भाग घातिये तिवारे ९९६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामांडलानो हुवे हिवेसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो त्रीजो मांडलो ९९६५१ योजन ६१ । ९

द्विचत्वारिंशत् केवलिपर्यायोऽष्टौभवति चैतद्राशित्रयमीलने वर्षशतमिति वैताढ्यादिषूच्चत्वम् चतुर्थांशउद्वेधः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पंचानां महाह्रदानामुभयतो दशव्यवस्थिता स्तेच जंबूद्वीपे शतद्वयसंख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्धा सूत्ररचनां परित्यज्य

उयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उड्ढंउत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेग गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेण प० ॥ १०० ॥ चंदप्पभेणं अरहा

रत ऐरवतना २ एवं ३४ दीर्घवैताढ्य एह बेगुणा धात को खंड पुष्करार्ध मांहि तो सगला दीर्घ वैताढ्य पर्वत एकेक सो गाउ ऊंचपणें कह्या । एतले वैताढ्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाउ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि मांहिहोय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला चुल्ल लघु हिमवत वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां क्षेत्रतेहनी मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेका १०० योजन ऊंचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाउ उद्वेधपणे भूमि मांहि ऊंडपणें कह्या । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिका ५ द्रहछे एकेका द्रहने बिहूंपासे दस दस कांचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरूमांहि निषधादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहूंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरू उत्तरकुरू मिली २०० कांचनगिरि छे । जंबूद्वीप मांहि बेगुणा धातकी खंड पुष्करार्धमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कह्या । एकेकासो गाउ उद्वेधें भूमि मांहि ऊंडा एकेकासो योजन मूलें एतला पिहुला कह्या । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चंद्रप्रभ आठमा अरिहंत १५० धनुष ऊंचा ऊं

पश्चाग्रच्छतादि द्वद्या तां कुर्व्वन्नाह चंदप्पहेत्यादि सुगमञ्च सर्वमाश्चादशाङ्गगणिपिटकसूत्रा अवरं ॥ १५० ॥ २०० ॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसका: शेखरका: कर्ण्णपूराणिवा अवतसका: प्रधानाइत्यर्थ: प्रासादाश्च ते अवतसका: प्रासादानाम्वा मध्ये अवतसका: प्रासादावतंसका: ॥ २५० ॥ तथा पंचधणुसतियस्सणमित्यादि

दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउमप्पभेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिन्नि धणुसयाइं उड्ढं

चपणें हुया। इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या। वारमेअच्युतकल्पे १५० विमान बिहूंमिली ३०० विमानछे। इति १५० नो थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेछे। सातमा सुपार्श्व अरिहत २०० धनुष ऊंचा ऊंच पणें थया। सगला महाहिमवत पाच रूपी वर्षधर अढाई द्वीप माहिला बेबेसो योजन ऊंचा ऊंच पणें हुया। बेबेसे गाऊ उद्वेधपणे भूमिमांहि ऊंड पणें कह्या। जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत ते पूर्वे कह्याछे॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेछे। छठा पद्मप्रभ अरिहत २५० धनुष ऊंचाऊंच पणें हुया। असुरकुमार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मोटाप्रासाद २५० योजन उंचाऊंच पणें कह्या॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

सत्तो चतुःचतुश्शतोच्चाः ॥ ४०० ॥ ४५० ॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणंवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ अजितेण अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सागरेणं रायाचाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्खारपव्वयासीआ सीओआउ महानईउ मंदरेणं वापव्वएणं पच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विणं वासहरकूडा पंच पच जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

स्रमण तपस्वी भगवत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी सपदा हुई। ते वादी केहवा छे। देवताये करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उत्कृष्टी वादीनी सपदा हुई। इति ४०० नो समवाय सपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे। अजितनाथ अरिहत अर्द्ध पचम साढा चार से धनुष उंचा उच पणे हुया। सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिहु दिशना अंतनो धणी ते ४५० धनुष उ चा उच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे। महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वचस्कार पर्वत अने ४ गजदत एव २० वचस्कार निषध नीलवतने पासे उचा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे योजन उंचा उच पणे ते २० वचस्कार निषध नीलवतने पा॰ ४०० गाउ उडा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उद्वेध पणे उड पणे कह्या। वर्षधर

धिकं कथलहुहिमवनिसहे एक्कारसअठ्ठनवयकूडाइं नीलाइसुतिसुनवगं अठ्ठेक्कारसजहासंखं एतेषा म्पश्वगुणत्वात् वचस्कारकूटानि त्वशीत्यधिकाचेतु: अतोसंख्या ॥
नि कथ विज्जुपहमालवंते नवनवसेसेसुसत्तसत्तेव सोलसववखारेसु चउरोचउरीयकूडाइं एतेषा म्पचगुणत्वात् पंचगुणल जम्बूद्वीपादिमिरूपलचितक्षेत्राणां पंच

जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था अरहेणं राया ॥
चाउरतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारप
व्वयाणं मंदरपव्वयंतेण पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं व
क्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण मूले पंच पंच जोयणसयाइं

र कहिये हिमवतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहा ईक ११ छे किहां ईक ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पाच पाच से योजन उंचा ॥
मूले पांच पांचसे योजन विष्कभपणे पिहुल पणे कह्या। आदिनाथ अरिहंत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। भरत राजा चातुरत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। मेरु पर्वत थकी दिदिशि थकी नीकल्या ४ गजदंत एहवा कह्या सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवत
४ एह चार वचस्कार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पाच पांच से योजन उंचा उंच पणे पाच पांच से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंडपणे कह्या। सगलाई
वचस्कार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जीने एतले एह २ कूट। गजदंत संबधीकूट सहस्र योजन उंचा छे। ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पांच से योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहुल पणे कह्या। सगलाई नंदनवनना कूट पणि बलकूट वर्जीने

त्वा सर्वाण्येतानि पञ्चशतोच्छ्रितानि एवमानुषोत्तरादिष्वपि वैताढ्यकूटानितु सक्रोशषट्योजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छ्रितानीति
हरिकूट हरिसहकूट वर्जनविहृतयोः सहस्रोच्छ्रयला दाहच विज्जुप्पभहरिकूडो हरिस्सहोमालवतवक्खारो तहनंदणवणकूडो उव्विद्धाजोयणसहस्सति ॥
५०० ॥ चुल्लहिमवत कूडस्सेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छ्रित स्तत्कूट मप्यशतोच्छ्रितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंदे पंचुल्लवारेत्ति

आयामविक्खंभेणं प० सव्वेविणं नंदणकूडाबलकूडवज्जापंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच २
जोयणसयाइं आयामविक्खंभेण सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥
५०० ॥ सणकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूड
स्स णं उवरिल्लाउ चरमताउ चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएसणं छजोयणसयाइं अबा
हाए अंतरे प० एवं सिहरीकूडस्सवि पासस्सणं अरहउ छसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अप
राजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था अभिचंदेणं कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उचो छे सोटाई टालीने बीजा सातकूट पाच पांचसे योजन उचा उच पणे मूलने विषे ५ से योजन लाबपणे पिहुलपणे
कह्या । सौधर्म ईशान पहिले बीजे कल्पे विमान पाच पाच से योजन प्रमाणे उचा उच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥
हिवे ६ स्से नो लिखेछे । सनत्कुमार माहेन्द्र कल्पे त्रीजा चौथा देवलोके विमान ६ स्से योजन उचा उचपणेकह्या। लघु हिमवत कूटनो उपरिलो चरमात

अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्प्पिण्यां सप्तानां कुलकराणा चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःशतानि पंचाशदधिकानि ॥ ६०० ॥ श्रमणस्य भगवतोम हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलिशतानीत्यर्थः तथा श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिमत्साधुशतानीत्यर्थः अरिष्ठेत्यादि देसूणाइंति

अरहा छहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥ बंभलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं भगवउ महावीरस्स सत्तजिणसया होत्था समणस्स भगवउ महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्था अरिठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिली ६ स्से योजन थयां। वलीएमज छठा शिखरि पर्वत ने उपरिकूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहथकी पृथ्वीतल ६ स्से योजन थ यो। पार्श्वनाथ अरिहंतने ६ स्से वादीथया तेकेहवा। देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो त्रिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनो उत्कृष्टो संपदा हुई। एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चोथो कुलकर अभिचंद्रनामा ६ स्से धनुष ऊचा ऊंच पणे हुया। बारमा वासु पूज्य अरिहत ६ स्से पुरुष साथे मुंडथई गृहाश्रमथकी अनगार पणो पाम्या॥ इति ६ स्से मो समवाय थयो ॥ ६०० ॥ हिवे ७ से नो लिखेछे। ब्रह्मलांतक पाचमे छठे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊचपणे कह्या। श्रमण तपस्वी भगवंत महा वीरना सातसे जिन केवली थया। श्रमण भगवत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया। बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहत ३ से वर्ष कुमारपणे ७ से

चतुःपंचाशतादिनानामूनानि तत्प्रमाणत्वाच्छद्मस्थकालस्येति महाहिमवंतेत्यादौ भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छ्रित स्तत्कूटंच पंचशतोच्छ्रितमिति

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अट्ठजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्जा

वर्ष देशोन ५४ दिन ऊणा केवली पर्याय चारित्रपालीने सपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धथया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदुःखथकी प्रचीण थया। महाहिमवतवर्षधर २ से योजन ऊंचोछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवत कूटछे सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणी तल भूमिभाग ७ से योजन आवाधायें विचाले आंतरो काह्यो। एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊंची रूपी पर्वत २ से योजन उंचो सर्वमिली ७ से योजन थया॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिवे ८ से नोलिखेछे। महा शुक्र सहस्रार सातमे आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उंच पणे काह्या। एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेहनो पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिंड छे। ते मांहि १ सो योजन हेठे मूंकिए १ सो योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशाचादिक वान व्यतर काह्या। ते केहवा छे भौम कहतां भूमि संबंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमेयक विहार

सूत्रोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ७०० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्ड खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योजनसहस्रप्रमाणे अधउपरिच योजनशतद्वय स्त्रिमुच्यान्येष्वष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा वाना स्तेच ते व्यन्तराश्च तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्भौमेयका स्तेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरभौमेयकविहारा इति अठसयत्ति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणंदेवाणति देवेषूत्पत्स्यमानत्वा द्देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति लक्षणा कल्याण येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याण येषांति

विहारा प० समणस्स णं भगवन्त महावीरस्स अठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

कह्या छे। श्रमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात उपजवो छे जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण छे जेहनो स्थिति कल्याण छे जेहनो। आगामिये काले एक भवने आंतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेहने उत्कृष्टी एहवी अणुत्तरोपपातिक साधुनी सपदा हुई। एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो घणो समरमणीक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से नेउ योजने तारा मंडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिली ८ सो योजन थया। अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी सपदा हुई ते वादी केहवा छे देवताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहु भुवने वादने विषे अपराजित जीत्यान जाय एहवी

सर्वेपिहत्ता वैताढ्या विंशतिः शब्दापात्यादयः
विचित्तकूडा वति पंचसुदेवकुरुषु यमकावत्तसद्भावात्पंचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सव्वेविणमित्यादि पञ्चपञ्चभवन्ति
सव्वेविणहरीत्यादि हरिकूट विद्युत्प्रभाभिधानेगजदन्ताकारवक्षस्कारपर्वते हरिसहकूटन्तुमाल्यवद्वक्षस्कारे तानिच पञ्चस्वपि मन्दरेषु भावात्

॥ सव्वेविण गेवेज्जाविमाणे दस दस जोय
अवाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ दस दस गाउ
णसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउ
यसयाइ उव्वेहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० एवं चित्तविचित्तकूडावि भाणि
यव्वा सव्वेविणं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

योजन ऊंचा ऊच पणे कह्या। दश दश से कोस उद्वेध पणे भूमि माहि दश दश से योजन लगे आयाम विष्कंभ पणे लांबपणे पिहुलपणे कह्या । एमज ५
देवकुरुने विषे निषध थकी उत्तरदिशि शीतोदा महानदीने बिहुपासे सर्वेमिली दशचित्र विचित्रकूट यमक पर्वतनी परें जाणिवा । सगलाई वृत्त वैताढ्य
वीस छे तेकिम जम्बूद्वीप माहि हिमवत क्षेत्र माहि रम्यक क्षेत्र ऐरवणत क्षेत्र मिली बीस एव ४ वृत्त वैताढ्य थया। ८ धातकी खंडमांहि ८ पुष्करार्द्धमा
हि सर्वेमिली वीस शब्दापाती प्रमुख दश दश से योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। दश दश से कोस उद्वेधपणे भूमिमांहि ऊंडपणे मूलने विषे हजार योज
न पिहुलपणे । सगलाई समा गुर्जरदेश मांहि धानभरिवानो पालो तेहने सस्थाने संस्थित छे । १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कह्या । मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छ्रितानि वक्खारकूडवज्जंत्ति शेषवक्षस्कारकूटेष्वेव मुच्चत्व नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवंबलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या न्दिशि बलकूटाभिधान कूटमस्ति ततः पचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नंदनकूडवज्जंत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिंश

मूले दसेवजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० सव्वत्थसमा पल्लयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूडावक्खार पव्वयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं एवं बलकूडावि नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिट्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धेजावसव्वदुक्खप्पहीणे पासस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था पासस्सणं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जावस

विहुपासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेमाहि विद्युत्प्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे। माल्यवंत ने उपर हरिसहकूटछे। एहकूट पांचसे योजननाछे मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वक्षस्कार कूट वर्जी नें वक्षस्कार कूट हजार योजन उंचा नथी तेहथी ते वर्ज्यो ने कह्या। एमज ५ मेरुने विषे ५ नंदन वन छे। दिशि विदिशि ने विषे प्रत्येके बलकूट नामे करी कूट छे । ते ५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नंदन वन कूट वर्जी ने नंदन वनने विषे पूर्वादिक दिशे विदिशि ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथी ए माटे छोडीने कह्या। अरिहंत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनो सगलो आयु पालीने सिद्ध थया तत्वना जाण थया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। पार्श्वनाथ अरिहंतने १ हजार केवलीनो संपदा थई। पार्श्वनाथ अरिहंतना १ हजार शिष्य कालगत थकी सीधा यावत् शर्वंकरी स

त्त स्यानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुसारत्ते चौणिवर्षंगता न्यनगारत्ले समेत्येवं दमशतानि पउमद्दहपुंडरी यद्दहत्ति पद्मह्रदः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकह्रदो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तया म

॥ हदुक्कप्पहीणाइं पउमद्दहपुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाण विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था ॥ ११०० ॥ महापउममहापुंडरीयदहाणं दो दो जोयणसह

वेदु ख प्रचोण थया । लघुहिमवत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे एह बिहु द्रह श्री अने लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १ हजार योजन लांबपणे कह्या इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे। अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कह्या। पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥ हिवे २ हजार नो लिखे छे। महाहिमवत उपर महापद्मद्रह छे रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते ह्री बुद्धि देवीना निवास भूत छे ते बे हजार योजन लांबपणे कह्या। इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे। रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकांडना उपरला चरमांत थी लोहिताक्ष कांडनो हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥

ह्यापद्ममहापुण्डरीकह्रदौ महाहिमवद्रुक्मिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ ह्रीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ २०१० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्र भापृथिव्या. प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्ड नामरत्नकाण्डं द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्ड चतुर्थं तानिच प्रत्येक साहस्रिकाणीति त्रयाणा यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिह्रदौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवीनिवासाविति ४००० ॥ धरणितलेइत्यादि धरणीतले धरण्यासमेभूभागइत्यर्थः रुयगनाभीओति अठ्ठपएसोरुयगो तिरियलोगस्समज्झयारम्मि एसपहवोदिसाणं एसे

रसाइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्सउवरि ल्लाउ चरमंताउ लोहियक्खकंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिदहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ४००० ॥ धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स वज्जमज्झदेसभाए रुयगनाभीउ चउदिसि पंच २ जोयणसहस्साइं अबाहाए

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे छे। तिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरीद्रह ए बिहुं धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भूत छे ते ४ हजारयोजन लांब पणे काह्या इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ † × † × † + † × † × हिवे ५ हजार नो लिखेछे। धरणीनेविषें मेरु पर्वतनो बहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशी रुचक नाभि कहा नाभिथकी चिहुदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन अबाधाये विचाले आंतरो काह्यो। मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग थकी चिहुदिशि

वभवेअणुदिसाणंति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंबमिवेति रुचकनाभि स्ततस्तस्ध्वपिदिशु पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कम्भत्वादिति ॥ ५००० ॥ ६

००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डंप्रथम पुलककांडसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथार्धं हरिवासेइग

मंदरपव्वए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे छविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥ ॥
इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कण्डस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते
एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अठ्ठ
जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणड्ढभरहस्स णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन पामीये। इति पांच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे। सहस्सार आठमे देव लोकें ६ हजार वि
मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेछे। एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो
उपरिलो चरमांत तेहथको पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति सात हजार नो
थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेछे। एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासक्षेत्र ८ सहस्र
योजन सातिरेक भांभेरा एतले एकवीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा पुलसीयसयाकलायएक्कायत्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणेभागो भरतस्येति दक्षिणार्द्धभरतं तस्य जीवेवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन मूर्वतः प्रतीचीन म्पश्चिमत आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहओत्ति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्रं लवणसमुद्रं स्पृष्टा ग्गभवतीनवसहस्राण्यायामत इहोक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽय नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिद्वादशच कला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥

मंदरेणं पव्वए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्दीवेणं द्दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं

पक्षीणायया दुहओ समुद्दं पुठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥

हिवे नवहजार नो लिखेछे। दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वथकी मांडी प्रतीचीन पश्चिमे आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगी स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकह्यो इति ९ हजारनोथयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश हजार नो लिखेछे। मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणें कह्यो इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिवे लाख नो लिखेछे। असख्यात द्वीप माहि मध्य जंबूद्वीप एकसहस्र एतले लाख योजन लांबपणें पिहुलपणें कह्यो इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे बे लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र पहिलो बे लाख योजन पिहुल पणें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने बींटी रह्यो छे॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ हिवे त्रिण लाख नी लिखे छे।

तन्तत् सहस्त्रअब्दसाधर्म्या द्विचित्वाद्वा सूत्रगते लेखकदोषाद्वेति ॥ ९००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम
णेत्यादि किलभगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिम्प्रव्रज्या म्पालितवानित्येकोभव. ततो देवोभूदिति द्वितीय स्ततोनन्दनाभिधानो राज
सूनुः छत्राग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव
दिति चतुर्थ स्ततो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्षावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्त्र्यशीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड
ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्षाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेषि नाम्ना देवेन संहृत स्तीर्थंकरतया च जातइति षष्ठः उक्तभव

सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १०००००० ॥ सम
णेभगवंमहावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पाच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पाचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणें ऊपनोछे ॥ इतिदश
लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे । श्रमण भगवत महाबीर तीर्थंकर पणो उपार्ज्यो ते भवनांग्रणहथको एतले तेभवथको
पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दीक्षापालीने आठमे देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणें ऊपना ते छठो भव केम श्रीमहाबीर
नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ ओ एक भव १ तिहां कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ ओ बीजो भव
तिहा थी त्रीजे भवे छत्राग्र नगरीये नंद राजा हुया तिहा गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या । पछे १ लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

ग्रहणं हि विना नान्यद्भवग्रहणं षष्ठं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्ठभवग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भवग्रहणा दिदं षष्ठं तदप्येतस्मात्षष्ठमेवेति सुष्टूच्यते तीर्थंकरभवग्रहणात्षष्ठे पोट्टिलभवग्रहणे इति ॥ १०००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सत्ति प्राकृतत्वेनर्षभश्रीऋषभ इति वाच्येव्यत्ययेननिर्देशः कृतः एकसागरोपमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः किञ्चित्साधिकैरूनाप्यल्पत्वा द्विशेषस्या विवक्षितोक्तेति ॥ + ॥ इहयएतेअनंतरं संख्याक्रमसम्बन्धमात्रेण सम्बद्धाविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसम्बन्ध सबद्धा द्वादशांगे प्ररूप्यन्तइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवालसंगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसख्याक्रमसबद्धार्थं प्ररूपणमनन्तरमकारि साप्रतसख्यामात्रसंबद्धपदार्थं प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तत्रश्रुतपरमपुरुष

सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ 10000000 ॥ उसभस्स भगवओ महावीरस्स य एगासागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिडए

मास खमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुवा। तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने कूखेंजपना ५ तिहां थकी ८३ मे दिने खत्रीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञाये हरिणे गमेषी देवें त्रिशला देवीनी कूखें अवतस्या एह छठो भव जाणवो इति एक कोटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे सागरोपमनो लिखे छे। श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने बेयालीस सहस्र ऊणी एक सागरोपम कोडा कोडी आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एकथकी मांडी कोडा कोडीनी संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग

स्यांगानी याङ्गानि द्वादशाङ्गानि आचारादीनि यस्मिंस्तद्द्वादशांगं गुणानांगणोस्यास्तीतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकमिवपिटकं सर्वस्वभाजनं गणिपिटकं अथ वा गणिशब्दः परिच्छेदवचन स्तथाचोक्तम् आयारम्मिअहीए जंनाओहोइसमणधम्मोउ तम्हाआयारधरो भणइपढमंगणिठाण परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च परिछेदसमूहो गणिपटकमत्रचैवपदघटना यदेतद्गणिपिटकं तत्द्वाशांगप्रज्ञप्तम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकिंतमित्यादि अथ किंतदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यंत इति वा आचारः साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोग्रन्थोप्याचारएवोच्यते आयारेणंति अनेनाचारेण करणभूतेन श्रमणानामाचारोव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालंकारे श्रमणानां तपःश्रीसमालिं

प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइयदसाउ पराहावागरणाइं विवागसुए दिठिवाए सेकिंतं आयारे आयारेणं समणाणं निग्गं

नो वर्णन करे छे। इग्यारह अग बारमो पूर्व एवं श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअंग वली केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखो दर्शन चारित्र तेहनो स्थान कह्यो। तेकहेछे। आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ समवाय ४ बिवाहपन्नती एतले भगवतीसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपासकदशा ७ अंतगडदशांग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्यूंते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार। आचरवो ते आचार। अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनबिधि तेहनो प्रतिपादक ग्रंथ पणि आचार कहिये ते आचारांगने विषे श्रमण तपस्वी तेह निर्ग्रंथ बाह्याभ्यतर ग्रंथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिक्षा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मक्ष

गितानां निर्ग्रन्थानां सवाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितानां श्रमणा निर्ग्रन्थाएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं सुगाच्च निर्गंथसक्कतावस गेरूयआजीवपञ्चहासमणत्ति,तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरोभिक्षाग्रहणविधिलक्षणो विनयोज्ञानादिविनयः वैनयिक तत्फलं कर्मक्षयादिस्थानं कायोत्सर्गोपवेशनशयनभेदा त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिश्चंक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणं प्रमाण भक्तपानाभ्यवहारोपध्या देर्मान नियोजन स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन भाषासयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयईर्यासमित्याद्याःपञ्च गुप्तयोमनोगुप्त्या दयस्त्रिसः तथाच शय्याचवसतिरुपधिश्च वस्त्रादिकोभक्त चाशनादिपानं चोष्णोदकादीतिद्वन्द्व स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानांदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग मोत्पादनैषणाविशुद्धि स्ततः शय्यादीनासुद्गमादि विशुद्धाशुद्धानां तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचग्रहणं शय्यादिग्रहणं तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु

थाणं आयारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंकमणपमाणजोगजुंजणभासासमितिगुत्तीसेज्जोवहिभत्तपाणउ

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन विहार भूमिचालवो । चङ्क्रमण उपाश्रयांतरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो। प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे,परने योजवो व्यापारिवो। भाषासंयत मिश्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो। शय्यावसतिउप धि वस्त्रादिक। भात अशनादिक पान उष्णादिक पाणी उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेषणा लक्षण दोषनी विशोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि कनो ग्रहिवो। तथा कारणे,अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो। व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण। तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप। एहसर्व सुप्रशस्तभलो जेह आचारांग ने विषे कह्यो,जायछे। ते आचार संक्षेपे करी पांच प्रकारे कह्यो। तेकहेछे। ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

णास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारश्च गोचरशीत्यादि यावच्छय्य शय्यादिग्रहणं चव्रतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेतिसमाहारद्वंद्व स्तच्चतत्सुप्रश्न

स्चेति कर्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्रक्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वंतप्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय

मिति सेसमासद्वत्यादि स आचरोयमधिकृत्य ग्रन्थस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्त्तते समासतः संक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचारः श्रु

तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्ववतांव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि

त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आयारस्ति आचारग्रन्थस्य ण

मित्यलङ्कारे परित्तासंख्येया आद्यन्तोपलब्धे र्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः वाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्पिण्युत्सर्पिणीकालं वा प्रतीत्यपरीतेति संख्येयान्यनु

ग्गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थमाहिज्जइसे समासउ पंचविहो प०

तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे आयारस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुनगदारा

संखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणअंगठयाए पढमेअंगेदो

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदें तपनो करिवो ४ वीर्या

चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारांगग्रंथना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेहनो

द्वार उपक्रमादिक। संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेमतिपत्ति। संख्यातावेढा छंद विशेष२ संख्याता श्लोक अनुष्टुप आदिक। संख्याता

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामेव सख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संखेज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः प्रतिमाद्यभिग्रहविशेषा वा सखेज्जावेढत्ति वेष्टकाश्छन्दोविशेषा एकार्थप्रतिवद्धवचनसकलिकेत्यन्ये संखेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि संख्यातानिर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिर्घटनाविशिष्टायोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिन्वाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एतासनिक्षेपनिर्युक्त्याद्याः सख्येयाइति सेणमित्यादि स आचारोणमित्यलङ्कारे अगार्थतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममंगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षयातुद्वादशमंगं प्रथमपूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वौश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्थपरिणा १ लोग विजओ २ सीओसणिज्ज सम्मत्तं ४ आवंति ५ धुयविमोहो ७ महापरिणो ८ वहाणसुय ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ती १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्धः एवमेतानिनिशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देशनकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या ध्ययनस्योद्देशकास्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवंशस्त्रपरिज्ञादिषु पचविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

सुयखंधापणवीसंअज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकालापंचासी समुद्देसणकाला अठारसपदसहस्साइं पदग्गे

निर्युक्ति सूत्रने विषे कहिवा पणियाप्या अर्थनो जोडिणोते युक्ति विशिष्ट घटनाये योजवी तेनिर्युक्ति। ते आचारांग अंगार्थपणे अंगलक्षण वस्तुपणे। पहिले अगे वेश्रुतस्कंधछे पंचबीस अध्ययनछे तेकेहा सत्थपरिणा १ लोग विजय २ सिओसणिज्ज ३ संमत्त४ आवंति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिणो ८ वहाणसुयंति ९ इति प्रथम स्कंध॥ पिंडेसण १ सिज्जि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४भावण१५ विमुत्ति १६ इति

गृह्णत एवंभायत्ति अस्मिन्भावत: सम्यगधीते सत्येवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थ: इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंद्यांतुदृश्यते इतोहव्याख्यातमिति एवं क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थंक्रियापरिणाममभिधायाधुनाज्ञानमधिकृत्याह एवंनायत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति यथैवेहोक्तमिति एवविन्नायत्ति विविधोविशिष्टोवा ज्ञाता विज्ञाताएवं विज्ञाताभवति तन्नांतरीयज्ञाताभवति तंनांतरीयज्ञात्टभ्य: प्रधानतरइत्यर्थ: एवमित्यादि निगमनवाक्यंएवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायत इति चरण व्रतश्रमणधर्मसंयमादानेकविधं वारणपिण्ड विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयो: प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तआयारेत्ति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोय: पूर्वंदृष्टइति

१ ॥ सेकितसूयगडे सूचायांसूचनात् सूत्र सूत्रेणकृत सूत्रकृतमिति सुष्टूच्यते सूयगडेणंति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवास्वसमया: सूच्यते इत्यादिकंव्यं तथा

वंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंआयारो ॥ १ ॥

सेकिंतंसूअगडे सूअगडेणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जंति ससमयपरसमयासूइज्जंति जीवासूइ

जाण होय। एवविणतेत्ति विज्ञाताहोयअन्यशासन शास्त्रनाजाणतेहथकी पिण घणो जाणहोय। एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिंडविशुद्धि तेहनो प्ररूपणाआख्यायते कहिये प्ररूपिये निदर्शीयेउपदेशिये पूर्ववत्। एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥ अथसूतेसूत्रकृताग। सूत्रसूचवाथकी सूत्रेकीधो तेसूत्रकृत जेणे सुयगडाग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिये परसमयपरमत सूचवीयेकहिये जीवपदार्थ सूचवी ये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये। अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव बिहुपदार्थ जिहांकहिये पंचास्तिकायमयलोकसूचविये

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जरार्बंधमोक्षावसाना: पदार्था: सूच्यंते तथा समणार्णमित्यादि अत्र श्रमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमय: स्थाप्य तइतिवाक्यार्थं. तत्र श्रमणानां किंभूताना मचिरकालप्रव्रजितानां चिरप्रव्रजिताहि निर्मलमतयोभवंत्यहर्निशमशास्त्रपरिचया इहश्रुतसंपर्कांचेति पुन: किंभूताना कुसमयमोहमइ मोहियाणंति कुत्सित: समय: सिद्धांतोयेषांते कुसमया: कुतीर्थिकास्तेषांमोह: पदार्थेष्वयथाववोध: कुसमयमोहस्तस्माद्योमोह: श्रोत्ट मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतांनीता येषांतेकुसमयमोहमतिमोहिता: अथवा कुसमया: कुसिद्धातास्तेषामोव: सघो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमो होमूढतातेनमतिर्मोहिता येषांते कुसमयौघमोहमतिमोहिता' अथवा कुसमयाना कुतीर्थिकाना मोघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमति र्मोहिता येषांते कुसमयमौघमोहमतिमोहिता: कुसमयमोहमतिमोहितावा तेषांतथासदेहा वस्तुतत्त्वप्रतिसंशया: कुसमयमोह २ मतिमोहितानामि

ज्जंति अजीवासूइज्जंति जीवाजीवासूइज्जंति लोगेसूइज्जंति अलोगेसूइज्जंति लोगालोगेसूइज्जंति सूत्र गडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्खावसाणापयत्थासूइज्जंति समणाणं अचिरकालपव्व इयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

पंचास्तिकायरहितअलोक सूचीजये लोकालोक बेहूंसूचवीये सूयगडांगसूत्रे चेतनावतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रव ५ कर्मनिरोध तेसंवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवोकर्म उपार्जवो तेवंध ८ सकलकर्मथकी मूकाविवो ते मोक्ष ९ मोक्षछे अवसानछेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये। श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापिये ते श्रमण केहवाछे। अचिरकाल

तिविशेषणसान्निध्यात् कुसमयेभ्यः सकाशात् येषान्ते सन्देहजाताः तथासहजा त्स्वभावसम्पन्ना नकुसमयश्रवणसम्पन्ना बुद्धिपरिणामा अतिस्वभावात् संश योजातो येषांते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिता. सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषां श्रमणानामिति प्रक्रमः किमतआह पाप करो विपर्ययग्रसयात्मकत्वेन कुत्सितप्रवृत्तिनिबंधनत्वादशुभकर्महेतु रतएव च मलिनः स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्म्मलोयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना यनिर्म्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं असीयस्सकिरियावाइयसयस्सत्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावादिशतस्य व्यूह कृत्वा स्वसमय. स्थाप्यत इतियोगः एव शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्त्तारंविना क्रियासम्भवतीति ता मात्मसमवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिनः ते पुन रामाथस्त्विनगतिपरितलक्षणा अमुनोपायेनाशोत्यधिकस्य शतस्य सख्याविज्ञेया. जीवाजीवाश्रवबन्धसम्वरनिर्ज्जरापुण्यापुण्यमोक्षाख्यानवपदार्थान् विरचय्य परिपाट्या जीवपदार्थस्याव. स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरधो नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यधः कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदाः पञ्च न्यसनीयाः पुनश्चेत्थं वि कल्पाः कर्त्तव्या अस्तिजीवः स्वतोनित्यः कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थश्चाय विद्यते खल्वात्मास्वेनरूपेण नित्यश्च कालवादिनः उक्तेनैवाभिलापेन द्विती

असीअस्सकिरिआवाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए अन्नाणियवाईण बत्तीसाए वेणइय

नी थोडाकालनीछे प्रवज्या जेहनी एतले नवदीक्षितछे वली तेश्रमणकेहवाछे कुत्सितछे समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनो मोह सत्य भावना यें पिषे अयथार्थात्र बोध तेहथको ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित छे जेहनी एहवोछे। कुत्सितशास्त्र श्रवणथको सदेह ऊपनोछे। तथा सहज स्वभावनो बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथको संशयऊपनोछे जेहने एहवा नवदीक्षित श्रमण साधुछे तेहने एहवो कहे। पापनो करणहार मइलो जे म

यानि दृष्टान्तवचना न्युपलक्षणत्वा द्धेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्यं परेषां मतमितिगम्यते सुष्टुपुनरपि प्रतिक्षेपणीयत्वेन दर्शयन्तो प्रकटयन्तो तथा विविधयासौ सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वानां विस्तरप्रतिपादनं विविधविस्तारातगमः तथा परमस द्भावो त्यंतसत्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थं स्तावेव गुणो ताभ्यां विशिष्ठो विविधविस्तारानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टो मोक्खपहोयारगत्ति मोक्षपथायतारको सम्यग्दर्शनादिषुप्राणिनाम्प्रवर्त्तका वित्यर्थः उदारत्ति उदारो सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा अज्ञानमेव तमोंधकारमात्यन्ति कांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतम तदेवांधकार अज्ञानतमोंधकारस्त्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्विति गम्यते दीवभूयत्ति प्रकाश

वाईणं तिरहतेसठाणं अणदिठियसयाणं बूढकिच्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिठंतवयणणिस्सारंसुठुदरिसयं ता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिठा मोक्खपहोयारगाउदारा अणाणतमंधकारदुग्गेसुदीवभूआ

एतले नास्तिकमतो ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्माने अजाणपणो ते श्रेय एहवो जेहदे ते अज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपंखी सहुनोविनय करिवोजे वदेतेविनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनो । त्रिणसेंनेतसठ प्रतिक्षा अन्यदृष्ठि मिथ्यादृष्टिना मत सहैकडां तेहनोव्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टांतवचन तेणेकरी परमतनेनिःसार असारकरीनेस्थापें । सुष्ठुभलो आदरिवापणे दरिसयंति प्रगटता अनेकप्रकारसत्प दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तारानुगम जोवादितत्वनो विस्तार प्रतिपादको तेविविध विस्तारानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यंतवस्तु नोसत्यपणे तेहोजद्विगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तारानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यक्दर्शननेविषे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

कारित्वा द्वीपोपमौ सोपाणाचेवत्ति सोपानानीव उन्नतारोहणमार्गविशेषाइव सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षण यद्गृहाणामुत्तम गृहोत्तम वरप्रासादस्तस्य सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निप्पकंपत्ति निक्षोभौ वादिना चोभयितुमशक्यत्वात् निःप्रकंपौ स्वरूपतोपौषदव्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् काविल्याह सूत्रार्थौ सूत्रचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

सोवाणाचेवसिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्तावायणासंखेज्जा अणु
ओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ सखेज्जावेढा सखेज्जासिलोगा सखेज्जाओनिज्जुत्तीओ सेणंअंगठयाए दोच्चे
अंगे दोसुयक्खधा तेवीसअज्झयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला छत्तीसंपदसहस्साइं पयग्गेणं
प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धा णिकाइ

सूत्रार्थदोषरहितपणे उदारप्रधानछे सूत्रार्थजेहनेविषेअज्ञान तेहीज तमअंधकार तेणेकरीदुर्ग्रह दुरविगम दुःखसाध्य जेसन्मार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवाभूत प्रकाशकारी छे अज्ञानांधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान छे। सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मंदिर उत्तम प्रधानछे तेहने चाढिवाने अर्थे सोपान पाउडोया रूपसूत्रार्थछे। वादीपुरुषे निक्षोभ चालिवा अशक्य निष्पकंप थोडोईकोईएक पाडीसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सूयगडांग सूत्रना परित्ता संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक जाणिवा । संख्याती प्रतिपत्ति वादीद्वय मतांतरते प्रतिपत्ति सख्यातावेढा छंदविशेष संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद सख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनी योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति से अंगार्थपणा

राय षड्जादयः सप्त गोत्राणि च काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जोद्रसंचालयन्ति ज्योतिषः तारकारूपस्य सचालनानि तिह्निंठाणेहिं ताराख्वे चलेज्जा इ

त्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकाविधस्य तज्जात्यस्य तदनिधेयमित्येकविधवक्तव्यकं प्रथमेऽध्ययनेस्थाप्यतइतियोगः एवं द्विविधवक्तव्यकं द्विती

येऽध्ययने एव तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यकं दशमेऽध्ययने तथा जोवानां पुद्गलानां च प्ररूपणताख्यायतइतियोगः तथा लोगट्ठाइंचणंति लोकस्थायिनांच

धर्मास्तिकायादीनांप्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसूत्रव्याख्यानादवसेयं नवर मेकविंशति रुद्देशनकालाः कथ द्वितीयतृतीयचतुर्थेष्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार

उद्देशकाः पंचमे त्रय इत्येते पंचदश शेषासु षट् षणामध्ययनानां षट्उद्देशनकालत्वादिति बावत्तरिपदसहस्साइति अष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्विगुण

यं दुविहजावदसविहवत्तव्वयंजीवाणपोग्गलाणयलोगट्ठाइंचणपरूवणयाआघविज्जंतिठाणस्सणंपरित्तावायणा

संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाओसंगहणीओ सेणंअंगट्ठ

याए तइएअंगेएगेसुयक्खंधे दसअज्झयणा एक्कवीसंउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअ

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चंद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नै

सर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४९ ज्योतिष तारारूप तेहना संचालन तिह्निठाणे

हिं। तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानांगे थापिये। एक विधिनो कहिवो त्रिविधनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो। जीवनो पुद्गलनो प्ररूप

णा ठाणांगे करी। लोकस्थायीये धर्मास्तिकायनी प्ररूपणा ठाणांगे कही। वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप कही अनुयोगद्वार उपक्रमादिक संख्याती प्रतिपत्ति

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ २ ॥ सेकितमित्यादि अथ कोसौ समवायः सूत्रेतु प्राकृतत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्तं समवायनं समवायः सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थः तद्धेतुश्च ग्रन्थोपि समवाय स्तथाचाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूच्यन्ते इत्यादिकंत्क्तं तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणंति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यंतानां वाएगत्थाणंति एकोचतेअर्थाश्चेत्येकार्थाः स्तेषां अयमर्थः एकेषां केषाञ्चि न्न सर्वेषां

एकराइअणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ताभा वाआघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणणाए एवंनिन्नाए एवंचरणकरणपरू वणयाआघविज्जंति सेत्तंठाणे ॥ ३ ॥ सेकिंतंसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जं

वादीद्वयमतांतरप्रतिपत्ति। सख्याता वेढा छन्दविशेष। सख्याता श्लोक अनुष्टुपछन्द। संख्यातो सग्रहणी । ते अंगार्थपणे त्रीजेअंगे एक श्रुतस्कंधना दस अध्ययन एकवीस उद्देशन काल उद्देशना अवसर। बहुत्तरि सहस्त्रपद पदने परिमाणें कह्या संख्याता अचर तिमज पूर्वनीपरें परित्ता अनंतानही त्रस वेइन्द्रियादिक अनताथावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी सास्वताछे। पर्यायार्थपणे कीधा सूत्रार्थपणें गूंथ्या। उदाहरणें करी प्रतिष्ठ्या। वीतरागें कह्या भाव पदार्थ कहिये छे। नामादिकभेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये। तेठाणांग एहवोछे। एहभणीने जाण एम घणोजाण होय। एम चरण साधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे। एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी। एकछे प्रथम जेहने एहवावे

निखिलाना म्बक्रमभगलता दर्शानां जीवादीना मेगुत्तरिगेत्ति एकाउत्तरीयस्यांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतत्वात् कस्वल म्परिवुद्धियत्ति परिवृद्धि

शेति समनुगीयते समवायेनेति योगः तत्रच परिवर्धन संख्यायाः समपसेयं चशब्दस्य चान्यन सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशतं यावदेकोत्त

रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशांगस्य च गणिपिटकस्य पल्लवगति पर्यवपरिमाणं अभिधेयादि तद्धर्मसंख्यानं यथा परित्तातसाइत्यादि पर्यवशब्द

स्यच पल्लवति निर्देशः प्राकृतत्वात् पर्यवाः पर्यवा इत्यादिनिर्दिति पथवा पल्लवास्त पल्लवाः अवयवा स्तत्परिमाणं समणुगाइज्जंति समनुगीयते प्रतिपाद्यते

पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसनस्सति स्थानकशतस्यैकादीनां शतान्तानां संख्यास्थानानां मतविशेषितानामादिपदार्थानामित्यर्थः तथा द्वाद

शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तत्द्वादशविधविस्तरं तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किंभूतस्य जगज्जीवहितस्य भगवतः श्रुतातिशययुक्तस्य समा

ति ससमयपरसमयासूइज्जंति समवाएणं एकाइयाणं एगठाणं एगुत्तरियंपरिवुड्ढीए दुवालसंगस्सयगणिपिड

गस्स पल्लवग्गेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयबारसविहविच्छरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सभगवओ समासे

णाचार आदि कोटिलगे एकअर्थे जीवादिक पदार्थनो इकेवा आगलि २ परे वधारिवो ते समवायांग कहिये। द्वादशांग केहवो छे। गणी आचार्य तेह

ने पिटकारत्नकरंडीया सरीखो छे तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहां कहिये स्थानक शत एक आदि सो छे छेहडे जेहने एहवो संख्या स्थानक

तेहनो बार प्रकारे विस्तारयो एहवो श्रुतज्ञानछे। ते श्रुतज्ञान केहवो छे। ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे। वली पूज्यछे। एहवा श्रुतज्ञाननो

संक्षेपे समाचार स्थानक २ प्रति अंग अग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहियो छे । ते समवायांग ने विषे नाना विध जीव अजीव

सेन सङ्क्षेपेण समाचारः प्रतिस्थानं प्रत्यङ्गस्य विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइति आख्यायते अथसमाचाराभिधानामस्तरं तत्र यदुक्तं त
दभिधातुमाह तत्थयेत्यादि तत्थयत्ति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकेन्द्रियादिभेदेन पञ्चप्रकारा जीवाः
पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायत्ति जीवाश्चजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा विशेषा
जीवाजीवधर्म्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेशतआह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनानभेदोपचारा न्नारका स्ततश्च नारकतिर्य्यग्मनुजसुरगणानां स
म्बन्धिन आहारादय स्तत्र आहारओज आहारादि राभोगिकानाभोगिकास्वरूपोनेकधा उत्स्वासोऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेश्याकृष्णादिकाषोढा आ
वाससंख्या यथा नारकावासानां चतुरशीतिर्लक्षाणीत्यादिका आयतप्रमाणमायामप्रमाणमेवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विष्कम्भबाहल्य
परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

णं समायारे आहिज्जातितत्थयणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवण्णियावित्थरेण अवरेविअ बहुविहाविसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाणउववायचवणउग्गहणोवहिवेय

पदार्थ वर्णव्या विस्तारेकरी। अनेरापणि घणप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थ वर्णव्या। नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवता गण संबंधीना आहार आभोगिक
अनाभोगिक ओजलोमादिक भेदे' करी अनेक प्रकार। तथा उच्छासोच्छास लेश्या कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम
विष्कंभ परिधि प्रमाण। उपपात एकेसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे। एके केतला मरे। चवे अवगाहना शरीरनोप्रमाण अवधि अंगुलने अ

मरणं अवगाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयभागादि अवधि रंगुलासंख्येयभागक्षेत्रविषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधानानिभेदा यथा सप्तविधा नारका इत्यादि उपयोग आभिनिबोधिकादि द्वादशविधः योगः पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्राद्यपेचयाष्टौवा कषायाः क्रोधादयः आहारश्वोच्छ्वासश्चेत्यादिद्वन्द्व स्ततः कषायशब्दा अथमाबहुवचनलोपोद्रष्टव्यः तथा विविधाच जीवयोनिः सचित्तादिकं जीवानां तथा विष्कम्भोत्सेधपरिचयः प्रमाणं विधिविशेषाश्च मन्दरादीनां महीधराणामिति तत्र विष्कम्भो विस्तारउत्सेधउच्चत्वं परिरयः परिधिः विधविशेषा इति योगः तथा वर्षाणाविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपीयधातकीखण्डीयपौष्करार्द्धिकभेदा त्तिधा तद्विशेषस्तु जम्बूद्वीपको लचोत्रः शेषास्तु पंचाशीतिसहस्रोच्छ्रिता इत्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थंकरगणधराणा तथा समस्तभरताधिपानां चक्रिणांचैव तथा चक्रधरहलधराणां च विधिविशेषा इतियोगः तथा

णाविहाणउवउगजोगा इंदियकसायविविहायजीवजोणी विरकंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसायमंदरा दीणं महीधराणं कुलगरतित्थगरगणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाणचक्कीणंचेव चक्कहरहलहराणय वासाणयनि

संख्येयभागक्षेत्र विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावनो विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इंद्रिय ५ कषाय क्रोधादिक त्रिविध घनेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कंभ पिहुल पणो। उत्सेध ऊंचपणो। परिधिप्रमाण विधि विशेष विखंभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदें मंदरादिक पर्वतनो कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थंकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकनो सगलाई भरत चक्रवर्तीनो चक्रधर वासुदेव हलधर बलदेव

वर्षाणाञ्च भरतादिक्षेत्राणां निर्गमा: पूर्वेभ्य: उत्तरेषामाधिक्यानि समायन्ति समवाये चतुर्थेऽङ्गे वर्णिता इतिप्रक्रम: अथैतन्निगमयन्नाह एतेचोक्ता: पदार्था अन्येचघनतनुवातादय: पदार्था एवमादय: एवंप्रकारा: अत्रसमवाये विस्तरेणार्था: समाश्रीयन्ते अविपरीतस्वरूपगुणभूषिता बुद्ध्यांगीक्रियंतइत्यर्थ: अथवा समस्यन्ते कुप्ररूपणाभ्य. सम्यक्प्ररूपणायां चिप्यन्ते शेषनिगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकितवियाहेइत्यादि अथकेयं व्याख्या व्याख्या

ग्गमायसमाए एएञ्चाणयेएवमाइत्थाविस्थरेणं ञ्चत्यासमाहिज्जाति समवायस्सणं परित्तावायणाजावसेणं ञ्चंगठयाए चउत्थेञ्चगे एगेञ्चज्झयणे एगेसुयखंधे एगेउद्देसणकाले एगेसमुद्देसणकाले एगेचउयाले पदसहस्से पदग्गेणंप० संखेज्जाणिञ्चखराणि जावचरणकरणपरूवणया ञ्चाघविज्जंति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥

नो वर्ष क्षेत्रनो नैर्गमा पहिलाथकी अगिलानो अधिकारपणे समवायांग पणे। चौथे अंगे एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णव्या एह पूर्वे कह्या तेअनेरापणि पदार्थ घन तनु वातादिक समवायांगें विस्तारपणे पदार्थ आश्रीये । समवायांगनो वाचना सूत्रार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवो स्लोक सख्याता इत्यादिक आचारांगनी परे सर्व कहिवो तेअगार्थपणे चौथे अंगे एक अध्ययन एकश्रुतस्कंध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला ख ४४ हजार पद पदपरिमाणें कह्या। सख्यात अक्षर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनो प्ररूपणा कहियेछे । तेसमवायांग चौथो ॥ ४ ॥ अथ स्यं एह व्याख्या वखाणिये अर्थ जेहने विषें तेव्याख्या भगवतीये सूत्रें स्वसमय जिनमत कहियेछे। परमत कहियेछे

भव्यजनानां भव्यप्राणिना मजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदयै श्चित्तैरभिनन्दितानामनुमोदितानामितिविग्रहः तथा तमोरजसी अज्ञानपातके विध्वंसयति नाशयति यत्ततमोरजोविध्वंस तच्च तदज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञानं तेन सुदृष्टस्थानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव तानिच तानि दीपभूतानिचेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्द्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वंसज्ञानसुदृष्टदीपभूतेहामतिबुद्धिवर्द्धनाना न्तत्र ईहा वितर्को मतिरवायो निश्चयइत्यर्थः बुद्धिरौत्पत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वंसनानामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सुदृष्टदीपभूतानामितिच तथा छत्तीससहस्समणूणयाणंति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकारोऽन्यथापादनिपातश्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्नानन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्णयवेन यानि तानि व्याकरणानि तेषांदर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थः अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थः कइत्याह सुयत्थबहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्थाः श्रुतार्था अभिलाप्यार्थविशेषाइत्यर्थः श्रुतावा कथिता जिनसकाशेगणधरेण ये अर्था स्तेश्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति सूत्र अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रहः श्रुतार्थानां वा बहुविधाः प्रकारा इतिविग्रहः किमर्थं तेव्याख्यायत इत्याह शिष्या

बुद्धिवद्धमाणाण छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाउ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसाहियत्था गुण

नदित अनुमोदाछे। वली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वंसक नाशक छे रूडीपरें निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे ईहा नितर्कमतिते अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिक्यादि चिहुप्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्रीस हजार जणागमही सपूर्ण प्रश्न ने देखाडता य का सूत्रार्थपणे शिष्यने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्राप्त्यादिक लक्षण हाय सरीखो प्रधानहाय। भगवती सूत्रना गणित वाचना। संख्याता अनुयोग

णां हितमनर्थप्रतिघातार्थप्राप्तिरूप स्तदेवार्थः प्रार्थ्यमानत्वा त्तस्य तस्मै इति क्तिभूतास्ते अतआह गुणहस्ता गुणएवार्थं प्राप्त्यादिलक्षणो हस्तइवहस्तः प्रधा ॥
नावयवो येषाते तथा वियाहस्सेत्यादितु निगमनातंसूत्रंसिद्ध नवरं शतमिह्यध्ययनस्य सज्ञा चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया द्विगु

हत्था वियाहस्सणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जा
सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सेणं अंगठ्याएपंचमे अंगे एगेसुयक्खंधे एगेसाइरेगे अज्झयणसते दसउ
द्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं छत्तीसवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता
संखेज्जाइं अक्खराइं अणंतागमा अणंतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइ
या जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंतिपण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंआए एवंवि

णार उपक्रमादिक । संख्याती प्रतिपत्ती । संख्यातावेढाछंदविशेष । संख्याताश्लोक अनुष्टुबादिक । संख्याती निर्युक्ति । तेह अंगार्थपणे पांचमेअंगे १ ।
श्रुतस्कंध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायागनी अपेक्षायें बेगुणाकीजे तो दोला
ख ८८ हजार पदथाय । ते इहां नलेवा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसवेइन्द्रियादिक । अनन्तास्थावर वनस्पती द्रव्यार्थे करी
शाश्वताछे । पर्यायार्थ पणे कीधाछे । सूत्रार्थपणें गुथ्या निकाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या । जिन वीतरागे कह्या जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादि
क भेदें करीप्ररूपियेछे । शुद्धभावे उपदेश करियेछे । ते भगवंती सूत्रने विषे शाश्वता कीधा शाश्वतादिक पदनीव्याख्या आचारांगाधिकारे कीधीछे जिहा

गताना दृष्टान्तानां दृष्टान्त सहस्राणि तद्विगुणत्वे द्वैलक्ष्ये प्रश्नाग्नोति सहस्राणि भवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का सा ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता न्युदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्वं संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्तत श्च ज्ञाता धर्मश्च ज्ञाताधर्मकथा स्तत प्रथमश्रुतार्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघकुमारादी नां नगरादीन्याख्यायते नगरादीनि हाविंशतिपदानि कण्ठानिच नवरं उद्यानं पत्रपुष्पफलच्छायोपगतवृक्षोपशोभितं विविधवेषोत्तममानस बहुजनो यत्र भोजनार्थं यातीति चैत्य व्यंतरायतनं वनखंडो नेकजातीयैरुत्तमैर्वृक्षैरुपशोभितमिति प्राग्वज्ज्ञाति इहत्यायव्याकरणा दन्यानि पदानि एतानि यावदयंसूत्रा

णाए एव चरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तंवियाहे ॥ ५ ॥ सेकिंतंणायाधम्मकहाउ णायाधम्मकहासुणं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअ परलोइअइड्ढीविसेसाभोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव

णगे। चरण नाम व्रतकरण पिंडविशुद्धादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्याअंग एतले भगवती अंगपांचमो जाणिवो ॥ ५ ॥ हवे ज्ञाता धर्मकथाअंग। ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जे कथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेघकुमारादिकना नगर नाम। उद्यान पत्र पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यंतरायतन। अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित वनखंड। राजा। माता। पिता। एहनानाम समोसरण घणानो एकठा मीलन। धर्माचार्यनाम। धर्मनी कथा। इहलोक मनुष्यलोक। परलोक देवगति तेहनो ऋद्धि विशेषनो भोग तेहनो त्या

वयवो यथा नायाधम्मेत्यादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्मविनयकरजिननाथसंबंधिनि शेषप्रव चनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणाणंविणयकरणजिणसासणमि पवरे किंभूतानां सयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सेव दुरधिगम्यत्वात् कात रनरचोभकत्वा द्गंभीरत्वाच्च पातालमिवपातालं तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषांते तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु र्बलाये ते तथा तेषां तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिर्व्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साहइति तथा तपसि नियमोऽवश्यंकरण त्तपोनियमितं तपः सच तपउपधानंचाऽ

हाणाइं परियागा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहि लाभो अंतकिरियाउय आघविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपइन्नापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयाणिस्सहयाणिसिट्ठाणं घो

ग। प्रव्रज्यादीक्षा। सूत्रनो मेलवो । तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो । पर्याय दीक्षानो काल । सलेखणानो करिवो । भात पाणीनो पचखवो । पादपोपगमन छेदीथकोवृक्षशाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संथारो कस्यांपछे हलेचाले नही। देवलोकनो जाइवो। उत्तम कुलें अवतार। वली बोधिलाभ धर्मनी प्राप्ति। अंतक्रिया ससारना अतनो करिवो। एह सर्व वस्तु ज्ञाताविषे कहियेछे । जिहां लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषे प्रव्रजित यती नो विनयनो करिवो तिहांलगे। जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषें संयमपालवाभणी कीधी प्रतिज्ञानो पालवो। धृति चित्तनी स्वस्थपणो मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषें उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर हुयाछे तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेह्निज

नियंत्रितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणश कातरजनचोभकत्वात् संग्रामो दुद्दरभरत्ति श्रमकारणत्वा दुर्धरभरय दुर्वहलोरादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नका:पराङ्मुखीभूता स्तथा निसक्काणन्ति नि:सक्का नितरामशक्तास्तएव नि:सक्कका निसृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ पधानरणदुर्धरभरभग्नकानि: सक्कानिसृष्टा: पाठांतरेण नि:सक्कनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकारणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेय' तथा घोरपरीषहै: पराजिता शासमर्था: सन्त: प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तुं कश्चाय मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धा: प्रतएव सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गता: प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी षहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिसमारोहत: प्ररुद्धरुद्धा: अतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धालय मा र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपत: आशावशदोषेणमनोरथ पारतंत्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता प्रभ्युपपन्ना येते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखे या महेच्छा:कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयो र्वश: पारतंत्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छासावसदोसमुच्छियाणं विरा

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्त छे सयन मार्गें थाकाछे वलो घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम र्थछे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रूंध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थको नोकल्याछे। तुच्छ विषय सुखनो आशा रूप दो षे करो वसथई तेमूर्च्छित थयाछे। विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र। यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार सेणेकारी शून्य

सुखमहेच्छातुच्छागावग्रदोषमूर्च्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणर तारा सारवर्जिता प्रलजिप्रायगुणधान्यादित्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदत्रयस्य चकर्मधारयो ऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणत्रिविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह संसारे संसृतौ अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्र हणानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासां ये प्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरंपराप्रपंचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीरा णांच महासत्वानां किंभूतानां जितपरीषहकषायसैन्य ये स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽव श्यभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽत स्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धचातीचारविशुद्धोयः सिद्धालयस्य सिद्धिमार्गं स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं

चा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

छे। एहवा भाव ज्ञाताने विषे कह्याछे। संसारनेविषे अपार दुःख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनी परंपरा संतति तेहना विस्तारने वि षे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रबन्ध ज्ञाताने विषे कहियेछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा संयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

ग्रन्थस्य प्रकारार्थत्वा दैवप्रकारार्थाः पदार्थाः विस्तरेण्यति निस्तरेण चशब्दात्कचिज्जित् संक्षेपेण आख्यायन्त इतिक्रियायोगः नायाधम्मकहासुयस्तित्वा
दि कथ्यमानिगमना सवर मेनूणतीसमज्झयणति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिज्ञातीयेच दशेति दशधम्मकहाणवग्गा इत्यादौ भावनेय मिहैकोनविंशतिर्ज्ञा
ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वात्तानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य कथा आख्यानकानी त्युक्तभवति तासां
च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततश्चार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येव दशवर्गाद्रष्टव्या स्तनज्ञातेष्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वाख्यायिकादिस

॥ एकमेकं एए अजोय एवमाइत्याविस्थरेणय णायाधम्मकहासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदाराजावसं खेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए छठे अंगेदोसुयखंधा एगूणतीस अज्झयणा ते समासउ दुविहा पन्नत्ता ॥

या ग्रन्थमी विस्तार थी तथा संक्षेप थी ज्ञाताने विषे कह्याछे। ज्ञाताने विषे संख्याती वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप। संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक। यावत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणिवी सूत्र थोडो अर्थ घणो ते संग्रहणी। तेह अंगार्थ पणे। एम छठे अंगे बे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन ते १९ ज्ञाताध्ययन संक्षेपथी बे प्रकारे कह्या। ते कहेछे। कोईक अध्ययन मेघकुमारादिक चरित्ररूप। कोईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मींडकी वा तकोधी। इत्यादिक। बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहां एकेकोये धर्मकथायें अधिकारना समूहमयाअध्ययन ते मांहि ज्ञातामेविषे पहिला दश वर्ग ज्ञाता उदाहरण रूपतेहने विषे आख्यायिकादिकानो संभवनथी शेष ९ ज्ञाताने विषे एकेक ज्ञातामांहि पंतालीस २ अधिक अख्यायिकाना सैंकडा

भन: श्रेनाणि नवशतानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चचत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता
नि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकाया पचपचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि सपिण्डितानि किसञ्जातं इगवीसकोडिसय लक्खापन्नाससेवबोधव्वा
२१५०००००० एवठिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दशधम्मकहाणवग्गा तत्थणएगमेगाएधम्मकहाए पचपचअक्खाइयासयाइ एगमेगाए
अक्खाइयाएपचपचउवक्खाइयासयाइ एगमेगाएउवक्खाइयाएपंचपंचअक्खाइउवक्खाइसयाइति एवमेतानि सम्पिण्डितानि किसञ्जात पणवीसकोडिसयं २५००
००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नवनागयसवडा अक्खाइयमाइयातेण ॥ १ ॥ तेसाहिज्जतिफुड इमाउरासीउवेगलाणतु पुणरुत्तवज्जियाण पमाणमेण

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थण एगमेगाए धम्मकहाए पंच पच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ

का हेवा। तिहा एकेक आख्यायिकानेविषें पाच पांच सो उपाख्यायिका छे। तिहा वली एकेक उपाख्यायिकानेविषे पाचपाच आख्यायिका उपाख्यायिकाना
से तडाछे। तिहा आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां। इगवीसंकोडिसय लक्खापन्नाससेवबोधव्वा। २१५००००००
एव ठिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा। दश धम्मकहाणवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइ एगमेगाएअक्खाइया
ए पच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पच पंच अक्खाइउवक्खाइयासयाइंति। एसर्व एकठाकोधा तिवारे २५००००००० पचवीस कोटि थई
ते मांहियी पाछलो आंक एकवीस किरोड पचास लाख पुनरुक्तपणामाटे बाहिर काढिये तो साढे ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेछे। एव मेव सपूर्वा

त्रिणिदि॥ २ ॥ सोवितिचैतस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थाएव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुव्वावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधनेकृते सतीत्युक्त भवति अद्धाश्रो अक्खाइयाकोडीओभवतीति मक्खाओत्ति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेतत्संख्याभवंतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावीरेणेति तथा संख्यातानि पदसयसहस्साणीति किल पञ्चलचाणि षट्सप्ततिश्चसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रालापकपदाग्रेण संख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्ती त्येवं सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का स्ता उपासकदशा उपासकाः श्रावका स्तद्गतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

अक्खाइ एवामेवसपुव्वावरेणं अद्धुठाउ अक्खाइयकोडीउ भवंतीति मक्खायाउ एगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता तंजहा संखेज्जाअक्खरा जावचरणकर णपरूवणया आघविज्जति सेत्तं णायाधम्मकहाउ ॥ ६ ॥ सेकितंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

पर तेणें प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये। पछे पाछला आंके आगलोआंक सोधिये तिवारे साढे ३ कोटिकथानो थाय। तेभगवान महावीर स्वामीये का ही। ज्ञाताने विषे उगुणत्रीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या। उगुणत्रीस समुद्देशनकाल। संख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाण कह्या। ते कहेछे। वलो संख्याता अक्षर यावत् शब्देकरी संख्याता वेढा संख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण श्रमणधर्म करण पिंडविशुद्ध्यादि कनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छठो अंग ॥ ६ ॥ स्युंतेउपासक दशांग। उपासक श्रावकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनके

ध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदसासुण उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्म्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनता स्तत्र शीलव्रतान्यणुव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादित्यागः पौषधोपवास'ततोद्वन्द्वेसत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्सर्गावा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः सलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभोऽन्तक्रिया

उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जियाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोग

ते उपासक दशा कहिये। तेहने विषे श्रावकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम वनखण्डनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक संबधी ऋद्धि विशेष। श्रावकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनी विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवकारसी प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिवो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहियो। श्रुतनो सांभलिवो। तथा बारे भेदे तपनो करिवो। प्रतिमा ११ श्रावकनी उपसर्ग देवताना कीधा। सलेखणा तपें करी आत्माने कषाय दुर्बल करिवो। भातपाणीनो पचखवो। संथारो। देवलोके जाइवो

शाख्यायन्ते पूर्वोक्तमेव प्रतीविशेषत श्राह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्धिविशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पद्विशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता पितृपुत्रादिका अभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्मश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्त्वस्य विशुद्धता स्थिरत्व सम्यक्त्वशुद्धिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुव्रतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा श्रोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिगृहग्रहणानि तेषामेवच पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गंश्चोपसर्गाभावमित्यर्थः तपां

गमणाइं सुकुलपच्चाया पुणोबोहिलाभो अंतकिरियाउ आघविज्जंति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसाविच्छरधम्मसवणाणि बोहिलाभ अभिगमणे सम्मत्तविसुद्धया थिरत्त मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलव्वयगुणवेर

अने बलोसुकुले उपजवो। वली बोधनो प्राप्ति। अंतक्रिया करिवो। एहसर्व उपासक दशामांहि कहियेछे। उपासक दशाने विषे श्रावकनी ऋद्धिविशेष अनेक धन कोटि संख्या विशेष। परिषदा परिवारनो विस्तार। भगवत महावीरने पासे धर्मनो सांभलिवो। धर्मनो प्राप्ति। धर्मनो श्रादरिवो। सम्यक्त्वनी विशुद्धता निर्मलता। धर्मने विषे स्थिरपणो। मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार वध बंधादिक। स्थिति विशेष। श्रावकपणांना कालनो मर्यादा। सम्यग्दर्शन प्रतिमा अभिग्रहनो बहु विशेष कहिये बहुरा भेदनो ग्रहिवो पालवो उपसर्गनो सहिवो। तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विना पणि चित्र विचित्र अने

सिच चित्राणि शीलव्रतादयो ऽनन्तरोक्तरूपा अपश्चिमा: पश्चात्कालभाविन्य: अकारस्यमङ्गलपरिहारार्थं मरणरूपे अन्ते भवा मारणान्तिक्य: आत्मशरीरस्य जीवस्यच सलेखना: तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मन. सलेखना: तत: पदत्रयस्य कर्मधारय स्तासां जोसणति जोषणा: सेवना: करणा नीत्यर्थ: ताभिरपश्चिममारणान्तिकात्मसंलेखनाजोषणाभि रात्मान यथाच भावयित्वाबहूनिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उपपन्ना स्त्वेतिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुडरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्यान्यनुपमानि क्रमेण भुक्तोत्तमानि तत: आयुष्कक्षयेण च्युता: सन्तो यथा जिनमते बोधि लब्धा इतिविशेष: यथाच संयमोत्तम प्रधान सयम तमोरजओघ

मण पच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममारणंतियाय संलेहणा जोसणाहिं अप्पाणं जहय भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए छेअइत्ता उववन्ना कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइ कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तओ आउक्खएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलद्धूणय सं

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पोषधोपवास छेहले काले मरणातिक सलेखना मरणरूप अंतकाले होय एहवी सलेखना आत्माने कर्मथी हलुको करिवो। तेहनो जोषणो तेहनो सेविवो तेणे आपणा आत्माने भाविये जिमघणे प्रकारे अनसने करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे। देवता समंधी प्रधान विमान प्रधान पुडरीक कमलनीपरें उत्तम तेहने विषें वखान जाय एहवा अनुपम सुखप्रतें क्रमें अनुक्रमें भोगवीने देवलोक थकी आयुक्षयथी चव्याथका जिम जिन मतने विषें बोधि श्रीजिनधर्मनो प्राप्ति

मयो र्द्वयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्झाएणपसत्थंझाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणमेगवत्थुमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वनयोगः तथा प्रधानाश्च संयमोत्तम सर्वविरति जितपरीषहाणा चतुर्विधकर्मक्षये घातिक्षयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे र्लाभः पर्यायः प्रव्रज्यायाः लक्षणो यावांश्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषाश्रयणादिना प्रकारेण पालितो मुनिभिः पादपोपगमनञ्च पादपोपगमाभिधानमनशन प्रतिपन्नो योमुनि र्यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि छेदयित्वा मनशनिनाहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातइतिशेषः तमोरजओघविप्रमुक्तएवच सर्वेपि क्षेत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि

इगुत्ताउ चेव तहअप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेणयउत्तमाण दोण्हंपि लक्खणाइ पव्वाणयसंजमुत्तमं जियपरी सहाण चउव्विहकम्मक्खयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाउ जत्तिउयजहपालिउ मुणीहिपाओवगउय जहिं जत्तियाणिभत्ताणि छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरो तमरयोघविमुक्को मोक्खसुहमणतरंचपत्ता एए अन्नेय एव

१२ भेदे। क्रिया अनुष्ठान। समितिगुप्ति। तिमज अप्रमादना योग। स्वाध्याय सिद्धान्त नू भणवो। ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्त लगे चित्तनूं एकाग्रपणोते स्वाध्यायध्यान। उत्तम एह बिहुनालक्षण अंतगडदशा मांहि कहिये छे। संयमप्रते जेह पाल्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अंतराय ४ एहनोनाशकरी जिम केवल ज्ञाननो लाभहोय प्राप्तिहोय। पर्याय ते दीक्षानोकाल जेणे मुनीश्वरे जेतला जेतला वर्ष प्रमाणे संयम पाल्यो होय। पादपोप गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अंतकृत् संसारना अंतकारक मुनिवर तम

प्राग्वत् नवरं दशअज्झयणत्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चेह पठ्यते सत्तवग्गत्ति तत्प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया यतोऽत्र सर्वेप्यष्टव
र्गा नन्द्यामपि तथापठितत्वा त्तद्‌वृत्तिश्चेय अट्ठवग्गत्ति अत्रवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययनानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभणितं अट्ठ
उद्देसणकालाइत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो
विंशति लक्षाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपतनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

माइत्याविज्जइ पज्जवेइ अंतगडदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाउसंगहणीउ
सेणंअंगठयाएअट्ठमेअंगेएगेसुयखंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे
ज्जाइं पयसहस्साइपयग्गेण पन्नत्ते संखेज्जाअक्खरा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतग

अंधकार अज्ञानरूप रजथी मूंकाणो अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पाम्यो। एह पूर्वे कह्याते तथा अनेरापणि पदार्थ इहां अंतगडदशा मांहि कहिये
छे। प्ररूपियेछे। संख्याता वाचना। संख्याता अनुयोगद्वार। जिहांलगे संख्याती संग्रहणी होय तिहांलगे जाणिवो। अंगार्थपणे आठमें अंगे एक श्रुतस्कं
ध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह। दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल। संख्याता पदना सत सहस्र
एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कह्या। संख्याता अक्षर इहां थीमांडी चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक लगें पूर्वनी परे पाठ कहि
वो। इत्यादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अंतगडदशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ स्यूंते अणुत्तरोववाई नथी उत्तर कहिये आगलि जन्म जेहने तेहना

तद्दण्डपटु प्रचलत्पताकिकाशतोपशोभितमहाध्वजपुरः प्रवर्त्तिनं विविधातोद्यनादगगनाभोगपूरणं चैवमादिलक्षणाः प्रतिकल्पितगन्धसिन्धुरवान्यारोहणं घ
तुरङ्गसैन्यपरिवारण छत्रचामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशन चैवमादयश्च सम्पद्विशेषाः समवसरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिकज्योतिष्काणां भवनपति
व्यन्तराणां राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूनां ऋद्धिविशेषा देवादिसम्बन्धिन स्तादृशा आख्यायन्ते इतिक्रियायोगः तथा पर्षदां सञ्जय
वेमाणित्थी सजइपुव्वेणपविसित्रोवीर मित्यादिनो तत्स्वरूपाणा प्रादुर्भावाश्च आगमनानि च जिणवरसमोवन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पञ्चविधा
भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवरं तथाख्यायतइतियोगः यथाच परिकथयति धर्मं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणानां श्रुत्वा च
तस्येति जिनवरस्य भाषितं अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्म्माणि येषांते तथा तेचते विषयविरक्ताश्चेति अवशेषकर्म्मविषयविरक्ताः के नराः किं यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं भगवत्र जारिसाइइड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउब्भावय जिणस
मीवं जहयउवासंतिजिणवरं जहयपरिकहंतिधम्मलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सभासियं अव
सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं सजमं तवंचाविबहुविहप्पगारं जहबहूणिवासा

त्तके जेम जगतने विषे जिन शासन हितकारी छे। जेहवा ऋद्धिना विशेष छे। देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी परीष
दा नो प्रादुर्भाव आविवो उपासयंति पचविध अभिगम ने करी सेवा करवो। जिनने समीपे सेवा करे। जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरगण
नेधर्म कथा प्रते कहे। तेह जिनवरनो भाषित सांभलीने। क्षीण प्रायछे कर्म जेहना। वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम पांमें धर्म उदार

त्ति पश्चमुद्दार किंस्वरूप मतश्चाह संयम श्चपश्चापि किंभूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि वर्षाणि अणुचरियत्ति अनुचर्यासेव्य संयम त्तपरो

विश्वर्त्ते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगा स्तथा जिणवयणमणुगयमहिय भासियत्ति जिनवचन माचारादिश्रनुगतं सम्यक् नाद्विवितर्दमित्यर्थ. महित

मूजितमधिक मा भाषित यै रध्यापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुगत्यानुकूल्येन मष्टुभाषित यै स्ते जिनवचनानुगतिसुभाषिता: तथा जिणवरा

णहियएणमणुणेतत्ति इतिषष्ठीद्वितीयार्थे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्तिच भक्तानि च्छेदयित्वा लब्धाच स

माधि मुत्तमं ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रम: तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तर तत्यत्ति अनुत्तरविमानेषु विषय

सुखं तथाख्यायन्ते तत्तोयत्ति अनुत्तरविमानेभ्यस्युता: क्रमेण करिष्यन्ति संयता यथाचान्त: क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशास्वितिप्रकृतमि

णि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचारित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिय भासित्ता जिणवराण हियर्येण

मणुणेत्ता जेयजहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्त

मा जहअणुत्तरेसुपावंति जह अणुत्तरं तत्थविसयसोक्ख ततोयचुआक्कमेण काहिंतिसंजया जहायअंतकिरियं

गधान संयम तप घणें प्रकारे सर्व विरति रूप। जिम घणा वर्ष लगे अणचरी सेवीने आराध्याछे ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणें जिनवचन आचा

रागादिने अनुगतसंमिलित महित पूजित भाषित जेणे। जिन वरनें हृदयें करी मनेकरी अनुनीयध्याईने। जेह जिहां जेतला भात छेदीने समा

धि पामीने उत्तम ध्यानयुक्त थका उपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम प्रधान विषय सुखभोगीने चव्या अनुत्तर विमानथी अनुक्रमे करि

द्युतियोगः पुनः किम्भूतानां अइसयगुणउपसमनाणप्पगार आयरियभासियाणंति अतिशयाश्चामर्षौषध्यादयो गुणाश्च ज्ञानादय उपसमश्च स्वपरभेद एतेना नाप्रकारा येषान्ते तथा तेच ते आचार्याश्च तै र्भाषिता या स्ता तथा तासां कथ भाषिताना मित्याह वित्थरेणति विस्तरेण महावचनसन्दर्भेण तथास्थिरम हर्षिभिः पाठान्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभासियाणंचत्ति विविधविस्तरेण भाषितानाञ्च चकारस्तृतीयप्रणायकभेदसमुच्चयार्थः पुनः कथम्भूताना मा ग्नाना जगद्धियाण जगद्धिताना मुरुषार्थोपयोगित्वात् किंसम्बन्धिनीना मित्याह अद्दागत्ति आदर्शश्चाङ्गुष्ठश्च बाहुश्च असिश्च क्षौमंच वस्त्र आदित्यश्चेति द्वन्द्व स्ते आदि र्येषां कुड्यशङ्खघण्टादीनां ते तथा तेषां सम्बन्धिनीना मप्रश्नविद्याभि रादर्शकादीना मावेशनात् किम्भूताना प्रश्नाना मतआह विविधम हाप्रश्नविद्याश्च याश्चैव प्रश्नैस्सत्युत्तरदायिन्यः मनः प्रश्न विद्याश्च मनः प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासां दैवतानि तदधिष्टातृदेवता स्तेषां प्रयोगप्राधान्येन तद्या

याणं अद्दागंगुठबाऊअसिमणिखोमआइच्चभासियाणं विविहमहापसिणविज्जामणपसिणविज्जा देवयंपयोग

प्रश्न कीहवाछे। अतिशय आमर्षौषध्यादिक १। गुण ज्ञानादिक २। तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३। एह नाना प्रकारछे जेहने एहवाजे आचार्य तेणें विस्तार करी कह्याछे। वीर महर्षि मोटायतीयें अनेक प्रकार जेविस्तार बचनसंदर्भे करी भाख्याछे। वली जगतने हित रूपछे। आरी सी अंगुठ बाहु खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशङ्ख घटादिक एहने आगलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त पदार्थें अधिष्ठान करीने उत्तरदे। तेमाटे ते प्रश्नविद्यायें करी भाषित छे। त्रिविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछें थकें तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या कही। मनःप्रश्नविद्या मननो चिंतित अर्थ कहे एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकाशक। तथा

पारप्रधानतया गुण ब्विविधार्थं सम्वादलक्षण प्रकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रश्नविद्यासन: प्रश्नविद्यादैवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका स्तासां पुन: किम्भूतानां प्रश्नाना सद्भूतेन तात्त्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा लौकिकप्रश्नविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन माहात्म्येन नरगणमतीमनुजसमुदयबुद्धीविस्मयकार्य्यचमत्कारहेतवो या: प्रश्ना स्ता: सद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्यं स्तासां पुन: किम्भूतानां तासा मतिसयमतीतकालसमयेत्ति अतिशयेन योतीत: काल: समय: स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थ. दम: शम स्तत्प्रधान तीर्थंकराणा दर्शनान्तरश्रा स्तृणा मुत्तमो य: स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थंकरोत्तमस्य स्थितिकरण स्थापन आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानादिगुणयुक्त: सकलप्रणायकशिर: शेखर कल्प: पुरुषविशेष: एवविधप्रश्नाना मन्यथानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तथा तासा पुनस्ताएव विशिनष्टि दुरभिगम दुरवबोध गम्भी र सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाह च दु:खाध्येय सूत्रबहुत्वाद्यत्तस्य सर्वेषां सर्वज्ञाना सम्मतमिष्ट सर्वसर्वज्ञसम्मत अथवा सर्वज्ञ तत्सर्वज्ञसम्मतश्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मत माव

पाहाणगुणप्पगासियाण सब्भूयदुगुणप्पभावनरगणमइविम्हयकराणं अइसयमईयकालदमसमातित्थकरुत्तम स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मयस्स अबुहजणबोहकरस्स पच्चक्खयपच्चयकरा

सद्गुण तात्त्विकपणें द्विगुण लौकिक प्रश्न विद्यानी अपेक्षायें घणोजे प्रभाव माहात्म्य तेणे करी मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे चमत्कार उपजावेछे। अतिशयें करी अतीतकाल समय अत्यत व्यवहित काले दम शम तेणे करी सहित तीर्थंकरोत्तमनो स्थितिनो कारण स्थापिवो तेहना कारणछे। दुरभिगम दु:खे जाणिये। गम्भीर सूक्ष्मार्थ पणें दुरवगाह दु:खे ग्रहीसके। सर्व सर्वज्ञने मान्य। तथा अबुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण। प्रत्यक्ष प

सर्वातिशयनिधा

घनतत्वमित्यर्थः तस्य भव्यजनविबोधनकरस्य एकांतश्चितस्येतिभावः पच्चक्खयपच्चयकराणंति प्रत्यक्षकेन ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः

नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेद जिनप्रवचन मित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यनेणेवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यचमिवेद मित्येवं प्रतीतिः प्रत्यक्ष

कप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्यः प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां तासां प्रत्यक्षकप्रत्ययकारीणां प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न

विद्यानां सुपन्नगणला दन्यासाञ्च यासां मष्टोत्तरशतान्यादौप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा

शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किंभूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जंतित्ति आख्यायन्तेशेषम्पूर्ववत् नवर यद्यपीहाध्ययनानां दशत्वाद्दशैवो

द्देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्ध मिति संखेज्जाणिपयसयसहस्साणि पयग्गेणंति

णं पराहाणबिविहगुणमहत्थाजिणवरप्पणीया आघविज्जंति पराहावागरणेसुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणु

त्रुगदारा जावसंखेज्जाउ संगहणीउ सेणंअंगठ्याएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयाली

संरामुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा जावचरणकरण

यें प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यक्षपणें मानिवा योग्य छे। एहवा प्रश्नना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरेंप्रणी

त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणनें विषें कहियेछे। प्रश्न व्याकरणने विषें संख्याती वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती संग्रह

णी लगे पाठ कहिवो। तेणें अंगार्थपणें दशमें अंगे एक श्रुतस्कंध तेने विषें ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ६२

तानि च किल दिनवति लंक्षाधि षोडश च सहस्राणोति ॥ १० ॥ सेकिंतमित्यादि विपचनं विपाकः शुभाशुभकर्मपरिणाम स्तत्प्रतिपादकं श्रुत त्विपाकश्रुतं विवागसुएणमित्यादि कंठ्यं नगर फलविपागेत्ति फलरूपोविपाकः फलविपाकः तथानगरगमणाइंति भगवतो गौतमस्य भिक्षार्थं नगरप्रवेश

परूवणया आघविज्जंति सेत्तंपराहावागरणाइं ॥ १० ॥ सेकिंतं विवागसुए विवागसुएणं सुक्क

डदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति सेसमासउ दुविहे पन्नत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव

तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकिंतं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराइं उ

ज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणें कह्या । संख्याता अक्षर । अनंता गमा । अनंता पर्याय यावत् चरण करण श्रमणव्रत पिंडविशुद्धादिक लगी जाणिवो । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्नव्याकरण दशमोअंग ॥ १० ॥ अथस्यूंतेविपाक सुत । विपाकजे शुभाशुभ कर्म ना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे सुत ते विपाक सुत । विपाक सुतने विषे शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि येछे । ते विपाक सुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो । तेकहेछे । दुख विपाक अने सुख विपाक । ते बिहुंमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबा हु कुमारादिकना दश सुख विपाक । अथ किस्याते दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर । उद्यान । चैत्य । वनखंड । राजा माता । पिता । समोसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गौतम भिक्षार्थें नगरमांहि प्रवेश करे । संसारनो प्रबंध बिस्तार । दुः

नानोति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेसुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमैथुनैः सह ससंगयाएत्तियो ससङ्गता सपरिग्रह ता तया सचितानां कर्म्मणामितियोगः महातीव्रकषायेंद्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायानां संचितानां कर्मणा पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनौच ये बहुविधव्यसनशतपरम्पराभि. प्रबद्धाः ते तथा तेषा जो

संसारपबंधे दुहपरंपराउय आघविज्जति सेत्तंदुहविवागाणि सेकितसुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवा गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइ धम्मायरिया धम्मकहाउ इह लोय परलोय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाउ सले हणाउ भत्तपच्चक्खाणाइ पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहिलाहो अंतकिरियाउ आ घविज्जंति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्ककरणपरदारमेहुणससगयाए महतिव्वकसायइं

खनी श्रेणी कहिये छे ते दुःख विपाक। अथ सू ते सुखविपाक। सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकाना। नगर। उद्यान। चैत्य। वनखंड। राजा। माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। इहलोक परलोक संबधी ऋद्धि विशेष। भोगनो परित्याग। दीक्षा। सुतनो भणवो। तपोपधान करिवो। पर्याय। प्रतिमा। संलेखना। भात पाणीनो पचखाण। पादपोपगमन। देवलोके उपजियो। तिहा थकी चवीने सुकुलेउपजियो। वली जिन धर्मनो प्राप्ति। अंतःक्रिया। एह जिहां कहिये ते सुख विपाक। दुःख विपाकने विषे। हिंसानो करिवो। अलीक वच

माना मितिगम्यते तथा मणुयत्तेत्ति मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते इतिप्रक्रम तथाहि बधो यष्ट्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्द्धितककरण तथा नासयोश्च कर्णयोश्च ओष्टस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्टानांच करयोश्च चरणयोश्च नखानांच यच्छेदन तत्तथा जिह्वाच्छेदन अंजणत्ति अञ्जन तप्ताय: शलाकया नेत्रयो: मच्चण वा देहस्य चारतैलादिना कडग्गिदाहणंति कडानां बिदलवंशादिमयाना मग्नि: कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहनं कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थ: तथा गजचलनमलनस्फालन विदारणं उल्लम्बनं वृचशाखादावुद्बंध

दियप्पमायपावप्पउय असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागाणि णरगतिरिक्खजोणियबिविहविसणपरपराबद्धाणं मणुयत्तेवि आगयाणजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवागाणरगतिरिक्खजोणियबिविहवसणविणासकन्नुठगुठ करचरणनहछेयण जिब्भछेयण अंजणकडग्गिदाह

न मुखथी कूडो बोलवो। चोरीनो करिवो। परस्त्री मैथुन संगमनो करिवो। परिग्रहनो धारण करिवो। महातीव्रकषाय। इंद्रिय प्रमाद। तथा। पाप प्रयोग। पापव्यापार। एह थकी जपनो अशुभ अध्यवसाय तेणे करी मेल्या पापरूप कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय। दु:ख विपाक ने विषे कहिये। नरक तीर्यंच योनिने विषे अनेक प्रकार कष्टनो श्रेणी तेणे करी बधाणा जेजीव तेहनो। तथा मनुष्यपणे पणि पाम्या थका जिम पापकर्म शेषेंकरी पापीहोय। फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय। तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषें अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान ओठ अंगूठा हाथ पग नख एहना छेदन। तथा जिह्वा जीभ छेदन। तथा अंजन लोहनी शलाका नेत्रने विषे घालवी। तथा कट वांसनी वेफाड तेह

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्तयाच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिवतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाशयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा

नानि प्रदाये तियोग: केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूरचेतसा हितो ऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुख: शुभोवा नीसेसत्ति नि:श्रेयस: कल्याण

करत्वात् तीव्र: प्रकृष्ट: परिणामो ऽध्यवसान यस्या सा तथा सा निश्चिता असशया मति र्बुद्धि यंषाते हतसुखनि:श्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतय: किं पय

च्छिऊणति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकग्रहणव्यापारापेक्षया चोद्गमा

दिदोषवर्ज्जितानि तत: किं यथाच येनच प्रकारेण पारपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्त्तयन्ति भव्या. जीवा इति गम्यते तुशब्दो भाषामात्रार्थ बोधिलाभं

विसुद्धभत्तपाणाइं पययमणसाहियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमइपयच्छिऊणं पयोगसुद्धाइं जहनिव्वत्ते

तिज्ञो वोहिलाभंजहयपरित्तीकरेति नरनरयातिरियसुरगमणविपुलपरियट्ट अरतिभयविसायसोगमिच्छत्त

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहुकालने विषें विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे। देईने आदर पूरितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे। तथा सु

खनो हेतु निश्रेयस कल्याणवत एहवो तीव्र प्रकृष्ट परिणाम अध्यवसाय छे जेहनो एहवा निश्चय मति सशय रहित बुद्धि छे जेहनी तेह देईने तेह

भातपाणी केहवा छे प्रयोग शुद्ध छे प्रयोगने विषें दायक दान व्यापारनो अपेक्षाये शुद्ध छे सशयादिक दूषण रहितछे। जिम जेणें प्रकारे परंपरा ये

मोक्ष साधक लक्षणे निवर्तावे निपजावे बोधिलाभ भव्यजीव जिम परित्तकरे ससार सागर थोडोकरे। तेसंसार सागर केहवोछे। मनुष्य नरकातिर्यंच

देवता एह चिहूंनो गतिने विषे जीवनो एहवो नजाइवो भ्रमिवो विपुल विस्तीर्ण परिवर्तमत्स्यादिकनो अनेक प्रकारे संचरण जिहा। अरति भय वि

यथाच परित्तोकुर्वंति ऋखतानयन्ति संसारसागर मितियोगः किंभूत नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमनं परिभ्रमण सएव विपुलो विस्तीर्णः प
रिवर्त्तो मत्स्यादीनां परिवर्त्तन मनेकधा सचरण यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्येव शैलाः पर्वताः तैः संकटः संकीर्णो यः स तथा।
तत. कर्मधारयो ऽत स्तु इहच विषादो दैन्यमात्र शोक स्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोंधकारं महान्धकारं यत्र स तथा अत स्त चिक्खिल्ल
सुदुत्तारति चिक्खिल्ल कर्दम' संसारपक्षेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरो दुःखोत्तार्योयः स तथातं तथा जरामरणयोनय एव संक्षुभितं महा
मत्स्यमकराद्यनेकजलजन्तुजातिसमर्द्देन प्रविलोडित चक्रवालं जलपारिमांडिल्य यत्र स तथा तं तथा षोडश कषाया एवस्वापदानि मकरग्राहादीनि प्रका
ण्ड चण्डानि अत्यर्थरौद्राणि यत्र स तथा तं अनादिका मनवदग्र मनन्त संसारसागरमिम प्रत्यक्षमित्यर्थः तथा यथाच सागरोपमादिना प्रकारेण निब

सेलसंकडं अन्नाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तारं जरमरणजोणिसंखुब्भियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं
अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिणं जहयणिबंधंति आउगंसुरगणेसु जहयअणुहवंति सुरगणविमाण

षाद शोक मिथ्यात्वतल्लक्षण शैलपर्वतें करी संकीर्ण सांकडो छे। वली केहवो छे। अज्ञान तेहीज तम अंधकार छे जिहां। विषय धन स्वजनादिक प्रति
बंध लक्षण चिक्खिल्लकर्द्दमतेणेंकरी सुदुरुत्तार अत्यर्थ उत्तारछे दोहिलोजेहनो। जरामरण योनि तेहिज संक्षुभित महामत्स्य ने जाइवे आइवे करी वि
लोड्यो चक्रवाल जालनो मांडलो जिहां। तथा सोले कषाय अनंतानुबंध्यादिक भेदें क्रोध मान माया लोभ तल्लक्षण स्वापद मकरादिक प्रकांड अत्यर्थ
रौद्रछे जिहां। वली केहवो छे। अनादि छे। तथा अनंत छे। अतनथी एहवो संसार सागर इण कहतां एहवो संसार समुद्र तरे जेह जिम सागरो

कालान्तरेण च्युताना मिहैवत्ति तिर्यग्लोके नर

प्रत्यायुः सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभावः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहैवत्ति तिर्यग्लोके नर
लोक मागताना मायुर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्व च
एव वपुः शरीर न्तस्य स्थिरसंहननता वर्णस्योदारगौरत्व रूपस्यातिसुन्दरता जाते रुत्तमत्व कुलस्याप्येव जन्मनो विशिष्टक्षेत्रकालनिराबाधत्व आरोग्यस्य प्रक
र्षः बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेषः प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृल्लोकः स्वजनः पितृपितृव्यादिः धनधा
न्यरूपो यो विभवो लक्ष्मीः स धनधान्यविभव स्तथा समृद्धिः पुरान्तःपुरकोशकोष्ठागारबलवाहनरूपा याः सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां

सोक्खाणि अणोवमाणि ततोयकालंतरचुआणं इहेवनरलोगमागयाण आउवपुवण्णरूवजातिकुलजम्मआरो
ग्गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधन्नविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाणसोक्खा

सुख केहवाछे अनोपम कह्या न
पमादिक जेणें प्रकारे बांधे आउखो सुरगण ने विषे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रतें ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न
जाय ते देवलोक थको कालांतरे चव्या चवीने इहां मनुष्यलोक मांहि आव्या तेहनो पूरो आउखो उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पचेंद्रिय पूरा जा
तिकुलजन्म जिहां जाति ते भली मातृपक्ष कुल ते भलो पितृपक्ष तिहां जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पंडिताई
मित्रजन सुहृलोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ धन्नादिलक्षण कह्या विभव संपदा घणो समृद्धि ते पुरान्तःपुर कोठार बल
वाहनरूप, समृद्धि संपदा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथी ऊपना सुख

य' समुदय: समूह: स तथा इत्येतेषां द्वंद्व स्ततः एषा ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी य शुभविपाक उत्तमो येषा न्ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्विति गम्य इहचेय षष्ठ्यर्थे सप्तमी तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषाः शुभविपाकाध्ययनेष्वाख्यायन्ते इतिप्रकृत अथ प्रत्येक श्रुतस्कन्धयो रभिधेये पुण्यपापविपाकरूपे प्रतिपाद्यतयोरेव यौगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर ता अविच्छिन्ना ये परम्परानुबद्धा के विपाका इतियोग: केषा मशुभानांशुभानांचैव कर्म्मणा म्प्रथमद्वितीयश्रुतस्कन्धयो: क्रमेणैवच भाषिता: उक्ता बहुविधा विपाका: विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण सम्वेगकारणार्थाः सम्वेगहेतवोभावा: अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्ते इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा दोत्तरक्रियया योग: एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थं प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्य नवरं सख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तत्र किल ए

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणचेवकम्माणभासिआबहुविवागा विवागसुयम्मि भगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेवियएवमाइयाबहुविहाविस्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति

ना विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषें कहिये। निरतर परंपराये घणाभवलगे बांध्या। अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भापाश्रुतस्कंधे क्रमे कह्या घणे प्रकारे, विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे संवेगकारणनाअर्थे संवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवमा दिक एणें अगे घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये। बिपाक श्रुतना परित्ता गणतीयें वाचना सूत्रार्थनो देवो संख्याता अनुयोग

कापदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वात्रिंशच्च सहस्राणीति ॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीना म्वादो दृष्टिवा
द: दृष्टीना वा पातो यत्रासौ दृष्टिपात: सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थ: तथाचाह दिट्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा
ख्यायते सेसमासओपंचविहेत्यादि सर्वमिदं प्रायो व्यवच्छिन्न तथापि यथादृष्ट किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिग्रहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

विवागसुअस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे
अंगे वीसंअज्झयणा वीसंउद्देसणकाला वीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखे
ज्जाणिअक्खराणि अणंतागमा अणंतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंविवागसुए
॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाए दिट्ठिवाएणं सव्वभावपरूवणया आघविज्जतिसेसमासउ पंचविहे प० तं०

द्वार जाव संख्यात संग्रहणी तेह अगार्थपणे इग्यारमे अंगे बीस अध्ययन वली २० उद्देशनकाला २० समुद्देसनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि
८४ लाख ३२ हजार पदने परिमाणे कह्या ।.संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्तापर्याय । जाव चरण ते साधुनां महाव्रत करण ते पिंड विशुद्ध्य
दिकनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये । तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अंग ॥ ११ ॥ अथ सूत्रं ते दृष्टिवाद दृष्टि ते दर्शन तेहनो वदवो कहिवोछे रि
ष्टा ते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषे कहिये तेह पूर्व संक्षेप थकी पांच प्रकारे कह्या ते कहे छे । परिकर्म १ सूत्र

गणितपरिकर्मवत् तच परिकर्मश्रुत सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्ममूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदत स्तु त्र्यशीतिविधं मातृकापदादि एतच्च सर्वं समूलोत्तरभे दं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्न एतेषाञ्च परिकर्मणां षट् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः

परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया सेकिंतंपरिकम्मे परिकम्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजह सेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे सेकितंसिद्धसेणियापरिकम्मे सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउयापयाणि एगठियपयाणि पादोठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिवद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूए पडिग्गहे संसारपडिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावद्धसेत्तंसिद्धसेणिआपरिकम्मे सेकिंतंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ स्यूंते परिकर्म। परिकर्म पूर्व साते भेदें कह्यो। तेकहेछे। परिकर्म शब्दे गणती गणना विशेष सिद्धश्रेणीनो परिकर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनो गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ चुता चुत श्रेणी गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग थकी जाणिवा। सिद्ध श्रेणी परि कर्मना वली १४ भेद कह्या। ते कहेछे। त्र्यासी भेदे मातृका पद १ एक स्थितिपद २ पाद अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ ससार प्रतिग्रह १२ नदावर्त्त १३ सिद्धावद्ध १४ एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म। अथ स्यूंते मनुष्य श्रेणी परिकर्म। मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्यो। ते कहेछे। मातृकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

जीविकसूत्रपरिपाट्येति अयमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोका म पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थ एतानि द्वाविंशति राजीविकगोशालकप्रवर्त्तितपाखण्डसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थिता न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्चेइयाइ इत्यादि सूत्रं तत्र 'तिकनइयाइ'ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिन्त्यन्तइत्यर्थ स्त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति यथा इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्रं तत. चउक्कनइयाइ'ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्त्यत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्र एवञ्चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीससुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेवसपुव्वावरेणं अट्ठासीयं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइं ।

सूत्रार्थ थको प्रत्येक छेदथको छेद्यो बीजा श्लोकनी अपेक्षा नकरे सत्समय जिनमतना सूत्रनो परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु भगादिक २२ सूत्र नथी छेद्या छेदेकरी नय जिहां ते अछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमगल मुक्किट्ठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस सूत्र आजीविक गोशालमतनी परिपाटीये पामीये । इच्चेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय सहित जीव अजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक त्रिराशिक पाखंडीना सूत्रनी परिपाटीये पामीये । ऋजुभग प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय सहित तेह स्वसमय जिनमतनो सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगलो पाछलो मिली २२ चोका अठ्यासी सूत्र होय ते भगवंते कह्या । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कह्यो

णि भयन्ति सेत्तंसुत्ताइंति निगमनवाक्य सेकिंतपुव्वगएइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते यस्मा त्तीर्थंकर: तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधरा: पुनःश्रुतरचना विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मतान्तरेणतु पूर्वगतसूत्रार्थः पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वंरचित पश्चादाचारादि नत्वेवं यदाचारनिर्युक्त्या मभिहितं सव्वेसिंआयारोपढमो इत्यादि तत्स्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहत्वक्षररचनां प्रतीत्य भणित पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वगत चतुर्दशविध प्रज्ञप्त तद्यथा उप्पायेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं प्रथमं तत्रच सर्वद्रव्याणा म्पर्यवाणा चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण मेकाकोटी आग्रणीयं द्वितीयं तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणा पर्यवाणा जीवविशेषाणां चाग्रं परिमाणं वर्ण्यत इत्यग्रणीयं तस्य पदपरिमाण षणवतिपदशतसहस्राणि वीरियति वीर्यप्रवाद तृतीयं तत्राप्यजीवानांजीवानांच सकर्मेतराणा वीर्यं प्रोच्यत इति वीर्यप्रवादं तस्यापि सप्तति: पदशतसहस्राणि परिमाण अस्तिनास्तिप्रवाद चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

सेत्तंसुत्ताइं । सेकिंतं पुव्वगय । पुव्वगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते । तंजहा उप्पाय पुव्वं अग्गणीयं वीरियं अ

कह्यो । अथ स्यूंते पूर्वनो त्रीजो भेद पूर्वगत। ते चौदह भेदें कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्व १ तीर्थं कर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिलो सूत्रार्थ भाख्यो तेमाटे पूर्व कह्यो । सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादक भाव अंगीकार करीने जेकह्यो तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाण १ वीजो अग्रणीय तेमाहि सर्वद्रव्यपर्याय जीवनो पग्र परिमाण पामिये तेहनो पद परिमाण ९६ लाख पद २ । त्रीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्य कह्या । पदसंख्या ७० लाख पद ३। चोथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां स्याद्वादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । पांचमो ज्ञानप्रवाद

स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेवनास्तीत्येवं प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवादं भणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद

मासम तन्मतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदस्वरूपगणाय्यात् तत् ज्ञानप्रवादं तस्मिन्पदपरिमाणं मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवादं षष्ठं सत्यसंयमः सत्यवचनम्वा

तयार सभेदं समतिपचस वर्ण्यंते तत्सत्यप्रवादं तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीषट्चपदानीति आत्मप्रवादं सप्तमं आयत्ति आत्मा सोनेकधा यत्र

नयदर्शने वर्ण्यंते तदात्मप्रवादं तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्यः कर्म्मप्रवादमष्टमं ज्ञानावरणादिका मष्टविधं कर्म्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि

र्भेदे रन्यैश्चोत्तरोत्तरभेदै र्यत्रवर्ण्यंते तत्कर्म्मप्रवादं तत्परिमाणं मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवमं तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूपं म्वर्ण्यंत

इति प्रत्याख्यानप्रवादं तत्परिमाणं चतुरशीतिः पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवादं दशमं तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाणं मेकापदको

टी दशचपदशतसहस्राणीति अवध्य मेकादशं वंध्यनाम निष्फल नवध्य मवंध्यं सफलमित्यर्थः तत्रहि सर्वेज्ञानतपः संयमयोगाः शुभफलेन सफला व

त्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अवंझं

तिहांमत्यादि ५। ज्ञान सविस्तार पणे कह्या पद संख्या एकूण एक कोडीपद ५। छठो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसंयम तथा सत्य वचन सभेदें कह्या ते सत्य

प्रवाद पद सख्या एककोडी छ पद ६। इति षट् पूर्व। सातमो आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदें आत्मा वर्णव्यो ते आत्मप्रवाद पदसंख्या २६ कोडी पद ७

आठमो कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनोप्रकूपणाकारी पद सख्या १ कोडी ८० हजार पद ८। नौमो प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो

पदसख्या ८४ लाखपद ९। दशमो विद्यानुप्रवाद तिहां अनेक प्रकारनी अतिशायिनी विद्या वर्णवीछे पद संख्या १ कोडी १५ हजार पद १०। इग्यारह

पर्यन्ते अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते अतोऽवंध्य तस्यच परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायु र्द्वादश न्तत्राप्यायुः प्राणविधानं सर्वं स भेद मन्येच प्राणानर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशाल त्रयोदशं तत्र कायिक्यादय. क्रिया विशालत्ति सभेदाः सयमक्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्त इति क्रियाविशालं तत्पदपरिमाण नवपदकोट्यः लोकबिन्दुसार चतुर्दशम तत्रास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा बिन्दुरि वाचरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाचरसन्निपातप्रतिष्टितत्वेनच लोकबिन्दुसार भणितं तत्प्रमाण मर्द्धत्रयोदशपदकोट्यइति उप्पायपुव्वस्सेत्यादिकाव्य नवरं वस्तुनिय तार्थाधिकारप्रतिवद्धो ग्रन्थविशेषो ध्ययनवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्म्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थ संग्रहपरा ग्रथपद्धतय श्चडाइति सेत्तं

पाणाउ किरियाविसालं लोगविंदुसारं १४ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० अग्गणिय स्सणंपुव्वस्स चोद्दसवत्थू वारसचूलियावत्थू प०। वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अठवत्थू अठचूलियावत्थू प०।

मो अबंध्य तिहां तप सयमना फल बध्यनथी अफलनथी एहवो वर्ण्यो पद सख्या २६ कोडो पद ११। बारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्व जीवनो कह्यो पद संख्या १ कोडो ५६ लाख पद १२। तेरमो क्रियाविशाल तिहां कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदें वर्णवी पद संख्या ८ कोडो पद १३। चौदमो लोक बिंदुसार लोकने विषे बिंदुसरीखो बिंदु सघलामांही उत्तम तेहनी पद संख्या साढी बारह कोडोपद १४। एतले पूर्वनो त्रीजो भेद वर्णवी कह्यो। प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कह्या। अग्रणी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बारे चूलिका वस्तु कह्या। वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कह्या। अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कह्या ४। ज्ञान प्रवाद

गाथस्य जिनधितत्वा द्वितिशेषं सूत्रसिद्ध मानिगमना अवरं संखेज्जायत्थुत्ति पञ्चविंशत्युत्तरे द्वेशते संखेज्जाचूलवत्थुत्ति चतुस्त्रिंशत् ॥ १२ ॥

यस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जाउनिज्जुत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउसंगहणीउ सेणंअंगठयाएवारसमेअंगे एगेसुयखंधे चउद्दसपुव्वाइं संखेज्जावत्थू संखेज्जाचूलवत्थू संखेज्जापाहुडा संखेज्जापाहुडपाहुडा संखेज्जाउपाहुडियाउ संखेज्जाउ पाहुडपाहुडियाउ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धाणिकाइया जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति

पूर्व तेहनो चूलिका छे ते पूठें कही छे । शेष थाकता दश पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूवनो पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परित्ता गणती वाचना छे । संख्याता अनुयोग द्वार उपक्रमादिक। संख्याती प्रज्ञप्ति । संख्याता वेढा। संख्याता श्लोक। संख्याती संग्रहणी। संख्याती निर्युक्ति सूत्रने विषे अर्थनी योजवी । तेह अङ्गार्थ पणें अङ्ग पणें बारमें अंगे एक श्रुतस्कंधने विषे १४ पूर्व। संख्याती २२५ वस्तु। संख्याता नान्हावस्तु ३४। संख्याता प्राभृतना अधिकार विशेष। संख्याता प्राभृतप्राभृत अधिकार विशेष। संख्याती प्राभृतिका। संख्याती प्राभृतप्राभृतिका । संख्याता पदनां शतसहस्र लाख पदने परिमाणे लिख्या छे ते पूठें। संख्याता अक्षर वर्ण। अनंतागमा अर्थना परिच्छेद। अनंता पर्याय अक्षर पदना भेद। परित्ता अनंतनही एतला २ सबेइन्द्रियादिक। अनंता स्थावर वनस्पति प्रमुख पांच थावर । एह पूर्व मांहि भाव पदार्थ शाश्वता द्रव्यार्थ पणे विच्छेद रहित छे यली पर्याय पणे समे २ प्रति

साम्प्रत द्वादशाङ्गविराधनानिष्पन्नं त्रैकालिकफलमुपदर्शयन्नाह इच्चेयमित्यादि इत्येत द्वादशाङ्गं गणिपिटकमतीतकाले अनन्ताजीवा आज्ञया विराध्य चतुरन्तं ससारकान्तारं अणुपरियट्टिसुत्ति अनुपरिवृत्तवन्त: इदहि द्वादशाङ्ग सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविध ततश्च आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्त ससारकान्तारं नारकतिर्यङ्नरामरविविधवृक्षजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थ: अनुपरावृत्तवंतो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्टामाहिलवत् उभयाज्ञया पुन: पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी काइव द्रव्यलिङ्गधार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभये विराध्येत्यर्थ: अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठान मेवाज्ञातया तदकरणेनेत्यर्थ: इच्चेयमित्यादि गता

निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंणाए एव विन्नाए एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंदिट्ठिवाए॥ सेत्तंदुवालसंगेगणिपिडगे ॥ १२ ॥ इच्चेइय दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतकाले अणंताजीवाआणाए विरा

अन्यथा पणे काडा कीधा छे निबद्धा सूत्र थकी गूंथ्या छे। हेतुदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाप्या जणाव्या भाव पदार्थ कहीजे। नाम भेद जणावे करी। निदर्शीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाणवा। एम विशेष पणे जाणवा। चरण ते पांच महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा। जिहां कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह बारे अग केहवाछे। गणी काह तां आचार्य तेहने पेटी रत्नकरंड समानछे। इत्यादि द्वादशाग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आज्ञाने विराधी खडी ने चार अत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो ससार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृतवत भ्रमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिडगप्रते व

र्थमेव नवरं परित्ताजीवाइति संख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियट्टतित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चेयमित्या
दि इदमपिभावितार्थं मेव नवर मणुपरियट्टिस्संतित्ति अनुपरावर्त्तिष्यन्ते पर्यटिष्यंतीत्यर्थः इच्चेयमित्यादि कंठ्य नवरं विइवयंसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्गं
तिकससारोल्लङ्घनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एव प्रत्युत्पन्नेपि नवर मय म्विशेषः वीइवयतित्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येवं नवरं वीवइस्संति
त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्न फल मुपतिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसगे ह्

हित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पणेकाले परित्ताजीवा आणाए
विराहित्ता चाउरतसंसारकंतार अणुपरियट्टंति इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अणागएकाले अणंताजीवा
आणाए विराहित्ता चाउरतससारकतारं अणुपरियट्टिस्सति इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतेकाले
अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं विइवइंसु एवंपडुप्पणेवि अणागएवि दुवालसगं

र्तमानकाले परित्तासख्याता जीव मनुष्य आज्ञाने विराधीने चातुरत ससार कांतार प्रति अनुपरावर्तें भमे छे। एह द्वादशांग गणिपिडगने। अनागत
भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञानें विराधीने चातुरत संसार कांतारप्रतें भमस्ये। एहवा द्वादशांग गणिपिडगप्रतें अतीतकाले अनताजीव आज्ञाने अराधी
ने चातुरत ससार कांतारप्रते पार पांमताहुआ। एम वर्तमानकाले पार पामे छे। एम भविष्यकाले पार पामस्ये। एह द्वादशांग गणिपिटक। नहो क
दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथी एमनहो। नहो किवारे अतीतकाले नासीत् नहुतो एमनहो। तथा भविष्यकाले तिवारे नहो होय एम नहीछेहडो

त्यादि द्वादशाङ्ग यन्नित्यलङ्घारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदैवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतर्हि भु विचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुवं मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत म्पञ्चास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव शाश्वत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शाश्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेप्य चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मह्रदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्बहिः समु द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रतं दृष्टान्त मनार्थं आह सेजहानामएइत्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास नित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्धेवेति एत्थणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्गे

गणिपिडगं णकयाइणात्थि णकयाइणासी णकयाइणनविस्सइ भुवंच नवति नविस्सतिय धुवेणितिए सासए अरकए अव्वए अवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच अत्थिकाया णकयाइ णआसि णकयाइ णत्थी

नही तेमाटे हुतो तोस्यूं। एह द्वादशांग पूर्वेहुंता हिवडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुंकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निश्चलछे वली नियतछे। सदाभावी पचास्तिकायनोपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शाश्वतछे समयादिकालनोपरे वली अचय पद्मद्रहने विषे गंगासिधुना प्रवाहनोपरे पंचा स्तिकायनोपरे वली अवस्थित जबूद्वीपनोपरें वली नित्य आकाशनोपरे सांप्रत दृष्टांत देखाडोयेछे। तेयथानाम जिम पंचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा रे अतीतकाले नही न हुती एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनही। तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही। एह पंचास्तिकाय हुती अतीत काले आगलिकाले होस्ये। वर्तमानकालेछे। ध्रुव नियत शाश्वत नित्य। एह पदार्थ वखाण्याछे। एणे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोगः तत्रभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवानता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्वस्तुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्म्मापेक्षया अनताभावाः अनताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तित्वनास्तित्वाभ्या म्प्रतिबद्धा इति व्याचक्षन्ते तथा ऽनन्ताहेतवः तत्र हि

णकयाइ ण भविस्संति भुविं भवंतिय भविस्संतिय धुवा णितिया सासया अक्कया अव्वया अवठि या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे णकयाइ ण आसि णकयाइणत्थी णकयाइणभविस्सइ भुविं च भवति भविस्सइय धुवे जावअवठिए णिच्चे एत्थणं दुवालसगे गणिपिडगे अणंताभावा अणंताअभा वा अणंताहेऊ अणताअहेऊ अणताकारणा अणताअकारणा अणंताजीवा अणताअजीवा अणंताभव

हुतो एम नहो। बर्तमानकाले किवारे नथो एमनहो। भविष्यकाले किवारे नहोय एमनहो। हुतो छे होस्ये एतले त्रिकालभाव। ध्रुवादिक पद सघला क हिया जिहां लगे अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहालगे कहिवो। एणे द्वादशांग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंता छे। अनन्ता अभाव पोतानो अपेक्षाये आपणपो परने विषे नहो एह अभाव तेहो अनन्ता। हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामे ते हेतु व स्तु पणि अनतछे। तद्विशिष्ट अर्थपणि अनतछे। हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेहो अनत छे। मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेहो अनत छे। जिम मृत्पिंडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेहो अनतछे। जोव अनतछे। अजीव स्याणुकादिक पुद्गल तेहो अनतछे। भव्य जीव अनंतछे। अभव्य

नोति गमयति जिज्ञासितधर्म्मविशिष्टानर्थानितिहेतु स्तेचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्म्मात्मकत्वात् तत्प्रतिबद्धधर्म्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्तगमपर्या यात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपक्षतो ऽनन्ता अहेतव स्तथाअनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतन्त्वादीनि घटपटादिनिवर्त्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकार णानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न्नहिमृत्पिण्डः पटनिवर्त्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा द्व्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्ठिता र्था इतरे संसारिण आघविज्जंती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद मप्रज्ञापनाख्य सर्वं न्तदत्रचर सध्येतव्यं किमवसानमित्याह जावसेकितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय म्विशेषः इहदुवेरासीपणत्ता इत्यभिलाप स्तत्रतु दुविहापन्नवणापन्नत्ता जीवपणवणा अजीवपणवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया अणंताअभवसिद्धिया अणंतासिद्धा अणंताअसिद्धा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंदुवालसंगंगणिपिडगं इति दुवेरासी पन्नत्ता तंजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकिंतंअरूवी

जीव अनन्त छे। सिद्ध अनंतछे। एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये। जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडीये। उपदेश करिये। द्वादशांग स्वरूप कहीने हिवे तेहीजमां बेराशी कहीछे तेकहेछे। जीव राशि अजीवराशि। अजीवराशि बेप्रकारे छे तेकहेछे। रूपी अजीव राशि। अरूपी अजीवराशि। सूंते अरूपी अजीवराशि अरूपो अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे। धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ आकाशा

गमं नवरं दंडओत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडओएवं ॥ अथानंतरप्रज्ञप्ता नां नारकादीना म्पर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमोसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाक्सर्वं काव्य नवरं तेणनिरया इत्याद्यनंच जीवाभिग

॥ वीए केवइयंखेत्तंउगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पन्नत्ता गोयमा इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्त रजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरि एगंजोयणसहस्सउगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्संवज्जेत्ता मज्झे अठसत्त रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणंतीसं णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरीकरी ते पर्याप्ता । छ माहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दडकना जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता भणिवा जिहालगे वैमानिकनो २४ मो दडक आवे तेहदडकनोगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइंदिया ४ मणुया १ वतर १ जोइस वेमाणियाय १ अहदडओ एव एह ठाणांगे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद बेबे कह्याछे पणि इहा सर्व कहिवो । हिवे २४ दडक मांहि पहिलो नारकीनोछे तेह नारकीने रहिवाना ठाम भगवंत आगलि गौतम स्वामी पूछेछे एणीयें हेभदंत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो क्षेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने वली केतला नरकावासाकह्या । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीजे विषे ८० हजार योजन उत्तरे आगलीछे जेहने एहवो १ लाख योजन बाहुल्य पणे जाडपणे पृथिवी पिडछे तेमाहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठे एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो जन पृथिवी पिड राखीये । इहा रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडाछे तेमाहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कह्याछे । तेनरकावासा मांहि वाटला बाहिर

मचूर्ण्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति तेच वृत्तत्र्यस्रचतुर स्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषाच मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकाबाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्विदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासंस्थानसंस्थि ताइति निरयसंस्थानव्यवस्था तत्रच बाहुल्यमङ्गीकृत्येद मभिधीयते अंतोवट्टेत्यादि उक्तंच सूत्रकृद्वृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये वृत्ता बहिरपि चतुरस्रा अधश्च क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता एतच्च संस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्तं तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टास्तु वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसं स्थानाभवन्तीति तत्रांतर्वृत्ता मध्ये शुषिरमाश्रित्य बहिश्चचतुरस्राः कुड्यपरिधिमाश्रित्य यावत्करणादिदं द्रष्टव्य यदुत अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता भूतलमाश्रित्य क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य सञ्चारिसत्वपादच्छेदकत्वात् अन्येत्वाहु स्तेषामधस्तनांशः क्षुरप्रद्वाग्रे उग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसंस्थानता तथा नित्यधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खताजोइसप्पहामेयवसापूयरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुब्भिगंधाकाऊअगणिवण्णाभाकक्खडफासादुरहियास इत्ति तत्र नित्य सर्वदा अन्धकार अन्धताकारक स्वहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव त्तमस्तमिस्र येषु ते नित्यान्धकारतमसः

तेणंणिरयावासा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा जावअसुभाणिरया असुभाउणिरएसुवेयणाउ एवंसत्तविभाणिय

चउखूणा नरकावासा बेप्रकारना छे। एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकाबाह्य तेमांहि आवलिका प्रविष्ट ते आठ दिशिने विषेछे ते वृत्त त्र्यस्र चतुर स्र क्रमे जाणिवा। एहमांहि इन्द्रक ते वाटला सीमंतादिक अने आवलिकाबाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अंतराले नाना संस्थान संस्थित छे। जिहांलगी महा अशुभछे नारकी वेदना भोगवेछे। एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहिवी जे बाहुल्य पण नरकावासा परिमाण पृथिवीयें जोइये तेगाथा

अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थः तमसस्तमिस्रा नित्यान्धकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यतआह व्यप गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणा ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पक्षन्ति पथ शब्दो वाय व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमांसानि शरीरावयवा स्तेषां यच्चिक्खिल्लं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलेपनेन सकृल्लिप्तस्य पुनःपुनर्लेपनेन तल भूमिका येषा न्ते मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रभृतीन्यौदारिकपंचेंद्रियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश रीरत्वान्नारकाणां तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्रप्रोच्यन्त इति अशुचयो मिश्राः आमगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थः अतएव परमदुरभिगधाकाजअगणिवसा भक्ति कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कर्कशः स्पर्शो येषांते कर्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढुं शक्यते वेदना येषु ते दुरधिसह्याः अतएवाशुभानरकाश्च शुभानरकेषु वेदना इति एवंसत्तविभाणियव्वत्ति प्रथमा ममुच्चता ससइत्युक्तंजजासुजुज्जइत्ति यत्र यस्याः पृथि व्या वाहल्यस्य नरकाणांच परिमाण युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तत्र तस्यां वाच्य तच्चेदं असीतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्ष रत्नप्र

भाउ जंजासुजुज्जइ असीयंबत्तीसं अठावीसंतहेववीसंच अठारससोलसगं अठुत्तरमेववाऊल्लं ॥१॥ तीसा

माहि कहेछे। पहिलीयें १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिंड। बीजीये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिंड। त्रीजिये १ लाख २८ हजार योज न पृथिवीपिंड। चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिंड। पांचमीयें १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिंड। छठीये १ लाख १६ हजार योजन पृथिवीपिंड। सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिंड। पहिलीये ३० लाख नरकावासा । बीजीये २५ लाख त्रीजीये १५ लाख। चौथीये १०

भायाम्वाहल्यमेव शेषासुभावनीयं तथा त्रिंशल्लक्षाणिप्रथमायां नरकावासाना मित्येवं शेषास्वपिनेयमिति आयासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौधर्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रे वक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसंग्रहः चउसठीइत्यादि गाथाः पंच एवचेहसूत्राभिलापोदृश्यः सक्करप्पभाएणंपुढवीएकेवइयंओगा

यपणवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिन्नेगंपंचूणं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीअसुराणं चउरासीइंचहोइनागाणं वावत्तरिसुवन्नाणं वाउकुमाराणछन्नउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं छण्हंपिजुवलयाणं वावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा वारसअठचउरोसयस

लाख। पांचमीये ३ लाख। छठीयें ५ ऊणाएक लाख। सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेंद्रना भवन ३४ लाख बलींद्रना ३० लाख बिहुंमिली ६४ लाख असुरकुमारना भवन। तथा धरणेंद्रना ४४ लाख भूतानेंद्रना ४० लाख बिहुंमिली ८४ लाख भवन नागकुमारनां। तथा वेणुदेवना ३८ लाख वेणुदालीनां ३४ लाख बिहुंमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारनां। तथा वेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुंमिली ९६ लाख वायुकुमार ना भवन। तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख बिहुंमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख। एक युगल। अमितगति नां ४० लाख अमितवाहनना ३६ बिहुंमिली ७६ लाख। दिसाकुमारना। बीजोयुगल। तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना। त्रीजुं युगल। हरिकांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुंमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना। चौथो युगल। घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुंना मिली स्तनितकुमारना ७६ लाख। पांचमो युगल। अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन। एह छठो युग

हित्ता केवइयानिरया पण्णत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरिएगंजोयणसहस्सं वज्जेत्तामज्झेतीसुत्तरे जोयणस यसहस्सेएत्थणं सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसंनिरयावाससयसहस्साभवतीति मक्खाया तेणंनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तसुगम नवरं गाहाहितिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्यर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

हस्सा पण्णाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तवि माणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणु त्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छठीए पुढ

ल एणी विधियें एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कह्या । हिवे १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर बिमान मांहि सर्वविमान नी संख्या कहैछे । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशानें २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेंद्रे ८लाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांतके ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार विमान । सहस्रारलगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से बिमान । आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुदेवलोकमिली ७०० बिमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमांहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयकें एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमान । सर्बमिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये त्रीजी बालुकप्रभा पृथिवीये चौथी पंकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छठी तमप्रभा पृथिवीयें सातमी तमतमा पृथिवीयें

श्रम स्तया वहेयतंसायत्ति मध्यमोत्वक्तः शेषास्त्यस्ता इति श्रथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादि सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि र्वृत्तानि

वीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिंत्राणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए श्रठुत्तरजो यणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवरि श्रद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविश्रद्धतेवन्नं जोयणसहस्सा इं वज्जित्ता मज्भेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचश्रणुत्तरा महइमहालया महा निरया पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए श्रप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्टाय तंसा

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी सख्या पिछाडी गाथामांहि कहीछे तिम कहिवी। सातमी नरकपृथिवीनो स्वरूप पूछेछे भगवंतश्रागलि। भग वत कहेछे। हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख श्रठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमांहि उपरि श्रर्द्धत्रेपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र योजन श्रवगाहीने ऊपर मूकीने वली हेठे पणि साढात्रेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पाथडो इहां सातमी तमतमा पृथिवीये नारकीना पांच श्रनुत्तर कहतां ते उत्तरे श्रागले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे श्रनुत्तर घणाज घणा मोटा महा नरका वासा कह्या तेकहे छे। पूर्वदिशे काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमो विचे श्रप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला त्र्यस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांहो श्रपइठाण ते वाटलो श्रने चिहुदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाछे श्रहेत्ति हेठे क्षुरप्र एतले छुरपलाने सस्थाने संस्थितछे। यावत् शब्दे चन्द्र सूर्य रहित कर्दमभूत श्रशुभ घणो भूंडो नरक छे । तथा श्रशुभ घणी भूंडी छे नरकनें विषें वेदना। वली

ति मष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रछन्दो गोपुररचितानि अन्येभणन्ति अडयालशब्दः किलप्रशंसावाचकः तथा अडयालकयवशमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभि
मा: प्रशंसार्हाःकृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथालाइयति यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपन उल्लोइयंति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सन्मृष्टीकरणं
ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेत यद्रक्तचन्दनं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना
भ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प
ञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुः कृष्णागुरु गंन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुंदुरुक्क चीडा तुरुष्कः
सिल्हक गन्धद्रव्यमेव एतानिच तानि डज्झंतित्ति दह्यमानानि चेतिविगृहः तेषां योधूमो मघमघेंतत्ति अनुकरणशब्दोयं मघमघायमानो बहलगन्धद्रत्यर्थः
तेनोद्धुराणि उत्कटानि तानि तथा तानिच तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषां गन्ध आमोदो
येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगंधिकानि तथा गंधवर्त्ति गंन्धद्रव्याणा गंधयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गंधवर्त्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया

भाग खडीयें करी धोल्यो तेणेकरी महित पूजितछे जेह। गोशीर्षचंदनविशेष रक्तचंदन तेणेकरि दर्दर निबिडपणे दीधाछे पचांगुलितला छाया भीतिने विषे
छाया दीधा छे। कृष्णागरु प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिल्हारस एह पूर्वोक्त डज्झंत दह्यमान दाझता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गंध तेणे करी
उत्कृष्ट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा। तथा सुगंधत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गंध तेणेकरी गंधित छे गंधवंत छे तथा गंधनी वाती तेह समान

रगधगुणानीत्यर्थः तथा अच्छानिआकाशस्फटिकवत् सण्हत्ति श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धदलनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् लण्हत्ति मसृणानीत्यर्थः घुटितपटवत् घट्ठत्ति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणयापाषाणप्रतिमावत् मट्ठत्ति मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणयापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकयेव अतएव नीरयत्ति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निम्मलत्ति निर्म्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विसुद्धत्ति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा च्चन्द्रवत् सकलंकानीत्यर्थ' तथा सप्पहत्ति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशन्ते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयत्ति समरीचीनि सकिरणानि अतएव सउज्जोयति सहद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्तन्तइति सोद्योतानि पासाईयत्ति प्रासादीयानि मनःप्रसत्तिकराणि दरिसणिज्जत्ति दर्शनीयानि तानिहि पश्य' चक्षुषा न श्रमङ्गच्छतीतिभाव. अभिरूवत्ति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिरूवत्ति प्रतिरूपाणि द्रष्टारंप्रति रमणीयानि नैकस्य कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायद्भवनादिपरिमाण यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोया पासा

छे अच्छआकाशनीपरें स्फटिकनीपरें। श्लक्ष्ण सूक्ष्म पुद्गलें करी नीपनो छे। लण्हत्ति सुकुमाल कोधा छे घूंट्या वस्त्रनी परें। घट्ठत्ति खरशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानीपरें घस्याछे। मट्ठति घणीसुकुमालशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानी परें मठाराछे एणे कारणें नीरज रजरहित निर्म्मल मलरहितछे। वितिमिरा अंधकार रहित छे। निष्कलंकछे। प्रभाकांति तेणे सहितछे। श्रीशोभा तेणेकरी सहितछे। उद्योत प्रकाश सहितछे। मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायोग्यछे। कमनीयछे देखणहारप्रतें रमणीकछे। एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणो असुरकुमार सूत्रने विषे कह्योछे। जे जे भाव गाथायें भण्यो ते

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतआह जंजंगाहाहि भणियं यद्यद्गाथाभिः चउसट्ठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यतहेत्याह तहचेववरणओत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणभंते नागकुमारावासापन्नत्ता गोय मा इमीसेणरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पिं एगजोयणसहस्स ओगाहेत्ताहेट्ठाचेगजोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झेअट्ठहत्तरे जोय

ईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं तहचेववरणओ केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असंखेज्जा पुढविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सात्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसयवज्जेत्ता मज्झे अठसुजोयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो। नागकुमारादिनो पणि तिमज बर्णनकरिवो। वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवत कहेछे हेगौतम। असख्याता पृथिवीकायिकावासा छे। एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असख्याताछे। एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यंचपचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुष्यसख्याता कहिवा। अने समूर्च्छिम मनुष्य असख्याता क हिवा। वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमतरावासा व्यंतरनारहिवानाठाम। भगवत कहेछे। हेगौतम एणीयें रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकाडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन कांड तेमाहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकांडछे तेह रत्न कांडनो योजन सहस्रनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

पसहस्से एत्यणं रयणप्पभाएचुलसीइनागकुमारावाससयसहस्सा पयत्ता तेणभवणाइत्यादीनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु
त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्छिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाणं

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा प० तेणंभोमेज्जानगरा बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा एवंजहाभवणवासीणं तहेवणेयव्वा णवर पडागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अभि रूवा पडिरूवा । केवइयाणंभंते जोइसियाणं विमाणावासा प० । गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवी ए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्यणं दसुत्तरजोयणसय बा हल्ले तिरिय जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

वर्जीने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगत्या इहा वाणव्यंतर देवना तिरिछा लोक माहि असख्यात भूमि संबधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भौमेय नगरवासा बाहिर वाटला मांहि चउरंसा चोखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहा पणि नवर एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्य रमणीकछे । देखवायोग्यछे । वली गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी सातसेनेउयोजन लगे ऊंचो उत्पतीने जईने इहा १० योजनना बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामाहि जोतिषीनो विषयव्याप्योछे

२॥

भंतेजोइसियाणंविमाणावासाइत्यादि अभुग्गयमुसियपहसियत्ति अभ्युद्गता सञ्जाता उत्सृता प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्ति स्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्कैतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि श्चित्राश्चि त्रवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्धूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तत्संसूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्पार्श्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयन्त्य स्ताश्च तद्वर्जिताः पताकाश्च छत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलिता इति तुगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरति गगनतल मम्बरमनुलिखद्‌भिलंघयच्छि

वासा अब्भुग्गयमुसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलि

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नेउयोजन तारामंडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते ऊपरि ८० योजने चंद्रमा ते ऊपरि ४ योजन नक्षत्र ते ऊपरि ४ योजन बुध ते ऊपरि ३ योजन शुक्र ते ऊपरि ३ योजन बृहस्पति ते ऊपरि ३ योजन मंगल ते ऊपरि ३ योजन शनैश्चर छे। तारा मंडलथकी शनैश्चर १०० योजन माहि सर्व जोतिषीछे। ज्योतिषीना देवता असंख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या। तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे। अभ्युद्गत कहतां ऊपना विहुदिशि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणिकरी शुक्ल ऊजला जेहनी एहवा। अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकांतादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनी भक्ति भाति तेणिकरी चित्रा चित्रवत छे। वली केहवा आश्चर्यवंत छे। वायरें आपावी विजय वैजयती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितछे। एतावता व्याप्तछे। वलो केहवाछे। अति ऊंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलंघताछे शिखर जेहना। घरनी भीतिने विषे जा

खरं येषान्ते गमनतलाऽनुलिखच्छिखरा: तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्ना: इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्य: जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सम्भवंत्येवेति तथा पञ्जरो शोलिताइव पञ्जरवहि:कृताइव यथा किलकिञ्चिद्वस्तुपञ्जरा द्वंशा दिमयप्रच्छादनविशेषाद्वहि:कृतमत्यतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपौतिभाव: तथा मणिकनकाना सम्बन्धिनो स्तूपिकाशिखर येषां तेमणिकनकस्तूपिकाका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुन्ड्राणि रत्नमयाश्चये अर्द्धचन्द्रा द्वाराग्रादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकातिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्वहिश्च श्लक्ष्णा मसृणाइत्यर्थ: तथा तपनीय सुवर्णविशेष स्तन्मय्या वालुकाया: शिकताया: प्रस्तट: प्रतरोयेषु तेतपनीयवालुकाप्रस्तटा: पाठान्तरे तु सपहशब्दस्य वालुकाविशेषणत्वात् श्लक्ष्णतपनीयवालुकाप्रस्तटा इतिव्याख्येयं तथा सुखस्पर्शा: शुभस्पर्शा

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्वमणिकणगत्थूभियागा वियसियसयवत्त पुंडरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतोवाहिंचसण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

लियां तेहना आंतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्केतनादिक छे। पांजरायकी उन्मीलित बाहिर कौधा जेहवा तेजपुंजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी थूभिका शिखर छे जेहना। वली केहवाछे विकासित जे शतपत्र कामल पुंडरीक छे द्वार देशने विषे। तथा भींतिने विषे तिलक छे। तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारविभागें छे तेणेंकरी चित्रित छे। अतो घरमाहि तथा बाहिर श्लक्ष्ण सुकुमाल छे। तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी वालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे। वली केहवाछे। सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे। शोभायमानछे। रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहां। वली केहवाछे। चित्तने प्रसन्नकरे वली देखिवा योग्यछे।

सूक्ष्मस्कंधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपंकानि कलंकविकलत्वात् कर्द्दमविशेषरहितत्वा द्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति येषां तानि निष्ककटछायानि सप्रभाणि प्रभावंति समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्तुतरप्रकाशनकारोणीत्यर्थ. पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणभंते कप्पेकेवइयाविमाणावासापन्नत्ता गोयमा बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्यं एतदेवाह एवईसाणाइसुत्ति एव गाहाहि भाणियव्वति बत्तीसअट्ठवीसा इत्यादि काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारेणेत्यर्थ. प्रतिकल्प भिन्नपरिमाणविमानावासा भणितव्या स्तद्वर्णकसूत्राणि जावतेणविमाणेत्यादि यावत्पडिरूवा न

या सप्पन्ना सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। सोहम्मेणंभंतेकप्पे केवइया विमाणावासा प०। गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा प०। एवईसाणाइसुअट्ठावीस वारस अट्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पन्नासं चत्तालीस छसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिन्निसयाइं गाहाहिंभाणि

मार शाणेंकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे। कलंक रहित छे। वली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे। प्रभा सहितछे शोभायमानछे। उद्योत सहितछे। वली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाछे। वली गौतमपूछेछे। हेभदंत सौधर्मे पहिले देवलोके केतला विमानावास विमानलचण घर कह्या। हेगौतम। बत्तीसलाख विमानावासा कह्या। एम ईशाने अठावीस लाख। सनत्कुमारे १२ लाख माहेंद्रे ८ लाख। ब्रह्मे ४ लाख। लांतके ५० हजार। शुक्रे ४० हजार। सहस्रारे ६ हजार। आनत प्रानत मिली ४००। आरण अच्युत मिली ३०० विमान। एह सैकडां जिम प

वर मभिलापभेदोयं यथा ईसाणेणंभंते कप्पे केवइयाविमाणावासापण्णत्ता गोयमा अठावीसं विमाणावास सयसहस्सा पण्णत्ता तेणंविमाणा जावपडिरूवा एवं सर्वं पूर्वोक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनंतरं नारकादिजीवाना स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति मुपदर्शयितु माह नेरइयाणंभंतेइत्यादि सुगम नवरं स्थिति र्नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकाल: अपज्जत्तयाणंति नारका: किल लब्धित: पर्याप्तका एव भवंति करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति तत: पर्याप्तका स्ततश्चा मपर्याप्तकालेन स्थिति र्जघन्यतो प्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका ना म्पुनरौघिक्येव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहूर्त्तोनाभवतीति अथ चेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभाग: नारयदेवातिरियमणुय गब्भयाजेअसखेज्जवासाऊ एतेउअपज्ज त्ता उववाए चेवबोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लद्धिंपप्पोववायकालेय। दुहओवियभइयव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणंति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति र्विशेष त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वंप्रज्ञापनाप्रसिद्ध मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक लक्षणेन गमनयेण नारकाणां नारकविशेषाणा तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियद्दूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा मौघिकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षणं गमत्रय यावदित्यर्थ: इहचैव मतिदिष्टसूत्राण्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा भदन्तकियतीतिस्थिति गौतम जघन्येन दश

यव्वं। नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसं

हिवे गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिवो। हिवे २४ दडकने विषे जेजीव तेहना आउखानो स्वरूप पूछेछे। हेपूज्य नारकीनो केतला काल लगे स्थिति आउखो काह्यो। हे गौतम सर्वथापि थोडोतो १० हजार वर्षनो स्थिति काहो। पहिली नरकनो अपेचायें उत्कृष्टीस्थिति तेत्रीस सागरोपमलगे क

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणां भदन्त कियन्तं कालं स्थितिः गौतम गौतमो भयथापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव अपर्याप्तका नां सामान्योक्तस्यैवांतर्मुहूर्त्तोनावाच्यैवंशेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकंदशाना मसुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चां प्रभेजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणां म हविधानां ज्योतिष्काणां अष्टप्रकाराणां सौधर्मादीनां वैमानिकानां च गमनय स्वाच्यं द्रुच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमान्युतानि गन्धव

सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को सेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरो वमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए एवजावविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं

छे। पणि ३२ सातमीनी अपेक्षाथी। वली पूछेछे। हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें केतला काल लगी स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टपणे पणि अंतर्मुहूर्त्त। पछे पर्याप्ता होय। पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नर कनी अपेक्षायें अतर्मुहूर्त्त उणी। उत्कृष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तउणी तेत्रीस सागरोपमनी। अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानो उणो जाणिवो। हे पूज्य ए गौत रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आउखो केतलो हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागरोपम। एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवन पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कृष्टो आउखो ग्रंथांतरथकी कहिवो। अनुत्तर विमान पूछेछे। हे भगवंत विजय वैजयंत ज यंत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही। गौतम जघन्यपणें ३२ सागरोपम उत्कृष्टपणें ३३ सागरोपमनी कही। ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

स्यादिष्वपि तथैवद्रष्टव्यते प्रज्ञापनायांत्वे कत्रिंशदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वय मिह समूह्यमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमै र्वाच्येति अ

नन्तर नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानींतच्छरीराणा मवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणभंतेइत्यादि कण्ठ्य नवर मेकेंद्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव

त्करणा द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेंद्रियजलचरादिपञ्चेन्द्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजीवराशिक्रमेण वाच्यानि कियद्दूरमित्यादि गब्भवक्कतिइ

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्नेणं वत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं सव्वठे अ

जहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । कतिणं भंतेसरीरा प० । गोयमा । पंचसरीरा प०

तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेण भंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प०

तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगब्भवक्कतियमणुस्सपचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं भंते

जघन्य नथी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीराधीनछे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श

रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री

औदारिक शरीर १ एम बेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चोरिंद्री औदारिक शरीर ४ पचेंद्री समूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज

पचेंद्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्छिम मनुष्य पचेंद्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रांत मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनो औदारिक शरीर

जाणिवो । औदारिकशरीरनी केवडी मोटी अवगाहनां कही हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनी अपेचायें । उत्कृष्टसातिरेक भा

त्यादि ओरालियसरीरस्येत्यादि तत्रोदार गाथानं तीर्थंकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवोरालमिति शालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य
अथवा उरालंस्वल्पप्रदेशोपचितत्वात् बृहत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुबद्धं यच्छरीर न्तत्समयपरिभाषया उरालमिति तच्च तच्छरीरश्चेति प्राकृत
त्वादौरालियंशरीरं तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतेनाधेनं शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना अथ औदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक
शरीररूपावगाहना सा भदन्त केमहालिया किंमहती प्रज्ञप्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागंगावत् पृथिव्याद्यपेक्षया उत्कर्षेण सातिरेकं योजनसहस्रमिति
बादरवनस्पत्यपेक्षये।त एवंजावमणुस्सेति दण्डकं यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा
हि एकेन्द्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनञ्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां बादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानां जघन्यत उत्कृष्टतश्चा ङ्गुलासंख्येयभागो वनस्पतीनां
बादरपर्याप्तानां मुत्कर्षतः सातिरेकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासंख्येयभागएव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तानां मुत्कर्षतस्तानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्री
णिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेन्द्रियतिरश्चां जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां संमूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्रं एव स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्च्छन
जानां पर्याप्तानां गव्यूतपृथक्त्वं गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषां षट्गव्यूतानि उरःपरिसर्पाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्र एवमेव संमूर्च्छनजानां योजन

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

णसहस्सं ॥

ओरी योजन सहस्र बादर वनस्पतीनो अपेक्षायें । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिक बेइन्द्री तेइन्द्री चौरिन्द्री पचेन्द्री ति
र्यंचनो मान तिमज निरवशेस समस्तपणे तरतमयोगे कहिवो जिहां लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो ३ गाऊ युगलियानो अपेक्षायें । हिवे

पृथक्त्वं भुजपरिसर्पाणां गर्भजानां गव्यूतपृथक्त्वम् संमूर्छनजानां धनुः पृथक्त्वं खचराणां गर्भजानां संमूर्छनजानां च धनुःपृथक्त्वमेव तथामनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्ति

कानां गव्यूतत्रयं समूर्छनजाना मङ्गुलासंख्येयभागः एषएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेचेति तथा कइविहेणमित्यादि स्पष्टं नवरं विविधा विशिष्टावा

क्रियाविक्रियातस्यां भव स्वैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वन्ति तदिति वैकुर्विक मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पचेंद्रियवैक्रियशरीर

नारकादीनामेवं जावेत्यादेरतिदेशादिदं द्रष्टव्य यदुत जइएगिंदियवेउव्वियसरीरए किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियश

रीरए गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरए नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोद्दृष्टव्यः यदिवायोः किंसूक्ष्मस्य वादरस्यवा बादरस्यैव यदि वादरस्य

किंम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पचेंद्रियस्य किंनारकस्य पंचेंद्रियतिर्यग्मनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वेषां तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तक

स्ये तरस्यच यदितिरश्चः किं सम्मूर्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिन्निगाउ

याइं । कइविहेणं भंते वेउव्वियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पचिंदियवेउ

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे छे। हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो। हे गौतम बे प्रकारे कह्यो। एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेक्षाये। बीजो

पचेंद्रिय वैक्रिय शरीर तेह पचेंद्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लब्धि विशेषे होय। भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती व्यंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा । ण

म्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मादिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं

स्सआहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं

तियमणुस्सआहारयसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे । जइगब्भवक्कंतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभू

मिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा । जइकम्मभूमिग किंसंखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय । गो

यमा नोअसंखेज्जवासाउय । जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्त

या । जइपज्जत्तया किंसम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी । गोयमा सम्मदिट्ठी नोमिच्छदिट्ठी नोस

अमनुष्यने आहारक नहोय । जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युत्क्रांतनेहोय वा समूर्च्छिमने होय । हेगोतम गर्भजने होय समूर्च्छिम ने नहोय । हेपूज्य गर्भजने

होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतनें होय । हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय । हे पूज्य क

र्मभूमिगत मनुष्यने होय तो संख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असंख्यात वर्षायुष्कने होय । हे गौतम संख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असंख्यात वर्षायुष्कने न

थी । हे भदंत संख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ता ने होय किंवा अपर्याप्तने होय । हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय । हे भदंत पर्याप्ता

ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने । हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय पर मिथ्यादृष्टीने नही । सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय । हेभदंत स

म्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असंयत अविरतीलोक संयतासंयत श्रावकने होय । हेगोतम संयतीने होय । पणि असंयतीने नहोय । संय

तीयस्यनिषेधः प्रथमस्यचा मुखा वाच्या एतदेवाह वयणाविभाणियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेनसर्वाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णान्युच्चारणीयानीत्यर्थः
आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरीरोगाहणापसत्तागोयमाइत्येतत्सूचितंजहणेणदेसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रम्भक
द्रव्यविशेषत स्च प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहौदारिकादेरिवां गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभावः तेयासरीरेणभतेइत्यादि एवं यावत्कार

सम्मामिच्छदिठी । जइसम्मदिठी किंसंजया असंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअसंजया नोसंजया
संजया । जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया । गोयमा पमत्तसजया नोअपमत्तसंजया । जइपम
त्तसंजया किंइड्ढिपत्ता अणिड्ढिपत्ता गोयमा इड्ढिपत्ता नोअणिड्ढिपत्ता । वयणाविभाणियव्वा आहारयस
रीरे समचउरंससंठाणसंठिए । आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेण पडिपुण्णारयणी । तेअ

ता संयतने पणि न होय । हेपूज्य संयतीनेहोय तो प्रमत्तसयती ६ ठागुणठाणवालाने होय किवा अप्रमत्त सयतीने होय । हे गौतम ६ ठागुणठाणवासी
प्रमत्तसंयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय । पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नथी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय । जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्राप्तने होय
किम्वा अनृद्धिप्राप्तने होय । हे गौतम शरीर करवानी लब्धिरूपऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय । अनर्द्धिप्राप्तने न होय । उक्तन्याये कह्या बचन सग
ला भणिवा । आहारकशरीर समचउरंस संस्थान संस्थित होय । आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा कांईकजणा हाथ अने संपूर्ण होयतो
१ हाथहोय । हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे । तेजस शरीर हे भदंत केतले प्रकारे कह्यो ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कह्यो । एकेंद्रियतेज

णा ग्रज्ञापनासत्कैकविंशतितमपदोक्ता तैजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेगगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपन्नत्ते तजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एव जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वट्ठसिद्धगअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवप चेंदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणभंते किसंठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसस्थान तदेव तैजसस्य कार्म्मणस्यच, तथा जीवस्य मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या मायामतस्तु जघन्येना ङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षेत ऊर्द्धमधश्च

सरीरेणं भंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे बितिचउपंचएवंजाव गेवेज्ज स्सणं भंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ बेइन्द्रीतेजस २ तेरिद्री तेजस ३ चौरिद्री तेजस ४ पचेंद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनो संठाण अनेक प्रकारनो । गौतम पहिले स्थाप बचने पूछेछे । मरणांतिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनो अवगाहनां केतलो । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणें । जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग । उत्कृष्ट ऊंचो नीचो हेठिला लोकातलगे । कार्मणशरीरनी पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिवो । उत्पत्तिसमये बेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चोरिंद्रियना तेजस शरीरनो अवगाहना उत्कृष्टलांबपणें तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दडकना तेजसशरीरनो अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते समोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानो केवडीमोटी तेजस शरीरोगाहना कहिवी। हे गौतम शरीरप्रमाणे जाणवो । विष्कंभपणें पिहुलपणें बाहल्यपणे जाडपणे औदारिकशरीर प्रमाणे तेजस शरीरनीं अवगाहना । आयामे

लोकान्ता लोकान्तयाध देकेन्द्रियस्य तत स्तत्रोत्पत्ति मङ्गीकृत्येतिभाव: एवं सर्वेषामेवैकेंद्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका लोकांतंयावत्ताय
स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरश्चाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्र कथं नारका त्पातालकलशस्य सहस्रमान कुड्यभित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्पद्यमानस्य
उत्कर्षेणतु अध: सप्तमीयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्पद्यमान मतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणयावत् ऊर्द्ध्वं स्पण्डकवनपुष्करिणींयावत् यतस्तयो
नीरक उत्पद्यते नपरत: मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मैशानदेवानां जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो
त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वींयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्तं ऊर्द्धमीषत्प्राग्भारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्पद्यन्ते अतो
नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथं पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थ मवतारे मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्पद्य
मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनोम्वा मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मपरिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र
हि जलसद्भावान्मत्स्येषूत्पद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रयावत् ऊर्द्धमच्युतयाव त्तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य मृत्वेहोत्पदामानत्वादिति आनता
दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते र्मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मप्यभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत
स्त्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रे उर्द्ध मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिदेवानां जघन्य

सरीरप्पमाणमेत्तो विक्खंभवाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं जावविज्जाहरसेढीउ उक्कोसेणं अहोलोइयग्गामा ॥

लांबपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे ।ग्रैवेयक देवताना तैजसनो अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कार्मणशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कृष्टो ॥ २

तो विद्याधरश्रेणीयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्द्धं तद्विमानान्येवेति एवं कार्म्मणस्या प्यवगाहना दृश्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्राशमाह । गेवेज्जगस्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्म्मउक्तो ऽधुना त्ववधिधर्म्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि र्भवप्रत्ययः चायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां चायोपशमिको मनुष्यतिरश्चामिति तथा विषयो गोचरो ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्द्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्व मेकाणे

त उद्धं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावअणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिजा णियव्वं । भेदेविसयसंठाणे अब्भिंतरेबाहिरेयदेसोही । ओहिस्सबुड्ढिहाणी पडिवाईचेवअपडिवाई ॥ १ ॥ कति

हेठें जिहांलगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुविमान । तिरछो मनुष्य क्षेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी अवगाहना । एमजग्रैवेयकनीपरे अनुत्तर विमानवासो देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परें कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी संठाण पणि तिमज जाणिवो । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ बीजो क्षायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीनें होय । क्षायोपसमिक मनुष्य तिर्यंचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ क्षेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथकी जघन्यपणें तैजस अनें भाषानें अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणें । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनंताणुकांत रूपीद्रव्यने जाणे । तथा क्षेत्रथी जघ न्य अंगुलनो असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खंड जाणें । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

कायमस्याणुकात रूपिद्रव्यजातं जानाति क्षेत्र जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति काल जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः सङ्ख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य चतुरोवर्णादीन् उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसङ्ख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा सस्थान मवधेर्वाच्य यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना मटहाका रो व्यन्तराणा झल्लर्याकृति र्ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कल्पोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचङ्गेर्याकारो ग्रैवेयकानां कन्याचोलकसस्थानो ऽनुत्तरसुराणां लोकनाल्याकृति रित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासंस्थानइति तथा अभ्यन्तरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्थंकरा यओहिस्सबाहिरा हुतोत्यादि तथा बाहिरेयत्ति के वधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

तजाणे। उत्कृष्ट असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणे। भावथकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायें अनता वर्णादिकना भेदजाणे। चोजोले अवधिनो सठाण कहेछे। नारकीनो अवधि त्रापाने आकारें। एतले नावने आ कारे। भवन पतिनो पल्यने आकारें। व्यतरनो पडहाने आकारें। ज्योतिषीना झालरने आकारें। बारेदेवलोकना देवतानो मादलने आकारें। ग्रैवेयक देवतानो फूलचगेरीने आकारें। अनुत्तर देवतानो लोकनालीने आकारें। एतले कन्यानो चोलोने आकारें। तिर्यंच मनुष्यनो अवधि नाना संस्थान। हिवे कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यतर वर्तेछे। तिहां नेरइयदेवतित्थ करायओहिस्सबाहिराहुति। इत्यादि। तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रका शित क्षेत्रने बाहिर होय। शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यंतरपणि होय। देशोहित्ति अवधि प्रकाशिवा योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः श्चायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्मानुभवलक्ष

णेतथा अब्भुवगमुवक्कमियत्ति द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादि

कां द्वितीयातु स्वयमुदीर्णस्यो दीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेंद्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्त्वौपक्रमिकी मेववेद

यंतीति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र सञ्जिन उभयतो ऽसञ्जिनस्त्व निदयेति एतद्द्वारवि

वरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रिंशत्तम स्वेदनाख्य म्पद मध्येयमिति अनन्तर वेदनाप्ररूपिता साच लेश्यावत् एव भवतीति

णंभंते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिणं वेयणं। सीतोसिणवेयणं। गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंन्नाणियव्वं।

साता साततेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो। सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो। तथा अब्भुवगमुवक्कमियत्ति। विहु

प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका। पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले। जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे। बीजो सेउदी

रणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे। तिहां तिर्यंच पचेन्द्रिय मनुष्य विहु वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे। तथा णीयाएत्ति। विहु प्रकारे

वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना। बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना। तिहांसञ्ज्ञी पचेंद्रियणीयावेदनावेदे। असञ्ज्ञीअणीयावेदनावे

दे। हेपूज्यनारकी जिम शीतवेदनावेदे। किवाउष्णवेदनावेदे किवाशीतोष्ण वेदनावेदे। गौतम नारकीनो वेदना एहपन्नवणाना पैंत्रीसमापदथकी भणिवो

लेश्याप्ररूपणायाह कइणभंते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनाया: सप्तदश षडुद्देशकं लेश्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिवहुत्वा दयैतोपि न लिखितमि ति ग्रतएवा वधारणीय मिति अनन्तरं लेश्या उक्ता: सालेश्याएवचाहारयंती त्याहारप्ररूपणाय अणतरायेत्यादि हारस्रोकमाह तत्र अणंतराय आहारे त्ति अनन्तराश्चाव्यवधानासाहारविषये अनतराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थ: तथा हारस्वाभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाच्या तथा पुद्गला न्न जा नत्येव एवकारा न्न पश्यतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्ताच्च वाच्यमिति तत्रादयद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनतराहारएत्ति उपपातचेत्रप्रा प्तिसमय एवा हारयतीत्यर्थ: ततोनिव्वत्तणयाएइति तत: शरीरनिर्वृत्ति: ततोपरियाइयणयत्ति तत:पर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गै: समन्ता त्यानमित्यर्थ: ततोपरिणा

कतिणंभंतेलेसाउ प० गोयमाछलेसाउ प० तं०। किराहा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का। एवंलेसापदंभा णियब्बं। अणंतरायआहारे आहाराभोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अज्झवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ याणं भंते अणंतराहारा तउनिव्वत्तणया तउपरियाइयणया तउपरिणामणया तउपरियारणया तउपच्छा

हेभदंत केतला प्रकारनी लेश्याकही। गौतम ६ प्रकारनी कही। तेकहेछे। कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शु क्ललेश्या ६ एम लेश्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो। हिवे आहारनो अधिकार पूछेछे। जीव आंतरा रहित आहार करेछे। आंतरे आंतरे तथा आहारनो आभोगपणो जाणीने ले तेआभोग। बीजो अनाभोग। आहारना पुद्गलने जांणके नजाणे। अध्यवसाय मनना परिणाम। तथा सम्यक्त। ए ह ५ पदकहिवा। नारकी जीव अनतर आहार करेछे। उपजिवाने क्षेत्रे जई उपनो तेणे समये करे। तिवारे पछे शरीरनोपजावे। तिवारे पछे आ

मयन्ति ततःशब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविउव्वणयन्ति ततःपश्चाद्विक्रिया नानारूपाइत्यर्थः हन्तागौतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषा मपञ्चेन्द्रिया
णां वक्तव्य मवरं देवाना पूर्वंविकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पश्चाद्विकुर्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव माश्नेनिर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवी
नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपयंभाणियव्वति यथा द्वाद्वारस्यप्रश्न उक्त स्तथा तदुत्तरंशेषद्वाराणिच भणद्भिः प्रज्ञापनाया चतुस्त्रिंशत्तम
मारिचारणापदाख्य मदमित्रभणितव्यमिति इदञ्चात्राहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाइयत्ति एतस्यवि
वरण नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभययापोति निर्वचन मेव सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिवर्त्तित एवेति
तथापोग्गलानेवजाणंतित्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषा नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमा
हारत्वात् तेषा मेव मसुराद्य स्त्रीन्द्रियांताः कथमेकेन्द्रिया अनाभोगाहारत्वा द्वित्रीन्द्रियाश्च मत्यज्ञानित्वा नजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति
चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुषानुपश्यति तथा तएवलोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यतीति व्यपदिश्यते च
क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च केचिज्जानति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहारं प्रक्षेपाहारञ्च जानन्त्यवधिना नपश्यंति चक्षुषा तथा
अन्ये न जानति तत्र नजानति प्रक्षेपाहार मत्यज्ञानित्वा त्पश्यति चक्षुषा तथा अन्ये नजानंति नपश्यन्ति लोमाहार निरतिशयत्वादिति व्यतरज्योति
ष्का नारकवत् वैमानिकास्तु ये सम्यग्दृष्टय स्ते जानति विशिष्टावधित्वात् पश्यतोचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष
ज्ञानयो स्तेषा मस्पष्टत्वादिति तयाअज्झवसाणेयत्ति दार नारकादीना मशस्ता प्रशस्तान्यसंख्येयान्यध्यवसायानीति तथा समत्तेत्ति दार तत्र नारकाः कि
सम्यक्त्वाभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्त्वमिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति त्रिविधा अप्येव सर्वेपि नवर मेकेंद्रियामिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहारग्रू

पणा कृता हारत्वायुर्बंन्धवता मेत्र भवतीत्यायुर्बंन्धप्ररूप णाग्राह कइविहेत्यादि तत्रायुषो बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषिकश्चप्रतिसमय स्वहुहीनहीनतरस्य द लिकस्या नुभवनार्थं रचना निधत्तमपोह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषित्ता मनुभवनार्थं वह्वल्पाल्पतरक्रमेण व्यवस्थापितमायु र्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थं ञ्जात्यादिनामकर्म्मणायु र्विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या दिनामकर्म्मणा मुदयो भवति नारकादिभवोपग्राहक चायुरेव यस्मा द्व्याख्या प्रज्ञप्त्यामुक्त नेरइएणभंतेनेरइएस उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तंभवति नारकायुः प्रथमसमयसंवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेंद्रिय जात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तल्लक्षण नामकर्म्म तेनसह निषित्तमायु र्गतिनामनिधिक्तायुः तथा ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्यातव्य तेन भाविनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्म्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्वणया हंतागोयमाएवञ्चाहारपदंभाणियव्वं। कइविहेणं भंते आउगबंधेपन्नत्ते गोयमाछव्विहे पन्नत्ते

हारलीधोछेय तेशरीरने विषे परिणमावे। तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा। तिवारपछे विकुर्वणा करे। एहवो प्रश्न पूछ्यापछे भगवंत कहेछे। एमहीज हेगौतम जिमतूकहेछे तिमजछे। इहा पन्नवणानो चोत्रीसमो आहार पद भणिवो। केतले प्रकारे हेपूज्य आऊखानोबंध कह्यो। हेगौतम ६ प्र कारे। तेकहेछे। जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थं थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १। एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे थाप्यो वाध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २। एम आऊखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकरी जे स्थि

चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेद स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पएसनामनिधत्तायुएत्ति प्रदेशाना अमितपरिणामाना
मायुः कर्म दलिकानां नामः परिणामोदयः तथात्मप्रदेशेषु सम्बन्धन स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्म्मणा म्वा यत्प्रदेशरूपं नामकर्म्म तत्प्रदेशनाम तेन
सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्ताउएत्ति अनुभाग आयुः कर्म्मद्रव्याणा तीव्रादिभेदोरसः सएव तस्य वा नामः परिणामो
नुभागनाम अथवा गत्यादीनांनामकर्म्मणा मनुभागबन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिध
त्तायुएत्ति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविध तत्कारण कर्म्माप्यवगाहना तद्रूपन्नामकर्म्मा वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा
युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि सष्ट अनन्तरमायुर्बन्धउक्तो ऽधुनाबद्धायुषा नारकादिगतिषूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायाह

तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आऊखानादलनो परिमाण तेहने साथे बांध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक
भेदें जेरस तेअनुभाग तेंहने साथे वाध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहा तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो
कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य कीतले प्रकारे आऊखानो वध कहिवो । हे गौतम ६ प्रकारे नारकीनो
आऊखानो बध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना
म निहत्तायु ५ । जिहांलगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहोवे ६ । एम २४ दडके ६ भेदे आऊखानो बध कहिवो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

निरयगतीणमित्यादि कण्ठ्यं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा मासोयदोयचउरो छम्मासाविरहकालो उएक्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवकारणा य त्तिर्यग्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तद्गर्भव्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु सामान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वट्टणेत्ति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्ता विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूद्

निहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए। नेरइयाणंभंते कइविहे आउगबंधे पन्नत्ते गोयमा छव्विहे पन्नत्ते। तंजहा। जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामओगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं। गोयमा जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं वारसमुहुत्ते। एवंतिरियगइ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिज्झयणा पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं ए

हिवे उपपात विरह च्यवन विरह आश्री प्रश्न करेछे। नरक गतिमांहि हे पूज्य केतलो उपपात विरह। हे गौतम नारकीनो जघन्य उपपात विरह १ समय एक नारकीनें उपनापछी बीजो१ समयने आंतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कह्योछे यदाह। चोवीसायमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा। मासोयदोयचउरो छम्मासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोही पिण सामान्यगति अपेक्षाये १२ मुहूर्त्त कह्या। उत्कृष्टपणे १२ मुहूर्त्त जाणवा। एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो। हिवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सीझवो कह्यो। हेगौतम जघन्य १ समये १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरथी उपजे। उत्कृष्ट ६ मासनो विरह। एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह। एक चव्यां पछे

पट्ट वज्र कीलिका वृषभश्च ऋषभश्च नाराचश्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तः प्रथमो स्थिबन्धः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्विती यः मर्कटयुक्तस्तृतीयः मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्ध श्चतुर्थं अङ्गुलिद्वयसंयुक्तस्य मध्य कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासंहननं स्पञ्चम यत्रा स्थीनि चर्मणा निकाचितानि केवलं तत्सेवार्त्तं स्नेहपानादीना नित्यपरिशीलनासेवा तया ऋत प्राप्त सेवार्त्तमितिषष्ट छण्हंसंघयणाणअसंघयणेत्ति उत्तरू पाणां षण्णां संहननानामन्यतमस्याप्यभावेन संहनिनो ऽस्थिसंचयरहिता अतएवाह नेवट्ठी नेवासीनि तच्छरीरके नेवच्छिरत्ति नेवशिराधमन्यः नेवण्हाउत्ति नेवस्नायूनीति कृत्वा संहननाभावः तत्सहितानांहि प्रचुरमपि दुःखं नबाधाविधायिस्यात् नारकास्त्वत्यंत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीरं

ठीहिं एवं सेसाणविग्गाउगाकरिसाणि जाव वेमाणियाणं। कइविहेणं भंते संघयणे पन्नत्ते। गोयमा छ व्विहे पन्नत्ते। तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवठसंघयणे। नेरइयाणं भंते किंसंघयणी। गोयमा छण्हंसंघयणाणअसंघयणी। णेव

बीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २। त्रीजो नाराच संघयण मर्कट सहित ३। चउथो अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबंध बीजेपासेकोली ४। पाचमो कीलिका अंगुलबेने संयुक्तने मांहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कीलिका संघयण ५। सेवर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवींटी के घृत तैलना सिचेंकरी पाम्यो ते सेवार्त्त संघयण ६। हिवें नारकी आश्री संघयण पूछेछे। हे भगवंत नारकीमांहि के संघयण पामिये। हे गौतम पूर्वोक्तछहुमांहि १ न्हनपामिये हाडनही नाडीनही मोटीनशानथी जेनारकीना पुद्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकांत अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनादेय अशुभ प्रकृतियीअसुंदर अमनोज्ञ

नोपपद्यते स्तम्भवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपोग्गलेत्यादि येपुद्गला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवैषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अ
प्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा अशुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया चिन्तयापि तेएवम्भूताः पुद्गला स्तेषा नारकाणां
असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कइविहेसंठाणेत्यादि तत्र मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच
यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्रं संस्थान तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसंवादिनो ऽधस्तु तदनुरूपंयत्तद्भवति तन्न्यग्रोध संस्थानं तथा
नाभितोऽधः सर्वावयवा श्चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदनुरूप नभवति तत्सादिसंस्थान तथाग्रीवाहस्तपादा श्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता
यत्र संक्षिप्त विकृतञ्च मध्ये कोष्ठं तत्कुब्जं संस्थान त्तथा यल्लक्षणयुक्तकोष्ठं चतुरस्रलक्षणोपेतं ग्रीवाद्यवयवहस्तपादश्च तद्वामन त्तथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा

णेवच्छिरा णेवण्हारू जेपोग्गलाअणिठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुन्ना अमणामा तेतेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति। असुरकुमाराणं किंसंघयणा पन्नत्ता। गोयमा छण्हंसंघयणाणं असंघयणी णेवठी णेवच्छिरा णेवण्हारू जेपोग्गला इठा कंता प्पिया मणुन्ना मणाभिरामा तेतेसिं असंघयण

अमनोरम। तेह नारकोने असंघयणपणे परिणमेछे। अस्थिसंचयरहित शरीर परिणामे परिणमे। हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कह्या। हे गौतम ६ संघयण मांहि असंघयणी हाडनथी शिरानथी छोटीनसनथी बडीनसनथी असुर कुमारना जेह पुद्गल पदार्थ छे तेह इष्ट वल्लभ छे कांतकम नीय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असंघयणपणें परिणमे। एम नागकुमार थकी मांडी जिहांलगे स्तनितकुमार दशमीनिकाय तिहांलगे असंघय

किंसंघयणी पन्नत्ता। गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं
त्ताए परिणमंति। एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्नत्ता। गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति। गप्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं छेवठ सं
घयणी गप्भवक्कंतियमणुस्साणं छव्विहे संघयणे प०। जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणि
याय। कइविहेणं भंते संठाणे पन्नत्ते। गोयमा छव्विहे संठाणे प० तं०। समचउरंसे १ णिग्गोहे २ सा
इए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ हुंडे ६। णेरइयाणं भंते किंसंठाणी प०। गोयमा हुंडसंठाणी प०। असुर

णी कहिवा। हिवे पृथिवी आश्रीपूछेछे। हेपूज्य पृथिवीनो कोण संघयण हेगौतम छेवठो संघयण। एम ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्छिम पंचेंद्रिय ति
र्यंच योनिया जीव सर्व छेवठे संघयणे कहिवा। गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यंचना ६ संघयण। संमूर्छिम मनुष्यनो छेवठो संघयण। गर्भजना छह संघयण जाणिवा
जिम असुर कुमार असंघयणी कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा। हिवे संस्थान आश्री पूछेछे। हेभदंत संस्थान केतलाछे।
हे गौतम संस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो। तेकहेछे। मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानहो अंगोपांग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १
तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमाठो होय ते न्यग्रोध परिमंडल २। तथा नाभियकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय
नाभि ऊपर मांठोहोय ते सादिसंस्थान ३। तथा ग्रीवा हाथ पाव समचतुरस्रहोय मध्यकोठो संक्षिप्त होय नानूहोय ते कुब्ज संस्थान ४। तथा लक्ष
णोपेत कोठोहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसंस्थान ५। तथा हस्त पादादिक अवयव अपमाणोपेत होय तेहुंडकसंस्थान ६। नारकीनो

बहुप्राया प्रमाणविसम्वादिनश्च तद्गुण्डमित्युच्यते कइविहेवेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्कामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेच

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा। पुढवी मसूरियसंठाणा प०। आउथिवुयसंठाणा पन्नत्ता। तेउसूइकलावसठाणा पन्नत्ता। वाऊपडागसठाणे पन्नत्ते। वणस्सई नाणासठाणसंठिया पन्नत्ता। बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पचेंदियतिरिक्खाहुंडसठाणा प० गब्भवक्कंतियाछव्विहसंठाणा। समुच्छिम मणुस्सहुंडसठाणसंठिया पन्नत्ता। गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहासठाणा पन्नत्ता। जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया। कइविहेण भंतेवेए प०। गो

हे पूज्य कोण सठाणकह्यो। हेगौतम हुंड सस्थान कह्यो। असुर कुमार देवता समचउरंस संस्थान संस्थित कह्या। जिहां लगी दशमी निकायना स्तनित कुमार आवे। पृथिवी मसूर धान्य ने सस्थाने संस्थित कही। पांणीनो सस्थान पाणीनोपपोटो कह्यो। अग्निनो सस्थान सूचीकलाप सूईना समूहनि सस्थानकह्यो। वायुनो पताका सस्थान कह्यो। वनसती अनेक प्रकारे संस्थितकही। बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्छिम पचेंद्री तियंचनो हुंड संस्थान कह्यो। गर्भज तिर्यंच ६ सस्थान संस्थित कह्या। समूर्छिम मनुष्यनो हुंड सस्थान। गर्भजमनुष्य ६ सस्थान संस्थित कह्या। जिम असुर कुमार समचउरंस संस्थान सस्थित कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा। हे भदंत वेद कैतले प्रकारे कह्या। गौतम ३ प्रकारे कह्या। ते कहेछे।

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह। तेणमित्यादि इह णङ्कारौ वाक्यालङ्कारार्थौ वत स्रो इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कप्पस्स समोसरण नेयव्वंति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेए प०। इत्थीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए। नेरइयाणं भंते किंइत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया प०। गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प०। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिस नपुंसगवेया। गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया। जावथणियकुमारा। पुढवीआउतेउवाऊवणस्सई बितिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा। गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया। तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्ससमोसर

स्त्रीवेद १। पुरुषवेद २। नपुंसकवेद ३। नारकोनो हे भदत स्यूं स्त्रीवेद किंया पुरुषवेद किवा नपुंसकवेद। हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुंसकवेदहोय। असुर कुमारने हे पूज्य किस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुसकवेद होय। गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुसकवेद नहोय। एम जिहां लगी स्तनितकुमार आवे तिहांलगी कहिवो। पृथ्वी आऊ तेज वायू वनस्पत बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पचेंद्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंसकवेद। गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी। जिम असुर कुमारमांहि पुरुषो बेवेद कह्या तिम वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक माहि कहिवा। तेणे काले चउथे आरे तेणें समयें जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमे अनुयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी। वाचनातरे

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणे त्वभिहितं कियद्दूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधर: प्रथम: सुधर्माख्य: सापत्य: शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थ: वोच्छिन्नत्ति सिद्धाइति तथाहि परिनिव्वुयागणहरा जीवन्ते नायएनजणाओ इंदभूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वएवीरेत्ति अयञ्च समवसरणनायक: कुलकरवंशोत्पन्नो महापुरुषश्चेति कुलकराणा म्वरपुरुषाणाञ्च वक्तव्यतामाह जंबुद्दीवेत्यादि सुगमं नवर म्पढमेत्थविमलवाहण चक्खुम जसमचउत्थमभिचंदे तत्तोयपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चंदजसचंदकान्ता सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय

णं णेयब्बं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी ए सत्तकुलगराहोत्था तं०। मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयंपभे विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेणदीवे भारहेवासे तीयाए उसप्पिणीए दसकुलगराहोत्था तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत सेणय कज्जसेणेभीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्पोक्त मे जेकह्योछे स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व कहिवो जिहांलगे पाचमो गणधर सुधर्मास्वामी सतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या दिके युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपत्ति रहित हुया। जम्बूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्सर्पिणीयें सात कुलकर हुया। मित्रदाम १। सुपार्श्व २। सुदाम ३। स्वयप्रभ ४। वली विमलघोस ५। सुघोस ६। महाघोस ७। सातमो। १। जम्बूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई अवसर्पिणीयें १०। कुलकर हुया। स्वयजल १। शतायु २। अजितसेन ३। अनतसेन ४। कार्यसेन ५। भीमसेन ६। महाभीमसेन ७। दृढरथ ८। दशर

राहोत्था तंजहा। उसभ्भ्रजियसंभ्भव भ्रभिणंदणसुमइ पउमप्पभ्भसुपास चंदप्पभ्भ सुविहिपुप्फदंतसीयल सिज्जसवासुपुज्ज विमलभ्रणंत धम्मसंतिकुंथु भ्रर मल्लिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवद्धमाणोय। एएसिंचउवी साएतित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तजहा। पढमेत्थवइरणाभे विमलेतहविमलवाहणे चेव। तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय॥ ११ ॥ सुंदरबाहूतहदीह। बाहूजुगबाहूलठ्ठबाहूय। दिन्नेयइददत्ते। सुदरमाहिदरेचेव॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे। रुप्पीभ्रसुदसणेयबोधव्वा। तत्तोयनंदणेखलु। सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ भ्रदीणसत्तुसंखे। सुदसणेनदणेयबोधव्वे। इमीसेप्रसप्पिणीए एएतित्थ

विधि बीजोनाम पुष्पदत ९। शीतल १०। श्रेयास ११। वासुपूज्य १२। विमल। अनंत १४। धर्म १५। शाति १६। कुथु १७। अर १८। मल्लि १९ मुनि सुव्रत २०। नमि २१। नेमि २२। पार्श्व २३। वर्द्धमान २४। एह २४ तीर्थकरना पूर्व भवनानामधेय एतले। जेणे भवें तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्यो। तेह भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयो। तेकहेछे। प्रथम आदिनाथनो जीव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तीथयो तिहां २० स्थानक आराधीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियो तिहाथी सर्वार्थ सिद्ध पहुता तिहाथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थंकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४ कहेछे। पहिलो वज्रनाभ १। विमल २। तथा विमलवाहन ३। ततः धर्मसिंह ४। सुमित्र ५। धर्ममित्र ६। सुदरबाहु ७। तथादीर्घबाहु ८। युगबाहु ९ लब्धबाहु १०। दिन्न ११। इन्द्रदत्त १२। सुदर १३। माहेंद्र १४। सिंहरथ १५ मेघरथ १६। रूपी १७। सुदसण १८। ततः नदन १९। सिंहगिरी २०।

यथामा तिसलादेवीय जिणमायत्ति सव्वोउगसुभाएछायाएत्ति सर्वर्त्तुकया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदया च्छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति

करांणंतुपुव्वन्नया । एएसिंचउव्वीसाएतित्थकराणं चउव्वीसंसीयाउहोत्था तंजहा । सीयायसुदंसणासुप्प न्नाय सिद्धत्थसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयंती जयंतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पन्नचंदप्पन्न । सूरप्पहअग्गि सप्पन्नाचेव । विमलायपंचवन्ना । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अभयंकरानिव्वुइकरी । मणोरमामणोह राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचंदप्पन्नातीय ॥ १६ ॥ एआउसीआउ । सव्वेसिंचेवजिणवरिंदाणं । सव्व जगवच्छलाणं । सव्वोउयसुखयछायाए । पुव्विंउक्खित्तामणु । स्सेहिंसाहट्ठरोमकूवेहिं । पच्छावहंतिसीयं । अ

अदीनप्रभू २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नदन २४ । एह अनुक्रमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एणी अवसर्पिणीये तीर्थंकरानां पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थं करानो २४ शिविका दीक्षानी पालखीछे । तेकहेछे । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयंती ८ । अपराजिता ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चंद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयंकरा १७ । निर्वृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिविकामांबेसीने दीक्षा लीधी तेदीक्षा शिविका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी असे जिनेंद्रनी । शिविका केहवीछे । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया युक्त आतापना रहित छे । तेह शिविका पहिले हर्षे करी रोमकूप जेहना खडा थया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिविका प्रते अमरेंद्र चमरा

शेष: तथा साहट्ठरोमकूवेहिंति सा शिविका यस्यां जिनोध्यारूढ: हृष्टरोमकूपे रुद्रुषितरोमभि रित्यर्थ: तथा चलचवलकुंडलधरत्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्य तथा स्वच्छन्देन स्वरुच्या विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरेंद्रादयइतियोग: गरुलत्ति गरुडध्वजा: सुपर्णकुमारा इत्यर्थ: तथा सव्वेविएगदूसेण निग्गयाजिणवराचउव्वीस नयणामअणलिंगे नयगिहलिंगेकुलिंगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्त्रेणेंद्रसमर्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

सुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदिआणं । वहंति सीअंजिणंदाणं ॥ १९ ॥ पुरउवहंतिदेवा । नागापुणदाहिणम्मिपासम्मि । पच्छासिमेणअसुरा । गरुलापुण उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसभोअविणीयाए । बारवईएअरिट्ठवरनेमी । अवसेसातित्थयरा । निक्खंताजम्मभूमीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविएगदूसे । णनिग्गयाजिणवराचउव्वीस । णयणामअन्नलिंगे । णयगिहिलिंगेकुलिंगे

दिक सुरेंद्र सोधर्मादिक नागेंद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेंद्र केहवा छे चल हालता चपल जे कुंडल तेहना धरणहार छे । स्वच्छन्द आपणी रुचीये करी विकुर्व्यां आभरण तेहना धरणहार छे। सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी वांद्या छे। एहवा थईने जिनेंद्रनी शिविकाजे उपाडे ॥ १९ ॥ आगळि चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडी असुरेंद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार वली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आदिनाथे विनीता नगरीयें दीक्षा लीधी। द्वारिकायें अरिष्टनेमीयें दीक्षा लीधी अने जाया सोरीपुरे। शेष २२ तीर्थंकर जन्म भूमियें दीक्षा लीधी ॥ २१ ॥ सघलाई तीर्थंकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधो तेणे सहित नीकल्या अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिंगे नही केवली तीर्थंकरने लिंगे कुलिंगी शाक्या

ष्क्रान्ता इत्यर्थः नचान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थंकरलिङ्ग एवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एक्कोभगववीरो पासोमल्लीयतिहितिहिसएहिं भय

वपिवासुपुज्जो छहिपुरिससएहिंनिक्खतो ॥ १ ॥ उग्गाणभोगाणं राइणाणचखत्तियाणच चउहिसहस्सेहिउसभो सेसाश्रोसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्थनिच

भत्तेण निग्गश्रोवासुपुज्जजिणो चोत्थेणपुणपासो मल्लीवियअठमेणरोसाश्रो ॥ ३ ॥ छठेणति सुमति रत्र नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थं तथा सम्वच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोन्नगवंवीरो । पासोमल्लीयतिहिँतिहिँसएहि । न्नगवंपिवासुपुज्जो । ळहिँपुरिससएहिँनि

क्खतो ॥ २३ ॥ उग्गाणन्नोगाणं । राइस्राणचखत्तियाणंच । चउसहस्सेहिँउसन्नो । सेसाउसहस्सपरिवारा

॥ १४ ॥ सुमइत्थणिच्चन्नत्ते । णणिग्गउवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमल्लीयच्चठ । मेणसेसाउछठेण ॥ २५ ॥

एएसिणचउव्वीसाए तित्थगराणंचउव्वीस पढमन्निरकादायारोहोत्था तजहा । सिज्जंसवंन्नदत्ते सुरिंददत्तेयइं

दिक ने लिंगे नही ॥ ५ ॥ भगवंत महावीर स्वामी एकला दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीक्षा लीधी । १२ वासुपूज्य ६

से पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २३ ॥ उग्रवंशना भोगवंशना राजाना तथा मोटा क्षत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीक्षा लीधी । शेष १९ । तीर्थ

कर १००० पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथ नित्यभक्ते दीक्षा लीधी । वासुपूज्ये चउत्थ भक्त १ उपवासे दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ मल्लिनाथ त्रि

हु उपवासे दीक्षा लीधी । शेष २० तीर्थंकरे छठ भक्त २ उपवासे दीक्षा लीधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिक्षा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयांस

१ । आदिनाथने श्रेयांसे पारणूं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्द्रदत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

य भिक्खा लद्धाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंबीयदिवसे लद्धाओपढमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्खा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमसं अमिय

ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणव्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयाविजयेय । तत्तो यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेञ्च ॥ २७ ॥ अपराजियविससेणे । वीसइमोहोइउसभसेणोय । दिन्नेव रदत्तधणे । बहुलोतहआणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एएविसुद्धलेसा । जिणवरभत्तीइपंजलिउडाउ । तकालंतंसमयं पडिलाभेईजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणभिक्खा । लद्धाउसभेणलोयणाहेण । सेसेहिवीयदिवसे । लद्धाउ पढमभिक्खाउ ॥ ३० ॥ उसभस्सपढमभिक्खा । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमन्नं । अमियरस रसोवमंआसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिंपिजिणाणं । जहियलद्धाउपढमभिक्खाउ । वहियवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ

पुष्पदन्त ९ । पुनर्वसु १० । नंद ११ । सुनंद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित १८ । विश्वसेन १९ । वीसमो ऋषभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेश्याना धणी जिनवरनी भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडी आगलिरह्या छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणीये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ परमेश्वरने १ वरसे भिक्षालीधी दीक्षानो पहिलो पारणूं थयो । शेषथाकता २३ तीर्थंकरने वीजेदिन पारणूंथयो । आदिनाथनो । इक्षुरसेकरी शेष २३ ने खीरथी परमान्नथी पारणूंथयो तेह परमान्न अमृतरसनी उपमानूंछे ॥ ३१ ॥ सघलाई जिनने जिहां प्रथम भिक्षालीधी तिहा देवता साढे१२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

रसरसोवमआसि ॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुक्खेत्ति बद्धपीठवृक्षा येषा मध: केवलान्युत्पन्नानीति बत्तीसाइ धणुयं गाहा निच्चोउगोत्ति नि
त्य सर्वदाऋतुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यर्तुक: असोगोत्ति अशोकाभिधानो य' समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छन्नोसालरुक्खेणति अवच्छन्न: शालवृक्षे

वह्नाउ ॥ ३२ ॥ एएसिंचउव्वीसाएतित्थगराणंचउव्वीसं चेइयरुक्खाहोत्था तंजहा । णिग्गोहसत्तिवन्नेसा
लेपियएपियंगुछत्ताए । सरिसेयणागरुक्खे । मालीयपिलुंकरुक्खेय ॥ ३३ ॥ तदुलपाडलजंबू । आसत्थेखलुत
हेवदहिवन्ने । णंदीरुक्खेतिलए । अंबगरुक्खेअसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुक्खेयधायईरुक्खे
सालेयवद्धमाणे । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइंधणुइं । चेइयरुक्खोयवद्धमाणस्स । णिच्चोउगो
असोगो । उच्छन्नोसालरुक्खेणं ॥ ३६ ॥ तिन्नेवगाउआइं । चेइयरुक्खोजिणस्सउसभस्स । सेसाणंपुणरुक्खा

शरीरप्रमाणे उंचोकरी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृक्ष पूज्यवृक्ष जेहेठे केवलज्ञान ऊपनो ते कहेछे। आदिनाथने न्यग्रोध १। वडना पेडनीचे केवलज्ञान
ऊपनो एमअनुक्रमे २४ जगे कहिवो। सप्तपर्ण २। शालवृक्ष ३। प्रियालु ४। प्रियगु ५। छत्रवृक्ष ६। सरस ७। नाग ८। मालवी ९। पीलुख १०। टीबरू
११। पाडल १२। जवू १३। पीपल १४। दधिपर्ण १५। नंदीवृक्ष १६। तिलक १७। आम्बा १८। अशोक १९। चंपा २०। बकुल २१। वेतस २२। धातकीआवला
२३। शालिवृक्ष २४ वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृक्ष २४ जिनना कह्या ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैत्यवृक्ष जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांवेसी भगवतवर्द्धमानस्वामी
व्याख्यान करे। नित्य बारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृक्ष शालवृक्षे करी व्याप्त एतले अशोकवृक्षने ऊपर शालवृक्षछे। आदिनाथनो चैत्यवृक्ष ३ कोस ऊंची एतले

महापउमो हरिसेणोचेवरायसद्दूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुद्दोशिवोमहसिरोय अग्गिसिहोयदसरहो न

भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिमायरोहोत्था तंजहा । सुमंगलाजसवती भद्दासहदेवी अइरा सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्दीवे० । बारसचक्कवट्टीहोत्था तजहा । भरहे सगरेमघवं । सणंकुमारोयरायसद्दूलो । संतीकुंथूयअरो । हवइसुभूमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउमो । हरिसेणोचेवरायसद्दूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिंबारसण्हंचक्कवट्टीणं बारसइत्थिरयणाहोत्था तजहा । पढमाहोइसुभद्दा । भद्दसुणंदाजयायविजयाय । किण्हसिरीसूरसिरी पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लच्छिमईकुरुमई इत्थीरयणाणणामाइं ॥ जंबूद्दीवे० नववलदेवनववासु

जम्बूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति मातायई ते कहेछे । सुमंगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६ देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहलो चुलणी १२ ॥ जम्बूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्त थया ते कहे छे भरत १ सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा मांहि सिंह समान शांतिनाथ ५ । कुंथु ६ । अर ७ । सभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिसेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त १२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न थया ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुधरा ९ देवी १० ४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जम्बूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता थया

वमोभणिओयवसुदेवोत्ति ॥ १ ॥ जंबूद्वीवेत्यादि दशाराणां वासुदेवाना मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवानां दशारमण्डलामीति पूर्वमुद्दिश्यापि दशारमण्डलव्यक्तिभूताना तेषा विशेषणार्थमाह त यथेत्यादि तद्यथेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डणाइति तत्रदशाराणा वासुदेवकुलीनप्रजाना मंडना. शोभाकारिणो दशारमण्ड ना उत्तमपुरुषाइति तीर्थंकरादीना चतुःपंचाशत् उत्तमपुरुषाणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तीर्थंकरचक्रिणां प्रतिवासुदेवानां च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

देवपितरोहोत्था तंजहा । पयावईयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहासिरोय । अग्गिसिहोयदसरहो । नवमोभणि

ओयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्दीवेणं० । णववासुदेवमायरोहोत्था तंजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया

यअम्बिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्दीवेणं ० । णवबलदेवमायरोहोत्था तंजहा ।

भद्दातहसुभद्दाय । सुप्पभायसुदंसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ नवमोवसुदेव ९॥ १ ॥ जम्बूद्वीपना भरत ने विषे वर्त्तमान काले ९ वासुदेवनी माता थई तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकई वीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे ९ बल देवनी माता कहेछे ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयती ६ जयती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे एणी अवसर्प्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मडल थया ते कहे छे। उत्तम

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् ओजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शारीरबलोपेतत्वात् यश स्विनः पराक्रम प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायंसित्ति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएवकान्ताः कान्तियोगात् सौम्या अरौद्राकारत्वात् सुभगा जनवल्लभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुष्यरूपत्वात् सुरूपा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभ सुख स्वा सुखकरत्वा च्छील स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानांकान्ता अभिलाष्या येते तथा ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारयः ओघबलाः प्रवाहबलाः अ व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः शेषपुरुषबलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबला. अनिहता निरुपक्रमायुष्कत्वा दुरोयुद्धेच भूम्यामपातित्वात् अपराजिता

वलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवदसारमंडलाहोत्था तजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगम सव्वजणणयणकंता ओहवला अतिवला महावला अनिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते मांहि वर्त्ति ते माटे वली मध्यम पुरुष तीर्थंकार चक्रावर्त्त तथा प्रतिवासुदेवनी अपेचाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त ओजस्वी मनो बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर थी वर्चस्वी शरीर सम्बधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कांतिवान् रुद्राकार नही सहुने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानी सहुने सुखकारी सुखे सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कांत देखिवा योग्य बल जेहनो तूटे नही अति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वेरीयें पराभव्या न जाय शत्रुनामर्द्दक रिपु सहस्रना माननें मथनहार नम्र

स्तैरेवशत्रूणा मपराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्वांछितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा
त् अमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रबलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कोमलप्रलापश्चा ॥
लापो हसितच येषान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषशोका दविकार मेघनादव द्या मधुरं श्रवणसुखकर मतिपूर्णं मर्थप्रतीतिजनकं
सत्य मवितथ म्वचन म्वाक्य येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लक्षणानि
मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्क्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यंजनगुणो
पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णाया द्रोण्यां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाण स्या त्तदा स पुरुषो मानप्राप्त

णुक्कोसा अमच्छरा अचपला अचंडा मियमंजुलपलावहसियगंभीरमधुरपडिपुण्णसच्चवयणा अब्भुवगय ॥
वच्छला सरखा। लक्खणवंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

विषे दयावंत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करी धैर्यवान निष्कारण कोप रहित मित ते थोडो मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बोलवो अने हसिवो छे
जेहनो वली गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सुखकारी प्रतिपूर्ण अर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो विघटे नही एहवो छे वचन जेहनो तथा शरणाग ॥ भ
तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेस्वस्तिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक
द्रोण परिमाण शरीरनो उंच पणो उन्मान ते अर्द्ध भार परिमाणता प्रमाण ते अठोत्तर सो अंगुलनो ऊंच पणो तेणे मान १ उन्मान २ प्रमाणे ३

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु
च्छ्रय: मानोन्मानप्रमाणै: प्रतिपूर्णमन्यूनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दर निखिलावयवप्रधानमगशरीरं येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका
रमरौद्रमवीभत्सम्वा कातंदीप्तं प्रियंजनानां प्रमोदोत्पादकं दर्शन रूप येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमसृणा: प्रयोजनेष्वनलसात्रमर्षणावा अपराधिष्वपि
कृतक्षमा: प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आज्ञाविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदु:साध्यसाधकत्वा दण्डप्रचार: सैन्यविचरण येषान्ते तथा गम्भीराश्चल
क्ष्यमाणांतर्वृत्तिलेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्तत: पदद्वयस्य कर्म्मधारय: प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोवृक्षविशेषो ध्वजा
येषान्ते तालध्वजा: वलदेवा उद्विद्धउच्छ्रितो गरुडलचित: केतु र्ध्वजो येषान्ते उद्विद्धगरुडकेतवो वासुदेवा: तालध्वजाश्च उद्विद्धगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विद्ध
गरुडकेतव: महाधनुर्विकर्षका: महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा महासत्वसागरा: दुर्जरा रणाङ्गणे तेषां प्रहरतां केना

तपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पयारा गंभीरदरसणिज्जा तालद्धउव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकड्ढया

करो प्रतिपूर्ण अन्यून। गर्भाधानथको रूडोविधिये करो भलो नीपनोछे सर्व शरीरावयवें करी सुंदर शरीर जेहनो। चद्रमाने समान सौम्य शरुद्रछे तेजा
कार कात दीप्तिवत। प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनछे जेहनो। कार्यने विषे आलसी नही अथवा अमर्ष रहित। प्रचड दु:साध्यने साधे एहवोछे दडप्रचार
सेनानो विचरवो जेहनो। गभीर कल्याेनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनो। तालवृक्ष ध्वजाछे जेहने तेतालध्वज गरुडनो रूपछे ध्वजाने विषे
ध्वजा ऊचो करोछे जेणे। वलदेवने आगेतालध्वज होय वासुदेवने आगे गरुडध्वजहोय। तथामहाधनुषना खाचणहार। महासत्व लक्षण जलना

पि धन्विना धारयितु मशक्यत्वात् धनुर्धराः कोदण्डप्रहरणा धीरेष्वेवैते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्तिं स्तत्प्रधानाः पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्न वज्रन्तस्य महाप्राणतया विघटका अङ्गुष्ठतर्ज्जनीभ्या चूर्णका महारत्नविघटका वज्रहि अधिकरण्यां धृत्वा अयोघनेना स्फोट्यते नच भिद्यते तावेवभिनत्तीति दुर्भेद तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसग्राम यिपो र्म्महासैन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयंति वियोजयति ये ते महारचनाविघटका' पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अर्द्धभरत स्वामिनः सौम्या नीरुजः राजकुलवंशतिलका' अजिताः अजितरथाः हलमुशलकणकपाणयः तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते बलदेवा येषान्तु कणकाबाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्खं पाञ्चजन्याभिधान चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी सञ्ज्ञा लकुटविशेषः श

महासत्तसाञ्ग्ररा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा ऋद्ध भरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । ऋजियाऋजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा

समुद्र सरीखा समुद्र । रणांगणे दुर्धर कोईथी वास्यानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्तछे । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्ति तेणे करी प्रधान पुरुषछे बडाकुलना उपना । महारत्न वज्रने अंगूठें करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खंडना स्वामी । सौम्य अत्यत ठंढा । राजकुलने वंशने विषे तिलकसमान अजितकेहथी जीप्या नथी । जेहनारथकेहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते बलदेव । अने कणककहीवाणछे हाथने विषे जेहने ते वासुदेव । शख पाचजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल विशेष नंदकनामा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजलो सु

लपोतकौशेयवासस: प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरदीप्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा नरपतय: तन्नायकत्वात् नरेन्द्रा: परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उ

त्क्षिप्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्पा' देवराजोपमा अभ्यधिक शेषराजभ्य, राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमाना' नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणन नि

गमनार्थ कथ तेनवे याह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासुदेव नवबलदेवा इति तिविठ्ठूय यावत्करणात् दुविठ्ठूय सयभुपुरिसुत्तमेपुरिससीहे। तहपुरिसपुंडरीये

दत्तेनारायणेकण्हेत्ति॥ १॥ अयलेविजयेभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आनंदेणंदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेत्ति॥ २॥ कित्तीपुरिसोणंति कीर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति मह

रायकाणगात्थू सातथोपोयणवरायगिह कायंदोकोसंबो महिलपुरोहत्थिणपुरंच तथा गाभिजुएसगामे तहरायपराहंओरंगे भज्जाणुरागगोट्ठो परइड्ढीमाउ

याइयंति तथा अससगोबेतारए मेरएमहुकेटभेनिसुभेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासंधेत्ति॥ ३॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तोपुरिसाणवासुदेवाण सव्वेवि

रवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाभाय

रोहोत्था तजहा। तिविठ्ठूय जावकण्हे अयलो जावरामेय अपच्छिमे एएसिणं णवण्हं वलदेववासु

मांहि वृषभ समान छे पाछो भार वाहवा समर्थपणां थो। इन्द्र समान छे। अन्य राजा थको अधिक राजतेज लक्ष्मीयें पदीप्तमान छे। नीला अने

पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दोनु भाइ होय राम तेबलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुभाई होय। एणीचोवीसीये ९ बलदेव

९ वासुदेव थया तेकहे छे। त्रिपृष्ठ १। प्रथमथी यावत् शब्दे द्विपृष्ट २। स्वयम्भू ३। पुरुषोत्तम ४। पुरुषसिंह ५। पुरुष पुंडरीक ६। दत्त ७। नारायण ८

कृष्ण ९ इहांलगे जाणवा॥ अचल १। यावत् शब्दे विजय २। भद्र ३। सुप्रभ ४। सुदर्शन ५। आनंद ६। नंद ७। पद्म ८। राम ९। एहबलभद्र जाणि

देवाणं पुव्वभविया नवनामधेज्जाहोत्था तंजहा । विसभूईपव्वयए धणदत्तसमुद्ददत्तइसिवाले । पियमित्तललि यमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वभवेआसिवासुदेवाणं । एत्तोबलदेवाणं जहक्कमंकित्तइ स्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥ एएसिंनवण्ह बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियानवधम्मायरियाहोत्था तजहा । संभूएयसुभद्दे सुदंसणेसेयकण्ह गगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणवासुदेवाणं । पुव्वभवेएआसि जत्थनियाणाइं कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणंनवण्हं वासुदेवाण पुव्वभवे नवनियाणभूमीउहो

वा॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ९ नामधेय कहे छे। विश्वभूति १ प्रवतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुन र्वसु ८ गगदत्त ९। एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया। हिवे बलदेवना नाम कहे छे। विश्वनन्दी १। सुबधु २। सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५ वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९। एह ९ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे छे। सभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेया श ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ द्रुमसेन ९ धर्माचार्य थया कोर्त्तिपुरुष ९ बलदेववासुदेवना। जिहां नियाणाकीधा तेणे समये ९ पूर्वभवने विषे नियाणा भूमि थई ते कहे छे। मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावत्थी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हथणापुर ९

चक्कजोही सव्वेविक्कयासचक्केहिंति अणियाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा उद्धंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामीत्ति आगमिस्सेणंति आगमिष्यता कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिष्यता भविष्यता मध्ये सेत्स्यतीति जंबूद्वीपैरवते अस्या मवसर्प्पिण्यां चतुर्विंशति स्तीर्थंकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

त्या तंजहा । मक्कराजावहत्थिणाउरंच एतेसिणंनवराह वासुदेवाणं नवनियाणकारणाहोत्था तंजहा । गावी जुवे जाव माउच्चा । एएसिं नवराहंवासुदेवाणं नवपक्किसत्तूहोत्था तजहा । च्यासग्गीवेजावजरासंधे । जा वसचक्कोहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयछठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए कराहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥ च्यणिदाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा । उद्धंगामीरामा केसवसव्वेच्यहोगामी ॥ ५८ ॥ च्यठंतकडा रामा एगोपुणबंभलोयकप्पम्मि । एक्कोरेगब्भवसही सिज्झिस्सइ च्यागमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्दीवे० एरवए

लगे जाणवो । एह वासुदेवना ९ नियाणाना कारण थया ते कहे छे । गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तंभ २ संग्राम ३ स्त्रीपराभव ४ रंग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७ परऋद्धी ८ मातापराभव ९ । एह वासुदेवना ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देंतारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बलि ६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कीर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रेकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे । पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण ३ जीये गयो । बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार छे उंच गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थको माडी पहिला अतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५मे ब्रह्म देवलोके गयो ।

रेणाह तद्यथा चंदाणणंगाहा चंदाणणंसुचंदं अग्गिसेणंचनंदिपेणञ्च क्वचिदात्मसेनोप्यय दृश्यते ऋषिदिवं व्रतधारिणञ्च वंदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा ॥
वंदेयुक्तिसेनं क्वचिदयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवोच्यते अजितसेनं क्वचिदयमतायु रुच्यते तथैव शिवसेन क्वचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिसेति वुद्धंवावगततत्वञ्च
देवशर्म्माण देवसेनापरनामक सततंसदावंद इति प्रकृतं निक्षिप्तशस्त्रंच नामांतरतः श्रेयांस असजलं गाहा असंज्वल जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजलं वंदेअनंत
जिन ममितज्ञानिन सर्वज्ञमित्यर्थः नामांतरेणायं सिंहसेनइति उपशांतच उपशान्तसञ्च धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनच अइपासंगाहा अतिपार्श्वच सुपार्श्व

वासे इमीसेउसप्पिणीए चउव्वीसंतित्थगराहोत्था तंजहा । चंदाणणंसुचंदं अग्गीसेणंचनंदिसेणंच । इसिदिं ॥
सवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । बुद्धंचदेवसम्मंसिद्धं
निखित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ असंजलंजिणवसहं वंदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतंचधुवरयं वंदेखलुगुत्तिसे

१भव वासना अंतरथी मोच जास्ये जंबूद्वीपने विषे ऐरवते एणी अवसर्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चंद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नंदिसेन ४ ॥ भा
ऋषिदिन्न ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुछु । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम शतायु । शिवसेन
१० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवो निक्षिप्त शस्त्र बीजो नाम श्रेयांश १२ ॥ ६१ ॥
असंज्वल १३ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ वांदो अनंतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिंहसेन उपशांत १५ । कर्मरज रहित वांदो गुप्तिसेन १६ ।

देवेश्वरवंदितंच मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं चीणदुःखंश्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे चीणरजस मग्निपु
त्रंच व्यवकृष्टप्रेमद्वेषं च वारिषेणं गत सिद्धमिति स्थानान्तरे किञ्चिदन्यथा प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता स्तुविंशतिः एवमिदं सर्वं

॥ णच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेसरवंदियंचमरुदेवं । निव्वाणगयंचधरं खीणदुहंसामकोठंच ॥ ६३ ॥
जियरागमग्गिसेणं वंदेखीणरयमग्गिउत्तंच वोक्कासियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्धं ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे०
आगमिस्साएउस्सप्पिणीए भारहेवासे सत्तकुलगराभविस्सति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पभेयसयंपभे
दत्तेसुहुमेसुबंधूय आगमिस्साणहोक्खंति ॥ ६५ ॥ जबूद्दीवेणदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे
दसकुलगराभविस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १७ । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवंदित मरुदेव १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ट २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित
अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन क्षय गईछे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जबूद्वीपना
भरतने विषे आगामी उत्सर्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूक्ष्म ६ । सुबंधु ७ । आवती चो
वीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमधर ३ ।

पक्ष्मिसुई सुमुइइंति जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे ञ्चागमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगराभविस्संति तंजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपभे । सव्वाणुभूईञ्चरहा देवस्सुएयहोरकई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते य पोट्टिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयञ्चरहा सव्वभावविऊजिणो ॥ २ ॥ ञ्चममेणिक्कसाएय निप्पलाएयानि म्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय ञ्चागमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ संबरेञ्चणियट्टीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएञ्च रहा ञ्चणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीस भरहेवासम्मिकेवली ञ्चागमिस्सेणहोरकंति धम्मतित्थस्सदेस गा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वभवियाचउव्वीसनामधेज्जा भविस्संति तंजहा । सेणियसुपा

चेमकर ४ । चेमधर ५ । दृढधनु ६ । दशधनु ७ । शतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमुचि १० । जम्बूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थंकर थासे ते कहेछे । महापद्म १ । सूरदेव २ । सुपार्श्व ३ । स्वयप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोट्टिल ९ । शतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सत्यभाववित् अमम १२ । निष्कसाय १३ । निष्पलाक १४ । निर्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । संवर १८ । यशोधर १९ । अनर्हिक २० । विजय २१ । विमलवीजोनाममल्ली २२ । देवोपपात २३ । अनतविजय २४ वीजोनाम अनतवीर्य ॥ एह कह्या २४ तीर्थंकर भरतक्षेत्रनेविषे आवतोउत्सर्पिणीयेहोसे धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेछे । श्रेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय । ३ । पो

नंदमित्ते दीहबाहूमहाबाहू । अइबलेमहाबले बलभद्देयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठ्ठूयदुविठ्ठूय आगमिस्सेणव
रिहणो । जयंतेविजएभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आणंदे नदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणंनवरहं
बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियाणवनामधेज्जाभविस्संति । नवधम्मायरियाभविस्संति । नवनियाणभूमीउ
नवनियाणकारणाभविस्सति । नवपडिसत्तूभविस्संति तजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजघेयकेसरी पल्हा
एअपराजिए भीमसेणेमहाभीमे सुग्गीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
सव्वेविचक्कजोही हम्मिहतासचक्केहिं ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेएरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति
त्थकराभविस्सति तजहा । सुमगलेअसिद्धत्थे णिव्वाणेयमहाजसे धम्मज्झएयअरहा आगमिस्सेणहोरकई १

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नदन ७ । पद्म ८ । सकर्षण ९ । एह ९ बलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध
र्माचार्य धर्मगुरू थास्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजघ २ ।
वज्रजघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सघलाई प्रतिवासुदेव चक्र
करी युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जम्बूद्दीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकरहोस्ये तेकहेछे । सुमगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्व्वाण ३

सिरिचंदेपुप्फकेऊ महाचंदेयकेवली । सुयसागरेयऋरहा ऋागमिस्सेणहोरकई ॥ २ ॥ सिद्धत्थेपुस्सघोसेय महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयऋरहा ऋागमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयऋरहा महासेणेयकेवली । सव्वा णंदेयऋरहा देवउत्तेयहोरकई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्वएऋरिहा ऋरहेयसुकोसले । ऋरहाऋणंतविजए ऋागमि स्सेणहोरकइ ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेऋरहा ऋरहायमहाबले । देवाणंदेयऋरहा ऋागमिस्सेणहोरकई ॥ ६ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । ऋागमिस्सेणहोरकंति धम्मातित्थस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्कवट्टिणो भविस्सति वारसचक्कवट्टिपियरोभविस्सति । वारसइत्थीरयणा भविस्सति नवबलदेववासुदेवपियरोभवि स्संति णववासुदेवमायरो णवबलदेवमायरोभविस्संति । णवदसारमंडलाभविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

महायश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णघोस ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४ सिद्धसेन बीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानंद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोसल १९ अनतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । महाबल २३ । देवा नंद २४ होस्ये । ऐरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तीना पिताहोस्ये । ९ वासुदेवनी माता ९ बलदेवनीमाता होस्ये । ९ दशारमडल होस्ये

सुगमं ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे स्युतस्य मनुष्येषूत्पादः सिज्झिण यथारामस्येति एवं दोसुवित्ति भरतैरावतयो रागमिष्यतो वासुदेवादयो भणितव्याः इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिकृतग्रंथस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणाऽख्यायते ऽभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इतिच इतिरुपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवंतित्थगरवंसे इयत्ति यथा देशेन कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तीर्थंकरवंशप्रतिपादकत्वा त्तीर्थंकरवंश इति चाख्यायते एतदिति एव चक्रवर्त्तिवंशइतिच दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ताः शेषाजिनशिष्या ऋषय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवंशइतिच तत्प्रतिपादनंचात्र पर्युषणाकल्पस्य

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा ज्ञायरोज्ञविस्सति णवपडिसत्तूज्ञविस्संति। णवपुव्वज्ञवणामधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणभूमीओ णवणियाणकारणा आयाएएरवए आगमिस्साए ज्ञाणियव्वा। एवंदोसुवि आगमिस्साए ज्ञाणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जंति तंजहा। कुलगरवंसेइय एवंतित्थगरवंसेइय।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये। नव प्रतिशत्रुनाम। पूर्वभवनाम। धर्माचार्य। नियाणा भूमि नियाणानो कारण। बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थकी च्यवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सिद्धथासे ऐरवतक्षेत्रे तेसर्व भणिवो। एम भरत ऐरवत क्षेत्रे आगामिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्व भणियो। अनेकप्रकारे एम अंगीकृतशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे। कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दतएव यतिवंशो मुनिवंश श्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविबोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतागममितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवद्रतिकृत्वा तथा श्रुतसमासद्रति समस्तसूत्रार्थांना मिह संक्षेपेणाभिधानात् श्रुतस्कंधद्रति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवत्ति समवायद्रति चासमस्ताना जीवादिपदार्थांना मभिधेय तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थ. तथा एकादिसंख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिपादपरत्वादस्य सङ्ख्येति व्याख्यायते तथा समस्त म्परिपूर्ण मदेतदङ्ग माख्यात भगवता नेह श्रुतस्कन्धद्वयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गतेतिभावः तथा अज्झयणंतित्ति समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यात नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति शस्त्रप

चक्कवट्टिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुअंगेइवा

एमदशारवंश तेवासुदेव बलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवंश मुनिवंश एह सर्वनां वंश एह समवायांगने विषे कह्याछे तेमाटेएहना नामकहि वा। यद्यपि यतिवंशमुनिवंश एह बेहुं ऋषिवाचीछे तथापि आचारने बिषे यत्नकरे तेयतो अर्थ जाणे तेमुनी तेहना ज्ञान एहमांकह्याछे तेमाटे श्रुतकहिये। परोक्षपणे त्रिकालनो अर्थावबोध। श्रुत पुरुष अंगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटेश्रुतांग। समस्त सूत्रमांहि संक्षेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये। श्रुतना अंशनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कंध कहिये। समस्त जीवादि पदार्थ एह मांहि अवतरया तेथी समवाय कहिये। एकादिक कोटाकोटि लगी

रिशादिश्चिवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ बेमित्ति किलसुधर्मास्वामी जंबूस्वामिनंप्रत्याहसब्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समीपे यदवधारित मित्यनेन गुरुपारम्पर्यं मर्थस्य प्रतिपादित भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रुपजनिता भवति श्रात्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शित श्चौद्धत्यश्च परिहृतं अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्मादितोभवति मुमुत्तूणा ञ्चाय मार्गं इत्यावेदितमिति समवायाख्य ञ्चतुर्थमङ्ग ञ्वृत्तितः समाप्तम् ॥ * ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमरकायंअज्झयणत्तित्तिबेमि ॥ ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

सख्या एहमा कही तेथी सख्यकग्रथ कहिये। परिपूर्ण एह चौथो अग भगवते कह्यो। एह अध्ययन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अर्थ किल सुधर्मास्वामी जवूस्वामीप्रतें कहिता हुश्रा ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे साभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपारंपर्यपणो गुरूने विषे बहुमानपणो देखाड्यो ॥ इति समवायाग सूत्रटब्बार्थं सपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥

श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि संतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं। टब्बार्थ श्लोक संख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य मत्यानुसारेण लिखितोयं यद ज्ञानभावा दशुद्धं लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृत विशोधनीय च धीधनै रिति ॥ सूत्रटब्बार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ *

नमः श्रीवीरायप्रवरवरपार्श्वायचनमो । नमःश्रीवाग्देव्यैवरकविसभायाअपिनम ॥ नमःश्रीसज्जायस्फुटगुणगुरुभ्योपिचनमो । नमःसर्वस्मैचप्रकृतविधि
साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्यग्रन्थवरस्यवाग्जलधेर्लक्षंसहस्राणिच । चत्वारिंशदहोचतुर्भिरधिकामानमदानामभूत् ॥ तस्योच्चैश्चुलुकाकृतिंविदधतःकालादि
दोषात्तथा । दुर्लेखाऽखिलताङ्गतस्यकुधियःकुर्वन्तुकिंमादृशाः ॥ २ ॥ स्वङ्गष्टेतिनिधायकष्टमधिकंमामेन्यदाजायतां । व्याख्यानेस्यतथाविवेक्तुमनसामल्पन्तु
तानाममु ॥ इत्यालोचयतातथापिकिमपिप्रोक्तंमयातत्तच । दुर्व्याख्यानविरोधनंविदधतुप्राज्ञाःपरार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इहवचसिविरोधोनास्तिसर्वज्ञवाक्यात् ।
क्वचनतदवभासोयःसमाधानबुद्धेः ॥ वरगुरुविरहाद्वातीतकालेमुनीशे । गणधरवचनानामस्तसङ्घातनाद्वा ॥ ४ ॥ व्याख्यानंयद्यपीदंप्रवरकविचपारतंत्र्ये
णदृष्ट । सम्भाव्येऽस्मिंस्तथापिक्वचिदपिमनसोमोहतोऽर्थादिभेदः ॥ किन्तुश्रीसङ्घबुद्धेरनुगरणविधेर्भाव्यशुद्धेदोषो । मामेभून्नूनकोपिप्रथमपरमनास्ताग्रदेवोऽस्तु
तस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्द्धमानाभिधान् । सूरीन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणीतिप्रभोः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदर्प्यीयसांवा
ग्मिनां । तद्बन्धोरपिबुद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविवृतिःकृता ॥ श्रीमतःसमवायाख्य तुर्याङ्गस्यसमासतः ॥ ७ ॥
एकादशसुशतेष्वथ । विंशत्यधिकेषुविक्रमसमाना ॥ अणहिलपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानंविनिश्चित ॥
त्रीणिश्लोकसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ ९ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥ * श्रीरस्तु

——००*००——

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदजती